CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2002

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2002

Contents

28 February 2002 Vol. 16 No. 1

31 March 2002 Vol. 15 No. 3

31 May 2002 Vol. 15 No. 3

30 June 2002 Vol. 15 No. 4

31 August 2002 Vol. 15 No. 5

30 September 2002 Vol. 15 No. 6

30 November 2002 Vol. 15 No. 7

31 December 2002 Vol. 15 No. 8

सी.आर.पी.एफ. समाचार

28 फरवरी, 2002



13 दिसम्बर 2001 को संसद पर हुए आतंकवादी हमले को विफल करने में अदम्य साहस तथा शौर्य वीरता का परिचय देते शहीद हुई महिला सिपाही कमलेश कुमारी के पति श्री अवधेश कुमार महामहिम राष्ट्रपति से गणतंत्र दिवस पर शौर्य वीरता का सर्वोच्च पदक "**अशोक चक्र**" प्राप्त करते हुए।



केरिपु बल वर्षगांठ के अवसर पर वरिष्ठ अधिकारियों का केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी से परिचय कराते महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र



केरिपु बल वर्षगांठ के अवसर पर पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड-16 अंक-1
28 फरवरी 2002
9 फाल्गुन, शक 1923

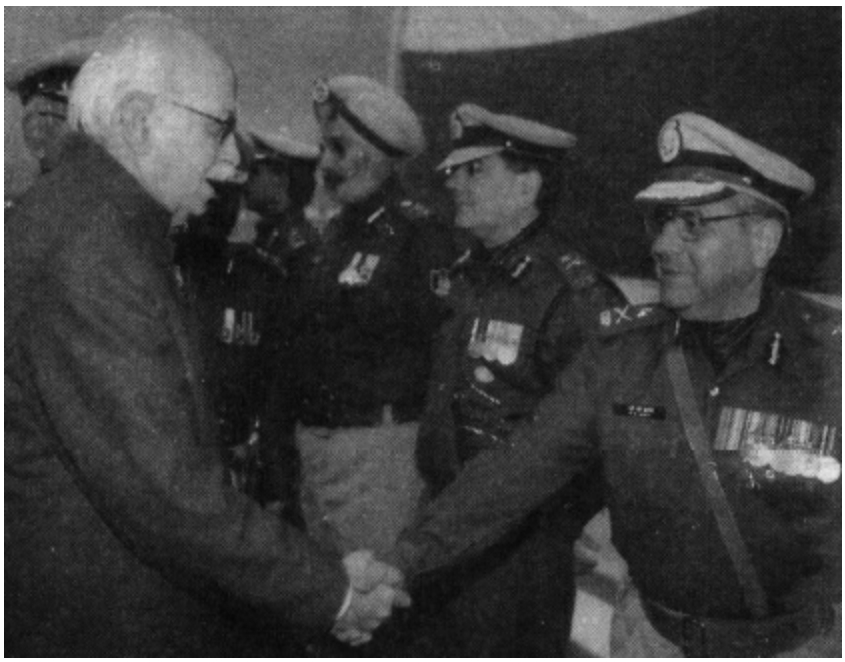
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
झड़ोदा कलां, नई दिल्ली - 72



इस अंक में

आतंकवाद के विरूद्ध निर्णायक युद्ध में केरिपु बल की भुमिका

केरिपु बल के तीन दस्ते गणतंत्र दिवस परेड में

केरिपु बल का कल्याण मेला व प्रदर्शनी

केरिपु बल के वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन

केरिपु बल को एक अशोक चक्र तथा चार शौर्य चक्र

38 केरिपु बल कार्मिकों को विशिष्ट एवं सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक

फिदायीन (आत्मघाती) हमला

केरिपु बल के खिलाड़ियों का सम्मान

केरिपु बल का बैंड प्रदर्शन

74 वीं बटालियन द्वारा सिविक एक्शन कार्यक्रम

एकता की मिसाल मेरा देश मेरा बल

केरिपु बल संचार व्यवस्था “श्रेष्ठता की ओर अग्रसर”

संयुक्त राष्ट्र संघ ने कोसोवो में आर.ए.एफ के कार्यो को सराहा

केरिपु बल की 37वीं बटालियन सर्वश्रेष्ठ

सम्मान शहीद का

136 बटालियन का पुलिस एवं सेना के साथ संयुक्त आपरेशन

19वीं बटा. के.रि.पु.बल द्वारा रियर एरिया सिक्यूरिटी

कहानी मेरी छुट्टी की

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-संपादक

“आतंकवाद के विरुद्ध निर्णायक युद्ध में के.रि.पु.बल की भूमिका महत्वपूर्ण”

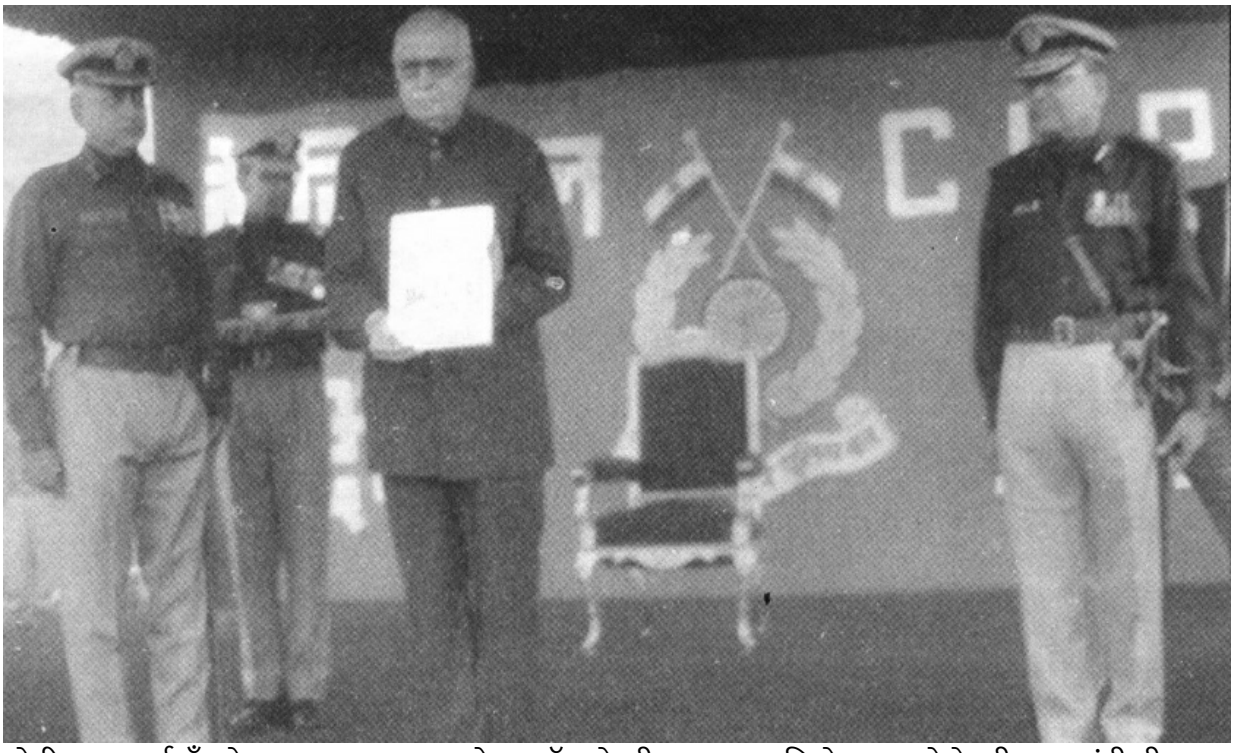
- गृहमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी

देश आतंकवाद को समाप्त करने का संकल्प ले चुका है और इस संकल्प को पूरा करने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है - केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी 13 दिसम्बर को संसद पर हमला करने वाले आतंकवादियों के हमले को निरस्त करने वाले के.रि.पु.बल के जवानों को बधाई देते हुए बोल रहे थे।

गृहमंत्री ने के.रि.पु.बल, ग्रुप केन्द्र झड़ोदाकलां में बल की 62 वीं वार्षिक परेड के अवसर पर आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि संसद पर हमला करने वाले आतंकवादी यदि अपने मकसद में कामयाब हो जाते तो हिंदुस्तान का भविष्य बदल जाता, उनका मकसद संसद के अंदर प्रवेश कर सम्पूर्ण राजनैतिक प्रतिनिधित्व को समाप्त कर भारत में राजनैतिक अस्थिरता पैदा कर देने का था। मगर उनके इस इरादे को विफल कर देने का श्रेय सी.आर.पी.एफ सहित सभी सुरक्षा बलों को जाता है। गृहमंत्री ने कहा कि हम आतंकवाद को जड़ से खत्म करने का संकल्प ले चुके हैं और इस संकल्प को पूरा करने में के.रि.पु.बल को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।



परेड का निरीक्षण करते केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी



केरिपु बल वर्षगाँठ के अवसर पर माइलस्टोन्स ऑफ ब्रेवरी पुस्तक का विमोचन करते केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी

गृह मंत्री ने इस अवसर पर बल की कल्याण गतिविधियों के लिये एक करोड़ रूपये के अनुदान की घोषणा की। गृहमंत्री ने इस मौके पर आठ कार्मिकों को शौर्य वीरता के पुलिस पदक भी प्रदान किये गये। इनमें से एक कार्मिक 134 बटालियन के सिपाही एस. ए.करीम को यह पदक मरणोपरान्त दिया गया। इसके अतिरिक्त सात कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक भी प्रदान किये। गृह मंत्री ने 50 बटालियन को सर्वश्रेष्ठ बटालियन जबकि 110 बटालियन को जम्मू कश्मीर स्थित सर्वश्रेष्ठ परिचालनिक बटालियन, 2 बटालियन को उत्तर पूर्व स्थित सर्वश्रेष्ठ परिचालनिक बटालियन, 35 बटालियन को वित्तीय मितव्ययता के लिये सर्वश्रेष्ठ बटालियन तथा ग्रुप केन्द्र की ट्राफियाँ भी प्रदान की।

इससे पूर्व गृह मंत्री का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने गृह मंत्री को बल की उपलब्धियों और समस्याओं से अवगत कराया। गृह मंत्री ने इस मौके पर एक शानदार परेड का निरीक्षण किया और उसकी सलामी ली।

परेड में बल के सभी सेक्टरों की 11 टुकड़ियाँ शामिल थी। परेड में बल के शौर्य वीरता के लिए पुलिस पदक विजेता, अर्जुन अवार्ड विजेता खिलाड़ी और बल कार्मिकों के प्रतिभावान बच्चे भी शामिल थे।

इस मौके पर गृह राज्य मंत्री श्री विद्या सागर राव तथा गृह सचिव श्री कमल पांडे सहित बल तथा अन्य पुलिस बलों के अनेक वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

के.रि.पु.बल के तीन दस्ते गणतंत्र दिवस परेड में

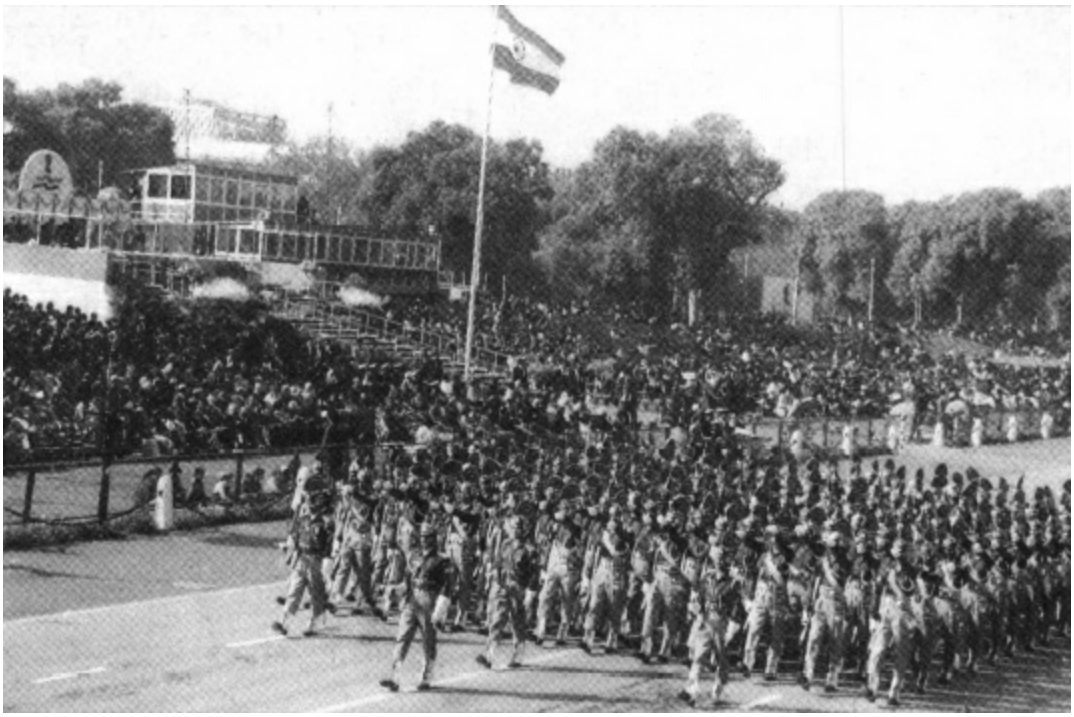
देश के शांति प्रहरी -केन्द्रीय पुलिस बल की तीन टुकड़ियाँ इस वर्ष गणतंत्र दिवस परेड में शामिल हुई। इसमें एक दस्ता बल की महिला कर्मियों का, दूसरा दस्ता बल के जवानों का और तीसरा दस्ता बैंड वादकों का था।

के.रि.पु.बल के पहले दस्ते में सहायक कमाण्डेंट सुश्री शशि नेगी तथा तीन सब इंस्पेक्टरों के नेतृत्व में 144 महिला कर्मी थी। रंगीली साज सज्जा वाली बल की इस टुकड़ी के सदस्य नीली वेरिट, कमरबंद पर सफेद चमड़े की वेल्ट तथा नीला स्कार्फ बांधे हुए थी। इस टुकड़ी में शामिल सदस्यों का औसत कद 5.5 फुट था।



गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेता केरिपु बल महिला कर्मियों का दस्ता

के.रि.पु.बल की इस महिला टुकड़ी के पीछे 101 सदस्यों वाला के.रि.पु. बल ब्रास बैंड दस्ता था, जिसका नेतृत्व, इंस्पेक्टर राजकुमार ने तीन अन्य अधीनस्थ अधिकारियों के साथ किया। के.रि.पु. बल ब्रास बैण्ड का गठन 1961 में किया गया था। ब्रास बैण्ड दस्ते के पीछे 144 जवानों वाला के.रि.पु. बल का पुरूष दस्ता था, जिसका नेतृत्व सहायक कमाण्डेंट श्री मनोज वर्मा तथा तीन अन्य अधीनस्थ अधिकारी कर रहे थे। रंगीली साज सज्जा वाली बल की इस टुकड़ी के सदस्य गाढ़े नीले रंग की पगड़ियों, अंगोला कमीजों और खाखी पैंटों पर सफेद चमड़े की बेल्ट और नीले रंग का स्कार्फ बांधे थे। इस टुकड़ी के जवानों का औसत कद 6 फुट था।



गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेता के.रि.पु. बल का पुरूष दस्ता

बल की टुकड़ियाँ राजपथ से के.रि.पु. बल के कथानक गीत **"सेवा भक्ति का यह प्रतीक सी.आर.पी.एफ. कहाता है"** की धुन पर मार्च करती हुई गुजरी।

मार्चिगं दस्ते के जवानों के हाथ में एस.एल.आर. थी जबकि उनके कमांडरों के हाथों में तलवारें।

के.रि.पु.बल का कल्याण मेला और प्रदर्शनी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की तीन दिवसीय कल्याण प्रदर्शनी और मेला दिनांक 13 दिसम्बर 2001 को 1100 बजे सेक्टर –12, आर.के.पुरम, (सी.पी.डब्ल्यू.डी.पार्क) नई दिल्ली में शुरू हुआ। प्रदर्शनी और मेले का उद्घाटन सी.आर.पी.एफ.,वाईवज वेलफेयर एसोशियेशन की अध्यक्षा, श्रीमती चित्रा मिश्र ने किया।

प्रदर्शनी और मेले में पूरे देश में फैले विभिन्न सेक्टरों ने अपने–अपने क्षेत्रों की वस्तुओं के स्टाल लगाए। साथ ही बल के परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा निर्मित वस्तुऐं भी इन स्टालों में रखी गयी है। प्रदर्शनी और मेले के लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं था।

इस प्रदर्शनी और मेले से होने वाली आय का उपयोग विकलांगों, बच्चों तथा शहीद हुए कार्मिकों की विधवाओं के कल्याण कार्यक्रमों के लिए किया जाता है।

दिल्ली में इस तरह इंटर सेक्टर स्तर पर आयोजित होने वाली यह सातवीं परिवार कल्याण प्रदर्शनी थी।



के.रि.पु. बल कल्याण मेला व प्रदर्शनी का उद्घाटन करती हुई सी.आर.पी.एफ. वाईवज वेलफेयर एसोशियेशन

के.रि.पु.बल वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन



वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

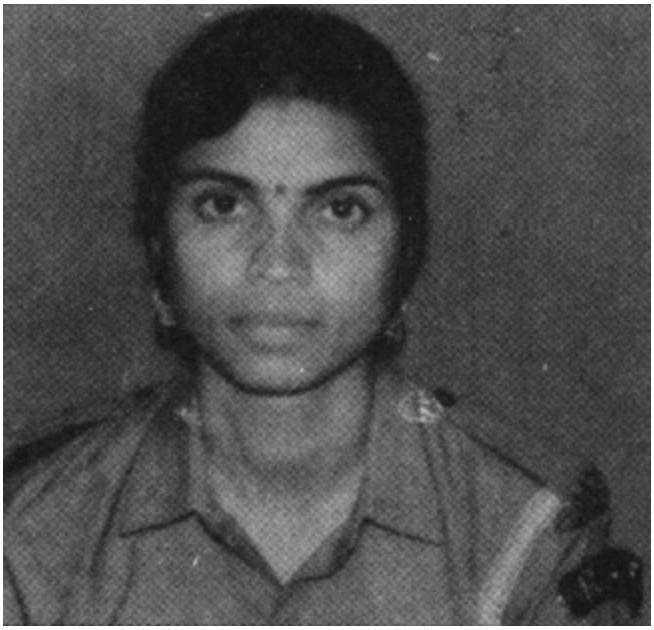
"कर्तव्य निर्वाह के दौरान आने वाली चुनौतियों तथा कठिनाईयों का सामना करने के लिए संसाधनों और उपायों के विकास के लिए आप लोगों को प्रयास करनी चाहिए।"

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 62 वीं वर्षगाँठ के अवसर पर आयोजित के.रि.पु. बल के वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए बल महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने कहा कि भारी तैनाती, दबाव और तनाव के बावजूद के.रि.पु.बल ने 2001 में उल्लेखनीय सफलताएँ प्राप्त की है। बल की परिचालन क्षमता को बढ़ाने के लिए प्रत्येक बटालियन की एक कम्पनी को रोटेशनल ट्रेनिंग दिये जाने पर उन्होने जोर दिया। इस चर्चा में अपर महानिदेशक श्री जी. झा तथा पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) श्री के. टी. डी. सिंह ने भी भाग लिया तथा अधिकारियों से अधिक से अधिक परिचालनिक क्षमता के लिए काम करने का आग्रह किया। पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन) श्री जय प्रकाश तथा अपर पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) श्री सी.वी. मैथ्यू ने परिचालनिक मामलों तथा प्रशिक्षण के विभिन्न पहलुओं पर किये गये अध्ययन की एक रिपोर्ट भी प्रस्तुत की। इस सम्मेलन में पूरे देश से आये बल के करीब सौ अधिकारियों ने भाग लिया।

के.रि.पु.बल. को पहली बार एक अशोक चक्र तथा चार शौर्य चक्र

13 दिसम्बर 2001 को संसद पर हुए आतंकवादी हमले को नाकाम कर संसद परिसर में घुसे पाँचो आतंकवादियों को मार गिराने में अदम्य साहस, हाजिर जवाबी तथा असाधारण शौर्य वीरता प्रदर्शन करने के लिए गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति ने के.रि.पु.बल के जवानों को एक अशोक चक्र तथा चार शौर्य चक्र प्रदान किए। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के इतिहास में पहली बार बल को इतना बड़ा सम्मान प्राप्त हुआ है। पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक निम्न प्रकार हैं :–

अशोक चक्र



सिपाही *(महिला)* कमलेश कुमारी *(88* बटा०*)* मरणोपरान्त

शौर्य चक्र



हव. वाई.वी.थापा *(23 वीं बटा.)*



सि. डी.संतोष कुमार *(23 वीं बटा.)*



सि. सुखविन्दर सिंह *(23 वीं बटा.)*



सि. श्यामवीर सिंह *(एस.डी.जी.)*

गणतंत्र दिवस पर 38 के.रि.पु. बल के कार्मिक पुलिस पदकों से सम्मानित

गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति जी ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 38 कार्मिकों को उनकी सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया। उनमें से चार अधिकारियों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक तथा 34 अधिकारियों तथा कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किये गये। पदक प्राप्त करने वाले अधिकारी तथा जवान निम्न प्रकार से हैं :–

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



पुलिस उप महानिरीक्षक ब्रिगेडियर *(*सेवानिवृत*)* गोविन्द जी मिश्र *(*महानिदेशालय*)*



अपर पु०उ०म०नि० श्री वी.डी. टोकस *(ग्रुप केन्द्र,नई दिल्ली,)*



अ०पु०उ०म०नि० श्री सी.वी.मैथ्यू *(महानिदेशालय)*



कमांडण्ट श्री जार्ज सी.फ्रांसिस *(50* बटा०*)*

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक



अ०पु०उ०म०नि० श्री आर.एस. विर्क *(ग्रुप केन्द्र जम्मू)*



अ०पु०उ०म०नि० श्री आर.के गौड़ *(ग्रु०के०, शिवपुरी)*



कमांडेट श्री पी.जी.जी. नायर *(126* बटा०*)*



कमांडेट श्री आई. मिर्जा *(37* बटा०*)*



कमांडेट श्री के.के. शिव प्रसाद *(99* आर.ए.एफ.बटा०*)*



कमांडेट श्री एम.एस.बालाकेशवन *(*महानिदेशालय*)*



कमांडेट श्री ए.ए.खान *(53* बटा०*)*



कमांडेट श्री के.एस.भंडारी *(121* बटा०*)*



मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. कुलभूषण *(*बस अस्पताल*)*, हैदराबाद



मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. डी. महापात्र *(*बेस अस्पताल*)*, गुहाटी



उप कमांडेंट श्री एस.एस. सेहरावत *(121* बटा०*)*



उप कमांडेंट श्री बी.एस.मान *(135* बटा०*)*



सूबेदार मेजर ओ.एस. रामअवतार सिंह *(*ग्रुप केन्द्र खटखटी*)*



निरीक्षक ओम प्रकाश *(*ग्रु०के०, जालंधर*)*,



निरीक्षक आई. सी. पाण्डे *(39* बटा०*)*



निरीक्षक भूरा राम *(65* बटा०*)*



निरीक्षक ओम प्रकाश *(*सी.टी.सी, नीमच*)*



निरीक्षक तेजबीर सिंह *(134* बटा०*)*



निरीक्षक *(*क्रिप्टो*)* पुरूषोत्तम पंत *(4*वीं सिंग बटा० नीमच*)*



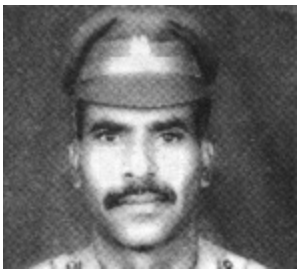
निरीक्षक *(*आर.ओ.*)* निधान सिंह *(5*वीं सिंग बटा०, मौहाली*)*



निरीक्षक चन्द्र भूषण *(44* बटा०*)*



निरीक्षक एस.पी.तिवारी *(46* बटा०*)*



निरीक्षक मोहिन्दर पाल *(91* बटा०*)*



उप निरीक्षक धर्मपाल *(*ग्रुप केन्द्र जालंधर*)*



उ. नि. तारकेश्वर सिंह *(*महानिदेशालय*)*



उ.नि. श्याम लाल *(*आर.टी.सी., श्रीनगर*)*



हवलदार विजय सिह *(25* बटा०*)*



हवलदार एम. गांधी *(50* बटा०*)*



हवलदार राम लाल *(73* बटा०*)*



हवलदार भईया लाल *(ग्रु० के० भोपाल)*



हवलदार एम.एन. सोनावाला *(*सीटीसी, नदेड*)*



हवलदार के. पी. जयाराजन *(16* बटा०*)*



सिपाही जकारिया मिंज *(41* बटा०*)*



सिपाही महावीर सिंह *(*प्रथम बटा०*)*

केरिपु बल जवानों की चौकन्नी नजर और तत्काल कार्रवाई से विफल हुआ फिदायीन (आत्मघाती) हमला



जबावी कार्रवाई के दौरान मारे गये फिदायीन की जाँच करते *47* बटा. के अधिकारीगण

दिनांक 26.10.2001 को 0445 से 0450 के मध्य दो प्लाटून ए/47 बटा. जम्मू कश्मीर राज्य पुलिस स्टेशन चडूरा, जिला बडगाम में एस.टी.एफ. ड्यूटी में तैनात थी, एक फिदायीन (आत्मघाती) चार दिवारी फाँद कर कैम्प में प्रवेश करने लगा। सिपाही गुरमेज सिंह उस समय संतरी ड्यूटी पर तैनात था, उसने फिदायीन को कैम्प में प्रवेश करते लाईन के पिछले कार्नर से घुसते देखा तथा उसे ललकारा। संतरी द्वारा देखे जाने पर फिदायीन ने संतरी पर ए. के.-47 से दो ब्रस्ट फायर किया। जबाव में संतरी ने भी उस संदेहात्मक उग्रवादी पर फायर किया जिसके परिणाम स्वरूप वह उसी कार्नर से पीछे होता हुआ जवानों के शौचालय में छुप गया। संतरी उस उग्रवादी की सही स्थिति के बारे में पता नहीं लगा सका। श्री एम. एस. शेखावत, सहायक कमाण्डेन्ट ने फायर की आवाज सुनकर कैम्प को स्टेण्ड-टू कर दिया तथा जवानों को दो टीम में बांटा (हमला टीम/खोजी टीम) अधिकारी द्वारा यह बताया गया कि सुबह की रोशनी का इंतजार करें। बाथरूम में छिपे आतंकवादी ने सिपाही संजय कुमार के उपर मोर्चे में जाते समय फायर किया जिससे दो गोलियाँ उक्त सिपाही को लगी और वह जमीन पर गिर पड़ा। श्री एम. एस. शेखावत, सहायक कमाण्डेन्ट तथा सिपाही विकास खानवास ने कवरिगं फायर का सहारा लेते हुए अपने प्राणों की परवाह किये

बगैर उक्त सिपाही को घटनास्थल से निकाला जिसे तुरन्त स्थानीय अस्पताल में चिकित्सा हेतु पहुँचाया गया।

फिदायीन हमले की सूचना मिलते ही श्री.बी.एस.नेगी, उप कमाण्डेन्ट अपनी क्यू.आर.टी. के साथ 0615 बजे घटना स्थल पर पहुँचे तथा जवानों को ब्रीफ किया और आपरेशन को सुपरवाईज्ड किया। श्री एम. एस. शेखावत के नेतृत्व में स्ट्राईकिंग टीम ने ग्रेनेड/गोलियों से शौचालय पर फायर किया, लेकिन आत्मघाती आतंकवादी द्वारा फायर का कोई जबाव न देने के कारण फायरिंग बन्द कर दी तथा शौचालय को नजदीक से तलाशी अभियान करवाया गया फिर भी आतंकवादी का पता नहीं लगा। जब श्री बी. एस. नेगी, उप कमाण्डेन्ट एवं मेजर जोशी, 35 आर.आर. द्वारा खाना तलाशी के लिए दो सिविल नागरिकों को शौचालय के अन्दर प्रवेश करवाया तो उनके द्वारा यह सूचना दी गयी कि शौचालय के दरवाजे के पीछे आतंकवादी छिपा हुआ है। इसके तुरन्त बाद दोनों अधिकारियों द्वारा आई. ई. डी. (इम्प्रोमाइज एक्सप्लोसिव डिवाईस) लगाने की बात की, जिसकी भनक आतंकवादी को लग गई और वह तुरन्त फायरिंग करता हुआ शौचालय के बाहर 3-4 गज पहुँचा तभी (क्यू.आर.टी.) ने उस उग्रवादी को मार गिराया। यह आपरेशन 0030 बजे तक चला। मारे गये उग्रवादी की पहचान जहीर खान उर्फ सिकन्दर जैश-ए-मोहम्मद सदस्य, पाकिस्तान निवासी के रूप में की गयी। घटना स्थल से उग्रवादी के पास से एक ए.के.-47 राईफल, 5 मैगजीन, 41 जिन्दा गोलियाँ, 4 जिन्दा हैंड ग्रेनेड, एक बेतार सेट एन्टीना, तथा जैश-ए-मोहम्मद लिखा एक स्लीप पेड जिस पर भारत सरकार के माननीय प्रधानमंत्री व गृहमंत्री के लिए अनुचित भाषा का प्रयोग किया हुआ घटनास्थल से बरामद किए गए। जम्मू और कश्मीर राज्य के पुलिस महानिरीक्षक, पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) के.रि.पु.बल, श्री एच.के.सरीन तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने घटनास्थल पर पहुँच कर फिदायीन हमले को विफल करने पर जवानों की सराहना की तथा यह भी कहा कि इस घटना में किसी जवान के हताहत न होना यह अपने आप में प्रशंसनीय है।



घटना स्थल से बरामद उग्रवादी का शव तथा हथियार व गोलाबारूद के साथ *47* बटा. के अधिकारी व जवान

के.रि.पु.बल के खिलाड़ियों का सम्मान



विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धाओं में पदक विजेता केरिपु बल के खिलाड़ियों के बीच बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

आप देश और के.रि.पु.बल का गौरव हैं। देश के लिए पदक जीतने वाले के.रि.पु.बल के खिलाड़ियों के सम्मान में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 36 बटालियन के मुख्यालय कालका जी, नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने खिलाड़ियों को बधाई दी और कहा कि वे दिन दूर नहीं जब बल के युवा पुरूष और महिला खिलाड़ी अन्तराष्ट्रीय खेल जगत में और अधिक चमकेंगे। उन्होने कहा कि केरिपु बल ने हमेशा खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारने के लिए उन्हे हर सम्भव संरक्षण और प्रोत्साहन दिया है।

खेल के क्षेत्र में के.रि.पु.बल ने 2001 में अद्वितीय उपलब्धियाँ हासिल की, वर्ष 2001 में बल के खिलाड़ियों ने विभिन्न अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिता में कुल मिलाकर 47 पदक जीते, जिनमें 24 स्वर्ण, 10 रजत, और 13 कांस्य पदक भी शामिल हैं। राष्ट्रीय खेलों में बल के खिलाड़ियों ने इस वर्ष 147 पदक जीते, जिनमें 51 स्वर्ण 46 रजत और 46 कांस्य पदक शामिल हैं, जबकि अखिल भारतीय पुलिस खेलों में बल के खिलाड़ियों ने इस वर्ष कुल मिलाकर 128 पदक जीते जिनमें 56 स्वर्ण, 44 रजत और 28 कांस्य पदक शामिल है।

अपर उप महानिरीक्षक, श्री सी. वी. मैथ्यू ने खिलाड़ियों की वर्ष भर की उपलब्धियों का विवरण अपने स्वागत भाषण में दिया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का बैंड प्रदर्शन



केरिपु बल वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के तहत इण्डिया गेट पर बैंड प्रदर्शन

62वीं के.रि.पु.बल दिवस के अवसर पर साय: 3 बजे से 5.30 बजे तक इण्डिया गेट, कुतुबमीनार तथा लाल किला मैदान, नई दिल्ली में विभिन्न आयोजनों के रूप में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के बैंडों का प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 61 ब्रास बैंड, 49 पाईप बैंड तथा 10 जार्ज बैंड वादकों ने अपने बैंड मास्टरों के नेतृत्व में प्रदर्शन किया। ब्रास बैंड का नेतृत्व निरीक्षक राजकुमार, पाईप बैंड का नेतृत्व हवलदार परशुराम तथा जार्ज बैंड का नेतृत्व हवलदार किशोर थापा ने किया।

इन बैंडों द्वारा संयुक्त रूप से लोकप्रिय हिंदी तथा अंग्रेजी गीतों की धुनें बजाई। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के ब्रास बैंड की स्थापना 1961 तथा पाईप बैंड की स्थापना 1952 में की गई थी।



वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत लाल किला मैदान पर केरिपु बल बैंड प्रदर्शन

74वीं बटालियन द्वारा सिविक एक्शन कार्यक्रम



शिशु को पहली पोलियो ड्रॉप पिलाकर पोलियो कैम्प का शुभारम्भ करते कमाण्डेन्ट श्री हवा सिंह सागवान

"74बटालियन ने दिनांक 16/12/2001 को सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत पल्स पोलियो कैम्प का आयोजन किया गया। इस प्रोग्राम के बारे में मणिपुरी भाषा में प्रचार किया तथा अधिक से अधिक संख्या में स्थानीय जनता को अपने बच्चों को दवाई पिलाने के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रोग्राम का उद्घाटन श्री हवा सिंह सागवान, कमाण्डेन्ट 74 बटा० केरिपुबल ने पहले बच्चे को दवाई पिलाकर किया। मणिपुर जैसे तनाव ग्रस्त इलाके में सिविल जनता एवं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों के 440 बच्चों को इस अवसर पर दवाई पिलाई गई। बटालियन की चिकित्सा अधिकारी श्रीमती फ्लोरेन्स डागमाई, उप कमाण्डेन्ट श्री ईश्वर सिंह एवं उप कमाण्डेन्ट श्री एन.एन. यादव ने इस कैम्प के आयोजन में व्यक्तिगत दिलचस्पी दिखाते हुए महत्वपूर्ण योगदान किया। इम्फाल की जनता को इस कैम्प के आयोजन एवं फायदे के बारे में बताया गया ताकि देश के प्रत्येक बच्चे अर्थात देश के भविष्य को पोलियो मुक्त किया जा सके । जिसकी स्थानीय जनता तथा प्रधिकारियों ने उन्मुक्त कंठ से प्रशंसा की ।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय जोखिम निधि से माह जनवरी 2001 से दिसम्बर 2001 तक मृत्यु के 442 मामलों में 4,3385,300/–रू० देने स्वीकृत किये गये । इसी प्रकार अक्षमता के 125 मामलों में 59,4500/– रू० देने स्वीकृत किये गये ।

"एकता की मिसाल मेरा देश मेरा बल"

–सिपाही हनुमान सहाय सी/130 बटा.

अहा–अहा–अहा मेरा भारत महान सचमुच मेरा भारत महान और भी क्यों न हो, भारत के उत्तर में देखो तो बर्फ की ठण्डी हिमालय पर्वतमाला और दुनियाँ का स्वर्ग कहा जाने वाला कश्मीर और दक्षिण में देखो तो हिन्द महासागर का विशाल तटीय इलाका और पूर्व में देखो तो सात बहनों की मनोरमी पहाड़ी इलाका और पश्चिम में देखो तो महाराष्ट्र, गोवा अद्भुत संस्कृति वाला प्रदेश और मध्य भारत का तो कहना हि क्या, क्या नहीं है मेरे भारत में ? लगता है जैसे पूरे संसार की भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताएँ मेरे अकेले महान देश में समाई हुई हो, इतनी भौगोलिक, सांस्कृतिक भिन्नताएँ लिए हुए भी मेरा भारत अखण्ड भारत है । इस मेरे मनोरमी देश में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई रहते हैं । सब भाई–भाई की तरह हैं, कहीं मंदिर की घंटियाँ तो कहीं मस्जिद की अजान, कहीं प्रभु ईशु की प्रार्थना, तो कहीं गुरूद्वारे की गुरूवाणी एक साथ सुनने को सबको मिलती है । कितनी प्यारी, । यही तो मेरे देश की

महानता है। यहां सभी धर्म अपने से लगते हैं। है ऐसी मिसाल किसी देश में और कहीं ? मेरा देश ही दुनियाँ का अकेला ऐसा देश है जहाँ सभी धर्मों को एक समान आदर भाव से देखा जाता है।



*88 (*महिला*)* बटा. के.रि.पु. बल द्वारा आयोजित सर्वधर्म प्रार्थना सभा में बल के अधिकारी व जवान

अगर आपको मिनी भारत देखना हो तो आइये मेरे इस गौरवशाली बल में जिसका नाम है केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जिसका नारा है **"सी. आर. पी. एफ. सदा अजय" "भारत माता की जय"** आप बल की छोटी सी टुकड़ी को देखो जिसको कहते हैं सेक्शन आपको इस 12 जवानों की सेक्शन में पूरा भारत नजर आयेगा।

उत्तर भारत का जवान मिलेगा पूर्वी भारत का जवान भी मिलेगा और पश्चिम भारत का जवान भी मिलेगा। हिन्दू धर्म को मानने वाला भी मुस्लिम धर्म को मानने वाले भी मिलेंगे। सिख, इसाई धर्म को मानने वाले भी मिलेंगे और 12 आदमी 12 अलग–अलग बोली भाषाओं वाले मिलेंगे।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के 12 जवानों की एक सेक्शन में इतनी विभिन्नताओं वाले जवान और फिर भी अपने भारत देश के लिए मर मिटने को तैयार है। यही तो है मेरे बल की मिसाल, धर्म है सिर्फ भारतीयता – सिर्फ भारतीयता, क्या कहना मेरे इस बल की मिसाल, क्या है ? दुनियाँ के किसी भी पुलिस बल फोर्स में ऐसी मिसाल जहाँ है सिर्फ देश की एकता की पहचान।

सचमुच मेरा भारत देश महान को छोड़कर तो स्वर्ग में भी जाने का जी नहीं करता
।

"मैं भारत देश से प्यार करता हूँ मैं के.रि.पु. बल से प्यार करता हूँ"।

के.रि.पु.बल संचार व्यवस्था "श्रेष्ठता की ओर अग्रसर"

झडोंदा कलां स्थित प्रथम सिगनल बटालियन के हवलदार/रेडियो ऑपरेटर ए. एस. कलीम ने अन्तर राज्यीय तार प्रतियोगिता "एकल" में रजत पदक प्राप्त कर बल का नाम रोशन किया। बल के बेतार तंत्र को अधिक तीव्र एवं प्रभावी बनाने के लिए हाई स्पीड डाटा सर्किट दिल्ली–श्रीनगर का श्री गणेश किया गया। भुज की प्राकृतिक आपदा के बाद यह अनुभव किया कि संचार व्यवस्था अति विश्वसनीय व सुदृढ होना नितान्त आवश्यक है। इस बात को ध्यान में रखते हुए 5 एच. एफ. रेडियो नेट्स की योजना व कार्यान्वयन किया जिसके द्वारा देश की राजधानी को देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगातार सम्पर्क बनाया जा सके ताकि प्राकृतिक आपदा के समय बेहतर संचार सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जा सके। यह कठिन कार्य अपने सीमित श्रोतों से ही किया गया। प्रथम सिंगनल बटालियन ने माननीय महानिदेशक के मार्गदर्शन तथा उप महानिरीक्षक (संचार) की देख–रेख में आपदा में अलार्म विभिन्न प्रकार की डिजाईन तैयार की गई है। माननीय महानिदेशक व गृह मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा इसकी भूरी–भूरी प्रशंसा की। पिछले कई वर्षों की तरह भी प्रथम सिंगनल बटालियन के कोर्स में सभी महत्वपूर्ण अवसरों पर ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रबन्ध किया तथा इसके स्तर में गुणात्मक सुधार किये।।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने कोसोवो में आर.ए.एफ. के कार्यों को सराहा

11 सितम्बर, 2001 को आतंकवादियों द्वारा न्यूयार्क (अमेरिका) में हुए हमले के बाद कोसोवो के प्रस्तीना हवाई अड्डे की संवेदनशील सुरक्षा का कार्य आर. ए. एफ. को सौंपा। जिसे आर. ए. एफ. के जवानों ने वखुबी निभाया। संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों द्वारा आर. ए. एफ. के जवानों के इस कार्य की भूरी–भूरी प्रशंसा की। कोसोवो प्रस्तीना हवाई अड्डे के स्टेशन कमांडर (यू.एन.ओ.) श्री रीइमंद गंस द्वारा भारतीय स्पेशल पुलिस यूनिट (एस.पी.यू.) के कमांडर श्री जेड. एफ. खान को लिखे पत्र में कहा गया है कि "मैं एक बार फिर आपकी तथा आपके अधिकारियों व जवानों की व्यवसायिक दक्षता तथा व्यवहार कुशलता से बहुत खुश हूँ जिन्होने हमारे हवाई अड्डे

की सुरक्षा में सहायता की'' के.रि.पु.बल की स्पेशल विंग आर.ए.एफ. को विशेष रूप से चयनित, प्रशिक्षित तथा सुसज्जित 240 जवानों की दो कम्पनियाँ युगोस्लोविया कोसोवो में संयुक्त राष्ट्र मिशन के तहत सुरक्षा मिशन के रूप में मई, 2000 से तैनात हैं।

इस विशेष पुलिस यूनिट का कार्य दंगा नियंत्रण के साथ–साथ सुरक्षा प्रदान करना, यू.एन.अन्तराष्ट्रीय पुलिस को आपरेशनों में सहायता प्रदान करना, कानून व्यवस्था बनाए रखना तथा मानवीय सहायता एजेसियों की मदद करना है।

पश्चिमोत्तर अंचल द्वारा 37 बटा. 2000–2001 की सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन घोषित



37 वीं बटालियन के कमाण्डेन्ट श्री इमरान मिर्जा को सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन की ट्रॉफी प्रदान करते पश्चिमोत्तर अंचल के अपर महानिदेशक श्री जे.पी. वर्मा

7 जनवरी 2001 को चण्डीगढ़ में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 37वीं बटालियन मुख्यालय में पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया जिसमें पश्चिमोत्तर अंचल के अपर महानिदेशक श्री जे.पी.वर्मा ने 37वीं बटा. केरिपु बल को वर्ष 2000-2001 के लिए सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन घोषित की तथा एक रंगारंग कार्यक्रम में ट्राफी प्रदान की। बटालियन की ओर से कमांडेंट इमरान मिर्जा ने ट्रॉफी ली। हवलदार सुमेर सिंह को उत्कृष्ठ प्रशिक्षक, सिपाही ए.के.एक्का को उत्कृष्ठ खिलाड़ी, सिपाही संजय

प्रधान को उत्कृष्ट निशानेबाज, सिपाही मिलन देव को उत्कृष्ट कार्यकर्ता, ताराचंद को उत्कृष्ट चालक और सिपाही के आलिया को उत्कृष्ट प्रशिक्षणार्थी का पुरस्कार दिया गया। इस बटालियन को इससे पहले 1976, 1977 और 1978 में भी लगातार सर्वश्रेष्ठ बटालियन का पुरस्कार मिल चुका है इसके अलावा बटालियन के कर्मचारी कई बार राष्ट्रपति और अन्य पुलिस पदकों से सम्मानित हो चुके हैं। समारोह के अन्त में एक प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया जिसमें बल के सभी अधिकारी और जवानों ने हिस्सा लिया।

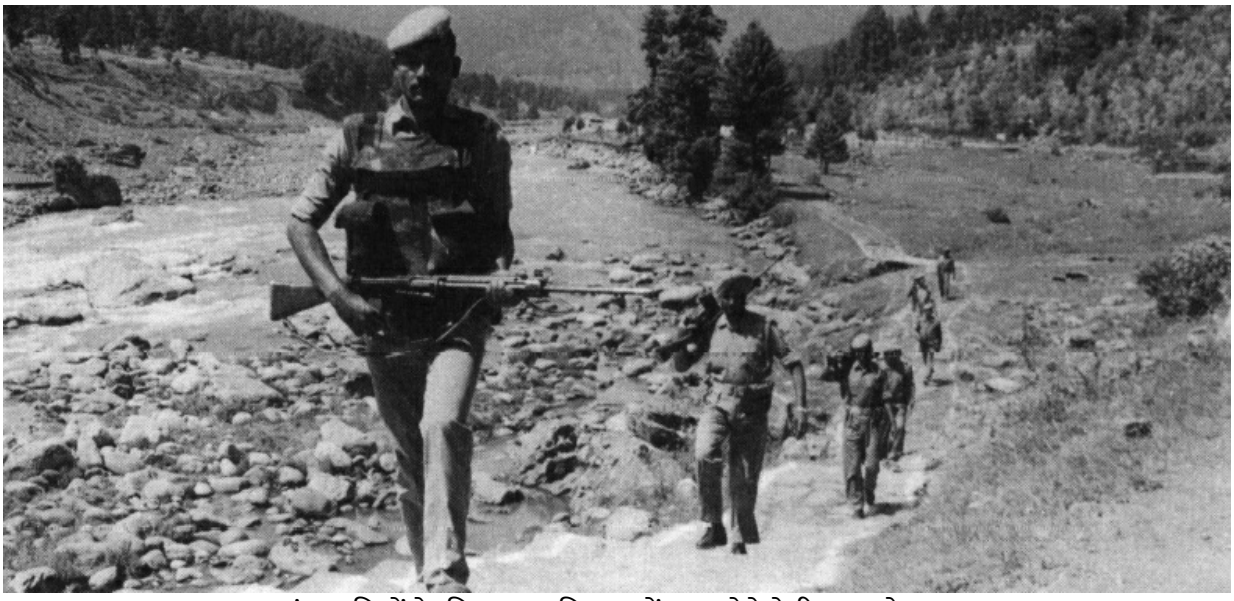
सम्मान शहीद का

122 बटालियन के बल संख्या 943220116 सि/जीडी बद्री प्रसाद जम्मू कश्मीर के बड़गाँव जिला में कर्तव्य निर्वाहन के दौरान उग्रवादियों द्वारा बिछाई गयी बारूदी सुरंग में दिनांक 29-04-2001 को शहीद हुआ और देश की अस्मिता की रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। उक्त बल कर्मी की इस शहादत को ध्यान में रखते हुए मध्य प्रदेश शासन के उद्योग मंत्री श्री नरेन्द्र नहाटा द्वारा शहीद की विधवा को उसके पति के बलिदान को देखते हुए दिनांक 29-10-2001 को मध्य प्रदेश सरकार की तरफ से रू० 10,00,000/- का चैक प्रदान किया। इस अवसर पर पुलिस उप महानिरीक्षक, केरिपुबल, नीमच श्री बी.आर शर्मा भी उपस्थित थे। मध्य प्रदेश शासन की ओर से श्री नरेन्द्र नाहटा उद्योग मंत्री ने केरिपु बल कार्मिकों द्वारा देश की सुरक्षा के लिए दी जा रही शहादत को हमेशा याद रखने की वचनबद्धता को दोहराया।



श्री नरेन्द्र नहाटा, उद्योग मंत्री मध्य प्रदेश शासन, श्रीमती कारोबाई पत्नी शहीद सिपाही बद्री प्रसाद को रू० *10,00,000/-* का चैक प्रदान करते हुए।

136 बटालियन का पुलिस एवं सेना के साथ संयुक्त आपरेशन



आतंकवादियों के विरूद्ध अभियान में भाग लेते केरिपुबल के जवान

दिनांक 21/01/2001 दिन रविवार जब 136 बटालियन की डी/136 बटालियन लोकेशन झिरी में राष्ट्रीय स्तर का पल्स पोलियो उन्मूलन प्रोग्राम चलाया जा रहा था तभी गाँव के कुछ व्यक्तियों से यह सूचना मिली कि गाँव असरा, इलाका मिश्रीवाला झिरी से करीब 6 कि. मी. दूर है, पुलिस स्टेशन कालाचक्र के अन्तर्गत एक सूखा तलाब वाली जगह के अन्दर सात संदिग्ध व्यक्ति देखे गये, जो मिलिटेंट (आतंकवादी) हो सकते हैं। यह सूचना पाते ही डी/136 बटालियन के कम्पनी कमांडर श्री बलवान सिंह ने हेडक्वाटर को सूचित करने के साथ-साथ शीध्र ही हथियार बन्द प्लाटून तैयार की और वहां पर उपस्थित उप कमांडेन्ट श्री मलिकीयत सिंह के साथ बिना समय गवायें मौके पर पहुँच कर आर्मी की नफरी के साथ छुपे हुए मिलिटेंटों (आतंकवादी) को एक तरफ से घेर लिया और कुछ जवानों ने मिलिटेंटों के छुपने की जगह पर फायर किया। गांव की तरफ जाने वाले रास्ते को बटालियन हेडक्वाटर से आयी हुई दो प्लाटून एवं सी/136 बटालियन से आयी हुई एक प्लाटून ने रास्ते को घेरे रखा ताकि उस ओर से आतंकवादी किसी छदम वेश में भागने के प्रयत्न में सफल न हो सके। वहाँ पर , द्वितीय कमान अधिकारी श्री एस.एस. बल एवं उप कमांडेन्ट (परि०) श्री एस. के. राठौर नियंत्रित किये हुए थे। आर्मी के साथ किये गये इस ज्वाइंट आपरेशन में 6 (छ:) विदेशी मिलिटेंट मारे गये। सुरक्षा बलों सेना एवं राज्य पुलिस के संयुक्त कार्रवाई के परिणाम स्वरूप ही इन छ: खूंखार आतंकवादी को मार गिराया जा सके। इस कार्रवाई का नेतृत्व एवं संचालन बटालियन कमांडेन्ट श्री ए. एस. सिद्धू ने अपनी सूझ बूझ का परिचय देते हुए सफल बनाया।

जम्मू एवं कश्मीर राज्य पुलिस के महानिदेशक ने केरिपुबल के इस साहसिक कार्य की प्रशंसा की तथा इस कार्रवाई के दौरान अदम्य साहस तथा अपनी जान की परवाह किये बिना आपरेशन को सफल बनाने में किये गये प्रदर्शन को देखते हुए केरिपुबल के जवानों को 1 लाख रूपये (एक लाख रूपये) की राशि नकद पुरस्कार

के रूप में प्रदान की गयी।

19वीं बटा. के.रि.पु.बल द्वारा रियर एरिया सिक्युरिटी अभ्यास



रियर एरिया सिक्यूरिटी अभ्यास में भाग लेने वाले केरिपुबल के अधिकारी व जवान

देश में युद्ध जैसी स्थिति होने पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को भारतीय सेना के स्थान पर जाकर सुरक्षा दायित्व संभालने की जिम्मेदारी पुरी करने के लिए कहा जाता है, ताकि भारतीय सेना आगे जाकर सरहदों की सुरक्षा कर सके। इस कार्रवाई को रियर एरिया सिक्युरिटी अभ्यास का नाम दिया गया है। इस स्कीम के मुताबिक 19 बटालियन की एक टीम ने अरूणाचल प्रदेश के दो अग्रिम जिलों वेस्ट कमांग एवं तमांग में 5 माउन्टेन डिवीजन के अर्न्तगत दिनांक 01.10.2001 से 08.10.2001 तक रियर एरिया सिक्यूरिटी अभ्यास पूरा किया गया। टीम का नेतृत्व द्वितीय कमान अधिकारी श्री टी. शेखर, एवं उप कमाण्डेंट (परि०) श्री कुशाल सिंह ने किया। टीम नेक अति संवेदनशील टारगेटों को देखा, पहचाना तथा चीन के बार्डर पर बुमला तक के क्षेत्रों का भ्रमण करके इसकी रिर्पोट भारतीय सेना के उच्चाधिकारियों को दी।

इस प्रकार के अभ्यास से बल की परिचालनिक दक्षता में वृद्धि होती है।

कहानी मेरी छुट्टी की

गॉव था बाढ़ की चपेट में
मैंने दिया आवेदन पत्र छुट्टी का
जब प्लाटून कमान्डर के पास गया
मुझे अच्छे से चार बात सुनायी
बोला जब आ जाती है ज्यादा डियूटी
तब जरूर मांगोंगे छुट्टी।
अभी मेरी प्लाटून की नफरी कम
बीस, पच्चीस नफरी लमसम
अभी नहीं मिलेगी छुट्टी
पहले करो डियूटी।
बहुत बिनती किया
फिर मेरी रिकमेन्ड हुआ।
मैं था आउट पोस्ट में
चल आया कम्पनी मुख्यालय सिविल बस में।
सी.एच.एम. ने रास्ते में पाया
पहले बोला बिना परमिशन से कैसा आया।
मैं बोला मेजर जरूरी है छुट्टी
घर मेरा बाढ़ में, जरूरी मेरा उपस्थिति।
फिर एक दुस्तखत हुआ
ऑफिस बाबू के पास आया
वह भी अपना भाषण सुनाया
कितनी बार मैं सावधान हुआ।
ऑफिस बाबू जब मुझे देखा
आवेदन पत्र पास में रखा
फाईल में पत्र आठो लिया
फिर सुनो जो कहानी शुरू हुआ।
साहब भी हमारा बड़ा दस्तूर
ऐसे नहीं करते हैं छुट्टी मंजुर
बार बार कॉलिंग बेल दबाये
छुट्टी का पुरा पटिकुलार मंगाये।
फिर मुझे मिला छुट्टी
ग्राउण्ड में मेरा लगा किट
स्टोर में सामान जमा किया
बैग, अटैची हाथ में लियां

कहानी 60 दिन छुट्टी की
क्या बताउं फौज में भर्ती का।

नं० 951260818
सि० एम. के. दास

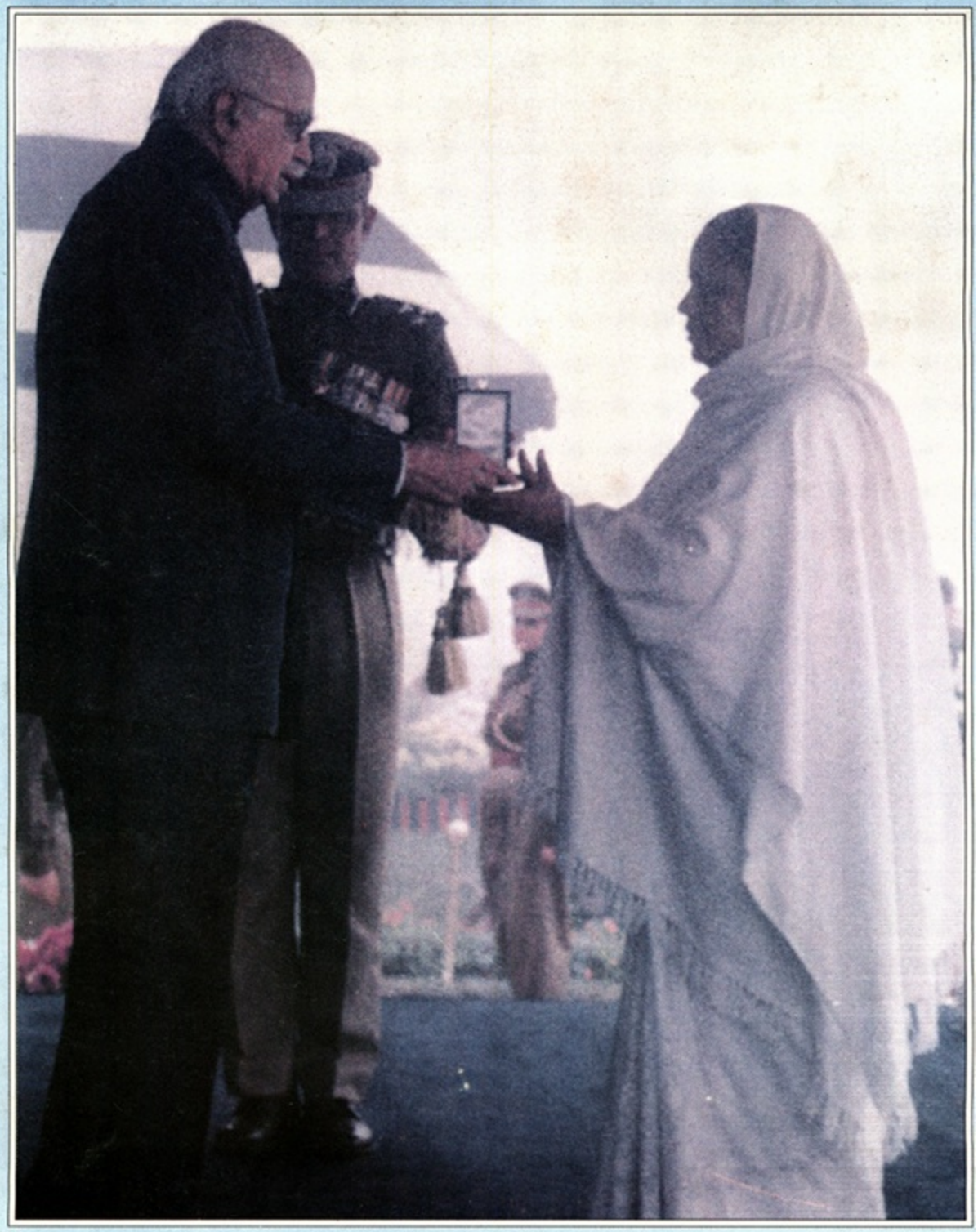


सीआरपीएफ वाईवस एसोशियेशन की अध्यक्षा श्रीमती चित्रा मिश्र तथा एसोशियेशन की अन्य सदस्य



कोरेपु बल वर्षगांठ के अवसर पर लाल किला मैदान (दिल्ली) में कोरेपु बल बैंड प्रदर्शन

Regd. No. 45950/87



शहीद सिपाही एस.ए.करीम की पत्नी केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी से राष्ट्रपति का शौर्य पदक प्राप्त करती हुई

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

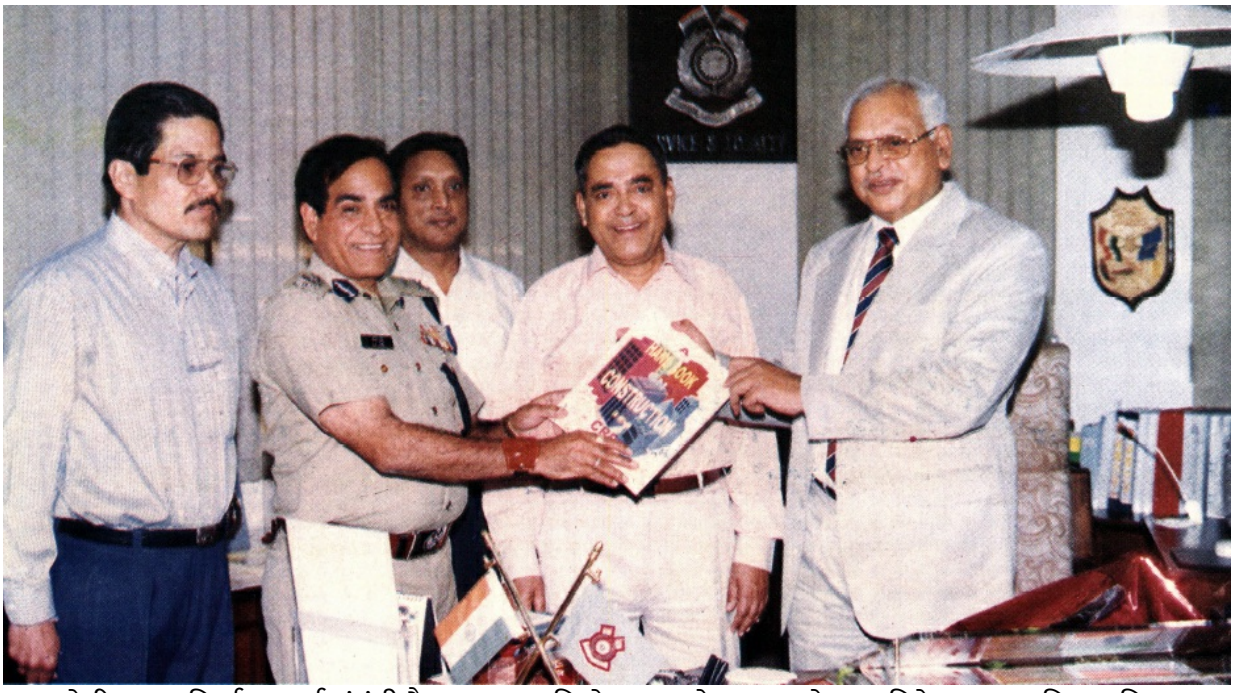
31 मार्च, 2002



केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी कादरपुर (गुड़गाँव) में केरिपु बल अकादमी की आधारशिला रखते हुए



केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी केरिपु बल अकादमी कादरपुर (गुड़गाँव) में शिलान्यास के अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री ओमप्रकाश चौटाला का आभार व्यक्त करते हुए



केरिपु बल निर्माण कार्य संबंधी हैन्ड बुक का विमोचन करते हुए बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड-15 अंक-3
31 मार्च 2002
11 चैत्र, शक 1924

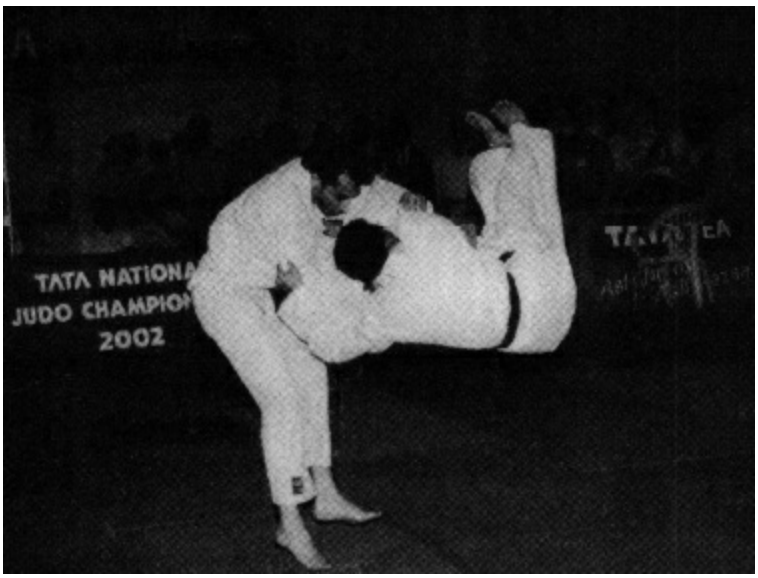
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग के.रि.पु बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1,सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड,नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी, महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ोदा कलां, नई दिल्ली-72



इस अंक में

परोक्ष रूप से चलाए जा रहे युद्ध को रोकने में सी.आर.पी.एफ. की भूमिका अहम

हमारा मकसद अपने देश की हिफाजत कर उसके प्रजातंत्र स्वरूप को बनाये रखना है

केरिपु बल की कबड्डी टीम जीती

केरिपु बल ने तीसरी अखिल भारतीय पुलिस वेट्रन लॉन टेनिस चैम्पीयनशिप जीती

वो दृश्य पूरा फिल्मी था

दिल्ली महानगर निगम चुनाव के लिए केरिपु बल की 35 कम्पनियां तैनात

केरिपु बल की महिला शक्ति

साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने के लिए गुजरात में आर.ए.एफ. तैनात

चिट्ठी समुन्द्र पार की/केरिपु बल ने छत्रपति शिवाजी अखिल भारतीय कबड्डी टूर्नामेंन्ट जीता

लोक सभा अध्यक्ष द्वारा केरिपु बल जवानों को 16 लाख रूपये का नकद ईनाम

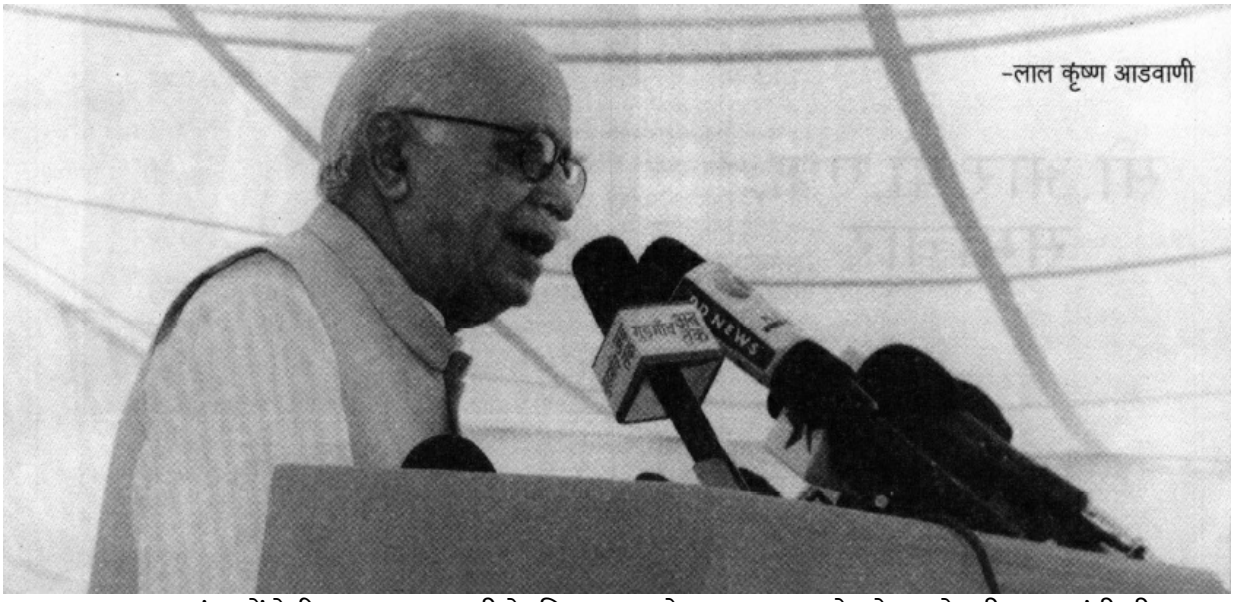
कोरेपु बल केम्प नोमच पोरेसर में एप्टेक कम्प्यूटर एजुकेशन का शुभारम्भ
दिल्ली में आर.ए.एफ, कमांडेंटों का सम्मेलन
तीसरी अखिल भारतीय पुलिस बैंड प्रतियोगिता
दक्षिणी सै० द्वारा 63वीं बटा० "बेस्ट आपरेशनल बटा०" घोषित
ग्रुप केन्द्र बैंगलूर में पर्यावरण संरक्षण : एक सफल प्रयास
माह अक्टू०, नवम्बर तथा दिस० 2001 में मृत कार्मिक
कविता

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

परोक्ष रूप से चलाए जा रहे युद्ध को रोकने में सी.आर.पी.एफ. की भूमिका अहम

-लाल कृष्ण आडवाणी



कादरपुर (गुड़गांव) में केरिपु बल अकादमी के शिलान्यास के अवसर पर बोलते हुए केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी

कादरपुर, गुड़गांव (हरियाणा) में दिनॉक 23/3/2002 को के.रि.पु.बल अकादमी का शिलान्यास करते हुए केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने कहा कि केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल देश का सबसे पुराना बल है तथा इसकी अपनी अलग खासियतें हैं जो अन्य सुरक्षा बलों में नहीं हैं। केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल देश का एक मात्र बल है जिसके पास अपनी महिला बटालियनें हैं तथा साम्प्रदायिक दंगों से निपटने वाली विशेष प्रशिक्षण प्राप्त द्रुत कार्य बल की बटालियनें।

श्री अडवाणी ने आगे यह भी कहा कि 11 सितम्बर तथा 13 दिसम्बर 2001 की घटनाओं को हमेशा याद रखा जायेगा। इन्हीं घटनाओं के कारण विश्व के प्रमुख देशों का आतंकवाद के प्रति नजरिया बदला हैं और आतंकवाद का खातमा करने के लिए भारत के रुख को समझा हैं। पड़ोसी देश द्वारा चलाए जा रहे परोक्ष युद्ध को समाप्त करने में सी.आर.पी.एफ. ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज के परिपेक्ष में सुरक्षा बलों के लिए अस्त्र-शस्त्र संचालन तथा व्यवसायिक महारथ हासिल करने के लिए यह

अकादमी केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल के अधिकारियों के लिए मील का पत्थर साबित होगी। इस अकादमी के पूर्ण रूप से बन जाने पर के.रि.पु.बल के अधिकारी ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य देशों के पुलिस अधिकारी भी प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।

इस अवसर पर बल के महानिदेशक डा.त्रिनाथ मिश्र ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि इस अकादमी को बल में सीधे नियुक्त अधिकारियों को बुनियादी प्रशिक्षण तो दिया जाएगा साथ में विशिष्ट योग्यता प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण चलाए जायेंगे जिससे कि बल के अधिकारी देश की आंतरिक सुरक्षा भंग करने वाले देश विरोधी तत्वों का आधुनिक तकनीकी से मुकाबला सफलता पूर्वक कर सके और देश में अमन चैन कायम हो सके।

इस अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री ओम प्रकाश चौटाला, केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री आई.डी.स्वामी, गृह सचिव श्री कमल पाण्डे तथा केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल के भूतपूर्व महानिदेशक, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के वरिष्ठ अधिकारीगण तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक, श्री जी.झा ने अपने धन्यवाद प्रस्ताव में सभी आमंत्रित अतिथिगणों का इस अवसर पर उपस्थित होने के लिए आभार व्यक्त किया।

हमारा मकसद अपने देश की खिदमत व हिफाजत कर उसके प्रजातंत्र स्वरूप को बनाये रखना है

- डा. त्रिनाथ मिश्र

8वींबटालियन केरिपु बल के दौरे के दौरान आयोजित सैनिक सम्मेलन में बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने कहा कि 37 वर्ष की सेवा में बहुत उतार-चढ़ाव देखे हैं तथा विभिन्न पुलिस संगठनों में काम करने का मौका मिला। अत: इतनी लम्बी सेवा के दौरान जो अनुभव प्राप्त किए हैं, आप सभी को अपने अनुभव के आधार पर तीन बातें बताना चाहता हूँ जिन्हें हमेशा ध्यान में रखना:–

सबसे पहली बात है अपनी पहचान और अपने मकसद को याद रखना। इस पृथ्वी पर तरह-तरह के जीव-जन्तु हैं। हर एक जीव-जन्तु में कुछ खासियत है जैसे बतख का बच्चा पैदा होते ही तैरने लगता है, उसमें इसकी खासियत पैदायशी है। लेकिन मनुष्य में ईश्वर ने सबसे बड़ी चीज दी है-बुद्धि। पशु-पक्षियों में यह कम होती है। चिड़िया घोंसले में रहती आ रही है, लेकिन उसमें परिवर्तन या इजॉफा नहीं कर पाई है। शेर तो हजारों सालों से शिकार कर रहा है लेकिन उसे जानवर मारकर पकाकर

खाने को आज तक नहीं सूझी। चिड़िया बहुत अच्छा घोंसला बनाती है लेकिन घोंसले की डिजाइन आज से 5000 साल पहले था, वही है। उसे नहीं बदला है। लेकिन इंसान अपनी बुद्धि की मदद से अपनी अक्ल से परिवर्तन करता है और विकास करने की कोशिश कर सकता है। इंसान अपनी बुद्धि से अपना विकास कर सकता है। इसलिए उसे सभी जीवों में ऊँचा माना गया। हम सब बुद्धिमान हैं तथा अपनी मेहनत से इम्तहान पास करके इस फोर्स में भर्ती हुए हैं। हम इस नौकरी से अपना तथा अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं, साथ ही साथ इज्जत और मकसद से एक बड़े काम को अंजाम देते हैं। हमारा मकसद अपने देश की खिदमत व हिफाजत कर उसके प्रजातंत्र स्वरुप को बनाये रखना है। हमें हमेशा याद रखना होगा कि हम अपना पेट पालने के लिए ही इस फोर्स में भर्ती नहीं हुए हैं, जनता को हम पर बहुत आशाएं हैं। जनता से विभिन्न करों के रूप में वसूली गई राशि सरकारी खज़ाने में जाती है उसी खजाने से हमारी वर्दी, हमारे हथियार, तनख्वाह, भत्ते, गाड़ियाँ, मकान आदि सभी दिए जाते हैं। इसी लिए गरीब से गरीब आदमी भी हम से उम्मीद रखता है कि देश में अमन, शांति का माहौल हो, दिन-रात जो वे कमा रहे है उसे कोई जबरदस्ती उनसे लूटकर न ले जाए। वे चाहे जैसी सरकार बना सके। कोई जोर-जबरदस्ती से उसे पलट न दें।

जब देश आजाद हुआ तो हमने संविधान बनाया। यह तय किया कि अब लड़ाई के जरिये सरकारे नहीं बदलेंगी, बदलेंगी वोट के जरिये। जिस पार्टी को बहुमत मिलेगा वही सरकार बनाएगी, जिसको नहीं मिलेगा उसकी सरकार नहीं बनेगी। पहले लड़ाईयाँ होती थी तब सरकारें बदलती थीं जैसे पानीपत की पहली लड़ाई, पानीपत की दूसरी लड़ाई, प्लासी की लड़ाई। हर समय कुछ ऐसे लोग रहे हैं जो चाहते है कि जोर जबरदस्ती से बम, पिस्तौल, हथियारों के जरिये सरकार और पूरी सोसाईटी पर कब्जा कर लें। परन्तु हमारा काम है उनका सामना करना। बाहरी मुल्क से देश की हिफाजत करना फौज का काम है, हमारा काम है जो देश के अन्दर इस तरह के अनासिर हैं, जो अन्दर में सैंध लगाना चाहते हैं, जोर-जबरदस्ती करते हैं उनको रोकना और बरबाद कर देना। हमें अपने मकसद को हमेशा याद रखना होगा। यह कोई छोटा काम नहीं है, हमें और इसके लिए तैयारी करनी होगी। दुनियाँ भर में चलन चल गया है कि डरा धमका कर, दहशत के जरिये अपनी बात मनवा ली जाए। हम इसे नहीं चलने देंगे, अगर इस मकसद में हम कामयाब नहीं हुए तो हमने अपनी बुद्धि का इस्तेमाल नहीं किया। हमारा इंसान होना न होना एक बराबर है। हजारों सैंकड़ो लोग रोज मरते हैं, पैदा होते हैं, कितनो को संतोष है कि उन्होंने अपना कार्य पूरा किया। जो मरकर भी अपने मकसद को पूरा करते है वही सही तौर पर जीते हैं। जब महाभारत की लड़ाई छिड़ गई, दोनों सेनाएं आमने-सामने खड़ी हो गयीं तो अर्जुन ने कहा कि ये हमारे चाचा, भाई, गुरु और मामा हैं, हम इनको कैसे मार सकते हैं। श्री कृष्ण ने कहा तुम सिपाही हो तुम्हारा काम युद्ध करना। यह सोच विचार तुम्हें पहले करना था, वो वक्त अब निकल गया है, अब लड़ाई के मैदान में खड़े हो तो लड़ाई करो। यही तुम्हारा कर्तव्य है। उस कर्तव्य को पूरा करके अपने धर्म का पालन

करो। जो काम अपनी मर्जी से अपने हाथ में लिया जाता है उसे पूरा करना ही हमारा धर्म है। यही गीता का ज्ञान है। जो काम करो जी-जान से उसे पूरा करो। हमारा काम है देश की अखंडता को कायम रखना और शांति बनाए रखना, प्रजातन्त्र को कायम रखना। अत: इस काम को हम जी-जान लगाकर पूरा करेंगे।

दूसरी बात याद रखो कि पूरे हिन्दुस्तान ने आज से नहीं पिछले साठ सालों से हमारी फोर्स पर भरोसा किया है। हमारे पहले के साथियों ने बहुत अच्छी मिसालें कायम की हैं। दुनियाँ में कोई ऐसी दूसरी फोर्स नहीं है जिसकी दो कम्पनियों ने दुश्मन की पूरी ब्रिगेड के पांव उखाड़ दिए थे। ये मिसाल सी.आर.पी.एफ.की दूसरी बटालियन थी जिसने सरदार पोस्ट पर सन् 1965 में 9 अप्रैल को रन ऑफ कच्छ की खाड़ी में कायम की थी। हम उसी फौज के सदस्य हैं। इसी लिए इस फोर्स की बड़ी इज्जत है। जो बड़े लोग होते हैं, वे इज्जतदार होते हैं, वो अपने बच्चों को समझाते हैं- होशियार रहना, कोई गलत काम नहीं करना, अपने खानदान पर बट्टा न लगे, इसी तरह हम इज्जतदार फोर्स के अंग हैं, एक बड़े खानदान के बच्चें हैं। इस बात को हमेशा ध्यान रखना, कोई हरकत हमारी ऐसी नहीं होनी चाहिए जिससे कि इसकी शान को आँच आए।

तीसरी बात यह है कि हमेशा सोचते रहो। हर जवान, उस्ताद साहिबान, अफसरान को सोचना है कि हम इस काम को आज कैसे बेहतर कर सकते हैं। काम करते-करते एक रुटीन का ढर्रा चल निकलता है और हम अभ्यस्त हो जाते हैं। लेकिन कभी-कभी मन में थोड़ी ढिलाई आ जाती है और ऐसा लगता है कि यही काम तो रोज करते हैं।

जमाना इतनी तेजी से बदल रहा है, आने वाला कल आज की तरह का नहीं होगा। क्या कोई सोच सकता था कि अमेरिका में हवाई जहाज को हाई-जैक करके वहीं की महत्वपूर्ण इमारतों पर गिरा दिया जाएगा? पहले हाई-जेक करके दूसरे देश में ले जाते थे, पैसा वसूलते थे, अपनी मांग मनवाते थे। अब माहौल बदल रहा है। पहले एम्बुस व घात लगा के हमला करते थे, अब फिदायीन हमला होने लगा है। हमेशा ये सोचना है कि हम अपने काम को कैसे बेहतर कर सकते हैं। दुश्मन क्या हरकत कर सकता है? हम अपना बचाव करते हुए उसे बरबाद कैसे कर सकते हैं? एक रास्ते से चल रहे हो तो हो सकता है दुश्मन को पता चल गया हो या दूसरा रास्ता किस तरह बदल सकते हैं। पहले ऐसा मोर्चा बना था अब दूसरे तरह का मोर्चा कैसे बन सकता है। इस पर लगातार हमें सोचते रहना है। अब अक्ल की लड़ाई है, हथियारों की कम। जो अपनी अक्ल का इस्तेमाल करेगा, कामयाब होगा। ये लड़ाई एक-दो दिन की नहीं है, ये लड़ाई सालों-सालों तक चल सकती है, लेकिन जीत हमारी ही होगी क्योंकि हम सही लाइन पर हैं। इसमें हमारा स्वार्थ नहीं है। ये लड़ाई हम लड़ रहे है अपने देशवासियों के लिए।

जब पंजाब में आतंकवाद आया तो बड़ी घबराहट थी। लोगों का ख्याल था कि यह खत्म नहीं होगा। लेकिन हम वहां पर कामयाब रहे, क्योंकि इसमें हमारा कोई स्वार्थ

नहीं था। हमें अमृतसर में कई मकान रहने को इस लिए दिए गए थे हम पुण्य कार्य में लगे हुए थे, परमार्थ में लगे हुए थे। हमने चोटें भी झेली हैं, और फतेह हासिल की है। पूरी तैयारी, सिखलाई के साथ फोर्स की इज्जत को दिल में रखते हुए हर रोज हमें अपने काम को बेहतर बनाना हैं। यहीं तीन बातें मुझें कहनी थी।

हमारी फोर्स की जितनी भी यूनिटें हैं सब दूर दराज के इलाकों में लगी हुई हैं लेकिन दिन-रात चिंता लगी रहती है, कि हमारे साथी, हमारे जवान कैसे हैं, किस तरह से हैं? उनका क्या काम है? कम्यूनिकेशन के जरिए खबर मिलती रहती है और मैं कोशिश करता हूँ कि अधिक साधन हम सरकार से और हांसिल कर सके जिससे अपने साथियों की जिंदगी बेहतर से बेहतर बनाने की कोशिश की जा सके। परेशानियां बहुत हैं परेशानियों का मुकाबला दो चीजों से किया जाता है एक तो प्रभु का नाम और दूसरा आपस में मेल मुहब्बत। प्रभु के जिस स्वरुप को आप मानते हो उसका नाम लेते रहिये। किसी को बजरंग बली पर विश्वास है, किसी को रामजी पर, और किसी को वाहे-गुरु पर और किसी को अल्लाह पर, उसका नाम लेते रहिए, इससे मन को शांति मिलेगी, आपस में मेल मुहब्बत रखिए। आपस में भाईयों की तरह रहिए। हम दूसरों की रक्षा करने के लिए हैं। हमारी रक्षा कौन करेगा। एक दूसरे के दुख-दर्द को बांटे। हाथ की पांचों उंगलियों की तरह इकट्ठे रहोगे तभी हमारी मुट्ठी मजबूत रहेगी। हम आपस में मिलकर रहें, हमारी ढाल यही है और हमारी तलवार हमारा उमंग, हमारा जोश भी यही है।

एक प्रार्थना मैं हमेशा दोहराता हूं जो दशमेश गुरु, गुरु गोविंद सिंह जी की वाणी है:–

देय शिवा वर मोहे इहै शुभ
कर्मण ते कबहूँ न डरों
न डरों अरिसों, जब जाए लड़ो निश्चय
कर अपनी जीत करों।

यह प्रार्थना है, कि अच्छा काम करने में कभी पीछे न हटो, अगर दुश्मन सामने आ जाए तो दिल में कभी डर पैदा न हो। दिल में उमंग पैदा हो, उस पर हावी हो और जीत हासिल करो। देश के लिए जान देना अच्छी बात है लेकिन देश के लिए जान लेना उससे भी अच्छी बात है। यही प्रार्थना मैं करता हूँ कि हमारे जितने भी प्रभु के स्वरुप, गुरु संत हैं, उन सभी की कृपा आपकी यूनिट पर हो। आप लोग उन्हीं के आदेशों पर चलकर देश, यूनिट का नाम ऊँचा करो।

सी.आर.पी.एफ. सदा अजय,
भारत माँ की जय।

के.रि.पु.बल की कबड्डी टीम जीती

14से 17 फरवरी, 2002 तक मुम्बई में आयोजित यंग वर्भा देवी अखिल भारतीय ए ग्रेड कबड्डी टूर्नामेंट में केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल की कबड्डी टीम ने भाग लेकर प्रथम स्थान हासिल किया। सब इंसपेक्टर मनप्रीत सिंह को टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया।

के.रि.पु.बल ने तीसरी अखिल भारतीय पुलिस वेट्रन लॉन टेनिस चैम्पीयनशिप जीती

के.रि.पु.बल ने 25 फरवरी से 1 मार्च 2002 तक चण्डीगढ़ में आयोजित तीसरी अखिल भारतीय पुलिस वेट्रन लॉन टेनिस टूर्नामेंट की चैम्पीयनशिप जीती।

उक्त टूर्नामेंट की ओपन सिंगल चैम्पीयनशिप (45 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में) कमांडेंट श्री आर.के.स्वामी ने जीती।

के.रि.पु. बल का प्रतिनिधित्व कमांडेंट श्री आर.के.स्वामी तथा श्री अनिल मोहन ने किया तथा वेट्रेन ओपेन डबल्स टेनिस की चैम्पीयनशिप जीती।

वो दृश्य पूरा फिल्मी था।

महिपाल सिंह,
कमाण्डेंट 122 बटालियन।

योंतो अपने पूरे सेवा काल के दौरान इतने अधिक खट्टे-मीठे अनुभवी दौर से गुजरता रहा हूँ कि उन पर एक पूरी किताब लिखी जा सकती है, किन्तु 25 अगस्त 1993 का दिन अब भी रह रहकर दिमाग में कौंधता हैं। ये वो वक्त था, जब पंजाब में आतंकवाद अपने चरम पर था। उस वक्त मैं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 31 बटालियन में डिप्टी कमाण्डेंट के पद पर तैनात था।

25 अगस्त 1993 की शाम करीब 3:45 बजे पंचकुला निवासी पूनम और उसकी सहेली अंजू, यूनिवर्सिटी कैम्पस के अंदर ही रहती थी। एक मोपेड में सवार हो कर पी.जी.आई. की ओर से विश्वविद्यालय परिसर की ओर आ रही थी। पूनम मोपेड चला रही थी। जैसे ही उनकी मोपेड विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार के पास पहुँची, तभी रोंग साइड से आती तेज गति की एक मारुति कार मोड़ लेकर विश्वविद्यालय द्वार की ओर

मुड़ी, मगर एकदम सामने मोपेड के आ जाने से कार के चालक ने अपना नियंत्रण खो दिया और तेज गति से यूनिवर्सिटी की ओर आती पूनम और अंजू की मोपेड को टक्कर मारी।

कार की टक्कर से अंजू नीचे गिर गई जबकि पूनम कार के बोनट पर गिरी, इससे पहले कि कोई कुछ समझता कार ड्राईवर घबरा गया और कार को वहां से भगा ले गया। पूनम कार के अगले शीशे से टकराई थी, जिससे कार का शीशा टूट गया और पूनम के सिर से बुरी तरह खून बहने लगा। चूंकि कार टक्कर मारने के बाद भी रुकी नहीं, घायल पूनम ने किसी तरह कार के विंडस्क्रीन को जकड़ लिया और तेज गति से भागती कार पर खुद को संभालते हुए किसी प्रकार कार की छत पर आ गई और दोनो ओर के दरवाजों को किसी तरह पकड़ कर छत पर चिपकी रही।

अब नजारा ये था कि एक लड़की जिसका चेहरा खून से सराबोर था, एक ऐसी कार की छत पर किसी तरह स्वयं को संभाले हुई थी, जिस कार का विंडस्क्रीन टूटा हुआ था और कार अपनी पूरी गति से चंडीगढ़ की सड़क पर दौड़ रही थी और ड्राईवर की कोशिश थी कि वह लड़की को छत से गिरा दे। मगर लड़की ने छत की दोनों ओर इतनी मजबूती से पकड़ा हुआ था कि ड्राईवर अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पा रहा था।

कार में पांच लोग सवार थे, लड़की बार-बार खिड़की से झांककर उन्हें कार रोकने के लिए चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थी, मगर इन लड़को पर उसकी चीखों का कोई असर नहीं हो रहा था। लड़की की चीखों से घबरा कर ड्राइवर और तेजी से कार भगा रहा था। अब तक कार लगभग आधा किलोमीटर की दूरी तय कर चुकी थी।

पंजाब विश्वविद्यालय की व्यस्त सड़क पर इस नजारे को कई लोगों ने देखा, कुछ ने इसे विश्वविद्यालय चुनाव को लेकर किये जाने वाला स्टंट समझा, कुछ ने इसे अपहरण का मामला समझा, कोई इसे आतंकवादी घटना समझ रहा था। और कुछ लोग इसे फिल्मी शूटिंग का हिस्सा समझकर आसपास किसी कैमरे की तलाश कर रहे थे। लेकिन कुछ लड़कों ने महसूस किया कि लड़की के चेहरे से वाकई खून बह रहा है और वह सहायता के लिए चिल्ला रही है तो उन्होंने कार का पीछा करना शुरू किया।

कार जैसे ही विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य केन्द्र के सामने से गुजरी तो अपनी जीप में बैठे मैंने भी यह नजारा देखा। मेरा ड्राईवर पास ही स्थित डाकखाने से डाक सामग्री लेने गया था और मैं जीप में बैठा उसका इंतजार कर रहा था। स्थिति की गंभीरता को मैंने पलभर में भांप लिया और बिना ड्राईवर का इंतजार किये मैंने स्वयं उस कार का पीछा करना शुरू कर दिया। जैसे ही कार यूनिवर्सिटी के दूसरे द्वार के पास पहुंची कार के धीमे होते ही पूनम ने मौका देखकर कार की छत से छलांग लगा दी। मैनें तत्काल अपनी जीप उसकी बगल में रोकी और अपने गनमैन और कुछ लड़कों को उस लड़की को तुरंत अस्पताल ले जाने को कहा।

उस वक्त मेरे दिमाग में ये ही था कि हो न हो कार में आतंकवादी सवार हों, अत:

लड़कों के लिए व्यवस्था कर मैं स्वयं उस कार के पीछे हो एक गांव मुलानपुर में रूक गया। कार को वहीं छोड़कर उसके सवार एक घर में छिप गये थे।

मुझें डर था कि देर होने से वो लड़के भाग सकते थे। मैं नहीं जानता था कि उनके पास हथियार हैं या वो निहत्थे हैं। अत: मैंने फौरन अपनी यूनिट से मदद मांगी, और मदद के आने तक उन पर नजर रखे रहा।

गांव वालों ने मुझें हरसंभव मदद दी। वह लड़के भागने की कोशिश न करें, इसलिए मैंने हवा में कुछ गोलियां भी फायर की। लड़के डर गये और घर में दुबके रहे। थोड़ी ही देर में हमारी पार्टी वहां पहुंच गयी, लड़कों को आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी गयी, और उन पांच में से तीन लड़कों ने आत्मसमर्पण कर दिया। दो मौका देखकर पहले ही फरार हो चुके थे।

बाद में पता चला कि उस समय पांचों शराब के नशे में धुत थे। तीनों लड़कों को पुलिस के हवाले कर दिया गया। छानबीन के बाद प्रकाश में आया कि पांचों लड़के मुलानपुर और मणिमाजरा के आसपास के ही रहने वाले थे। पांचों आपराधिक प्रवृति के लड़के थे। बाद में पुलिस ने बाकी दोनों लड़कों को भी पकड़ लिया। यह दुर्घटना महज एक हादसा थी। एक ऐसा हादसा जो आज करीब 10-12 साल बाद भी कभी-कभी मेरी आंखों के आगे कौंध जाता है।

इस हादसे में पूनम का चेहरा बुरी तरह घायल हो गया था और उसकी सहेली अंजू की जांघ की हड्डी टूट गयी। दोनों ही उस समय कॉलेज में एम0 एस0 सी0 (गणित) में दाखिला लेने जा रही थी, इस हादसे में उनके प्रमाण-पत्र, रूपये इत्यादि सब गुम हो गये, मगर प्राण बच गये। बाद में प्रमाण-पत्र भी मिल गये।

बाद में जब मैं पूनम से मिला तो कृतज्ञता से भरी उसकी आँखों ने वह सब कुछ कह दिया, जो वह जुबान से कहने में असमर्थ थी और उसकी वह खामोश कृतज्ञता मुझें आज तक याद है।

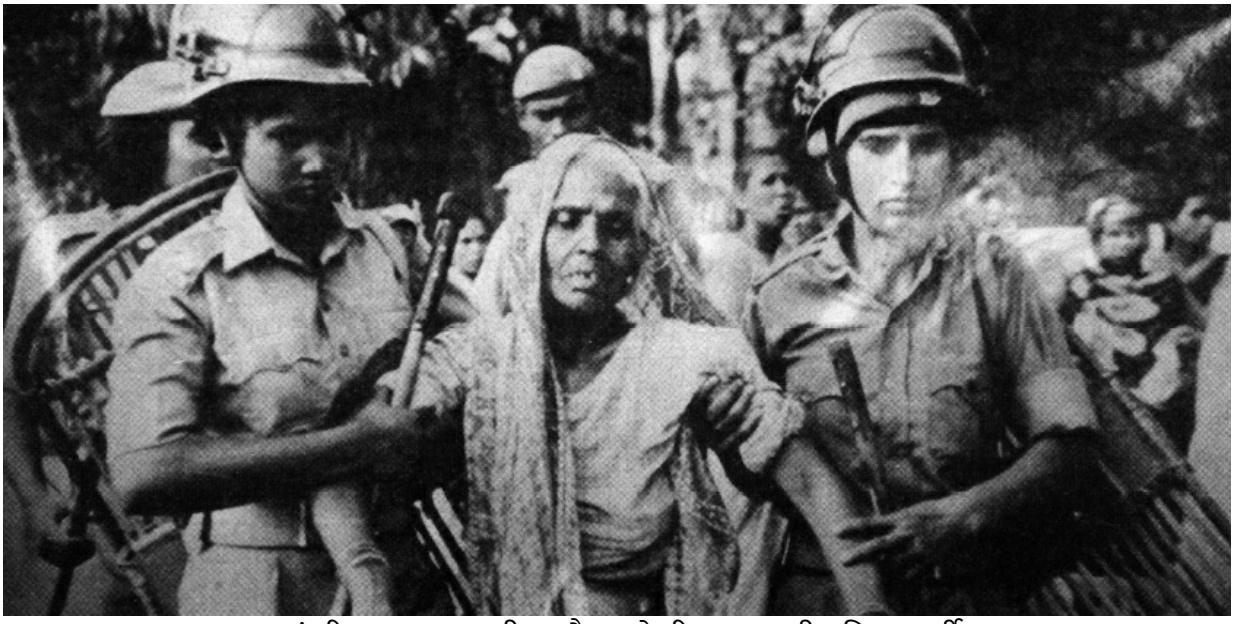
अगले दिन के अखबारों में इस घटना की खबर प्रमुखता से छपी थी, जिसमें मेरा जिक्र भी था, मगर मेरे लिए इस कारनामे का सबसे बड़ा ईनाम पूनम और अंजू की आँखों से झलकती कृतज्ञता और अधरों पर लौट आयी मुस्कान थी।

दिल्ली महानगर निगम (एम.सी.डी.) चुनाव के लिए के.रि.पु. बल की 35 कम्पनियां तैनात

देश में शांति पूर्वक चुनाव सम्पन्न कराने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं । 24 मार्च, 2002 को दिल्ली महानगर निगम (एम.सी.डी.) चुनावों को सम्पन्न कराने के लिए के.रि.पु. बल की 35 कम्पनियां तैनात की गई । के.रि.पु.

बल की 3 कम्पानियों को रिज़र्व में रखा गया था।

के.रि.पु. बल की महिला शक्ति



आंतरिक सुरक्षा डयूटी पर तैनात के.रि.पु. बल की महिला कर्मी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में दो महिला बटालियन है। यह महिला बटालियनें बल की महिला शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं तथा होनहार महिलाओं को इस बात का संदेश देती हैं कि वे किसी भी कार्य में पुरुषों जहाँ तक कि कानून व्यवस्था तथा राष्ट्र की एकता एवं अखंण्डता बनाये रखने के काम में भी पीछे नहीं है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ही देश का एक ऐसा अर्धसैनिक बल है जिसकी दो महिला बटालियनें हैं।

पहली 88(महिला) बटालियन 6 फरवरी 1986 को खड़ी की गई। इस बटालियन ने मेरठ दंगों व श्रीलंका में अपने उत्कृष्ट कार्यो के लिए पदक प्राप्त किए हैं। अभी वर्तमान में इस बटालियन की महिला कर्मी इम्फाल(मणिपुर) तथा दिल्ली में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात हैं। जनता की अपेक्षानुसार बल की महिला कर्मी अपनी डयूटियों का निष्पादन पूरी निष्ठा के साथ कर रही हैं तथा उन्हें सेना, राज्य तथा सिविल प्राधिकारियों से पदक तथा प्रशंसा प्राप्त हो रही है।

13 दिसम्बर 2001 को जब संसद परिसर में आतंकवादी घुसे तो डयूटी पर तैनात इस बटालियन की ही महिला सिपाही कमलेश कुमारी ने अदम्य साहस का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर हाजिर जवाबी एवं सजगता का परिचय देते हुए

पारेसर में तैनात अन्य सुरक्षा बलों को सचेत किया। इसमें वह स्वयं आतंकवादियों की गोली का निशाना बनी। इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर सर्वोच्च शौर्य पदक "अशोक चक्र" मरणोपरांत प्राप्त करने वाली देश के इतिहास में पहली महिला बनी है।

इससे पहले भी 16 जनवरी 2001 को इस बटालियन की एक अन्य महिला सिपाही बिन्दु कुमरे श्रीनगर हवाई अड्डे पर फिदायीन हमले में अपने साथियों की सुरक्षा करते हुए शहीद हुई।

श्रीलंका में भी इस महिला बटालियन की एक कम्पनी भारतीय शांति सुरक्षा बल के रूप में तैनात की गई थीं। इस बटालियन की महिला सिपाही विमला देवी को श्रीलंका में उनके प्रशंसनीय कार्यों के लिए सेना मेडल से नवाजा गया।

इस बटालियन की सफल उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए बल ने दूसरी 135 (महिला) बटालियन अप्रैल 1996 में गांधीनगर में खड़ी की तथा इस बटालियन की महिला कर्मी इस समय श्रीनगर(जम्मू एवं कश्मीर), अयोध्या(उ०प्र०), गोहाटी(असम) तथा गांधीनगर (गुजरात) में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात हैं।

के.रि.पु. बल मुख्यालय में नए महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)



श्रीविकम श्रीवास्तव ने **1** अप्रैल **2002** से के० रि० पु० बल मुख्यालय नई दिल्ली में पुलिस महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय) का पद भार संभाल लिया है। श्री विक्रम श्रीवास्तव भारतीय पुलिस सेवा के 1973 बैच के उत्तर प्रदेश केडर के अधिकारी हैं।

श्री विक्रम श्रीवास्तव उत्तर प्रदेश पुलिस में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर आसीन रह चुके हैं, जिनमें पुलिस महानिरीक्षक लखनऊ जोन तथा अपर महानिदेशक (सुरक्षा) उनकी प्रमुख नियुक्तियाँ रही। इससे पूर्व श्री विक्रम श्रीवास्तव एस० पी० जी० में भी 12 वर्ष तक प्रतिनियुक्ति पर तैनात रह चुके हैं। इससे पहले वह केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में पुलिस महानिरीक्षक स्पैशल सेक्टर के पद पर तैनात थे।

पुलिस महानिरीक्षक सम्भरण एवं निर्माण



पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) मणिपुर एवं नागालैंड से स्थानान्तरण के फलस्वरूप श्री रविशंकर नोटियाल ने 1 अप्रैल 2002 को बल मुख्यालय, नई दिल्ली में पुलिस महानिरीक्षक सम्भरण एवं निर्माण का कार्यभार ग्रहण किया। सेना पृष्ठभूमि वाले श्री नोटियाल के० रि० पु० बल में एक अगस्त **1968** को राजपत्रित अधिकारी के रूप में शामिल हुए थे।

श्री नोटियाल को परिचालन तथा प्रशिक्षण के साथ–साथ फील्ड तथा स्टाफ संबंधी कार्यों का विस्तृत अनुभव है। श्री रवि शंकर नोटियाल आतंकवाद तथा अलगाव–वाद प्रभावित पूर्वोत्तर राज्यों तथा पंजाब में तैनात विभिन्न यूनिटों में कमांडेंट के रूप में कार्य कर चुके हैं। श्री नोटियाल आर. टी. सी.–1 में प्रिन्सीपल तथा सेक्टर कार्यालय में स्टाफ अधिकारी के पद भी पर कार्य कर चुके हैं। पुलिस उप महानिरीक्षक मणिपुर, त्रिपुरा तथा जम्मू के पद पर तैनाती के दौरान श्री नाटियाल प्लानिंग व सम्वन्य अभियानों में सक्रीय रूप से शामिल हुए। ये मानचेस्ट विश्वविद्यालय, यू०के० सहित अनेक स्थानों पर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

साम्प्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के लिए गुजरात में आर.ए.एफ. तैनात

गुजरात में गोदरा, बड़ौदा, अहमदाबाद तथा सुरत जिलों में साम्प्रदायिक सद्भाव तथा शांति बनाए रखने के लिए आर.ए.एफ. की चार कंपनियां तैनात की गई।

अहमदाबाद, वस्त्राल के आस–पास के गांवो में रहने वाले अल्पसंख्यक समुदाय के करीब चार सौ लोगों को 100 वीं बटालियन आर.ए.एफ. के जवानों ने उपद्रवियों से रक्षा ही नहीं की बल्कि उन्हें चौबीसों घंटे सुरक्षा भी प्रदान की।

दंगा प्रभावित शाहपुर क्षेत्र में जब दंगाई 50 अल्प संख्यक समुदाय के लोगों का पीछा कर रहे थे तब 100वीं बटा. आर.ए.एफ. के जवानों ने उन्हें उपद्रवियों/दंगाइयों से बचाया तथा सुनिश्चित सुरक्षा प्रदान की। यही नहीं जब 500 दंगाई गुजरात के जिला गोदरा के गांव ईराल में छुपे 50 ग्रामवासियों का पीछा कर रहे थे तब आर.ए.एफ. के जवानों ने 39 ग्रामवासियों को उपद्रवियों से बचाया तथा उन्हें सुनिश्चित सुरक्षा प्रदान

की। गोदरा जिलें में अल्प संख्यक तथा ग्रामीण क्षेत्रों में साम्प्रदायिक सौहाद कायम करने के लिए आर.ए.एफ. तैनात है।

घायल सिविलियनों की सहायता के लिए चिकित्सा अधिकारियों ने भी अपनी टीम सहित आर.ए.एफ. जवानों के साथ चौबीसों घंटे सहायता प्रदान की।

आर.ए.एफ. केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल की एक विशेष शाखा है जिसका गठन 7 अक्टूबर 1992 में जातीय दंगों तथा दंगा जैसी स्थिति से निपटने के लिए किया गया था। इसकी उपस्थिति मात्र से ही दंगा प्रभावित स्थिति सामान्य हो जाती है।

चिट्ठी समुन्दर पार की

कोसोवो में भारतीय शांति सुरक्षा टुकड़ियों के रूप में तैनात आर. ए.एफ. के कोन्टीजेन्ट कमांडर ने बताया कि कोसोवो में तैनात आर ए एफ के जवानों ने 53 वां गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 2002 को बड़ी धूमधाम से मनाया। इस समारोह में भारतीय प्रशासनिक, सेना, पुलिस और गैर सरकारी संस्थाओं में कार्यरत भारतीय नागरिकों ने आर. ए. एफ. के अधिकारियों के साथ भारतीय ध्वज फहराकर गणतंत्र दिवस मनाया। ध्वजारोहण के बाद खेल प्रतिस्पर्धाएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा भोज का आयोजन किया गया जिसमें एस.आर.एस. जी के पुलिस कमिश्नर सहित इग्लैण्ड, नार्वे तथा इटली के एफ.ओ.आर कमाण्डर, स्पेन, यूक्रेन, जोर्डन, पाकिस्तान एवं पौलेंड के कमाण्डरों के अलावा क्षेत्रीय कमाण्डरों, इंजीनियरों तथा विभिन्न यू.एन.एफ.आई. के कार्यालय प्रमुखों ने भाग लिया। गणतंत्र दिवस के अवसर पर हमारे कोन्टीजेटों द्वारा इण्डियन बैडमिन्टन टूर्नामेन्ट आयोजित किया गया तथा हमारे ही खिलाड़ियों ने सिंगल तथा डबल दोनों खिताब जीते। दूसरा सिंगल खिताव नान कोन्टीजेटों ने जीता। कार्यक्रम को के.एच.ओ.आर मीडिया द्वारा कवर किया गया। पुलिस कमिश्नर ने पुरस्कारों का वितरण किया तथा कोन्टीजेटों की कार्य कुशलता की सराहना की। एस.आर.एस.जी. प्रमुख सी.चार्ल्स ब्रयासो तथा पुलिस कमिश्नर श्री क्रिस्टोफर अलविस्टन ने विजिटर पुस्तिका में हस्ताक्षर किये तथा भारतीय एस.पी.यू. टीम द्वारा कोसेवो मिशन के तहत की गई उत्कृष्ट सेवाओं की सराहना की तथा भारतीय पुलिस की उच्च व्यावसायिकता, कार्य कुशलता, प्रतिष्ठा, खेल प्रतिभा, उत्कृष्टता एवं आदर सत्कार की परम्पराओं की सराहना की।

केरिपु बल ने छत्रपति शिवाजी अखिल भारतीय कबड्डी

टूर्नामेन्ट जीता



छत्रपति शिवाजी अखिल भारतीय कबड्डी टूर्नामेंन्ट जीतने वाली केरिपु बल टीम एवं कोच सहायक कमांडेंट अमरसिंह ट्राफी के साथ

महाराष्ट्र सरकार तथा विधर्भा कबड्डी एशोसिएसन द्वारा दिनांक 13/3/2002 से 17/3/2002 नागपुर में आयोजित छत्रपति शिवाजी अखिल भारतीय कबड्डी टूर्नामेंन्ट में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम ने भाग लिया तथा राजस्थान की कबड्डी टीम को हराकर केरिपु बल की टीम ने स्वर्ण पदक तथा ट्राफी जीती।

केरिपु बल कबड्डी टीम के उप निरीक्षक सुरेन्द्र कुमार को सर्वश्रेष्ठ राइडर घोषित किया।

लोक सभा अध्यक्ष द्वारा के.रि.पु.बल जवानों को 16 लाख रुपये का नकद पुरस्कार



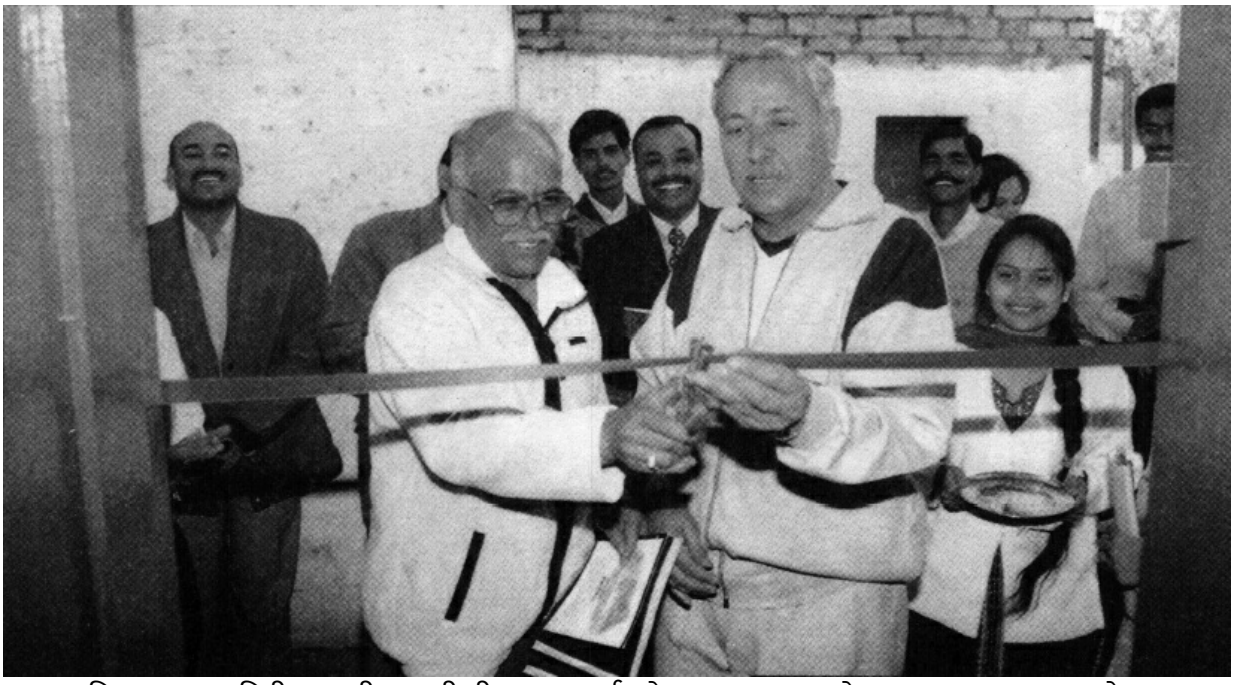
13 दिसंबर *2001* को संसद पर हुए फिदायीन हमले को नाकाम करने वाले केरिपु बल के जवानों से हाथ मिलाते प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेई

13दिसंबर 2001 को संसद भवन पर फिदायीन हमले को विफ करने वाले केरिपु बल के वीर जवानों को माननीय लोकसभा अध्यक्ष ने उनके साहसिक कार्य के लिए 16 लाख रूपये का नगद पुरस्कार दिया है।

पुरस्कार प्राप्त करने में स्वर्गीय सिपाही(महिला) कमलेश कुमारी, 88 (मं.)बटा. के.रि.पु. बल के परिवार को 2 लाख रूपये की वित्तीय सहायता प्रदान की। स्पेशल डयूटी ग्रुप (एस.डी.जी.) के सहा. कमांडेंट आनंद झा, सिपाही राकेश कुमार महिपाल, हंसराज, 23 बटा. के हवलदार वाई. बी. थापा, सिपाही सुखविन्दर सिंह तथा ए.आर.चियारी, प्रत्येक को एक-एक लाख रूपये जबकि एस. डी. जी. के ही उप निरीक्षक नीरज पालीवाल, हवलदार होरो मुकुद, सिपाही श्यामबीर सिंह, 36 बटा. के.रि.पु.बल के हवलदार हर्ष सिंह, सिपाही रामेश्वर राम, मनोज कुमार, पी. कालीमुथू, मुफत लाल तथा 23 बटा. के.रि.पु. बल के निरीक्षक मोहन प्रसाद, हवलदार जी. अप्पा राव, सिपाही विजय बहादुर सिंह, कुलवंत सिंह, डी. संतोष कुमार तथा आर. शिव चन्द्र रेड्डी, प्रत्येक को पचास-पचास हज़ार रूपये का नकद पुरस्कार दिया गया।

नीमच के.रि.पु.बल केम्प परिसर में एप्टेक कम्प्यूटर

एजुकेशन का शुभारम्भ ।



पुलिस उप महानिरीक्षक, नीमच, श्री बी. आर. शर्मा एप्टेक कम्प्यूटर एजुकेशन का शुभारम्भ करते हुए

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में दैनिक काम-काज में कम्प्यूटर की बढ़ती उपयोगिता एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, नीमच कैम्पस में "एप्टेक" एक कम्प्यूटर सेंटर 26 जनवरी, 2002 से प्रारम्भ हुआ, जिसमें निम्नलिखित कोर्स चलाए जा रहे हैं :-

(अ) नो युअर डेस्क टॉप एंड "सी सी सी" - 03 माह

(ब) सी डब्ल्यूडीपी (सर्टिफिकेट इन वेब डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग एंड "सीसीसी") - 06 माह

(स) डीडब्ल्यूडीपी (डिप्लोमा इन वेब डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग) एंड "सी" लेवल कोर्स - 12 माह

2. एप्टेक कम्पयूटर सेंटर के केम्प परिसर मे प्रारंभ को जाने से कार्मिकों एवं उनके बच्चों को कम्प्यूटर के व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने में सुविधा होगी। "एप्टेक द्वारा उक्त कोर्स बाजार के दाम से आधे दाम पर केवल केरिपुबल के कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों के लिए चलाए जा रहे हैं। यह कार्यक्रम भारत सरकार से मान्यता प्राप्त है। प्रशिक्षण की समाप्ति पर प्रशिक्षणार्थियों को दो प्रमाण-पत्र जारी किए जाएंगे, एक एप्टेक सेंटर से एवं दूसरा भारत सरकार की ओर से। एप्टेक कम्पयूटर सेंटर में वर्तमान में 15 प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षणरत हैं एवं सम्भवत: स्कूल एवं कालेज की वार्षिक परीक्षाएं पूर्ण होने के बाद इनकी संख्या में वृद्धि होगी।

3. इस सेंटर का उद्घाटन श्री बी.आर. शर्मा, पुउमनि, केरिपुबल, नीमच द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री ए.के.सिंह, प्राचार्य/पुउमनि-सीटीसी-प्रथम विशेष अतिथि के रुप में आमंत्रित थे।

दिल्ली में आर.ए.एफ. कमांडेंटों का सम्मेलन



आर. ए. एफ. कमाडेंटों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए पुलिस महानिरीक्षक श्री जी.एम. श्रीवास्तव

"आप ही बल कार्मिकों के एक मात्र मित्र, फिलोसफर तथा मार्गदर्शक हो" 103 आर.ए.एफ. बटालियन वजीराबाद नई दिल्ली में आर.ए.एफ. कमांडेंटों के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए रेपिड एक्शन फोर्स के पुलिस महानिरीक्षक श्री. जी.एम.श्रीवास्तव ने वरिष्ठ अधिकारियों से आग्रह किया कि वे अपने जवानों की व्यक्तिगत समस्याओं पर ध्यान दें ताकि वे मानसिक तथा शारीरिक रूप से चुस्त दुरुस्त रहकर राष्ट्र की बेहतर सेवा कर सके।

आर.ए.एफ. जवानों की आपरेशनल तथा प्रशासनिक कार्य कुशलता की सराहना करते हुए श्री श्रीवास्तव ने मानव जाति की और बेहतरीन सेवा कर उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता पर बल दिया। देश के विभिन्न साम्प्रदायिक संवेदनशील स्थानों पर तैनात आर.ए.एफ. बटालियनों के कमांडेंटों ने सम्मेलन में भाग लिया।

अंत में 103 बटालियन आर.ए.एफ. के कमांडेंट श्री वी.आर. सिंह सहित आर.ए.एफ.के आठ कर्मिकों को उनकी उत्कृष्ट कार्यकुशलता के लिए महानिदेशक की डिस्क तथा प्रशंसा पत्र प्रदान किए गये।

तीसरी अखिल भारतीय पुलिस बैंड प्रतियोगिता

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (केरिपुबल) एवं अन्य पुलिस बल देश के प्रत्येक कोने में आन्तरिक सुरक्षा एवं कानून-व्यवस्था बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। केरिपुबल के ग्रुप केन्द्र पिंजौर में आयोजित तीसरी अखिल भारतीय पुलिस बैंड प्रतियोगिता में भाग लेने वाले अधिकारियों, जवानों तथा विभिन्न पुलिस बैंड टीमों के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए हरियाणा के राज्यपाल श्री बाबू परमानन्द ने कहा कि केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल तथा अन्य पुलिस बलों के जवान व अधिकारीगण देश की आंतरिक सुरक्षा को कायम रखने की चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारी को बड़ी तत्परता के साथ निभा रहे हैं। अपनी इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए उन्हें बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। ऐसे में पुलिस के जवानों के मनोरंजन और हौंसला अफज़ाई के लिये इस तरह की बैंड तथा अन्य खेल प्रतियोगिता आयोजित करना बहुत महत्वपूर्ण हैं।

मैं सभी टीमों के प्रदर्शन से बड़ा प्रभावित हुआ हूँ और समझता हूँ कि आपके द्वारा बजाई गई धुनों तथा वीर रस में डूबी बिगुल की पुकार आपके दृढ़ निश्चय एवं साहस का प्रतीक बनी रहेगी और देश की आन्तरिक सुरक्षा के प्रति अपने कर्तव्यों को निष्ठा, लगन और राष्ट्रभक्ति की भावना के साथ निभाने के लिये सदा आपको प्रेरित करती रहेगी।



हरियाणा के राज्यपाल माननीय श्री बाबू परमानन्द से ट्राफी ग्रहण करते हुए केरिपु बल बैंड टीम के बैंण्ड मास्टर निरी. राजकुमार

प्रारम्भ में पश्चिमोत्तर अंचल, केरिपुबल के अपर महानिदेशक श्री जे.पी. वर्मा ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि सीआरपीएफ के लिए यह बहुत सौभाग्य का विषय है कि उन्हें लगातार दूसरे वर्ष इसकी मेज़बानी का अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि पूरे विश्व में बैंड को सैनिक परंपराओं में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उन्होंने यह भी कहा कि यह रुचि बढ़ाने, पुलिस बलों को एक मंच प्रदान करने एवं आपसी बेहतर तालमेल एवं सद्भाव बेहतर करने में सहायता करता है।

अपने संबोधन में अखिल भारतीय पुलिस खेल नियंत्रण समिति के संयुक्त सचिव श्री वी.राजगोपाल ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर की बैंड प्रतियोगिता अक्टूबर 1995 में जालंधर में आयोजित एक बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार पुलिस बैंडों को बड़ावा देने के लिए प्रत्येक वर्ष करवाई जा रही है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं उच्च व्यवसायिक मानदंड प्राप्त करने और स्वस्थ प्रतियोगिता भाव पैदा करने के लिए लम्बें समय तक चलेंगी।

महामहिम राज्यपाल ने विजेता टीमों को ट्राफियां और पुरस्कार वितरित किए। आईटीबीपी और के.रि.पु. बल ने ब्रास बैंड में जहां क्रमश: प्रथमं एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया वहां मध्य प्रदेश पुलिस को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। पाईप बैंड में बीएसएफ एवं सीआरपीएफ ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त किया, तीसरा स्थान जे. एंड के. पुलिस को मिला। बिगुल काल्स में बीएसएफ, आंध्र प्रदेश पुलिस एवं असम राईफल की टीमें क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। सर्वाधिक अंक प्राप्त वाली बीएसएफ की टीम ने ओवर आल चैम्पीयन ट्राफी जीती।

श्री डी.एस.पुँडीर, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक एवं आयोजन समिति के सचिव ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया। निर्णायक मंडल जिसमें श्री एम.पी.सिंह, पुलिस महानिरीक्षक (सेवानिवृत), श्री एम.पी. चिटनिस, वीएसएम, पुलिस उपमहानिरीक्षक, डा० पंकज माला शर्मा एवं सेवा निवृत मेजर एस.एस.नागर, वीएसएम शामिल थे, जिन्होंने प्रतियोगिता आयोजित कराने में कठिन परिश्रम किया और अनुकूल वातावरण में परिणामों का निर्णय किया।

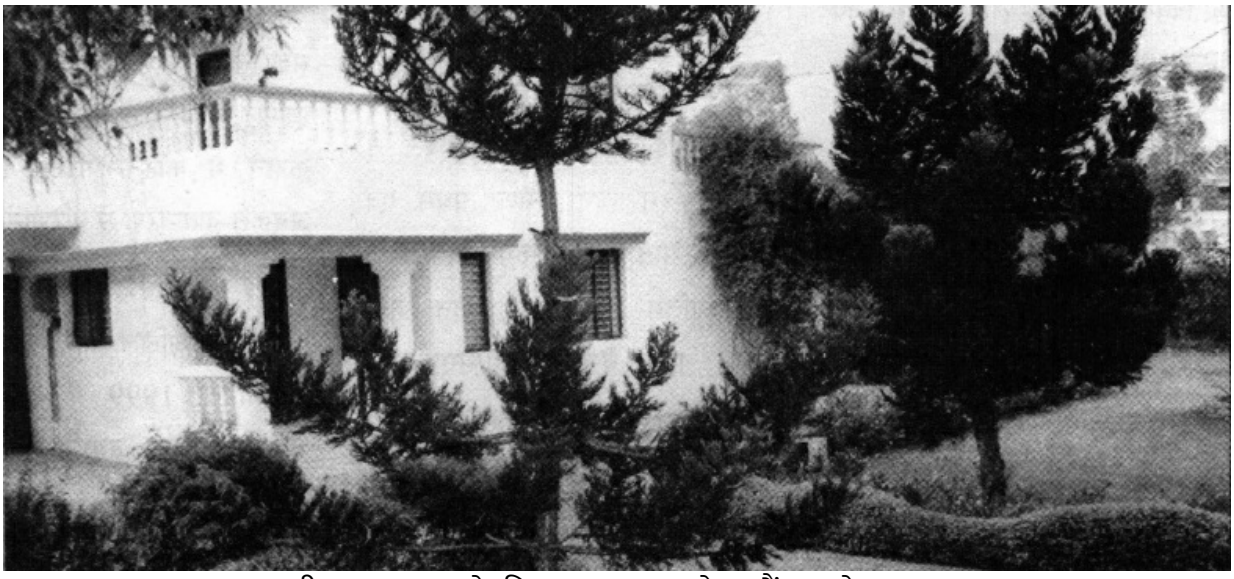
प्रथम अखिल भारतीय पुलिस बैंड प्रतियोगिता 1999 में 43वी. अखिल भारतीय पुलिस डयूटी मीट के साथ उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा आयोजित की गई थी। पिछली बार सीआरपीएफ ने वर्ष 2000 में भी शानदार तरीके से दूसरी प्रतियोगिता आयोजित करवाई थी। इस वर्ष विभिन्न राज्यों, केन्द्र शासित प्रदेशों एवं केन्द्रीय पुलिस संगठनों की 16 टीमों ने प्रतियोगिता में भाग लिया जबकि ब्रास बैंड में 15, पाईप एवं बिगुल काल्स में 12 टीमों ने भाग लिया।

दक्षिणी सेक्टर द्वारा 63 वीं बटा० "बेस्ट आपरेशनल बटालियन" घोषित

63वीं वाहिनी, के० रि० पु० बल वारंगल आन्ध्र प्रदेश को वर्ष 2001 में अर्जित परिचालन सफलताओं के लिए दक्षिणी क्षेत्र की **"बेस्ट आपरेशनल बटालियन ट्राफी"** से सम्मानित किया गया। दिनांक 24–1–2002 को ग्रुप केन्द्र हैदराबाद में आयोजित एक समारोह में डा० डी. एन. गौतम, पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिणी क्षेत्र ने वाहिनी के कमाण्डेंट श्री मदन सिह राघव को ट्राफी तथा 10000/– रुपये का चैक भेंट किया। इस अवसर पर डा. गौतम ने शौर्य वीरता के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित बटा० के सहायक कमाण्डेंट डी.पी.सिंह को स्मृति चिन्ह प्रदान किया तथा बटा० के जवानों की वीरता, कर्तव्य परायणता एवं साहस की प्रशंसा की।

ग्रुप केन्द्र बैंगलूर में पर्यावरण संरक्षण : एक सफल प्रयास

उप नि. संजीव कुमार, ग्रु.के. बैंगलूर



उत्कृष्टबागवानी व रख रखाव के लिए पुरस्कृत ग्रुप केन्द्र बैंगलूर के एक आवास का दृष्ट

इक्कीसवीं सदी में मानव ने अपनी तमाम वैज्ञानिक प्रगतियों तथा उपलब्धियों के साथ कदम रख दिया है। एक तरफ इन उपलब्धियों के दम पर आज मानव ने अगर संसार को समेटकर रख दिया है तथा विभिन्न प्रकार की व्याधियों तथा बाधाओं पर विजय प्राप्त कर ली है तो दूसरी तरफ अपनी राह में इतने कांटे बो लिये हैं कि उसका अस्तित्व ही संकट में आ गया है। जिन विभिन्न समस्याओं के साथ आज मनुष्य को जूझना पड़ रहा है उसमें पर्यावरण प्रदूषण की समस्या अत्यन्त ही भयावह है। वातावरण में प्रतिपल बढ़ती जहरीली गैसों की मात्रा तथा सिमटते वन क्षेत्र के कारण यह पृथ्वी एक गैस चैम्बर के रूप में तब्दील होती जा रही है। पाँच जून को हर वर्ष मनाया जाने वाला विश्व पर्यावरण दिवस तथा रियोडिजेनेरियो जैसे विश्व सम्मेलन इसकी भयावहता के प्रति–चिन्ता के परिचायक है। ऐसे में उद्यान नगरी बैंगलूर में स्थित ग्रुप केन्द्र, के०रि०पु० बल, बैंगलूर के जवानों तथा अधिकारियों द्वारा किया गया एक प्रयास न केवल प्रशंसनीय अपितु अनुकरणीय भी है।

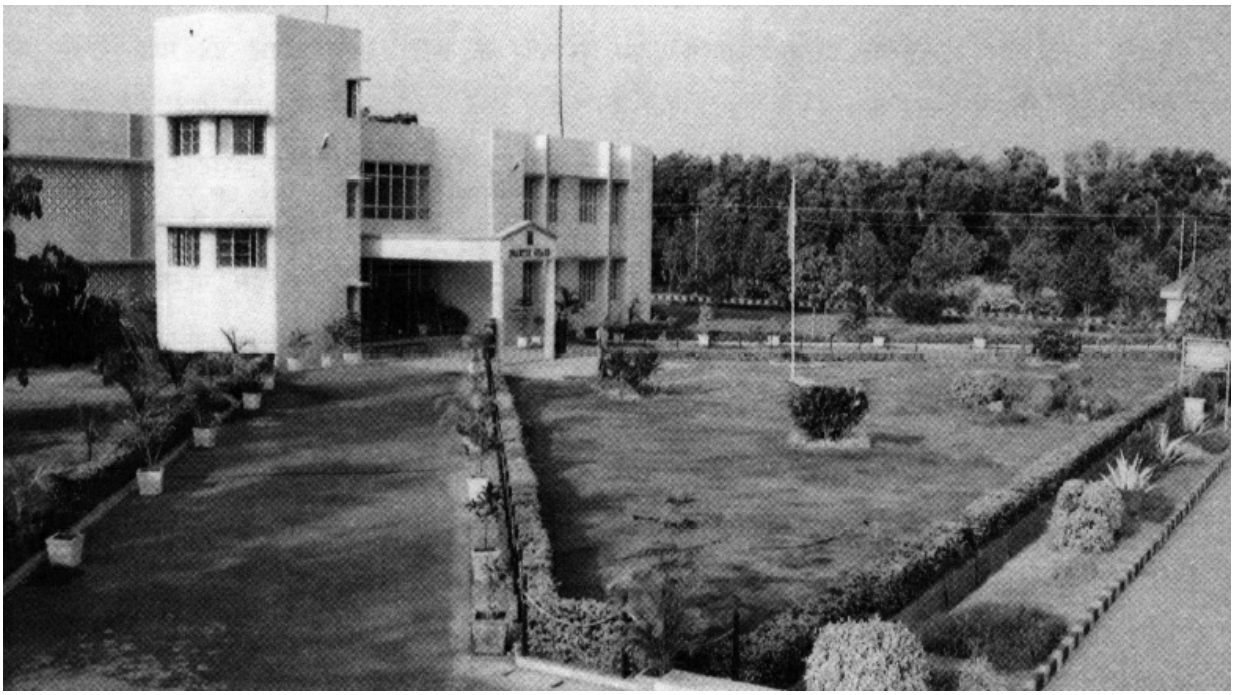
256 एकड़ के दो भागों में फैले परिसर में पेड–पौधों के योजनाबद्ध वृक्षारोपण का ऐसा सुन्दर तथा सफल प्रयास किया गया है कि यह सम्पूर्ण परिसर इस उद्यान नगरी में कुमुदनियों के बीच एक कमल पुष्प की तरह प्रतीत होता है। ग्रुप केन्द्र के परिसर में प्रवेश करते ही दाहिनी तरफ रोज गार्डन नजर आता है, जिसमें 20 प्रकार के गुलाब अपनी रंग–बिरंगी छटा बिखेरते हैं। ये पुष्प बल की भावना का सटीक चित्रण भी करते हैं, कि हमारे राष्ट्र की एकता तथा अखंडता का सम्मान करने वालों के लिए अगर हम पुष्प की पंखुड़ियों की तरह कोमल हैं, तो उनकी तरफ आँख उठाने वालों के लिए काटों की तरह खतरनाक भी। विभिन्न रंगों के गुलाबों के बीच सुर्ख लाल रंग का गुलाब ऐसा लगता है जैसे कि उसने ये सुर्खी बल के उन जाँबाज़ जवानों के लहू से पायी हैं जिन्होंने हँसते–हँसते इस राष्ट्र की सम्प्रभुता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। तभी तो माखन लाल चतुर्वेदी जी की कविता में पुष्प की अभिलाषा इस

प्रकार व्यक्त की गइ हैं :–

मुझें तोड़ लेना बनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जायें वीर अनेक ।

आगे बढ़ते ही सड़क के किनारे आसमान को चूमते अशोक के पेड़ । इस बल की मर्यादा तथा उत्साह का प्रतीक लगते हैं । प्रशासनिक ब्लॉक के निकट 800 वर्ग फीट में फैला हरबल गार्डन तो अपने आप में विलक्षण तथा अद्वितीय है जिसमें कि बीस विभिन्न प्रकार की जड़ी–बूटियाँ अपनी अदभुत चिकित्सीय क्षमता के साथ मोजूद हैं । कृष्णा–तुलसी, लवंग–तुलसी, जीवन्ती, कालमेघ, सर्पगंधा, अनिद्रा दूर करने वाली अमृतबाली, निम्न रक्तचाप के लिए, पेरीविंकल शर्करी की बीमारी दूर करने के लिए मधुनाशिनी, डायरिया तथा चर्मरोग मिटाने वाली चितामूला, दमां पर काबू पाने वाली कोलियस, मेधाशक्ति बढ़ाने वाली ब्राहमी के साथ चक्रमणी तथा हड़जोड़ जैसे अन्य जड़ी–बूटियों से युक्त दो हर्बल गार्डन इस परिसर के वृक्षारोपण अभियान की विशिष्ट उपलब्धि हैं ।

इसके अतिरिक्त फूलों में लगभग बीस किस्मों के गुलाब के साथ–साथ परिसर में चाँदनी, चम्पा, चमेली, मधुमालती, कैनास, जीनिया, जरबेरा, वेगोनविला, अरकेरिया जैसे फूलों के



ग्रुप केन्द्र के.रि.पु. बल बैंगलूर के क्वाटर गार्ड ब्लॉक के लॉन का दृश्य



ग्रुप केन्द्र बैंगलूर का रोज गार्डन

पौधें इस परिसर को एक अनुपम छटा प्रदान करते हैं। आन्तरिक सज्जा के लिए भी विभिन्न प्रकार के कैक्टस के अतिरिक्त फर्न, कैरोटन, मुसेण्डा, थुजा, रेक्स बेगोनिया, क्रिसमस ट्री, मरन्ता, फिलोडेण्ड्रन, ड्रेसिना तथा डाईफन बोकिया जैसे पौधे अपनी मौजूदगी से सुंदरता में चार चाँद लगाते हैं। बैंगलोर की शान समझे जाने वाले लालबाग में हर वर्ष 15 अगस्त तथा 26 जनवरी को प्रदर्शित होने वाले पुष्प प्रदर्शनी में इस ग्रुप केन्द्र ने भी जनवरी 1999 से शिरकत करना प्रारंभ किया तथा तब से तमाम प्रवृतियों में उत्कृष्ट एवम प्रथम पुरस्कार के कुल 55 ट्रॉफियाँ पायी हैं।

इन सजावटी पौधों के साथ ही सागवान, यूकेलिप्टस, कदम्ब, चन्दन, सिलवर ओक, कैसेरोना, जामुन, रबर प्लाण्ट, उर्वशी, कटहल, नीम, बरगद, गुलमोहर के हजारों पौधों के अतिरिक्त आम, अमरूद, नारियल, चीकू, नींबू, सपोटा, अनार, शरीफा तथा काजू के बाग भी इस परिसर की हरितिमा को समृद्ध करते हैं। क्वार्टर-गार्ड, स्टोर, प्रशासनिक ब्लॉक, राजपत्रित अधिकारी मैंस, पुलिस उप महानिरीक्षक एवं अपर पुलिस उप महानिरीक्षक के बंगले के आगे बिछी हरी दूब घास की मखमली चटाई किसी का भी मन मोह लेने में सक्षम है। कुल मिलाकर इस परिसर में मौजूद 50.000 से भी अधिक पेड़-पौधे इस ग्रुप केन्द्र के जवानों तथा अधिकारियों के उस हरित प्रेम के प्रतीक हैं जिसमें प्रत्येक पौधे को एक नवजात शिशु की तरह देखभाल करके इस परिसर की शोभा बढ़ाने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का भी अनुपम उदाहरण पेश किया गया है।

माह अक्टुबर, नवम्बर तथा दिसम्बर, 2001 में मृत कार्मिक

के.रि.पु.बल के निम्नलिखित कार्मिक माह अक्टूबर, नवम्बर तथा दिसम्बर, 2001 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शौक संतप्त परिवारों के लिए हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है। मृत कार्मिकों के नाम इस प्रकार हैं:–

हवलदार/आरमोर्र रोहताश सिंह 39 बटालियन, सिपाही लतिमाया सिंह 92 बटालियन, सिपाही रामगणेश 89 बटालियन, सिपाही दारा सिंह 67 बटालियन, हवलदार पिताम्वर दास 20 बटालियन, सिपाही सीता राम 124 बटालियन, हवलदार रनजीत सिंह 73 बटालियन, सिपाही मो. सलाम खान 19 बटालियन, धोबी जितेन्द्र कुमार 87 बटालियन, सिपाही जसविन्दर सिंह 95 बटालियन, सिपाही अमित कुमार सिंह, ग्रु०के० जमशेदपुर, सिपाही एस.एस.कुसमा 135 बटालियन, सि./चालक नरेश कुमार 3 बटालियन, सिपाही एस.जी.लेमले 64 बटालियन, सिपाही पी.रविकांत रेड्डी ग्रु०के०, हैदराबाद, स.क.जगदीश चन्द 92 बटालियन, उ.कमा.सुमेस्वर राम 11 बटालियन, हवलदार किशन सिंह 97 बटालियन, सिपाही जुनेहजी 134 बटालियन, हवलदार जे.बी.सी.नायर 55 बटालियन, सिपाही वी.के.दुग्गल 50 बटालियन, सिपाही मो. सादिक 74 बटालियन, हवलदार राज किशोर पांड़े 101 बटालियन, हवलदार संतू राम 28 बटालियन, सिपाही टी. वीर बहादुराप्पा ग्रु०के०, खटखटी, सिपाही डी.जी चुरमुले 30 बटालियन, सिपाही संदीप सिंह सिकवार ग्रु०के० शिवपुरी वाटर केरियर तरसेम कुमार 34 बटालियन, हवलदार /चालक नरायण सिंह 39 बटालियन, सिपाही ओम प्रकाश यादव 129 बटालियन, निरीक्षक(एम) आर.एन. शर्मा ग्रु०के० जमशेदपुर, हवलदार /चालक सी. नरायण सिंह 39 बटालियन, सिपाही सुलतान सिंह 116 बटालियन, सिपाही कलिपद राय 114 बटालियन, सिपाही राम किशन यादव 24 बटालियन, हवलदार/आर.ओ. गुरूदास चक्रवर्ती 3 वीं (सिग.) बटा., सिपाही ग्यादास 62 बटालियन, सिपाही ए. श्रीनिवास राव 133 बटालियन, सिपाही शिवदास कुमार 124 बटालियन, हवलदार हनुमान सिंह 40 बटालियन, वाटर केरियर एन.एच तंदुले 63 बटालियन, सिपाही संतोष सनास 130 बटालियन, सिपाही शम्भू दयाल 26 बटालियन, सिपाही नवनी राम 127 बटालियन, सिपाही एच. अन्जनप्पा 27 बटालियन, सिपाही सुरेन्द्र सिंह 29 बटालियन, कुक सुरेश कुमार 130 बटालियन, हवलदार आर.एस.यादव 42 बटालियन, हवलदार शिव सिंह 18 बटालियन, उप निरीक्षक सफी मोहम्मद 78 बटालियन, सिपाही पी. मोसेस 44 बटालियन, निरीक्षक धर्म सिंह 62 बटालियन, हवलदार प्रेम सिंह 78 बटालियन, सिपाही एस.डी. मलिक 32 बटालियन, सिपाही सुवाकर दास 27 बटालियन, हवलदार अमी लाल 11

बटालियन, सिपाही/दफ्तरी इ.टेनोसन आर.टी. सी.-दो, सिपाही कौशलेंदर कुमार 8 बटालियन, सिपाही पी.गोविन्दन 135 बटालियन, हवलदार रामबीर सिंह 47 बटालियन, सिपाही डी. एच. गुदादुर 32 बटालियन, सफाई कर्म०. रोहताश 68 बटालियन, सिपाही मुकेश कुमार त्रिपाठी 126 बटालियन, हवलदार जी.आर.नायर 26 बटालियन, लान्स नायक उमेद सिंह जी.सी.-I, अजमेर, सिपाही /बिगुलर भीम सेन पाण्डे 93 बटालियन, सिपाही कमलेश कुमारी 88 बटालियन, सिपाही धनंजय तिवारी 93 बटालियन, सिपाही डी. एन.चौवे 62 बटालियन सिपाही एम.मुर्ति आई.एस.ए.

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

राजतंत्र से लोकतंत्र तक
पारतंत्रय से शुभ स्वतंत्र तक
मेरा हर संघर्ष मुखर है
बलिदानी श्रृंखला अमर है

सेवा और भक्ति में रत हूँ
भारत-भर में विस्तारित हूँ
ज्ञान-दक्षता-नैतिकता-बल
भीतर-बाहर जाग्रत पल-पल

दूरदर्शिता हूँ पटेल की
सैन्यबलों के संग, मेल की
बल-विक्रम की परंपरा हूँ
जनरक्षण की कर्म-त्वरा हूँ

मातृ भूमि को हर पल पूजा
कई बार युद्धों में जुझा
दुश्मन को बढ़-चढ़ कर ललकारा
कभी नहीं शठता से हारा

अरावली पर्वत-प्रदेश में
आभामय आबू-सुवेश में
मेरी प्रतिभाएँ ढलती है
उच्चादर्श लिए चलती है

मातृशक्ति भी मेरा बल है
आत्म और मन का संबल है
सब धर्मों का हृदय-धर्म हूँ
देश धर्म-कर्तव्य-मर्म हूँ

सी.आर.पी.एफ. शब्द सुनहरे
किन्तु नहीं हैं अर्थ इकहरे
राष्ट्रशक्ति का एक नाम हूँ
जनगण-मन-केन्द्रित प्रणाम हूँ

सौजन्य : पु. महानिरीक्षक उत्तरी सैक्टर

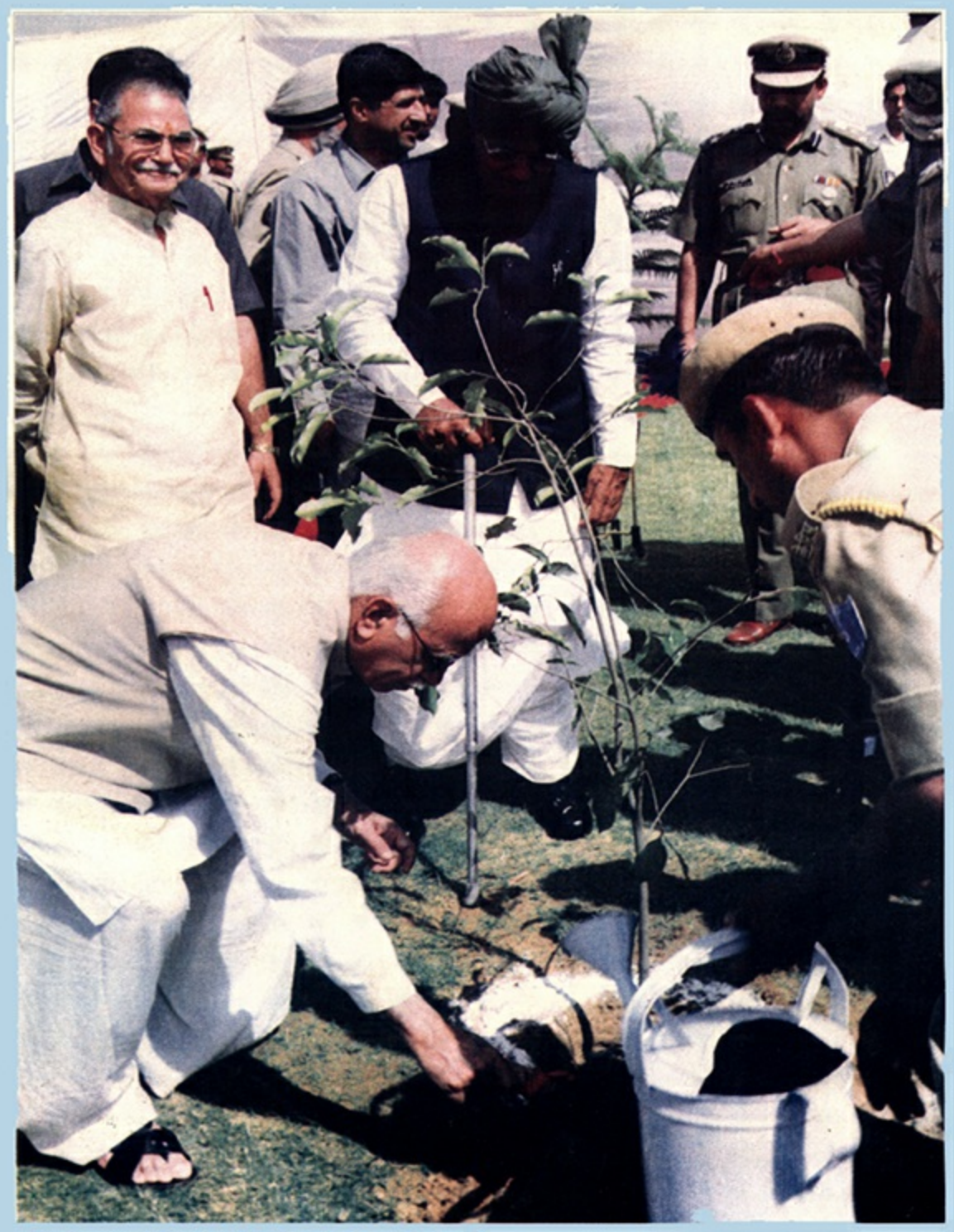


ग्रुप केन्द्र केरिपु बल पिंजौर में हरियाणा के राज्यपाल माननीय श्री बाबू परमानन्द, तीसरी अखिल भारतीय बैंड प्रतियोगिता में विजेता टीम को ट्राफी प्रदान करते हुए



30 तथा *31* मार्च *2002* को स्पोर्टस काम्पलैक्स अंधेरी मुम्बई में आयोजित टाटा नेशनल जूडो चैम्पीयनशिप में केरिपु बल की महिला जूडो खिलाड़ी अपने प्रतिद्वन्दी खिलाड़ी को परास्त करने के प्रयास में

रजि॰ नं॰ 4767/87



केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी कोरियु वल अकादमी कानपुर (यू॰पी॰) में शिलान्यास के बाद कैम्पस में वृक्ष लगाते हुए

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

31 मई, 2002



गुजरात, रण ऑफ कच्छ, सरदार पोस्ट पर 9 अप्रैल 1965 को पाकिस्तानी सेना के हमले को नाकाम करने वाले केंद्रिय बल के अमर शहीद जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र



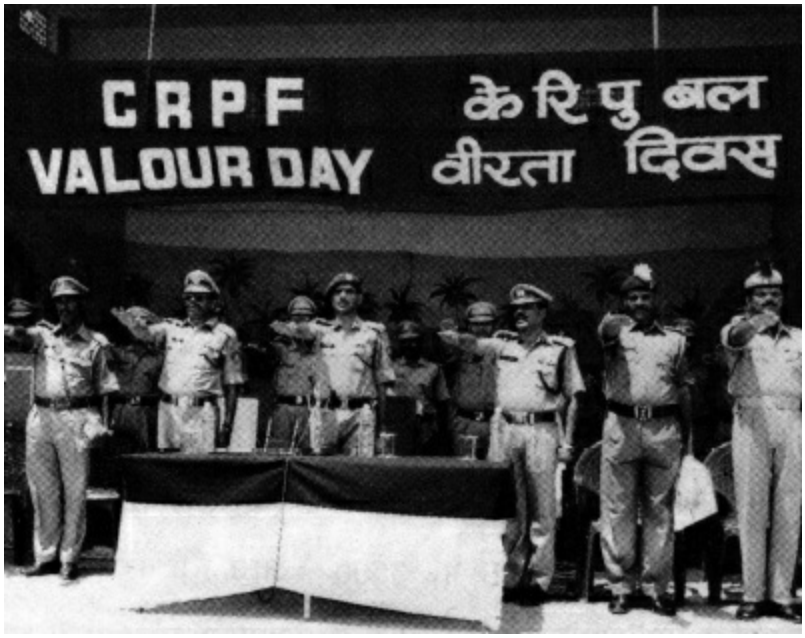
बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र सहायक कमाण्डेंट श्री अवधेश कुमार को सर्वश्रेष्ठ इन्डोर प्रशिक्षाणर्थी की ट्राफी प्रदान करते हुए



सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा में चयनित प्रथम बैच के सहायक कमांडेंट आंतरिक सुरक्षा अकादमी केरिपु बल, माउंट आवू में कर्तव्य निष्ठा की शपथ लेते हुए

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड-15 अंक-3
31 मई 2002 10 जेष्ठ, श्क 1924
मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र
संपादक
रणबीर सिंह
चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु बल महानिदेशालय एवं युनिट्स
प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1,सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र
मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ोदा कलां, नई दिल्ली-**72**



इस अंक में

1. वीरों तुम्हें सलाम

2 केरिपु बल के जवानों का सम्मान

3 पहली बार केरिपु बल की महिला कर्मी को शौर्य वीरता का पुलिस पदक

5 केरिपु बल के 15 कार्मिको को शौर्य वीरता के पुलिस पदक

6 नव आरक्षियों की दीक्षांत परेड

7 ग्रुप केन्द्र, केरिपु बल मुजफ्फरपुर में नव आरक्षियों का दीक्षांत परेड समारोह

8 केरिपु बल जवानों द्वारा रक्तदान

10 22वीं बटा० केरिपु बल द्वारा छात्रों को निःशुल्क पाठ्य-पुस्तक वितरित

11 केरिपु बल की 49 बटा० सुरक्षा के साथ समाज सेवा में भी

12 केरिपु बल शांति प्रयासों के साथ-साथ समाजिक कार्यों में भी सक्रिय

13 सौरभ सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल का गौरव

14 गाँव वालों द्वारा केरिपु बल शहीद की प्रतिमा का अनावरण

15 केरिपु बल ने कम्प्यूटर जागरूकता चैम्पीयनशिप जीती/गुजरात में केरिपु बल की 12 कम्पनियां तैनात/त्रिपुरा के राज्यपाल द्वारा केरिपु बल की प्रशंसा/ गोवा विधान सभा चुनाव के लिए केरिपु बल की 9 कम्पनियां तैनात

16 सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल का केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन

17 अन्तराष्ट्रीय कैदियों की सुरक्षा में केरिपु बल

18 माह जनवरी,फरवरी, मार्च और अप्रैल 2002 में मृत्यु को प्राप्त हुए कार्मिक

19 कविता

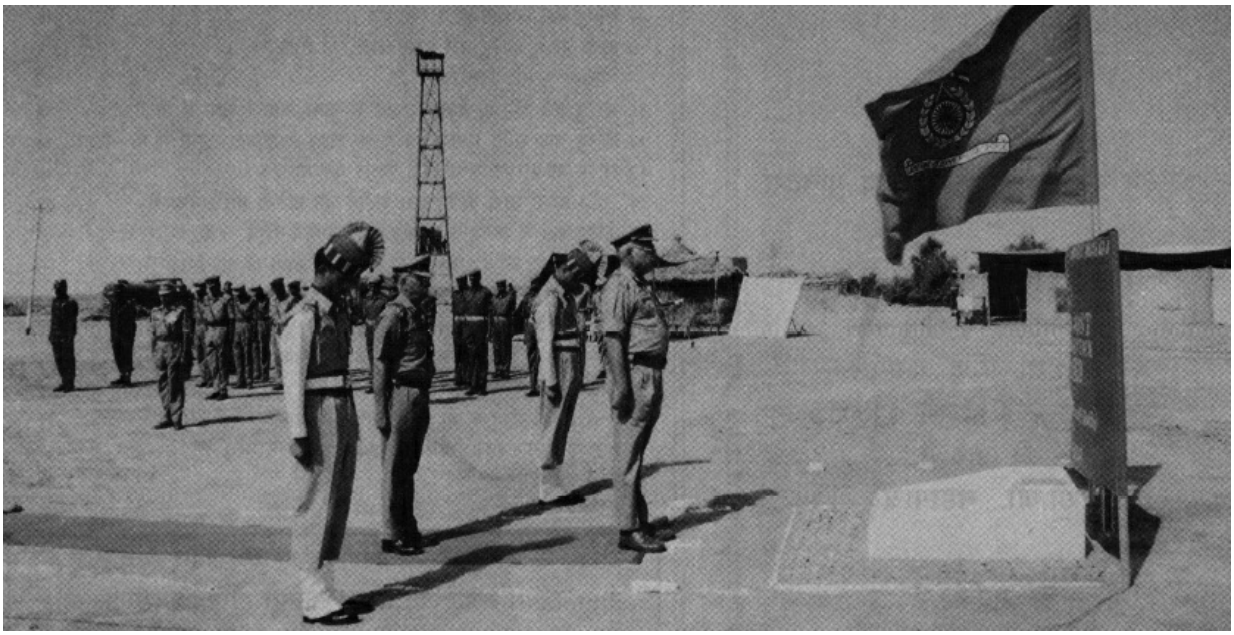
लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-संपादक

वीरों तुम्हें सलाम

9अप्रैल, 1965 को भारत के इतिहास में हमेंशा याद रखा जायेगा क्योंकि इसी दिन भारत पाक सीमा पर रण ऑफ कच्छ, गुजरात में सरदार पोस्ट पर सीमा रक्षा के लिए तैनात केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की दुसरी बटालियन की दो कम्पनियों पर 3500 सैनिक वाली एक पाकिस्तानी ब्रिगेड़ ने अचानक हमला कर दिया। संख्या में काफी कम होने के बावजूद भी के०रि०पु० बल के जवानों ने अपनी सूझ-बूझ, बुद्धिमता, और व्यवसायिक दक्षता का परिचय देते हुए पाकिस्तानी सेना के हमले को नाकाम ही नहीं किया बल्कि दुश्मन को ऐसा चकाचौंध किया कि वह अपने 34 सैनिकों की लाश तथा 04 को जीवित छोड़कर भाग गया। दुश्मन को छोटी सफलता जब मिली तब दुर्भाग्यवश के०रि०पु० बल के उत्तरी पूर्वी मोर्चे पर तैनात जवान की मशीनगन जाम हो गई। हलांकि दुश्मन मुँह की खाकर लौट गया परन्तु भागते-भागते के०रि०पु० बल के कुछ जवानों को पकड़ ले गया। दुश्मन ने सरदार पोस्ट पर कब्जा करने की तीन बार कोशिश की परंतु उसे हर बार बुरी तरह मुँह की खानी पड़ी। के०रि०पु० बल के जवानों द्वारा की गई जवाबी कार्रवाई दुश्मन के लिए इतना बड़ा आघात थी कि संख्या, उपकरणों तथा अस्त्र-शस्त्रों में श्रेष्ठ होने के बावजूद उसने दोबारा हमला करने का साहस नहीं किया। सरदार पोस्ट पर तैनात हमारे कुछ ही जवान जिनके पास हथियार भी पर्याप्त नहीं थे का ऐसा था साहस और आखिरी दम तक लड़ने की प्रतिबद्धता कि दुश्मन भी हैरत में पड़ गया।

युद्ध के इतिहास में यह एक बेजोड़ घटना थी जिसमें एक भारी संख्या में शस्त्रों और कार्मिकों से सुसज्जित ब्रिगेड को एक छोटे से अर्द्ध सैनिक पुलिस बल की टुकड़ी ने लगातार 12 घंटे तक मुकाबला किया। यह थी कुशल नेतृत्व, संचालन, सहयोग कर्तव्य पथ पर मिटने की भावना की अद्वितीय मिसाल।



बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र शौर्य दिवस पर रण आफ कच्छ "सरदार पोस्ट" पर केरिपु बल शहीदों को श्रद्धाजंलि देते हुए

इस युद्ध में मातृभूमि की रक्षा करते दूसरी बटालियन के नायक किशोर सिंह, सिपाही शमशेर सिंह, सिपाही खानसिंह, सिपाही हुदूद राम, सिपाही सिंधवीर प्रधान तथा सिपाही किशन सिंह लोन लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। के०रि०पु० बल के अधिकारियों और जवानों की शौर्य वीरता, अदम्य साहस तथा पराक्रम का पूरे देश ने सम्मान दिया।

सरदार पोस्ट पर के०रि०पु० बल की एक छोटी सी मगर बहादुर टुकड़ी ने 3500 सदस्यों वाली एक विशाल सशस्त्र पाकिस्तानी सेना को खदेड़ देने की एक अद्वितीय मिसाल थी। यही है शौर्य वीरता, कर्तव्य परायणता तथा मातृभूमि की रक्षा के लिए सीधे-सीधे मौत से भिड़ जाने की के०रि०पु० बल के जवानों का गौरवशाली इतिहास।

के०रि०पु० बल ने अपने इन बहादुर जवानों की कर्तव्य परायणता, शौर्य वीरता, अदम्य साहस तथा मातृभूमि की रक्षा के लिए दिये गये सर्वोच्च बलिदान को हमेशा याद रखने तथा उन्हें सम्मान देने के लिए हर वर्ष 9 अप्रैल को शौर्य दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इसी लिए 9 अप्रैल, 2002 को बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र, तथा पुलिस उप महानिरीक्षक गांधीनगर, श्री एम. एम. शर्मा, के०रि०पु० बल जवानों की एक टुकड़ी के साथ रण आफॅ कच्छ की सरदार पोस्ट पर जाकर अपने अमर शहीद वीर जवानों को श्रद्धाजंलि अर्पित की तथा मातृभूमि की रक्षा के लिए दी गयी उनकी शहादत को याद किया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के सभी कार्यालयों, यूनिटों द्वारा 9 अप्रैल को शौर्य दिवस के रूप में मनाया तथा अपने शहीद वीर साथियों का स्मरण किया। ग्रुप केन्द्र झड़ोदा कलां नई दिल्ली में भी शौर्य दिवस मनाया गया। महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय) ने बल के अन्य अधिकारियों के साथ ग्रुप केन्द्र परिसर में स्थित शहीद स्मारक पर जाकर शहीदों को श्रृद्धाजंलि

आपेत को और कहा कि हम सभी का परम कर्तव्य बनता है कि मातृभूमि की रक्षा के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की परम्पराओं को कायम रखते हुए कर्तव्य की वेदी पर अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले अपने उन शहीद वीर साथियों को याद किया जाय जिन्होने हमारे कल के लिए अपने आज को कुर्बान कर दिया था। यदि हम उनकी इस सहादत को याद रख सके तो यही होगी हमारी सच्ची श्रद्धाजंलि उन बहादुरों के लिए। जहां पर युद्ध हुआ था तथा हमारे शूरवीरों का खून गिरा था उस पवित्र जगह की रज इकट्ठी कर दो कलशों में भर कर सरदार पोस्ट से लाई गयी। एक कलश को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की जन्म स्थली ग्रुप केन्द्र नीमच में रखा गया है जबकि दूसरे कलश को के०रि०पु० बल मुख्यालय, सी०जी०ओ० कम्पलेक्स, लोधी रोड़ नई दिल्ली के मुख्य गेट पर रखा गया है ताकि बल मुख्यालय में आने जाने वाले अधिकारी/जवान इन पवित्र आत्माओं का स्मरण कर उन्हें नमन कर सकें।



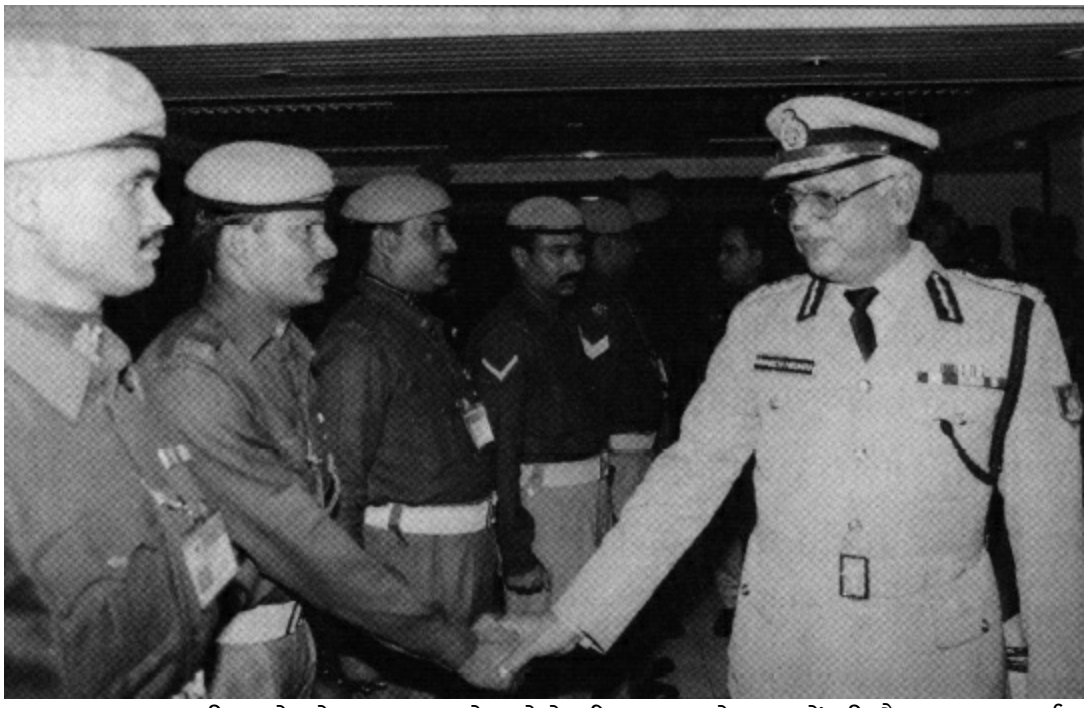
महानिरीक्षक (कार्मिक व मुख्यालय) श्री वी० एम० श्रीवास्तव 9 अप्रैल 2002 को शौर्य दिवस के अवसर पर ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में शहीदों को श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुए



महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र तथा केरिपु बल के जवान सरदार पोस्ट की पवित्र रज कलशों में भरते हुए

के०रि०पु० बल के जवानों का सम्मान

बल के मुख्यालय में दिनांक 2.05.2002 को आयोजित सम्मान समारोह में के०रि०पु० बल (सी०आर०पी०एफ०) के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सात जवानों को एक एक लाख रूपये का चैक भेंट किया। इस पुरस्कार की घोषणा 13 दिसम्बर 2001 को संसद पर हुए फिदायीन हमले को नाकाम करने में शौर्य वीरता का प्रदर्शन करने के लिए तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष स्वर्गीय श्री जी०एम०सी० बालयोगी ने थी।



संसद पर हुए आत्मधाती हमले को नाकाम करने वाले के०रि०पु० बल के जवानों की हौसला आफजाई करते महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र

यह पुरस्कार एस०डी०जी० के उप कमांडेंट श्री आनन्द झा, सि० राकेश कुमार, सि० महीपाल, सि० (चालक) हंसराज, 23 बटालियन के हवलदार वाई०वी० थापा तथा सि० सुखविन्दर सिंह, एवं 36 बटा० के०रि०पु० बल के सि० ए०आर० चियारी को प्रदान किया गया।

के०रि०पु० बल में आतंकवाद–विरोधी दिवस मनाया

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल *(*के०रि०पु० बल*)* मुख्यालय में *21* मई *2002* को आतंकवाद–विरोधी दिवस मनाया गया / बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र महानिदेशालय में सभी अधिकारियों व स्टाफ को आतंकवाद विरोधी शपथ दिलाई /



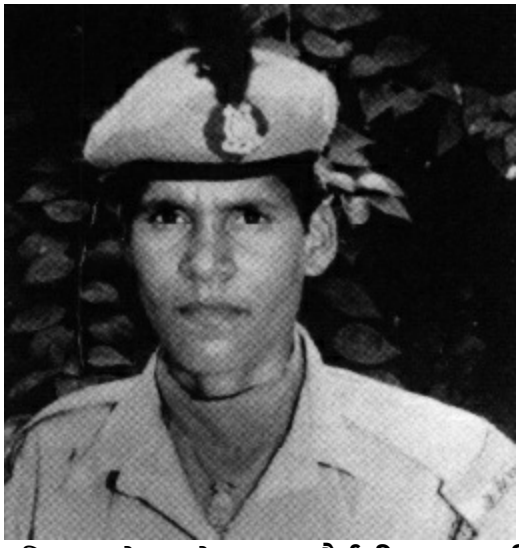
बल के बहादुर जवानों को एक–एक लाख रूपये का चैक देते महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र

पहली बार के०रि०पु० बल की महिला कर्मी को शौर्य वीरता का पुलिस पदक

श्रीनगर हवाई अड्डे पर आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में शौर्य वीरता, अदम्य साहस, कर्तव्य परायणता तथा उच्चकोटि की बहादुरी का प्रदर्शन करने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की स्वर्गीय सिपाही (महिला) विन्दू कुमरे को भारत के राष्ट्रपति ने **शौर्य वीरता का पुलिस पदक** प्रदान किया है। वह के०रि०पु० बल की प्रथम महिला सिपाही है जिसे इतना बड़ा सम्मान दिया गया है।

16 जनवरी 2001 को आर्मी यूनीफार्म में लश्करे तोइबा के 6 आतंकवादी जम्मू एवं कश्मीर सरकार के सार्वजनिक निर्माण विभाग, मंत्री श्री अली मोहम्मद सागर के मोटर गाड़ी काफिले का पीछे करते हुए श्रीनगर हवाई अड्डे के गेट पर स्थित एक्सरे रूम में घुसने की कोशिश की। गेट पर तैनात सिपाही (महिला) विन्दू कुमरे ने तुरंत

राइफल उठाइ और आतंकवादियों पर फायर किया तथा ड्यूटी पर तैनात अपने दो अन्य साथियों को सावधान कर उनके बहुमूल्य जीवन को बचाया। तभी एक अन्य आतंकवादी ने दूसरी ओर से सिपाही (महिला) विन्दू कुमरे के ऊपर पीछे से फायर किया जिसमें वह बुरी तरह से घायल हो गई तथा बाद में वीरगति को प्राप्त हुई।



सि० (महिला) विन्दु कुमरे मरणोपरान्त **"शौर्य वीरता का पुलिस पदक"**

इससे पहले भी 88 (महिला) बटालियन की स्वर्गीय सिपाही (महिला) कमलेश कुमारी को 13 दिसम्बर 2001 को संसद पर हुए फिदायीन हमले को नाकाम करने में अदम्य साहस, कर्तव्य परायणता तथा शौर्य वीरता का उच्चकोटि का प्रदर्शन करने के लिए मरणोपरान्त **"अशोक चक्र"** से सम्मानित किया जा चुका है। यही नहीं के०रि०पु० बल की एक और सिपाही (महिला) विमला देवी को 1987 में भारतीय सेना के साथ श्रीलंका में शांति सुरक्षा बल के एक अंग के रूप में तैनाती के दौरान उत्कृष्ट सेवाओं तथा कर्तव्य निष्ठा के लिए सेना मेडल प्रदान किया गया था। यह पहली महिला पुलिस कर्मी थी जिसे सेना मेडल दिया गया था।



सि० (महिला) कमलेश कुमारी मरणोपरान्त **"अशोक चक्र"**

के०रि०पु० बल के *15* कार्मिकों को शौर्य वीरता के पुलिस पदक



श्री पी०सी० जोशी, पुलिस महानिरीक्षक (परि०), श्रीनगर **"शौर्य वीरता का पुलिस पदक"**

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी०आर०पी०एफ०) के 6 अधिकारियों व जवानों को राष्ट्रपति का शौर्य वीरता पुलिस पदक, जबकि अन्य 9 अधिकारियों एवं जवानों को शौर्य वीरता का पुलिस पदक देश के जम्मू एवं कश्मीर राज्य तथा पूर्वोत्तर राज्यों में आतंकवादियों के विरूद्ध चलाए गये विभिन्न अभियानों में अदम्य साहस, कर्तव्य परायणता तथा उच्चकोटि की बहादुरी का प्रदर्शन करने के लिए प्रदान किए गये हैं।

पदक प्राप्त करने वाले इन 15 कार्मिकों में एक महिला सिपाही सहित 9 कार्मिकों को ये पदक मरणोपरांत प्रदान किये गये हैं । राष्ट्रपति का शौर्यवीरता पुलिस पदक स्वर्गीय हवलदार अब्दुल मजीद 91 बटा०, स्वर्गीय सिपाही इन्द्रजीत 83 बटा०, स्व० सिपाही अशोक कुमार 54 बटा०, स्व० लांसनायक आदेश कुमार 83 बटा०, तथा श्री एस०एस०गिल, उप कमा० 30 बटा० को प्रदान किया गया है जबकि शौर्य वीरता का पुलिस पदक स्व० सिपाही एस०के० कुशवाह 48 बटा०, स्व० हव० आर०पी० यादव 48 बटा०, स्व० सिपाही (महिला) बिन्दू कुमरे 88 (म०) बटा०, स्व० ले० नायक महीपाल सिंह 122 बटा०, को मरणोपरांत तथा श्री पी०सी० जोशी, पु०म०नि० (परिचालन) श्रीनगर, निरीक्षक सुदर्शन कुमार 69 बटा०, हव० मनदीप सिंह 39 बटा०, हवलदार/चालक रनधीर सिंह 23 बटा०, तथा सिपाही अमोली लाल 1 बटा० को प्रदान किया गया है ।

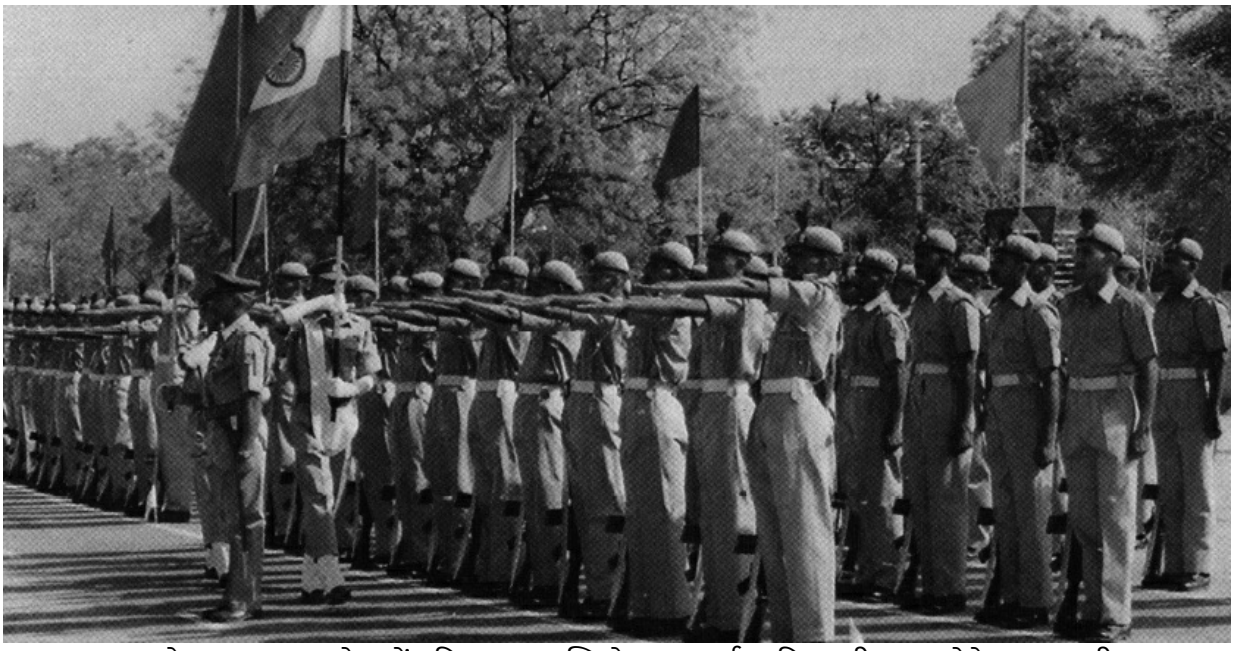
के०रि०पु० बल ने 80 उग्रवादियों को मारा

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी०आर०पी०एफ०) ने 31 मार्च 2002 को समाप्त तिमाही के दौरान देश के विभिन्न भागों में हुई 95 मुठभेड़ों में 80 उग्रवादियों को मारा तथा 551 को गिरफ्तार किया।

80 उग्रवादियों में से अकेले जम्मू एवं कश्मीर 61, पूर्वोत्तर राज्यों में 14, झारखण्ड़ में 4 तथा पंजाब में एक को मारा है। इसके अलावा असम में 196 तथा त्रिपुरा में 121 उग्रवादियों को गिरफ्तार किया। आंध्र प्रदेश, झारखण्ड़ तथा पश्चिमी बंगाल में 137 नक्सलाईट को भी पकड़ा है।

इन तीन महीनों के दौरान बल के जवानों ने 217 हथियार तथा 6974 गोली बारूद बरामद किया। 95 मुठभेड़ों में के०रि०पु० बल के दो जवान भी कर्तव्य की वेदी पर शहीद हो गये तथा 28 जख्मी हुए।

नव आरक्षियों की दीक्षांत परेड



ग्रुप केन्द्र-(एक अजमेर) में प्रशिक्षण समाप्ति के बाद कर्तव्य निष्ठा की शपथ लेते नव आरक्षी

ग्रुप केन्द्र अजमेर में 44 सप्ताह का प्रशिक्षण पूरा करने के बाद 201 सिपाहियों की दीक्षान्त परेड़ दिनांक 3-4-02 को ग्रुप केन्द्र-एक के परेड़ स्थल पर सम्पन्न हुई। परेड़ का नेतृत्व ग्रुप केन्द्र के उप कमान्डेंट श्री महेन्द्र सिंह ने किया गया। ग्रुप केन्द्र-एक के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री के०डी० पचौरी मुख्य अतिथि ने परेड की सलामी ली। इस भव्य परेड समारोह में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अजमेर स्थित दोनों ग्रुप केन्द्रों के अधिकारियों, कार्मिकों, उनके परिवारों के सदस्यों तथा निकटवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले बल के सेवानिवृत अधिकारी/कार्मिक तथा अनेक स्थानीय नागरिक उपस्थित हुए।

44 सप्ताह के प्रशिक्षण के दौरान इन जवानों को विभिन्न प्रकार का प्रशिक्षण दिया गया जिसमें शारीरिक प्रशिक्षण, यू०ए०सी०, आधुनिकतम हथियार चलाना आदि शामिल था। प्रशिक्षण में निशानेबाजी में सर्वोत्तम कैडेट का पुरस्कार नव आरक्षी राम अवतार यादव, सर्वोत्तम इन्डोर कैडेट का पुरस्कार बजरंग लाल खारोल, आल राउन्ड सर्वोत्तम कैडेट का पुरस्कार नव आरक्षी कृष्ण कुमार को दिया गया। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण में उत्तम सहयोग देने के लिए निरीक्षक शंकर लाल, हैड कॉस्टेबल जगन्नाथ राम तथा सावंला राम को भी पुरस्कृत किया गया।

मुख्य अतिथि श्री पचौरी ने अपने दीक्षान्त संबोधन में इन नव आरक्षियों को निर्विघ्न कर्तव्य पालन हेतु अपनी शुभ कामनाएँ देते हुए कहा कि देश के संविधान तथा उसके अनुसार बनाए गए कानूनों का पालन कराने एवं अपनी मातृभूमि की रक्षा की शपथ लेकर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में सम्मिलित हुए देश के ये जांबाज युवा प्रहरी हिमालय की चोटी से लेकर कन्याकुमारी के समुद्री तट तक, देश के पूर्वी सीमान्त क्षेत्र से पश्चिमी छोर तक फैली देश की विस्तृत सीमाओं की आन्तरिक तथा बाह्य

सुरक्षा के लिए अपना कर्तव्य पालन करने हेतु शीघ्र ही अपनी-अपनी यूनिटों के लिए प्रस्थान करेगें।

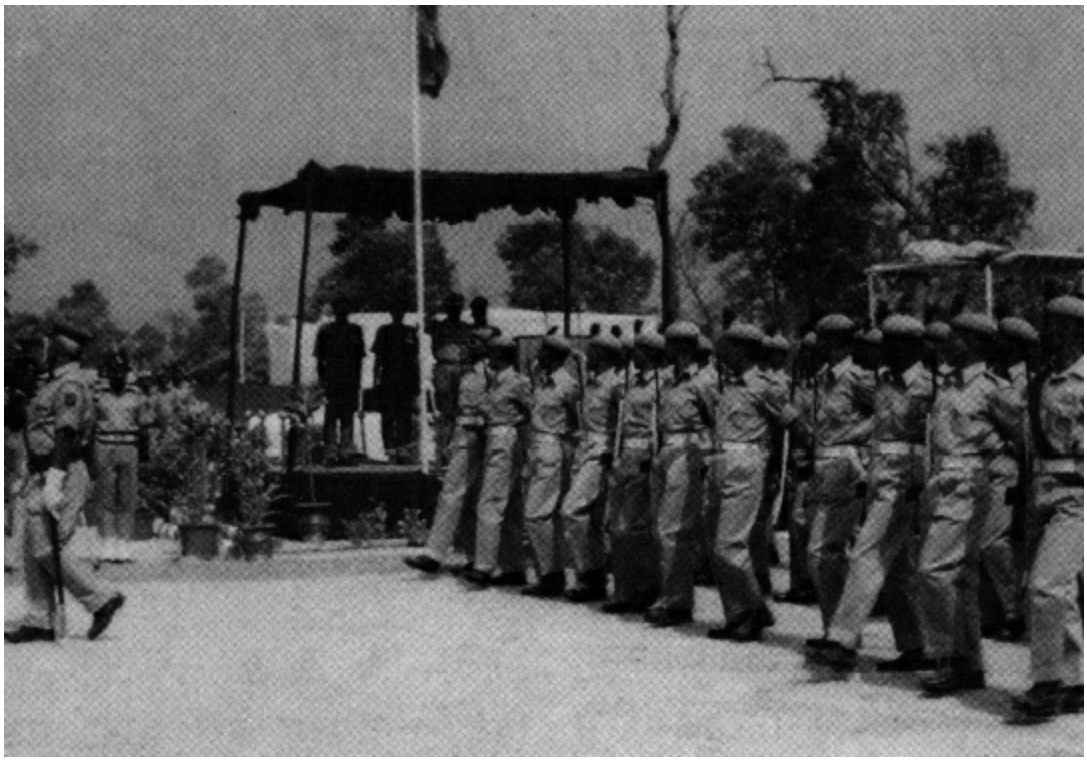
ग्रुप केन्द्र, मुजफ्फरपुर में नव आरक्षियों का दीक्षांत परेड समारोह

दिनांक 23.4.2002 को ग्रुप केन्द्र मुजफ्फरपुर स्थित झपदा परेड ग्राउंड में दो सौ (200) नव आरक्षियों को 44 सप्ताह का बुनियादी प्रशिक्षण प्रदान करने के उपरान्त, एक दीक्षान्त परेड समारोह में उन्हें कर्तव्य निष्ठा की शपथ दिलायी गयी। श्री शाहिद अहमद महानिरीक्षक, बिहार सेक्टर, केरिपु बल, पटना ने परेड की सलामी ली तथा रंगरूटों को शपथ दिलायी। इन नए प्रशिक्षित जवानों ने मोकामाघाट के बैंड की धुन पर आकर्षक मार्च किया। मार्चपास्ट परेड़ का नेतृत्व सहायक कमांडेंट श्री रामेश्वर सिंह ने किया । शपथ ग्रहण करने के उपरान्त महानिरीक्षक, बिहार सेक्टर, पटना ने अपने भाषण में कहा कि देश की सीमा व नागरिकों की सुरक्षा करना जवानों का पुनीत कर्तव्य है। देश के लिए जो जवान अपनी जान न्यौछावर करते हैं, उन्हें सदियों याद किया जाता है। वे अमर हो जाते हैं। प्रशिक्षण के दौरान सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिये उन्होने कुछ जवानों को विशेष रूप से पुरस्कृत भी किया।



श्री शाहेद अहमद, पुलिस महानिरीक्षक, बिहार सेक्टर परेड की सलामी लेते हुए

श्री बी०के० कौशल, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, मुजफ्फरपुर ने प्रशिक्षण के दौरान अनुशासन कायम रखने एवं लगन के साथ प्रशिक्षण प्राप्त करने पर नये जवानों को बधाई दी और अनुशासन के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने की अपील की। श्री पी० दामोदरन, उप महानिरीक्षक पटना, ने मुख्य अतिथि पुलिस महानिरीक्षक पटना, को दो प्रतीक चिन्ह भेंट किये। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों के रूप में मुजफ्फरपुर के आरक्षी उप महानिरीक्षक एच०एन० देवा, जाट रेजिमेंट सेंटर के कर्नल श्री ए०के० गुप्ता, एल०एस० कॉलेज के प्राचार्य श्री आर०डी० पाण्डेय, डा० अरूण साह आदि गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।



कर्तव्य निष्ठा की शपथ लेने के बाद परेड मार्च करते नव आरक्षी

के०रि०पु० बल जवानों द्वारा रक्तदान

रेडक्रास ब्लड बैंक, नीमच द्वारा दिनांक 17.4.2002 को नीमच जिले स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोज किया गया। उक्त रक्तदान शिविर को सफल बनाने हेतु जिला कलेक्टर सी0टी0सी0 एक से के0रि0पु0 बल, कर्मियों को रक्तदान हेतु

भेजने का अनुरोध किेर गया था।

इस संस्थान के 18 कार्मिकों द्वारा स्वेच्छा से उक्त शिविर में रक्तदान किया। जिला कलेक्टर नीमच तथ अतिरिक्त रेडक्रास अध्यक्ष ने के0रि0पु0 बल, कर्मियों द्वारा उनकी संस्था को किये गये स्वैच्छिक रक्तदान के लिए प्रशंसा की तथा आभार व्यक्त किया। समस्त स्थानीय अखबारों द्वारा केरिपु बल कर्मियों द्वारा किए गए रक्तदान की प्रशंसा करते हुए खबर को अपने अखबारों के मुख्य पृष्ठ पर छापा।



सी*0*टी*0*सी*0* एक नीमच के कार्मिक रक्तदान करते हुए

२२वीं बटा० केरिपु बल द्वारा छात्रों को निःशुल्क पाठ्य-पुस्तक वितरित

जन कल्याणमूलक कार्यक्रम के तहत 22वीं वाहिनी केरिपु बल की हाउती कैम्प के जवानों ने गत 15 व 16 मार्च को निःशुल्क पुस्तक वितरण कार्यक्रम बरपेटा जिले के कोकीलाबाडीं क्षेत्र के लोगों के बीच सुरक्षा बलों के प्रति विश्वास बढ़ाने के उद्देश्य से किया। पुस्तक वितरण कार्य बोड़ो समुदाय के निम्न प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के वर्ग द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम कक्षा में पढ़ रहे छात्रों के लिये किया। इसके लिए वाहिनी ने सभी सम्बद्ध विद्यालयों में छात्रों की सूची तैयार की तथा पुस्तकें क्रय की। दो दिन के कार्यक्रम के तहत कोकीलाबाड़ी क्षेत्र में स्थित 16 विद्यालयों में विभिन्न

कक्षाओं को करीब 350 सेट पुस्तकों का वितरण किया गया। निःशुल्क पुस्तक पाकर छात्र काफी उत्साहित हुए। निश्चय ही वाहिनी के इस कार्य से बोड़ो समुदाय के विद्यार्थियों के बीच शिक्षा का एक नया माहौल बना। स्थानीय जनता ने महसूस किया कि मुफ्त पुस्तकों का वितरण केरिपु बल द्वारा सही समय पर अच्छा कदम है।

49 बटालियन सुरक्षा के साथ समाज सेवा में भी

दिनांक 01 मार्च, 2002 एवं 07 मार्च, 2002 को 49 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा ग्राम-हरनी व मेंढर जिला पुंछ क्षेत्र एवं गांव सकारीबन, कोरतज्जा पलमा जिला राजौरी क्षेत्र में सिविक एक्शन कार्यक्रम-2002 के तहत स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया जिसमें 60,000 (साठ हजार रूपये) मात्र की दवाईयाँ डा0 पी0एन0 सोलंकी, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, 49 बटालियन द्वारा निःशुल्क बांटी गई तथा हर विषय के विशेषज्ञ डाक्टरों द्वारा मरीजों का उपचार किया गया।

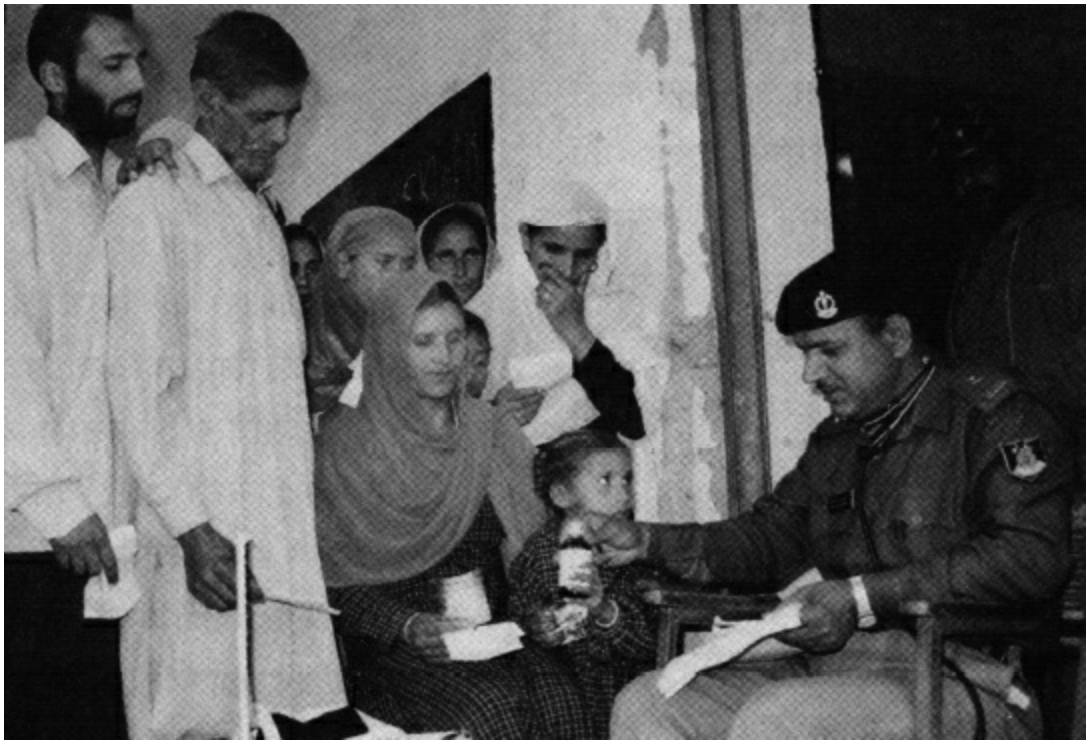


स्थानीय लोगों को पैकेट बांटते हुए कमांडेंट श्री बी.एस. गिल

यह कार्यक्रम श्री बी0एस0 गिल, कमाण्डेंट 49 बटालियन, के0रि0पु0 बल की देख-रेख में आयोजित किया गया। इस अवसर पर बच्चों ने अनेक प्रकार के कार्यक्रम पेश किए तथा खेल-कूद स्पर्धाएं भी आयोजित की गई जिनमें बालीबॉल, क्रिकेट,

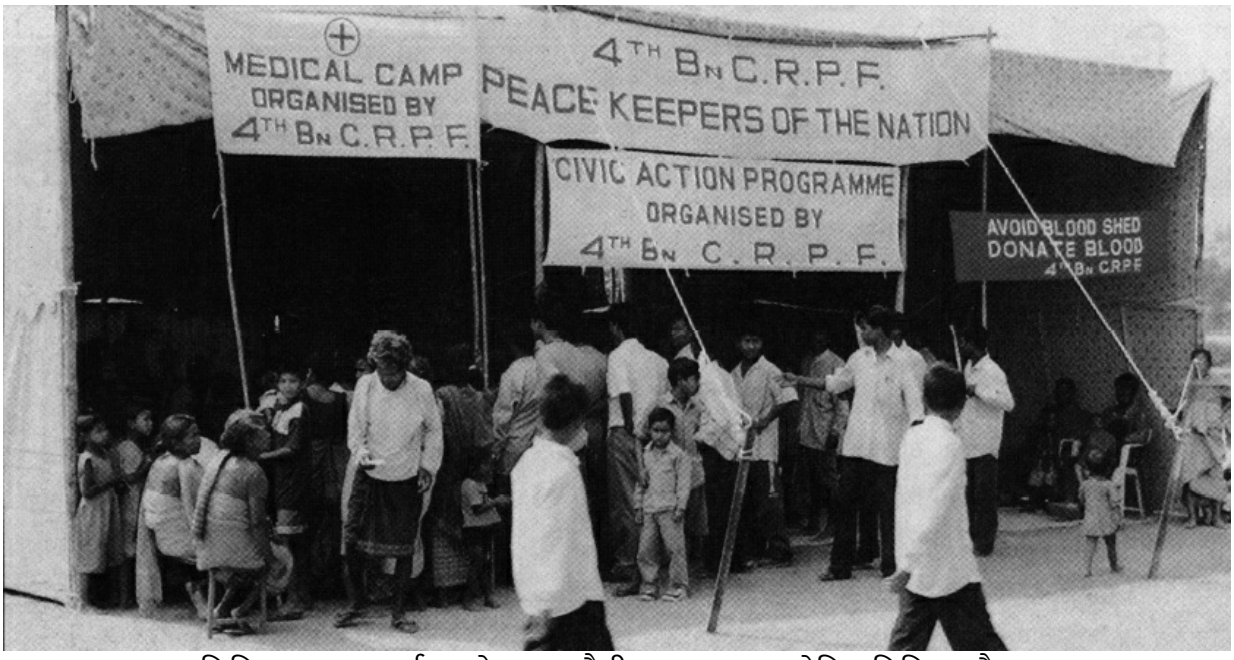
बैडमिंटन तथा अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत 49 बटालियन द्वारा प्रोग्राम में शामिल खिलाड़ियों तथा बच्चों को खेल एवं पढ़ाई संबंधी वस्तुएँ भी बांटी गई।

क्षेत्रीय सरपंचों, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, एस0एच0ओ0, स्कूल प्रिन्सीपलों, क्षेत्र के अन्य गणमान्य नागरिकों, सीमावर्ती क्षेत्रों के नागरिकों, महिलाओं एवं बच्चों ने बहुत भारी संख्या में कार्यक्रमों में भाग लिया तथा कार्यक्रम को अति प्रबल बताया।



49 बटा*0* के डा*0* पी*0*एन*0* सोलंकी निःशुल्क चिकित्सा जाँच व दवाई बांटते हुए

केरिपु बल शांति प्रयासों के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय



सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत चौथी बटा0 द्वारा आयोजित चिकित्सा कैम्प

अपनी डयूटियों की व्यस्तता के बावजूद जनहित कार्यक्रम के तहत केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की चौथी बटालियन ने एक मार्च को कोकराझाड़ के भोटगांव में एक निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जिसमें आसपास के गांवों के गरीब तबके के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। भोटगांव स्थित केरिपु बल की चौथी बटालियन द्वारा उग्रवादियों की धर-पकड़ के साथ-साथ क्षेत्र में समय-समय पर किये जा रहे सामाजिक कार्यों की लोगों ने काफी प्रशंसा की। इस अवसर पर बल की तरफ से कम दामों में विभिन्न तरह की मिठाईयां भी बेची गई, जिसे लोगों ने बड़े उत्साह के साथ खरीदा। केरिपु बल के डीआईजी गुरूदीप सिंह टिवाणा ने इस शिविर का उद्घाटन किया। श्री टिवाणा वर्तमान में निचले असम के आठ जिलों क्रमशः कामरूप, दरंग, नलबाड़ी, बरपेटा, ग्वालपाड़ा, धुवड़ी, बंगाईगांव और कोकराझाड़ में तैनात केरिपु बल के गतिविधियों पर नजर तथा उनको संचालित कर रहे हैं और उन्हें अधिक से अधिक सामाजिक गतिविधि चलाने को प्रोत्साहित करने का काम कर रहे हैं।

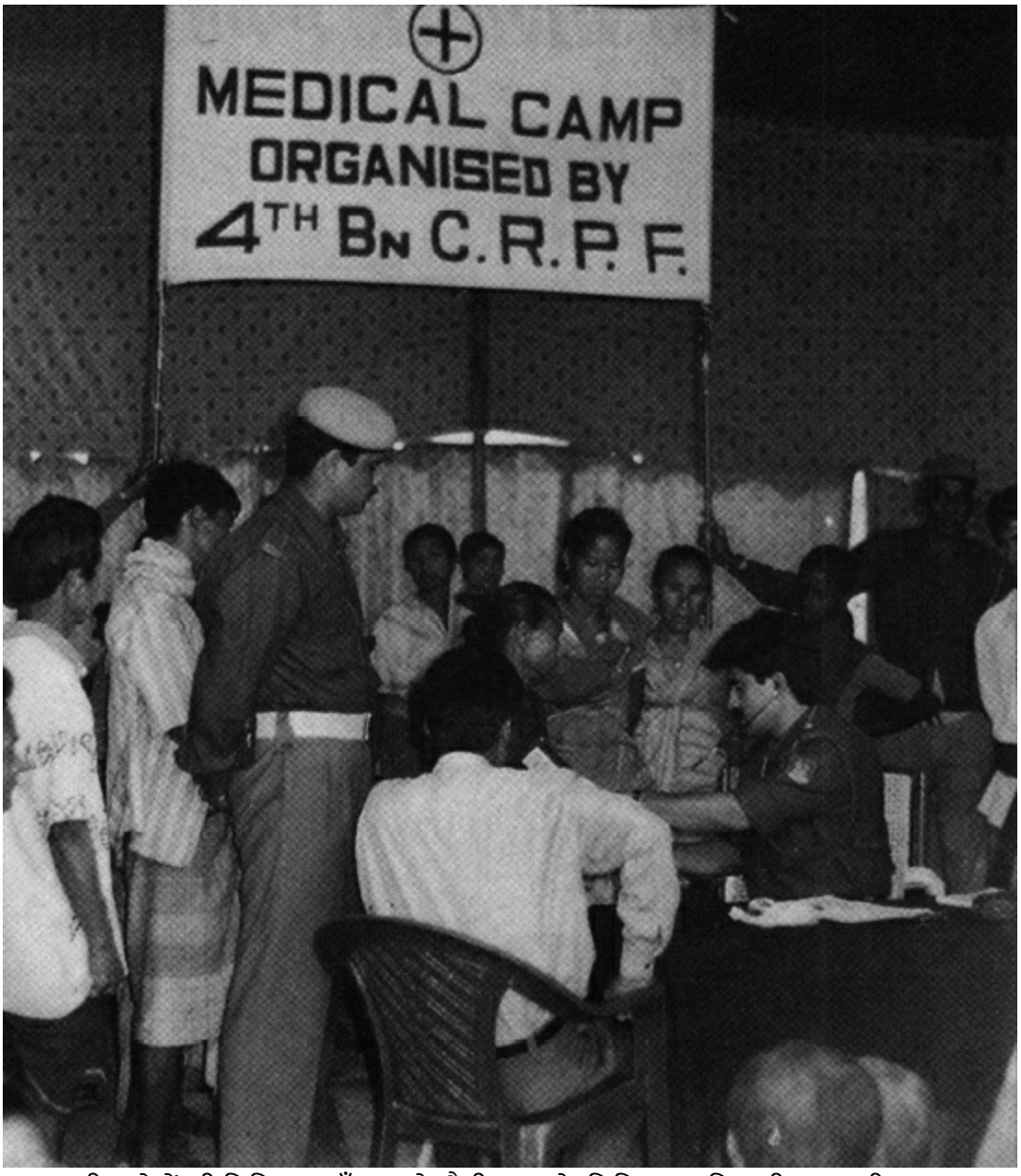
इस शिविर के कार्य को सफल बनाने के लिए कोकराझाड़, आर0एन0बी0 सिविल अस्पताल के डा0 विमल चंद्र मेधी और केरिपु बल की तरफ डा0 सतीश कुमार मुख्य चिकित्सा अधिकारी ग्रु० कें0–मुजफ्फरपुर का बड़ा योगदान रहा। डा0 सतीश कुमार कुछ दिनों के लिए कोकराझाड़ के भोटगांव स्थित चौथी बटालियन के जवानों के इलाज के लिए उन्हें भेजा गया था। डा0 सतीश ने कहा कि यह उनका सौभाग्य है कि इस समय वे यहां उपस्थित हैं और उन्हें इस निःशुल्क चिकित्सा शिविर के जरिए इन सीधे-सादे लोगों का इलाज करने का मौका मिला।

केरिपु बल की चौथी बटालियन द्वारा आयोजित उक्त चिकित्सा शिविर के दौरान

आठ सौ से अधिक रोगियों का इलाज किया और 30 हजार रूपये की निःशुल्क दवाएं मरीजों के बीच वितरित की।

उल्लेखनीय है कि उक्त बटालियन की तरफ से गत पच्चीस फरवरी को सेरफानगुड़ी जिले में भी मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया था और वहां भी लोगों ने निःशुल्क चिकित्सा शिविर में उत्साहित होकर हिस्सा लिया तथा इलाज करवाया था।

केरिपु बल की चौथी बटालियन के कमांडेंट वी0के0 चक्रवर्ती ने कहा कि हमारी बटा0 लोगों को सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ सामाजिक गतिविधियों के तहत समय-समय पर इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करती रहती है। उन्होंने कहा कि असम के लोग बहुत सीधे-सादे होते हैं। वे अपने मन की बातें बिना किसी झिझक के स्पष्ट रूप से कह देते हैं और खास कर बोड़ो समुदाय तो और भी खुले दिल के होते हैं। जरूरत है उन्हे सिर्फ उत्साहित करने तथा सही रास्ते दिखलाने की। उससे पहले उक्त शिविर का उद्घाटन करते हुए केरिपु बल के डीआईजी श्री टिवाणा ने उक्त अवसर पर कहा कि बोड़ो जनजाति प्राकृतिक रूप से पुरे चुस्त है तथा उन्हें मौका दिया जाए तो हर काम करने में सक्षम हैं। विशेषकर कृषि का काम तो वे बड़े कुशलता पूर्वक कर सकते हैं। बस जरूरत है थोड़े प्रशिक्षण की और आधुनिकता की। इसके अलावा असम एकता का प्रतीक है। यहां जितनी भाषा, जाति तथा वर्ण देखने को मिलते हैं, ऐसे किसी दूसरे राज्य में नहीं मिलते हैं और विविधता में एकता का एक अच्छा उदाहरण है असम।

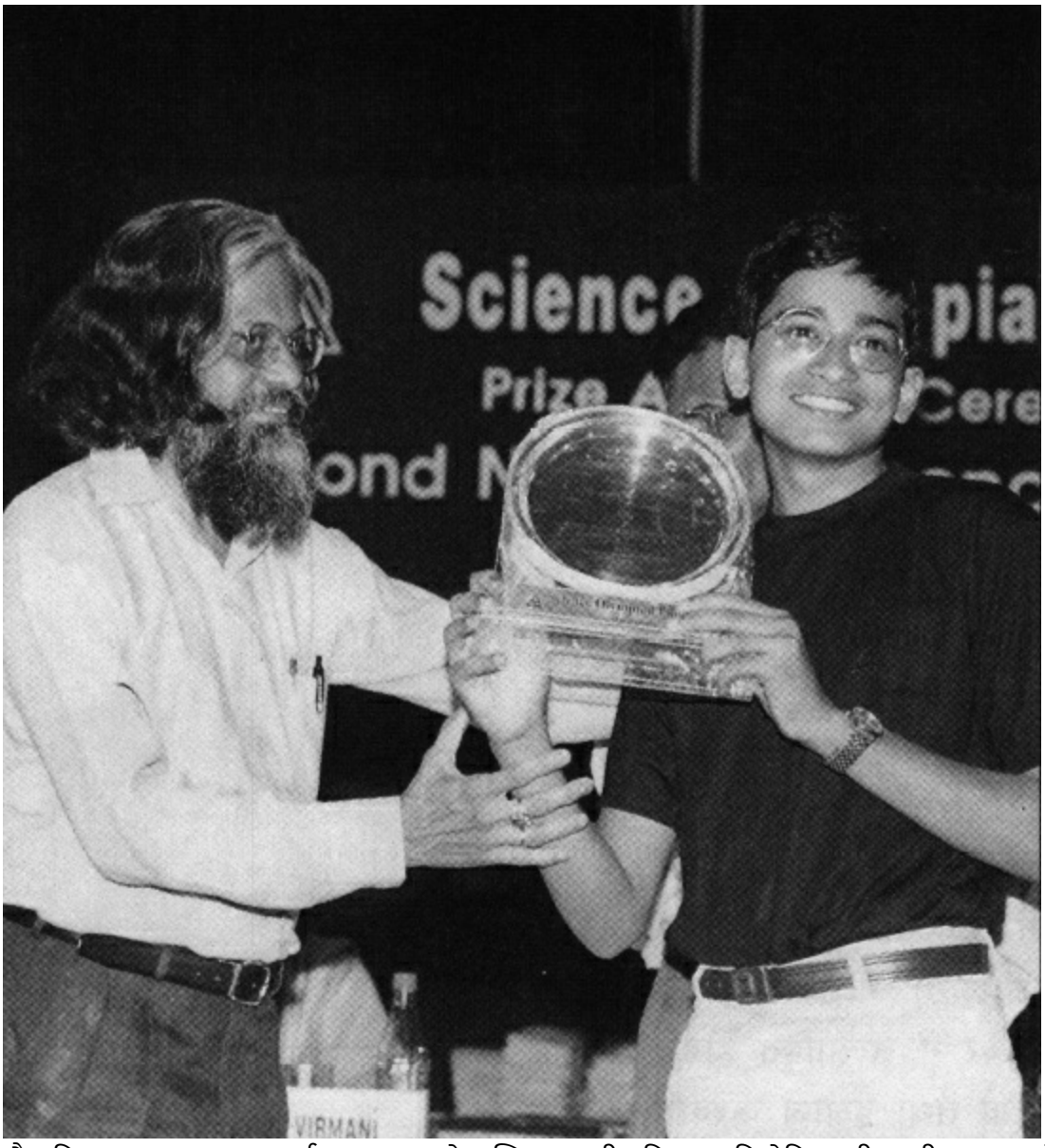


स्थानीय लोगों की चिकित्सा जाँच करते चौथी बटा0 के चिकित्सा अधिकारी डा0 सतीश कुमार

सौरभ-सी0 आर0 पी0 एफ0 पब्लिक स्कूल का गौरव

28मार्च, 1987 में पटना बिहार में जन्में सौरभ सिन्हा ने प्रारम्भिक शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय सीआरपीएफ कैम्प बनतलाव, जम्मू में ग्रहण की। चूंकि सौरभ सिन्हा

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जाने माने मुख्य चिकित्सा अधिकारी/नेत्र विशेषज्ञ डा0 ए.के. सिन्हा के पुत्र हैं। अतः स्वाभाविक है कि एक ही स्टेशन पर शिक्षा पूरी नहीं की जा सकती, क्योंकि अर्द्ध सैनिक बलों में अधिकारियों को देश में शांति व्यवस्था कायम करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना पड़ता है। यही कारण है कि सौरभ ने भी अपनी शिक्षा जम्मू के बाद केन्द्रीय विद्यालय केरिपु बल कैम्प गुहाटी तथा सेन्ट थामस स्कूल रांची में प्राप्त की। तत्पश्चात उनके पिता डा0 सिन्हा की पोस्टिगं बेस अस्पताल, केरिपु बल, नई दिल्ली में हो गयी। अतः 1999 में सौरभ ने प्रतिष्ठित एवं जाने माने स्कूलों में अपना प्रमुख स्थान रखने वाले सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल में दाखिला लिया। सौरभ स्कूली पढ़ाई में अव्वल होने के साथ-साथ अनेक स्कूल/ संस्थानों द्वारा आयोजित ज्ञान-विज्ञान, सामान्य ज्ञान, बुद्धि, तर्क वितर्क परीक्षा तथा क्विज की अनेक प्रतियोगिताएं भी जीती हैं। वर्ष 2001 में आयोजित अखिल भारतीय विज्ञान प्रतियोगिता में दुसरा स्थान प्राप्त करने पर सौरभ को देश के जाने माने एवं भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार डा0 वाइ.एस. राजन ने सिल्वर ट्राफी प्रदान की। सौरभ की प्रतिभा को देखकर दिल्ली राज्य सरकार ने जूनियर साईन्स टेलेंटेड छात्रवृत्ति प्रदान की। विगत दो वर्षों से उसे दिल्ली संस्कृत अकादमी की छात्रवृति भी मिल रही है। सौरभ का सपना अपने पिता की तरह कुछ कर गुजरने का है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 10वीं कक्षा में 94.6 अंक प्राप्त कर सीआरपीएफ स्कूल टॉप करना उनकी भावी कामयाबी की ओर बढ़ता हुआ कदम है। सौरभ के उत्कृष्ट प्रदर्शन से उनके माता पिता ही नहीं बल्कि स्कूल के शिक्षकगण तथा मित्रों को अपार हर्ष हुआ साथ ही उसकी प्रतिभा पर पूरे बल को गर्व है।



प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार डा0 वाई.एस. राजन से अखिल भारतीय विज्ञान प्रतियोगिता की ट्राफी प्राप्त करते हुए सौरभ सिन्हा

गांव वालों द्वारा के.रि.पु. बल के शहीद की प्रतिमा का अनावरण



राजस्थान के सिकरोरी गांव में शहीद सिपाही सुभाष चंद की प्रतिमा का अनावरण करते पुलिस महानिरीक्षक उत्तरी सेक्टर श्री पदमन सिंह

राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले के सिकरोरी गांव के हर एक व्यक्ति की जुवान से "सुभाष चंद अमर रहे" शब्द गूंज रहे थे। इस गांव के हजारों लोग एकत्रित होकर भारत मां के इस सपूत को अपनी नम आँखों से श्रद्धाजंलि दी। स्वर्गीय सिपाही सुभाष चंद इसी गांव का रहने वाला था तथा 4वीं बटालियन, केरिपु बल त्रिपुरा में तैनात था। मार्च 2001 को त्रिपुरा में उग्रवादियों के साथ संघर्ष करते हुए मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया।

गांव वालों ने इस महान सपूत के सर्वोच्च बलिदान को सम्मान देने के लिए उसकी मूर्ति गांव के प्रांगण में स्थापित करने का फैसला किया। मुर्ति अनावरण समारोह 25-5-2002 को किया गया जिसमें आस पास के गावों के लोगों ने हजारों की संख्या में उपस्थित होकर वीर शहीद को श्रद्धाजंलि दी। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की ओर से पु. महानिरीक्षक, उत्तरी सेक्टर श्री पदमन सिंह ने स्व. सि. सुभाष चंद की मुर्ति का अनावरण कर श्रद्धाजंलि दी तथा कहा कि इस जवान की शहादत राष्ट्र की एकता एवं अखंडता बनाए रखने के लिए स्थानीय युवाओं को हमेशा प्रेरणा देती रहेगी।

केरिपु बल ने अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट की कम्प्यूटर जागरूकता चैम्पीयनशिप जीती

हाल ही में जयपुर (राजस्थान) में सम्पन्न हुई 45वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट 2001 की कम्प्यूटर जागरूकता प्रतियोगिता की ओवर आल चैम्पीयनशिप ट्रॉफी जीतने पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कम्प्यूटर टीम को बल के महानिदेशक डा०

त्रिनाथ मिश्र ने बधाई दी है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम ने यह ट्रॉफी लगातार चौथे साल जीती है।

उप कमांडेंट दीपक शर्मा के नेतृत्व में केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज सी०टी०सी०(टी०) राँची के सहायक उप निरीक्षक (तकनीक) एस० दसतागिरी, सहायक उप निरीक्षक (तकनीक) एन० एस० गुप्ता० तथा हवलदार (आपरेटर) गोपीनाथ ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम का प्रतिनिधत्व किया।

अभी तक बल ने कम्प्यूटर जागरूकता में यह चैम्पीयनशिप पांचवी बार जीती

त्रिपुरा के राज्यपाल ने केरिपु. बल की प्रशंसा की

19 अप्रैल 2002 को उत्तरी त्रिपुरा जिले के गांव कुकीचेरा में केरिपु बल की 94 बटालियन के जवान निरीक्षक देवी सिंह के नेतृत्व में एन. एल.एफ.टी. (बी.एम. ग्रुप्प) के आतंकवादियों पर जवाबी गोलाबारी की, जिसमें मलेन्द्र रियांग नामक कुख्यात उग्रवादी मारा गया तथा घटनास्थल से भारी मात्रा में गोला बारूद बरामद हुआ।

त्रिपुरा के राज्यपाल महामहिम लेफ्टीनेंट जनरल के.एम. सेठ ने केरिपु बल (सीआरपीएफ) की 94 बटालियन के जवानों द्वारा त्रिपुरा में उग्रवादियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियानों में अदम्य साहस तथा शौर्य वीरता का प्रदर्शन करने के लिए प्रशंसा की। लेफ्टीनेंट जनरल सेठ ने पत्र लिखा और कहा कि - 19 अप्रैल 2002 को कुकीचेरा में 94 बटालियन केरिपु बल जवानों द्वारा की गयी सफल एवं साहसिक कार्रवाई तारीफे काबिल है, "मैं टीम के जवानों का अभिनन्दन करता हूँ"।

गुजरात में केरिपु बल की 12 अतिरिक्त कम्पनियां तैनात

गुजरात के दंगाग्रस्त क्षेत्रों में और अधिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की 12 अतिरिक्त कम्पनियां भेजी जाने से राज्य में बल की तैनाती की कुल नफरी बड़कर 29 हो गयी है।

यह अतिरिक्त कम्पनियां पंजाब, बिहार, झारखंड तथा उत्तर प्रदेश की तैनाती से हटाकर भेजी गयी है।

बल की सभी 29 कम्पनियां (21 केरिपु बल तथा 8 आर.ए.एफ.) अभी गुजरात के अहमदाबाद शहर, आनन्द, गोधरा, सूरत, बढ़ोदरा तथा विजलपुर (पंचमहल) जैसे संवेदनशील स्थानों पर तैनात हैं।

गोवा विधानसभा चुनाव के लिए केरिपु बल की 9 कम्पनियाँ तैनात

देश में शांतिपूर्ण विधान सभा चुनाव सम्पन्न कराने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 30 मई 2002 को गोवा विधानसभा चुनाव सम्पन्न कराने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 9 कम्पनियां तैनात की गई थी।

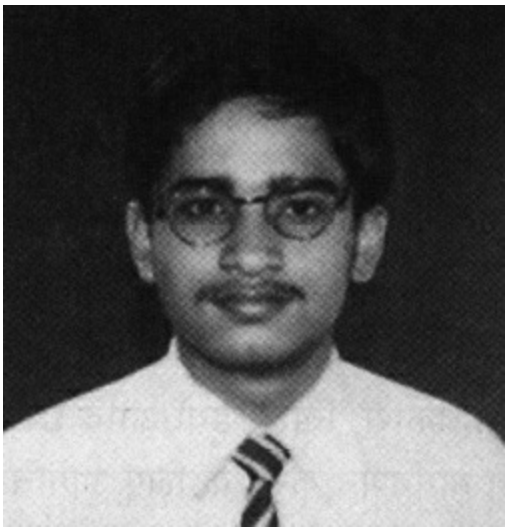
यह 9 कम्पनियां आन्ध्रप्रदेश तथा पंजाब से हटा कर भेजी गयी थी।

सी०आर०पी०एफ पब्लिक स्कूल का केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन

किसी भी संगठन को अधिकतम परिचालनिक दक्षता प्राप्त करने के लिए संगठन के कार्मिकों का उच्च मनोबल तथा उनकी प्रेरणा का महत्व सर्वोपरि है।

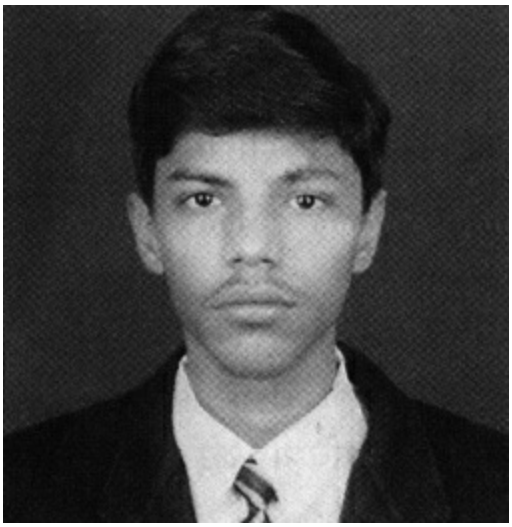
सेवारत कार्मिक मुख्यतः अपने बच्चों की शिक्षा के बारे में हमेशा चिन्तित रहते हैं। इसलिए केरिपु बल के सभी ग्रुप केन्द्रों में मांन्टेसरी तथा सेन्ट्रल स्कूल स्थापित किए हैं। बल कार्मिकों के बच्चों को महत्वपूर्ण तथा उच्च क्वालिटी की शिक्षा देने के लिए दिल्ली तथा जवाहर नगर जिला रंगारेड्डी (आन्ध्र प्रदेश) में दो सी०आर०पी०एफ० पब्लिक स्कूल शुरू किए हैं। 3 आई०टी०आई क्रमशः एक एक दिल्ली, आवड़ी तथा भुवनेश्वर में भी खोले हैं जो बल कार्मिकों के बच्चों को रेडियो / टी०वी० मकेनिक, इलेक्ट्रानिक्स, मोटर मकेनिक, इलेक्ट्रिकल तथा वेल्डर ट्रेड में व्यावसायिक प्रशिक्षण देते हैं। बल ने एक इंस्टीटयूट ऑफ इन्फोंमेशन टेक्नोलॉजी भी खोला है।

पिछले वर्षों में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के कक्षा-10 तथा 12वीं के परीक्षा परिणाम बताते हैं कि सी०आर०पी०एफ० पब्लिक स्कूल रोहिणी दिल्ली के प्रतिष्ठित स्कूलों में से एक है। इसका श्रेय सी०आर०पी०एफ० पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य, शिक्षकों की समपर्ण भावना, स्कूल के अध्ययन में अभिभावकों का सहयोग, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारियों द्वारा समय समय पर दिए गये मार्गदर्शन, आर्थिक सहायता तथा शिक्षा के लिए बेहतरीन उपकरण तथा संसाधन मुहैया कराने में स्कूल प्रबंधकों द्वारा दी गई सहायता है। बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र एक प्रख्यात विद्वान हैं, इसी लिए उच्चकोटि की आधुनिकतम शिक्षा केरिपु बल जवानों के बच्चों को दिलाने में हमेशा प्रेरणा के श्रोत रहे हैं। वह जानते हैं कि आज के बच्चे कल के राष्ट्र निर्माता बनेंगें। देश का भार उनके कन्धों पर आना है। अतः जब भी वे फील्ड फॉरमेशनों का दौरा करते हैं, जवानों को उनके बच्चों को बेहतरीन शिक्षा दिलाने के लिए इन स्कूलों में दाखिल करने को प्रेरित करते हैं। आज सी०आर०पी०एफ स्कूल, दिल्ली के स्कूलों में ज्ञान अर्जन का एक प्रमुख स्थान रखता है।



दसवीं कक्षा का स्कूल टॉपर सौरभ सिन्हा

स्कूल में कक्षा 1 से 5 तक के०रि०पु० बल जवानों के बच्चों को शत् प्रतिशत दाखिला दिया जाता है जबकि आगे की उच्च कक्षाओं में सीट की उपलब्धता को ध्यान में



*12*वीं कक्षा का स्कूल टॉपर सन्दीप कुमार

रखते हुए दाखिला दिये जाते हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु स्कूल परिसर में विभिन्न प्रकार के खेलों का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की गई है, इसके लिए स्कूल को हर प्रकार के सन संसाधनों से सुसज्जित किया गया है। क्रीड़ा के साथ विद्यार्थियों को उच्च कोटि के संगीत तथा वाद्य संगीत की शिक्षा प्रदान करने की भी विशेष व्यवस्था है। स्कूल में समय-समय पर विभिन्न क्षेत्रों के प्रख्यात शिक्षाविदों, संगीतकारों, खिलाड़ियों आदि छात्रों का मार्गदर्शन करने के लिए आमंत्रित किए जाते हैं जिससे कि छात्र उनके अनुभवों का लाभ उठा सके।

सी0आर0पी0एफ0 पब्लिक स्कूल में वर्ष 2002 में आयोजित 10वीं कक्षा में 140

छात्र-छात्रायें परीक्षा में बैठे जिनमें से 101 प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए तथा शेष 39 द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। कक्षा 10वीं का बोर्ड का परीक्षाफल शत प्रतिशत रहा। इसी तरह 12वीं कक्षा में स्कूल के 111 छात्र-छात्रायें बोर्ड परीक्षा में बैठे जिनमें से 106 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में तथा 5 द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। 12वीं कक्षा का परीक्षाफल शत् प्रतिशत् रहा।

स्कूल द्वारा मुहैया कराई गई जानकारी के अनुसार 10वीं कक्षा की परीक्षा में के0रि0पु0 बल के अधिकारियों तथा जवानों के 79 तथा सिविलियन के 61 कुल 140 बच्चे परीक्षा में बैठे जिनका परीक्षा परिणाम इस प्रकार से रहा :–

पांचों विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त करने वाले केरिपु बल कार्मिकों के बच्चे :–

1. अनुप सिंह चौहान 83.2%
2. अमित कुमार रोहिल्ला 82.4%
3. गौरव मलिक 81.8%
4. अनिल कुमार 77.8%
5. संजय सिंह नेगी 76.6%
6. दीप्ति 75.2%
7. सौरभ सिन्हा 94.4%
8. दीपशिखा सिंह 82.8%
9. तरूण कुमार 82.0%

सिविलियन

10. प्रवीण चौधरी 93.0%
11. हरीश गोयल 92.0%

स्कूल टॉपर सौरभ सिन्हा केरिपु बल के मशहूर मुख्य चिकित्सा अधिकारी नेत्र विशेषज्ञ डा० ए.के. सिन्हा का ही बेटे है जिसने पांचो विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त कर 94.4% अंक अर्जित कर बोर्ड की परीक्षा में तीसरा स्थान प्राप्त किया है।

इसी प्रकार 12वीं कक्षा में केरिपु बल के अधिकारियों व जवानों के कुल 46 छात्र-छात्रायें परीक्षा में बैठे जिसमें 41 छात्र-छात्रायें प्रथम श्रेणी में पास हुए जबकि 9 छात्र छात्रायें द्वितीय श्रेणी में पास हुए। स्कूल टापर सन्दीप कुमार तथा केरिपु बल कार्मिकों के बच्चों में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली सुमित डवराल हैं।

12वीं परीक्षा में सभी चार विषयों में मिलाकर सबसे अधिक अंक प्राप्त करने वाले केरिपु बल कार्मिकों के बच्चों का वर्ग वार ब्यौरा निम्न प्रकार से हैं :–

विज्ञान ग्रुप

1. सन्दीप कुमार 95.5%
2. अमितेश भूषण शर्मा 82.0%

3. राकेश नामव्यार 78.3%

4. राकेश यादव 85.8%

5. मनजुल विजरनिया 84.8%

6. सुमित डवराल 86.0%

वाणिज्य ग्रुप

6. बरूण मित्तल 87.4%

7. अनुवेष सिन्हा 65.3%

8. सन्दीप कुमार 81.8%

आर्ट ग्रुप

9. प्रीति रैना 83.2%

10. भावना डागर 80.5%

11. पी.एस. युरथिंगला 77.3%

केन्द्रीय माध्यमिक बोर्ड की 10वीं तथा 12वीं परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बल के महानिदेशक डा0 त्रिनाथ मिश्र ने स्कूल के प्रधानाचार्य, अध्यापकों तथा स्टाफ को बधाई दी तथा विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की है।

अन्तराष्ट्रीय कैदियों की सुरक्षा में केरिपु बल

डिप्टी कमांडेंट, संजीव रंजन
ग्रु0 के0 दुर्गापुर

अन्तराष्ट्रीय कैदियों की सुरक्षा में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल। चौंक गये न आप। जी हाँ अपने सामान्य डयूटी के अलावा इस प्रतिष्ठित बल को श्रीलंका, सिंगापुर, इंडोनेशिया व अन्य देशों के कैदियों की सुरक्षा की जवाबदेही भी दी गयी है जिसे पूरी तरह तत्परता के साथ इस बल के जवान भारत की मुख्यभूमि से 1300 कि.मी. दूर बंगाल की खाड़ी में स्थित कालापानी या अंडमान व निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर जिला जेल में कर रही है।

ये कैदी मुख्य रूप से तस्कर, घड़ियाल/डालफिन को पकड़ने वाले विदेशी शिकारी, कीमती लकड़ी की तस्करी में जुड़े विदेशी और अन्य ऐसे अपराधिक तत्व होते हैं जिसे भारतीय नौसेना व तटरक्षक इस विस्तृत क्षेत्र में पकड़ती है। चूँकि इस क्षेत्र से अन्तराष्ट्रीय सीमाएं काफी नजदीक है। अतः ऐसे आवांछित तत्व अपनी

ललचायी दृष्टि इस धनी भूभाग पर हमेशा गड़ाये रखते है और जब भी मौका मिल जाए तस्करी और अन्य ऐसे गैरकानूनी और आपराधिक कृत्यों को अंजाम देते हैं। किन्तु हमारे सुरक्षाकर्मियों की सजगता उन्हें पकड़ लेती है। फिर न्यायालय द्वारा दी गयी सजा उन्हें जिला जेल पोर्टब्लेयर में काटनी पड़ती है। सजा काट लेने के उपरांत उन्हें तुरंत उनके देशों के लिए रूखसत नहीं किया जाता है क्योंकि देश की मुख्यभूमि की तरह वहाँ यातायात के साधन गन्तव्य के लिए हर हमेशा उपलब्ध नहीं होते चूंकि उन्हें विभिन्न देशों के लिए रवाना करना होता है। अतः स्वाभाविक है कि विभिन्न देशों के संबंधित जहाज भी हर वक्त नहीं होते। इस परिस्थिति में ऐसे अपराधिक तत्वों को सजा काटने के बाद आजाद कर देने के बदले जिला जेल से सटे एक अन्य जेल में डाल दिया जाता है। जहाँ सुरक्षा का बाहय रिंग के. रि. पु. बल के जवानों द्वारा पूरा होता है और हमारे जवान पूरी मुस्तैदी से वहाँ डियूटी देते हैं। इन कैदियों को तब तक अंडमान प्रशासन उस जेल में रखती है जबतक कि वे अपने देश के जहाज से अपने देश को प्रस्थान न कर जाए। अगर इन तत्वों को इस तरह नहीं रखा जाए और सजा काट लेने के बाद पोर्टब्लेयर में आजाद कर दिया जाए तो वहाँ के अपराध का ग्राफ काफी बढ़ा देंगे और अंडमान प्रशासन के लिए एक भारी सरदर्द हो जाएगा।



पोर्टब्लेयर की सेल्यूलर जेल जहाँ केरिपु बल तैनात है।

इस प्रकार कानून व्यवस्था व जेल की सुरक्षा की डियूटी में 78 वाहिनी वर्तमान में पोर्टब्लेयर में तैनात है। पूर्व में यहाँ बटालियन स्तर की डिप्लायमेंट थी जो अंडमान पुलिस की शनैः-शनैः बढ़ोत्तरी के बाद घटकर आज कंपनी स्तर की हो गयी है। आज इस गहरे काला-नीला प्रदेश जहाँ सागर शांत व स्थिर है, और दुनिया के हलचल व

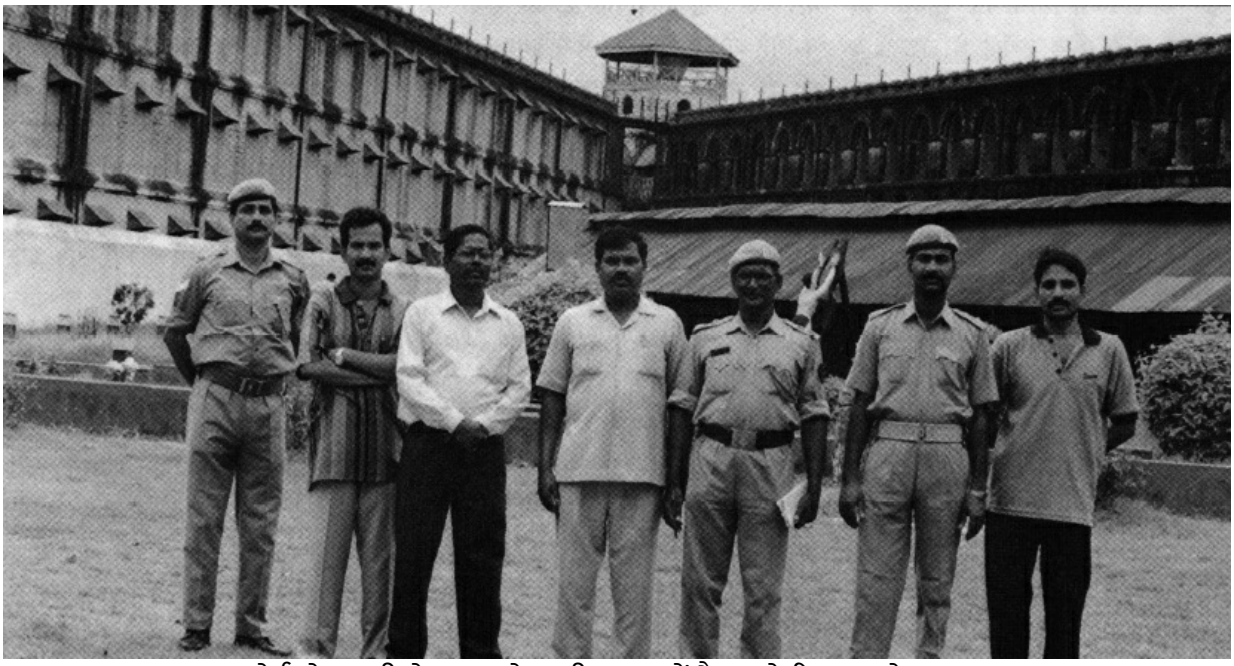
कोलाहल से दूर कोरेपु बल के जवान भी पूरी गंभीरता, सजगता, व विश्वसनीयता के साथ यहाँ अतिमहत्वपूर्ण डियूटियों को कर रहे हैं। अटलांटा प्वाइंट पर सेल्यूलर जेल से महज 200 गज पर कंपनी मुख्यालय है। द्वितीय विश्वयुद्ध में प्रयुक्त दो एंटी एअरक्राफ्ट गन कोत परिसर की शोभा बढाये हुए है।

कालापानी द्वीप की राजधानी पोर्टब्लेयर से हमारी बोइंग विमान 737 सुबह आठ बजे उड़ान भरी। धरातल को छोड़कर हम उपर बादलों के धुंध में प्रवेश कर चुके थे जहाँ से नीचे का विराट जलप्रदेश गहरा नीला व काला दिख रहा था। बिल्कुल शान्त व स्थिर। अपनी चिरपरिचत मर्यादा के अनुरूप गंभीर। दुनिया के हलचल व कोलाहल से दूर। किन्तु इस दुनिया को देखकर मेरा चित अशांत था। मन में सहमति व असहमति का एक ज्वार उठ रहा था। बचपन से आज तक कालापानी द्वीप के बारे में जो कुछ पढ़ा व सुना था, उसके दो सौ वर्ष से भी पुराने अतीत के बारे में जितना कुछ जाना था उसे जब आज के कालापानी से तुलना कर रहा था तो सब कुछ बदला हुआ मिला। आज यह पूरी तरह विकसित, हर स्तर पर आगे बढ़ा हुआ और देश के अन्य शहरों की तरह सुविधा सम्पन्न जगह के रूप में हैं।

भारत की मुख्यभूमि (कलकत्ता/चेन्नई) से करीब 1300 कि.मी. दूर बंगाल की खाड़ी में स्थित कालापानी या अंडमान और निकोबार द्वीप समूह करीब 572 द्वीपों का समुह है जो करीब 700 वर्ग कि.मी. में फैला है। इसमें अंडमान द्वीप में मुख्यतः नार्थ अंडमान, मिडिल अंडमान, दक्षिण अंडमान है जबकि निकोबार द्वीप में कार निकोबार, ननकवरी, कथचल और चावरा द्वीप है। उत्तर अंडमान से दक्षिण निकोबार के इंदिरा प्वाइंट तक 590 कि.मी. लम्बे क्षेत्र में इस द्वीप समूह का लम्बवत फैलाव है और चौड़ाई 58 कि.मी. है। कुल क्षेत्रफल 8249 वर्ग कि.मी. है जिसके अंदर अंडमान में निग्रो उत्पत्ति के जारवा, ओंगी, व सेन्टिनलिज और निकोबार में मंगोलाइड उत्पत्ति के सोम्पेन व निकोबारिस जनजातियाँ हैं। ये जनजातियाँ सम्मिलित रूप से वहाँ की कुल जनसंख्या (2,79,111) का 12 प्रतिशत हैं। सुदूरवर्ती इंदिरा प्वाइंट से इंडोनेशिया की दूरी करीब 100 कि.मी. और बर्मा की 143 कि.मी. है। इस जगह से अन्तराष्ट्रीय जहाज विभिन्न देशों के लिए जाते हुए दिखायी देते है। सुन्दर जहाजों का नजारा इस विहंगम जलराशि में और विहंगत हो उठता है। सामरिक दृष्टि से यह जगह बेहद महत्वपूर्ण व संवेदनशील है। इसी के चलते यहाँ इण्डियन आर्मी, एअरफोर्स और नेवी तीनों अन्य ढेर सारी सुरक्षा एजेंसियों के साथ कार्यरत है। हमारी तीनों सेनाओं की संयुक्त कमान अभी हाल ही में पहली बार इस द्वीप पर कार्य करना शुरू किया है।

इस द्वीप का अपना एक बेहद गौरवशाली अतीत रहा है। माले की भाषा में इस द्वीप का नाम हंडमान और आगे चलकर अंडमान के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अंडमान के गहरे नीले समुद्र जो दूर से काला या काला सदृश दिखता था, के नाम पर इसे कालापानी भी कहा गया। टोल्मति ने इसे सौभाग्य का टापू कहा। अंडमान का लिखित इतिहास टोल्मति के रिकार्ड से है। चीनी यात्री इत्सिंग ने भी इसकी चर्चा की और इसे अंडिबान कहा। इसे अगमाते यानि “सौभाग्य का टापू” नाम से भी नवाजा गया। इटली

के यात्री निकोलोकोन्टी (15 सदी) ने इसे “सोने के द्वीप” के नाम से पुकारा। मार्कोपोलो ने इन द्वीपों का भ्रमण किया और वहाँ के लोगों को नरभक्षी के रूप में देखा। 17वीं सदी में मराठों ने इस पर अधिकार कर लिया। 18वीं सदी के शुरूआत में यह खन्जोरी आग्रे के नेतृत्व में मराठों का जल सैनिक का अड्डा था और ये मराठे सैन्य बल उस तरफ से गुजरने वाले इंग्लैंड, हॉलेण्ड, पुर्तगाल आदि देशों के जलयान पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लेते थे और फिरौती के बाद ही उसे छोड़ते थे। 1729 तक आगे इन विदेशियों के लिए मुसीबत बना रहा। क्रोलबुक व आर्चिबाल्ड ब्लेयर ने इन द्वीपों का सर्वेक्षण किया और इसे बसाने की कोशिश की। उन्हीं के नाम पर इसे पोर्टब्लेयर कहा गया। बाद (1943) में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने इसे शहीद व स्वराज द्वीप का नाम दिया। सन् 1857 से 1942 तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दीवानों को यहाँ लाकर रखा गया। सन 1942 में अंग्रेजों को हराकर जापानियों ने इस द्वीप पर अधिपत्य जमा लिया। उस दौरान द्विपवासियों पर काफी अत्याचार हुआ और पोर्टब्लेयर से 15 कि.मी. दूर चौवालीस स्थानीय लोगों को जासूस होने की शंका में गोलियों से भून दिया गया। आज हम्फ्रीगंज वेदी उसी की याद में है। सन् 1945 में पुनः अंग्रेजों ने इस द्वीप को हासिल किया किंतु उन्हें अपनी राजधानी रोस द्वीप से हटा कर पोर्टब्लेयर करनी पड़ी क्योंकि जापानियों ने उसे तोड़-फोड़ कर बर्बाद कर दिया था और उसमें विस्फोटक (माइन्स) भी लगा दिया था। 1858 से 1945 तक यह द्वीप अंग्रेजों की राजधानी थी। रोस द्वीप के अवशेष आज भी भारतीय नौसेना के नियंत्रण में विद्यमान हैं जो यह बताता है कि दो सौ वर्ष पूर्व यह बेहद विकसित, व्यवस्थित व सम्पन्न शाली था। रोड, सफाई, सिस्टम, क्लब, वैरक्स, ईमारत, बेकरी, प्रेस, अस्पताल, पानी के स्टोरेज, नाचघर ओर जीवन के अन्य आवश्यक व आरामदेह सुविधाएँ विद्यमान थी जो आज भी 200 वर्ष व आजादी के बाद भी भारत के ढेरों गाँव कस्वे व शहर में उपलब्ध नहीं हैं। नवम्वर 1956 से यह द्वीप एक केन्द्र शासित प्रदेश है जबकि सन् 1872 से ही यह अंग्रेज शासन एक मुख्य आयुक्त द्वारा शासित होता रहा।



पोर्टब्लेयर की सेल्यूलर जेल की सुरक्षा में तैनात केरिपु बल के जवान

सेल्यूलर जेल - अगर यह कहा जाए कि सेल्युलर जेल अंडमान को पूरे विश्व के नक्शे पर विख्यात किया तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज यह राष्ट्रीय स्मारक है और हमारे स्वाधीनता संग्राम का एक चश्मदीद गवाह। यहाँ पहुँचने पर हमारा मस्तिष्क स्वतः उन आजादी के दीवानों के प्रति श्रद्धा से झुक जाता है जिन्होनें हमारी आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया। पोर्टब्लेयर के अटलांटा प्वाइंट पर इस जेल का निर्माण 1896 से 1906 के बीच जी. सी. लोयल और ए. एन. लेथब्रुज के अनुमोदन पर हुआ। यह एक तीन मंजिली इमारत थी जिसके सात खण्ड साईकिल के पहिये की तीलियों की तरह सात दिशाओं में फैले हुए थे। इसके प्रथम खण्ड में 105, दूसरे में 102, तीसरे में 150, चौथे में 53, पाँचवें में 93, छठे में 60 और सातवें खण्ड में 126 कोठरियाँ थी। कुल मिलाकर इस जेल में 698 काल कोठरियाँ थी। आज समय के थपेड़ों से लड़कर मात्र तीन भुजाएँ और 291 कोठरियाँ (सेल) बच गयी हैं। पूरे निर्माण कार्य के जिम्मेदार एम. सी. वलन थे। करीब 600 मजदूर और कैदी इसके निर्माण कार्य में लगे। लगभग 30,0,000 ईट डंडास प्वाइंट और नेवी व ईंट भट्टो से बनाकर लगायी गयी। एक-एक ईंट में क्रांतिकारियों का खून पसीना लगा। इसकी हरेक कोठरी साढ़े तेरह फीट लम्बी और सात फीट चौड़ी और बिना शौचालय सुविधा के थी। फर्श से 9 फीट उचाँई में रोशनी व हवा के लिए तीन फीट लम्बा और एक फीट चौड़ा रोशनदान था। कालकोठरी के गेट की चौड़ाई कम थी जिसमें सुगमतापूर्वक प्रवेश नहीं हो सकता था। सातों विंग एक-दूसरे के साथ धुरी पर मिलते थे जहाँ चौबीस संतरी का पहरा हर वक्त होता रहता था। प्रत्येक संतरी सातों विंग पर अपनी नजर दौड़ा सकता था। चूँकि इस जेल में प्रत्येक कैदी को एक-एक कोठरी या सेल मिला था। अतः इसी के आधार पर इसे सेल्यूलर जेल कहा गया। प्रत्येक कैदी के हिस्से

एकाकीपन, पूर्ण निस्तब्धता व सूना था। कोई किसी के साथ बातचीत, विचारों का आदान-प्रदान या किसी प्रकार की अभिव्यक्ति नहीं कर सकता था। वीर सावरकर को एक-डेढ़ साल बाद पता चला कि उसी जेल के भवन में उसका भाई भी कैद में था। कैदियों को इस ढंग से अलग-अलग रखना एक खास विशेषता थी उस जेल की। कैदियों की हालत बड़ी कष्टपूर्ण थी। संसार में दो भगवान है एक स्वर्ग में और एक पोर्ट ब्लेयर में वह खुद, की प्रताड़ना होती थी। उस प्रताड़ना से कई कैदी मर गये और कई मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गये। 200 कैदियों का पहला जत्था 10 मार्च 1858 को डा. जे. पी. वाकर के नेतृत्व में यहाँ पहुँचा। उन दिनों प्रत्येक कैदी को एक आना नौ पौंड प्रतिदिन के हिसाब से दिया जाता था जो उनके भोजन, कपड़े व तमाम खर्च के लिए था। यह जेल अपने क्रूर व्यवहार, अमानुषिक रवैये और कैदियों के साथ अमानवीय तरीके के लिए जाना जाता था। पहनने के लिए जूट की पोशाक, पैरों में बेड़ियाँ, क्रास बार पर दोनों हाथ बाँधना, गले तथा पैरों में लोहे की जंजीर, पाँव में बेड़ियाँ पहनाकर छ:-छ: महीने तक एकाकी काल-कोठरी में बन्द कर देने जैसे सजा के लिए यह जेल जाना जाता था। शाम पाँच बजे से सुबह छ: बजे तक के करीब तेरह घन्टे के रात्रिकालीन अवधि हेतु कैदी को अपने पेशाब के लिए मिटटी का एक बर्तन दिया जाता था जो अपर्याप्त था। रात में कैदियों को अपने शौच पर नियंत्रण रखना पड़ता था जो बेहद कष्टपूर्ण था। बीमार कैदियों के डाक्टरी जाँच के लिए भेजने से पूर्व जेलर या जेलसूत्रों का आश्वस्त होना जरूरी था। साल में कैदियों को एक बार अपने घर पत्र लिखने की आजादी थी। उनके पत्राचार की पूरी तरह जाँच-पड़ताल की जाती थी। सिर्फ अंकुश, प्रतिबन्ध का राज्य था। कैदियों को दी जानेवाली विभिन्न सजाओं को विभिन्न मूर्तियों के द्वारा वहाँ के संग्रहालय में दर्शाया गया है। सजा के केन्द्र, कोल्हूघर, फाँसी घर इत्यादि आज भी सुरक्षित है जहाँ हर दर्शक की आँख नम हो जाती है। आज इस राष्ट्रीय स्मारक को सरकार रूचिपूर्वक संभाल रही है। नेताजी आर्ट गैलरी (डेविड बेरी का कार्यालय) व सेल्यूलर जेल के फोटो सेल में पोर्टब्लेयर के इतिहास व क्रांन्तिकारियों के फोटो व संबंधित तमाम जानकारियों को संभालकर रखा गया है। सैल्यूलर जेल के मॉडल, कैदियों के ड्रेस, बर्तन, बेडियाँ, फोटो गेलरी, फाँसी घर शहीद स्मारक सेज को सुरक्षित रखा गया है। यहाँ का प्रकाश व ध्वनि प्रोग्राम (लाईट एण्ड साउण्ड) जो हिन्दी में छ: बजे और अंग्रेजी में सवा सात बजे प्रतिदिन संध्याबेला दिखाया जाता है। एक बेहद प्रभावी और मन मस्तिष्क पर छाप छोड़ने वाला कार्यक्रम है। अंडमान के अतीत, सेल्यूलर जेल के निर्माण से लेकर कैदियों पर होनेवाले जुल्म को बहुत ही कारगर व हदयस्पर्शी ढंग से लुइस बैंक की ध्वनि, डा. विसार अलाने का प्रकाश व डा. मेलविल डिमेलो के रिसर्च में पूरा किया गया। इसमें मनोहर सिंह, ओमपुरी, नसीरूदीन साह, जलाल आगा, टाम अल्टर, के. आर. रैना., दीपक मथन, श्री विजय कश्यप के संवाद व आवाज ने मानों कार्यक्रम में जान ला दी हो। सेल्यूलर जेल के सामने वीर सावरकर पार्क है। वहीं सावरकर जिन्होंने 27 वर्ष विभिन्न जेलों में बिताये। जिन छ: क्रांतिकारियों (इन्द्रभूषण रे, बाबा मान सिंह, मोहित मोइत्रा, राम रक्शा, महावीर सिंह, मोहन किशोर नमादास) ने विभिन्न यातनाओं के

चलते इस जेल में अपने प्राणोत्सर्ग किये उनके पुतले भी वीर सावरकर पार्क में लगाये गये हैं।

तात्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने 11 फरवरी 1979 में इस जेल को राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया जबकि इसके प्रस्ताव को प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी ने 1968 में ही स्वीकार कर लिया था। राष्ट्रपति ज्ञानी जेल सिंह ने जेल परिसर में क्रांन्तिकारियों की याद में बने शहीद स्मारक को राष्ट्र को समर्पित किया। राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायण ने 1998 में इस जेल के फोटो गैलरी का उदघाटन किया। स्व. प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी, राजीव गाँधी, राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने भी इस जेल का भ्रमण कर क्रान्तिकारियों को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। 30 सितंबर 98 को प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी इस जेल में जाकर आजादी के दीवानों को श्रद्धांजली दी और अपने भाव इस प्रकार प्रकट किये –**"इस तीर्थ स्थल पर आकर पुनः धन्य हुआ। स्वतंत्रता सेनानियों को प्रणाम।"**

माह जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, २००२ में मृत्यु को प्राप्त हुए कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह जनवरी, फरवरी, मार्च तथा अप्रैल 2002 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सीआरपीएफ समाचार परिवार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

सि. लुक्स आइन्द (38 बटा.), सि. नवराम मेंघल (127 बटा.), सि. सुख राम शवाश,(53 बटा०) उ.नि. (मं) बलवान सिंह, ग्रु.कें. रंगारेड्डी, सि. बवन दास (79 बटा.), सि. पी.एन. तुलसीधरण (4 बटा.), सि. अर्जुन सिंह (4 सिगनल बटा.), सि. संतोष कुमार (104 बटा.), सि. एम. मुर्गेसन (86 बटा.), हवा. हबील आइन्द (72 बटा.), सि. बी.जी. मून (5 बटा.), सि. राम मेहर (121 बटा.), सि. एस. श्रीनिवासलू (83 बटा.), सि. आर. माथुर भाई (3 बटा.), हवा./चा. बलवान सिंह पु.म.नि. आर.ए.एफ., हवा./चा. बलदेव सिंह (53 बटा.), हवा. के. एन्टोनी(5 बटा.), सि. अजीत कुमार (76 बटा.), उ.नि. सिद्धनाथ सिंह (88 बटा.), हवा. राम चन्दर सिंह (25 बटा.), कुक छोटू राम आर.टी.सी. IV, सि. बी.एच. तलवार (25 बटा.), हवा. के. वेंकटेश्वर (51 बटा.), सि.एस.एस. वराई, (एस.जी.सी.), हवा. एस.सी. विश्वास (49 बटा.) सु. मेजर भूप सिंह, (27 बटा.), उ.नि. मस्तान सिंह (73 बटा.), हवा. गोपाल शरण (5 बटा.), सि. स्वर्ण लाल आर.टी.सी. IV, हवा. महाराम सिंह (2 बटा.), सि. मोहन चन्द्र जोशी (33 बटा.), नि. (मं) वी.वी. रामकृष्णन ग्रु.के. आवड़ी, हवा. अरूण कुमार पाटक (13 बटा.), वाटर कैरियर राजन पिल्लै (82 बटा.), हवा. गोविन्द राम गौरिया (114 बटा.), धोबी

जगदीश प्रसाद (101 बटा.) सि. सुरेन्दर कुमार सिंह (131 बटा.), धोबी डॉ. अप्पा राव (113 बटा.), सि. करमजीत सिंह (46 बटा.), हवा. त्रिलोक चन्द (25 बटा.), सि. प्रताप ठाकुर (49 बटा), हवा. हनुमन्त सिंह (65 बटा.), सि. गुरूचरण सिंह (110 बटा.), ने.ना./ एस.टी. पालीवाल (77 बटा.), लै.ना. के.के. मुरमू (36 बटा.), सि. धीरेन्द्र सिंह (125 बटा.), सि. ए. मोहन (78 बटा.), धोबी मुनिश्वर भाटिया, (आर.टी.सी. III), सि. बिसन लाल शर्मा (6 बटा.), सि. चमन लाल (66 बटा.), हवा. नाम देव बधायी (122 बटा.), उ. नि. गोपाल दत्त (75 बटा.), हवा. निर्मल कुमार साहा (50 बटा.), सि. ए.सी. देव वर्मा (62 बटा.), कुक कन्हैया लाल (128 बटा.), सि./ मोची लाँखन राम (70 बटा.), सि. टी. जयराज (18 बटा.), सि. एन.सी. डे (76 बटा.), उ.नि. ईश्वर सिंह (77 बटा.), वाटर कैरियर सुरेश कुमार (95 बटा.), हवा. सुरेश भारती (ग्रु.कें. मोकामाघाट), सि./चा. जगवीर सिंह (ग्रु.कें. बनतलाव), हवा./चा. वी. मोहन पिल्लैई (ग्रु.कें. आवड़ी), सि.सुरज भान सिंह (122 बटा.), सि. रामदीन (68 बटा.), सि. महेदा गरखल (102 बटा.), सि. मनोज कुमार (ग्रु.कें. बनतलाव), हवा./आर ओ. एम. मरीमुथू (2 सिंगनल बटा.), सि. राधे श्याम (134 बटा.), सि. आर.के. जया भाई (121 बटा.), सि. जय सिंह (121 बटा.), सि. रमेश कुमार (134 बटा.), कुक रमेश चंद (10 बटा.), सि. के.आर. पलानीप्पन (68 बटा.), सि. डी.बी. मलिक (71 बटा.), सि. अनिल कुमार ठाकुर (ग्रु.कें. जमशेदपुर), हवा. सुन्दर लाल (ग्रु.कें. रामपुर), सि. के. तिरूपति (130 बटा.), हवा. ललन राय (ग्रु.कें मोकामाघाट), सि. उपेन्द्र कुमार भोई (71 बटा.), हवा. आर. तोप्पो (33 बटा.), उ.नि. राम प्रताप यादव (71 बटा.), सि. परमात्मा सिंह (71बटा.), हवा. सुरेन्द्र सिंह (आर.टी.सी. II), सि. एम. सुरेश कुमार (90 बटा.), सि. अजमेर सिंह (52 बटा.), हवा. पी.आर. पाटिल, (ग्रु.कें रंगारेड्डी), हवा. सुरेश कुमार (94 बटा.) सि. लोकिन सिंह (87 बटा.), हवा. एल. के.डेका राजा आर.टी.सी.III, कमां. श्री विष्णु भम्वानी (52 बटा.), सि. मधुकर हटकर (71 बटा.), उ.नि. बर्षाती प्रसाद (43 बटा.), कुक भवंर लाल मीना (84 बटा.) सि. हनुमंतप्पा (117 बटा.), हवा. लक्ष्मण सिंह (48 बटा.), हवा. केशव नाथ पाण्डेय (130 बटा.), हवा. मो. याकूब (101 बटा.), सि./चा. परगट सिंह (ग्रु.कें. नई दिल्ली), सि. बालाजी गंगेड (ग्रु.कें. पुना), सि. मुनि वेंकट (108 बटा.), सि. गौतम कुमार बेहरा (43 बटा.).

सी०आर०पी०एफ० सदा अजय

भारत माता की जय

हाट भिंग हो या सागर तट
रन ऑफ कच्छ से अरूणाचल तक
ऊचें पर्वत या बिहड़ वन

महानगर या डाउन-टाउन, भ्रमण तेरे लाल करें निर्भय /
सी०आर०पी०एफ० सदा अजय ...

उन्तालीस से दो हजार दो का सफर
एक से बढ़ कर हुआ एक सौ चालीस का नम्बर
कानेटकर से त्रिनाथ मिश्र जी सर
श्रीनगर में हो या संसद पर
कैसी भी विकट परिस्थितियां हो, कदम तेरे चूमें सदा विजय /
सी०आर०पी०एफ० सदा अजय...

काशी मथुरा में एक्शन या अयोध्या की बाबरी मस्जिद
स्वर्ण मंदिर में ब्लेक थण्डर या हजरतबल, जामा मस्जिद
हर हाल में इस बल के मार्टिन, मोहन, महमूद और मक्खन सिंह
प्रेम से खेले खायें एक जगह,
सी०आर०पी०एफ० सदा अजय...

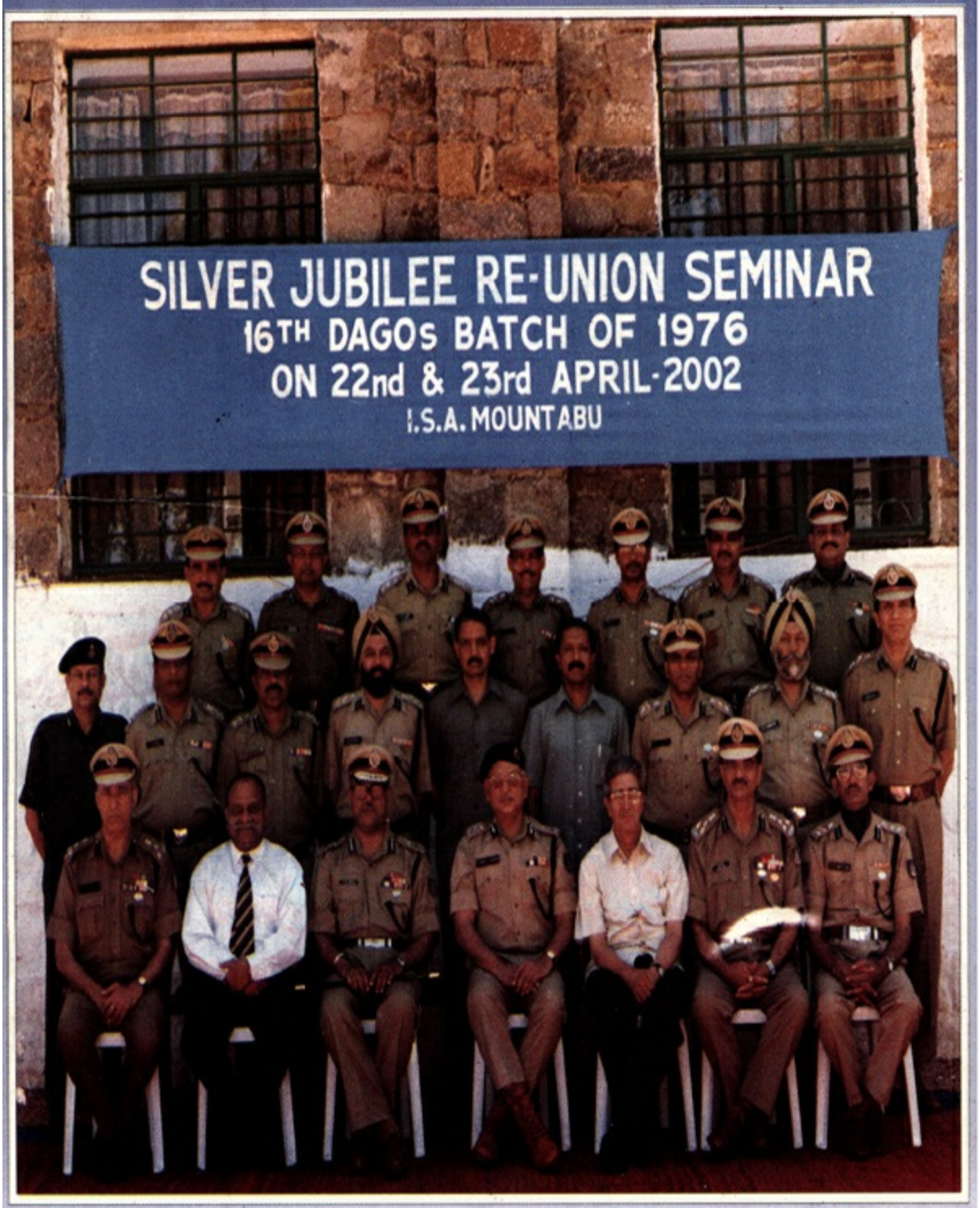
सेवा और निष्ठा में इसकी जान
ये शान्ति दूत भारत की शान
एस०ओ०, अनुचर या बूढ़ा जवान
यंग अफसर, कमाण्डेन्ट या डी०जी० साहेबान
बड़े छोटे धर्मा हैं तत्पर मां भारती की सेवा में
धर्म निरपेक्षता की मिसाल बन कर देश पर जियें और मरें
सी०आर०पी०एफ० सदा अजय - भारत माता की जय

– धर्मपाल त्यागी
द्वि० का० अधिकारी,
52वीं वाहनी,

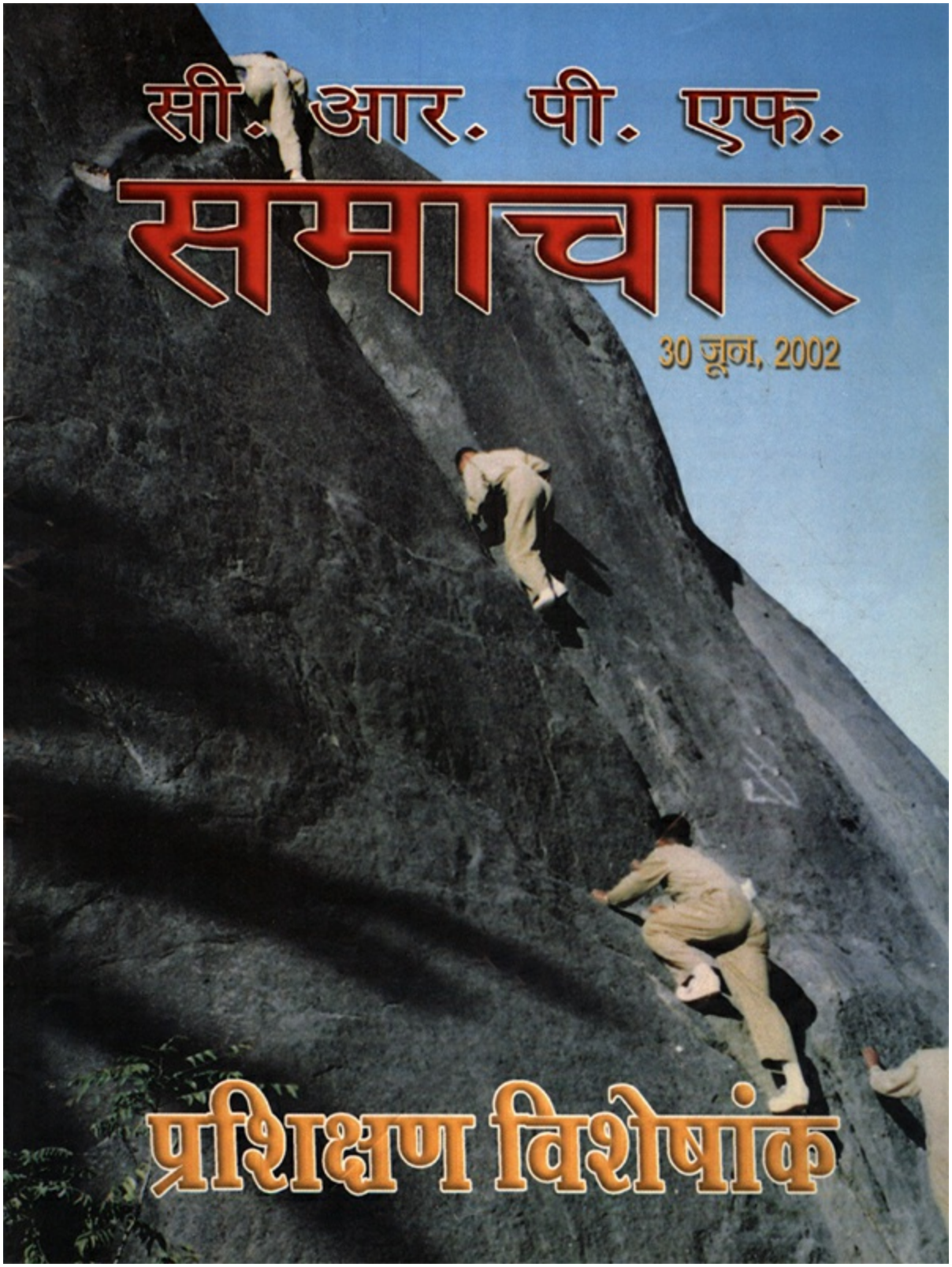


श्रीनगर हवाई अड्डे पर हुए आतंकवादी हमले को नाकाम करने में अदम्य साहस, उच्चकोटि की वीरता का प्रदर्शन करते हुए शहीद हुई सि० (महिला) बिन्दू कुमरे, 88 (म०) बटा० केरिपु बल को "शौर्य वीरता का पुलिस पदक" मरणोपरान्त

रचि० नं० 4767/87



रजत जयन्ती पुर्नमिलन सेमिनार में एकत्रित 1976 में चयनित 16 वें बैच के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी


सी. आर. पी. एफ.
समाचार
30 जून, 2002
प्रशिक्षण विशेषांक



केन्द्रीय गृहमंत्री श्री एल. के. आडवाणी से हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए गृह मंत्रालय की राजभाषा शील्ड प्राप्त करते बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र



सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा द्वारा चयनित सहायक कमान्डों को बुनियादी पशिक्षणपरान्त रैंक लगाते बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड-15 अंक-4
30 जून, 2002
9 आषाढ़, शक 1925

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग के.रि.पु बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ोदा कलां, नई दिल्ली–**72**



इस अंक में

1. महानिदेशक की ओर से
2. प्रशिक्षण एक परिचालनिक आवश्यकता
3. प्रशिक्षण नीति एवं परिचालनिक कुशलता
4. कार्यक्षेत्र प्रशिक्षण परिचालनिक दक्षता का आधार
5. प्रशिक्षण की नई प्रवृति
6. प्रशिक्षण का आधुनिकीकरण
7. प्रकारणात्मक प्रशिक्षणों का बल में महत्व
8. संचार क्रांति
9. वर्तमान परिपेक्ष्य में केरिपु बल में प्रशिक्षण की भूमिका व चुनौतियां
10. सी.टी.सी–एक श्रेष्ठता की ओर अग्रसर
11. बल में प्रशिक्षण की भूमिका

12. प्रांशेक्षण एक सतत् प्रयास

13 बदलते सामाजिक परिदृश्य में प्रशिक्षण का महत्व.

14. प्रशिक्षण गुणवत्ता सुधार में प्रशिक्षक की भूमिका

15. आतंकवाद के कारण एवं प्रभाव

16. परिचालनिक दक्षता के लिए प्रशिक्षण

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

महानिदेशक की ओर से



प्रशिक्षण एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में विद्यमान प्रशिक्षण सुविधाओं, तकनीकों तथा बल को सौंपी गई भूमिकाओं और कर्तव्यों के अनुसार इन्हें आधुनिक बनाना व उसमें सुधार लाना आवश्यक है। इसके लिए हमें अपने पाठ्यक्रम, पाठ-प्रशिक्षण विधि एवं प्रक्रियाओं को समयानुसार बदलना चाहिए। विश्व परिवर्तन युग की ओर तेजी से बढ़ रहा है। परिवर्तन के इस युग में हमें अपने दैनिक क्रियाकलापों में ही नहीं बल्कि अपनी व्यावसायिक पद्धति में भी व्यापक रूप से बदलाव लाना आवश्यक है। दिन-प्रतिदिन बदल रही तकनीक के कारण आतंकवादी, उग्रवादी तथा अलगाववादी संगठन अत्याधुनिक तकनीक वाले अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग कर रहे हैं। आए दिन नित नई रणनीति बनाकर सुरक्षा बलों पर हमला करते हैं तथा देश के अंदर अस्थिरता फैला रहे हैं। अतः मौजूदा सुरक्षा परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए हमें भी अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों, नीतियों तथा तौर तरीकों में बदलाव लाना होगा। पिछले लगभग दो वर्षों से हम इस ओर सचेष्ट रहे हैं। प्रशिक्षण की गुणवत्ता की अभिवृद्धि का असर अब कार्य-क्षेत्रों की सफलता में दिखाई पड़ रहा है। आवश्यकता है इसे और अधिक गतिशील करने की।

देश में आंतरिक सुरक्षा व कानून व्यवस्था बनाये रखने की जिम्मेदारी बल को सौंपी गई है। इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाने में आ रही मौजूदा कठिनाइयों से निपटने में आड़े आने वाली चुनौतियों का सामना करने हेतु प्रशिक्षण रणनीति तय करने व प्रशिक्षण में संशोधन करने हेतु आज चर्चा करने की आवश्यकता है ताकि विकट परिस्थितियों से निपटने के लिए बल के जवानों में व्यावसायिक दक्षता,

कुशलता, स्फूर्ति तथा प्रभावशीलता पैदा की जा सके। इसके लिए आधुनिकतम तौर-तरीकों वाला उच्चकोटि का प्रशिक्षण ही एक श्रेष्ठ साधन है। प्रशिक्षण सार्थक, वस्तुपरक, प्रभावी, उद्देश्यपूर्ण तथा आधुनिक तकनीक पर आधारित होना चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखकर **"आधुनिकीकरण तथा अपना कम से कम नुकसान किए अराजक तत्वों पर विजय प्राप्त करना"** इस वर्ष की प्रशिक्षण कार्यशाला का मुख्य विषय चुना गया है।

मैं आशा करता हूँ कि इस कार्यशाला में प्रशिक्षण प्रबन्धकों के बीच होने वाली परिचर्चाएं परिणामदायक सिद्ध होंगी तथा इस संबंध में नये दिशा-निर्देश तय करने में सहायता मिलेगी।

मैं इस कार्यशाला की सफलता की कामना करता हूँ।

"सी.आर.पी.एफ. सदा अजय।
भारत माता की जय।"



(डा. त्रिनाथ मिश्र)
महानिदेशक, केरिपु बल

प्रशिक्षण - एक परिचालनिक आवश्यकता

के.टी.डी. सिंह,
पु. महानिरीक्षक (परि. एवं प्रशिक्षण)



एल.एम.जी पर फायरिंग का अभ्यास करते रंगरूट

परिचालन क्षेत्र में एक सुप्रशिक्षित सैनिक ही हर स्थिति का मुकाबला कर सकता है। प्रशिक्षण का उद्देश्य बल कार्मिकों के ज्ञान एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करना है। इसके लिए उन्हें सुसज्जित करने की जरूरत है ताकि वे सोच विचार कर योजना बना सके तथा प्रभावी रूप से कार्यान्वित कर सके।

देश के कई राज्यों में फैल रहे अलगाववाद, आतंकवाद चरमपंथी उग्रवाद, साम्प्रदायिकता तथा साम्प्रदायिक अशांति से निश्चित तौर पर प्रभावी रूप से निपटने की आवश्यकता है। इन चुनौतियों का मुकाबला करने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल एक प्रमुख आंतरिक सुरक्षा बल के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसलिए हमारी ट्रेनिंग ऐसी होनी चाहिए जो सामाजिक/आर्थिक आपदाओं तथा जम्मू व कश्मीर सहित देश के उत्तरी पूर्वी राज्यों में आतंकवाद/उग्रवाद को उकसाने के लिए दी जा रही बाहरी सहायता तथा इससे संबंधित गतिविधियों की प्रत्यक्ष व स्पष्ट रूप से पहचान कर उन पर स्थाई तौर पर रोक लगाई जा सके। वर्तमान कोर्स सिलेवस की विषय वस्तु का विकास करने का उद्देश्य बल में तीन स्तरों पर आरंभ करना है :–

1. अपेक्षित नफरी सहित शारीरिक स्वस्थता, स्टेमिना, सुदृढता तथा आंतरिक सुरक्षा को बनाए रखने में आ रही कठिन प्रकृति की ड्यूटियों को पूरा करने की सामर्थ्यता।

2. बल में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के हथियारों को चलाने की बुनियादी जानकारी।

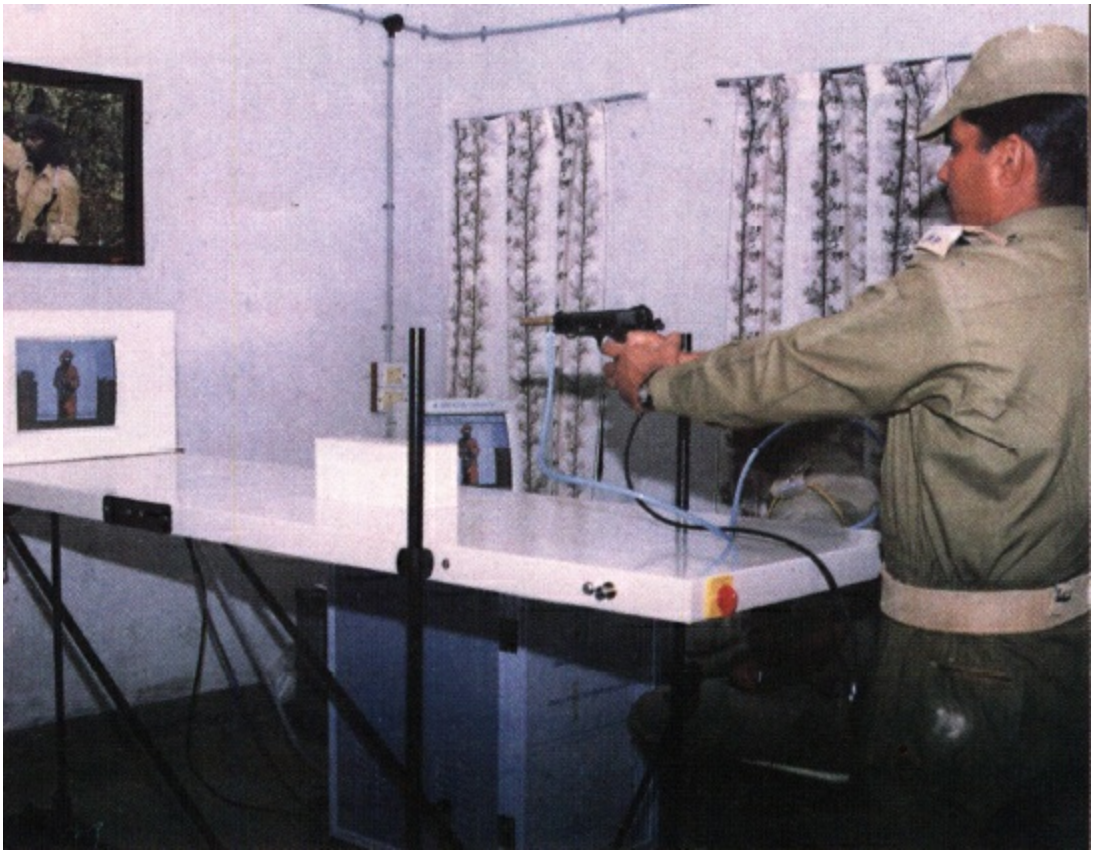
3. सार्वजनिक व्यवस्था तथा आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने में आ रही बाधाओं से निपटने से संबंधित विभिन्न कार्यों को पूरा करने के लिए व्यवसायिक कुशलता प्राप्त/

आंजेत करना।

4. सी.आई तथा ई.डी. आपरेशनों में पर्याप्त दक्षता।

5. प्रभावी रूप से विभिन्न प्रकार की भूमिका निभाने के लिए ज्ञान तथा जागरूकता।

दीर्घकालीन परिचालनिक दक्षता बनाए रखना, युनिट स्तर पर सौपे गये आपरेशनल क्षेत्र की जरूरतों को पुरा करने के लिए निरन्तर तथा सुसंगठित प्रशिक्षण के ऊपर काफी हद तक निर्भर करती है। इसे प्रत्येक कम्पनी 6 सप्ताह के रोटेशनल प्रशिक्षण के जरिए हासिल कर सकती है। रोटेशनल ट्रेनिंग का उद्देश्य शारीरिक सुदृढ़ता, समाकलित युद्धकला एवं सभी सामरिक आपरेशनों तथा प्रतिविद्रोही कार्रवाईयों में लक्ष्यभेदी फायरिंग का विकास करना है। रोटेशनल ट्रेनिंग का उद्देश्य एक कम्पनी को यूनिट की सशक्तिशाली अंग बनाना है ताकि प्रति विद्रोहात्मक तथा आतंक विरोधी कार्रवाईयों को अंजाम दिया जा सके तथा अपने तैनाती के क्षेत्र की सार्वजनिक समस्याओं से निपटा जा सके।



प्रशिक्षण में आधुनिक संसाधनों का उपयोग सुनिश्चित सफलता

विशेष क्षेत्रों में निपुणता प्राप्त करने के लिए सी.आई. कोर्स, अस्त्र-शस्त्र एवं युक्ति कोर्स, विस्फोटक, आई.ई.डी. आदि कुछ सेवा कालीन विशेषज्ञ कोर्स संचालित किए जाते हैं। ये सभी कोर्स अंततोगत्वा हमारे अधिकारियों तथा जवानों को कार्रवाईयों में

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए सुसज्जित करते हैं ताकि वे अपने सौंपे गये दायित्वों को पूरा कर सके।

बल के अधिकारियों तथा कर्मियों को उचित प्रशिक्षण पर जोर देने का उद्देश्य उनकी वास्तविक रूप से परिचालनिक दक्षता में सही मायने में वृद्धि कर लक्ष्य को प्राप्त करना है।



लेण्ड माइन का पता लगाने का अभ्यास करता जवान

प्रशिक्षण नीति एवं परिचालनिक कुशलता

ओ.पी. सिंह,
उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)



आर.टी.सी-तीन में नवआरक्षियों के बुनियादी प्रशिक्षण का जायजा लेते महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पर देश की आन्तरिक सुरक्षा का बृहद दायित्व रखा गया है। आन्तरिक सुरक्षा का दायित्व बहुआयामी है। इस दायित्व के दायरे में विधि व्यवस्था की स्थिति से लेकर विद्रोहात्मकता, आतंकवाद, वामपंथी उग्रवाद, कौमी फसाद तथा संवेदनशील क्षेत्र, संवेदनशील संस्थानों एवं अतिविशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा तक सभी कार्य शामिल हैं। देश में समय-समय पर विभिन्न क्षेत्रों में ये समस्याएं उग्र हो जाती है तथा बल की युनिटों को देश के एक कोने से दूसरे कोने में बार-बार जाने की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार की गतिविधियाँ एक प्रकार की भूमिका से दूसरी प्रकार की भूमिका की ओर होती है जैसे प्रतिविद्रोही अभियान पर तैनात यूनिट को अचानक सांप्रदायिक दंगो से निपटने के लिए देश के किसी कोने में जाना पड़ सकता है आदि। इन विषम एवं विभिन्न परिस्थितियों से निपटने के लिए बल को अत्यंत उच्च स्तर का प्रशिक्षण, उत्प्रेरणा एवं नेतृत्व की आवश्यकता है ताकि हर परिस्थिति में उनकी अभियान कुशलता प्रभावी रहे।

बल की तैनाती की परिस्थितियों तथा उसकी विषमताओं में प्रशिक्षण पर अपेक्षित ध्यान देना संभव नही हो पा रहा है। यदि बल के प्रशिक्षण स्तर का सही आकलन किया जाय तो निम्नलिखित बातें सामने आयेगी :-

1. बल के जवानों का शस्त्रों को दक्षता एवं भरोसे के साथ चलाने का स्तर अच्छा नहीं है, इस कारण मुठभेड़ आदि होने पर उनकी प्रतिक्रिया वांछित नही रहती और वे एक तालमेल वाली टीम के रूप में कार्य करने में सक्षम नहीं है।

2. कनिष्ठ स्तर के कमांडर जैसे सेक्शन, प्लाटून एवं कम्पनी कमांडरों को अपनी व्यवसायिक योग्यता विकसित करने की आवश्यकता है तथा अपनी कमांड में उत्तम

परिचालनेक दक्षता लाने के लिए उन्हें प्रशिक्षित व समेकित करने की आवश्यकता है।



बुनियादी प्रशिक्षण के दौरान बाधा पार करते रंगरूट

3. अत्यंत फैली हुई तैनाती के कारण उच्च स्तरीय नेतृत्व के लिए समुचित पर्यवेक्षण करना कठिन हो गया है। निरीक्षण करने वाले अधिकारी यूनिटों से काफी दूर स्थित हैं जिसके कारण प्रशिक्षण का निकट से पर्यवेक्षण भी लगभग कठिन हो गया है।

इन सभी कठिनाईयों को दृष्टिगत रखते हुए बल की प्रशिक्षण नीति का निर्धारण किया गया है। जिसके प्रमुख तत्व हैं बल के प्रशिक्षण का जोर जवानों के व्यक्तिगत कौशल का विकास एवं उन्हें एक तालमेल वाली टीम के रूप में सैक्शन, प्लाटून व कंपनी स्तर पर समेकित करना ताकि वे कानून व्यवस्था एवं आतंकवाद तथा विद्रोहात्मकता से प्रभावी तौर पर निपट सकें।

व्यक्तिगत प्रशिक्षण शारीरिक दक्षता एवं क्षमता, शस्त्र की पकड़, निशानेबाजी, जमीन का प्रयोग देखभाल की कुशलता, विषम क्षेत्रों एवं मौसम में परिचालन तथा आई.ई.डी का पता लगाने और निष्क्रिय करने की ओर केन्द्रित होना चाहिए। अपने शस्त्र से वास्तविक फायरिंग के अतिरिक्त ग्रेनेड तथा 5.1" मोर्टार से फायर करने के लिए भी पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए।

संयुक्त प्रशिक्षण के रूप में सैक्शनें, प्लाटूनें एवं कम्पनियां प्रतिविद्रोही एवं आतंकवाद विरोधी अभियानों में कारगर होने के लिए आवश्यक ड्रिल एवं तौर तरीकों का अभ्यास करें। इसके अंतर्गत विद्रोह विरोधी (प्रतिरक्षात्मक एवं प्रतिविद्रोही)

आक्रामक अभियानों को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए। कम्पनी एवं बटालियन स्तर पर आसूचना एकत्रित करना, इन्टेशेगेशन तथा उससे प्राप्त आसूचनाओं का आवश्यकतानुसार प्रसारण भी प्रशिक्षण का भाग होना चाहिए।

प्रतिवर्ष प्राप्त किए जाने वाले मानकों को निर्धारित किया जाना चाहिए तथा ये मानक व्यक्तियों, सैक्शन, प्लाटून, कम्पनी तथा बटालियन स्तर पर प्राप्त करने योग्य लक्ष्यों के रूप में होना चाहिए। उप महानिरीक्षक एवं महानिरीक्षकों द्वारा उनके वार्षिक निरीक्षणों के दौरान इन लक्ष्यों को प्राप्ति की स्थिति की जांच व समीक्षा की जानी चाहिए।

परिचालनिक क्षेत्र में स्थित बटालियनों के प्रशिक्षण का उत्तरदायित्व परिचालनिक उप महानिरीक्षक व महानिरीक्षक का है क्योंकि प्रशिक्षण ही परिचालनिक दक्षता का आधार है।

प्रशिक्षण नीति के निर्धारण मात्र से प्रशिक्षण की समस्याएं हल नहीं होती है। इसके लिए आवश्यकता है दृढ़ निश्चय एवं कार्यान्वयन की। इस दिशा में सबसे बड़ी समस्या विभिन्न स्तर के प्रशिक्षकों के अभाव की है। इस समस्या का हल योग्य एवं सक्षम व्यक्तियों को प्रशिक्षण संस्थानो में आयोजित किए जाने वाले कोर्स में विशिष्ट प्रशिक्षण देकर किया जा सकता है। इस प्रकार हर यूनिट में योग्य एवं उत्तम प्रशिक्षक हर स्तर पर उपलब्ध होंगे। परिचालनिक उप महानिरीक्षक एवं महानिरीक्षक ऐसे प्रशिक्षकों को चुनकर अपने क्षेत्र विशेष में निर्धारित स्थानों पर उद्देश्यपूर्ण प्रशिक्षण जो कि परिचालनिक वातावरण के अनुरूप हों आयोजित कर सकते हैं। प्रशिक्षण प्रयासों में प्रमुखता कम्पनियों की सालाना रोटेशनल ट्रेनिंग को देनी चाहिए। ऐसे प्रशिक्षण केन्द्रों में परिचालनिक अधिकारियों को प्रशिक्षण के लिए आवश्यक संसाधनों का विकास करना होगा जैसे कि ऑब्सटिकल एण्ड असाल्ट कोर्स, फायरिंग रेंज एवं फील्ड फायरिंग रेंज आदि। हर प्रशिक्षण में उत्तम व्यवहार, निष्पक्षता एवं मानव अधिकारों के प्रति जोर दिया जाना चाहिए।



यू.ए.सी (कराटा) का अभ्यास करते बल कार्मिक

परिचालनिक दक्षता की कमियों को दूर करने का कारगर उपाय सतत् प्रशिक्षण है। कहना न होगा कि यह प्रशिक्षण हर दृष्टिकोण से उद्देश्यपूर्ण, सामयिक एवं कारगर हों अन्यथा प्रशिक्षण फलहीन प्रयास बन कर रह जायेगा। परिचालनिक दक्षता के विकास एवं वृद्धि के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता अपरिहार्य है इसके लिए हर स्तर के कमांडरों में दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता है।



हथियार चलाने का अभ्यास करना प्रशिक्षण की विशिष्टता है।

कार्यक्षेत्र प्रशिक्षण : परिचालनिक दक्षता का आधार

सी.वी. मैथ्यू
अ० उप महानिरीक्षक (प्रशि.)



अनुदेशकों की निगरानी में फायरिंग का अभ्यास करते रंगरूट

मस्तिष्क एवं शरीर को किन्हीं दी गई परिस्थिति में वांछित प्रक्रिया करने हेतु किया गया ज्ञानपूर्वक एवं ध्यानपूर्ण प्रयत्न ही प्रशिक्षण है। यह एक सतत चलने वाली प्रकिया है।

प्रशिक्षण शब्द के उच्चारण के साथ ही मस्तिष्क में उभरने वाली छवि, प्रशिक्षण संस्थान और उसकी गतिविधियाँ हैं। संस्थागत प्रशिक्षण मौलिक एवं विशेष ज्ञान, कौशल एवं सकारात्मक मनोवृति को व्यक्ति विशेष में विकसित करने का प्रयत्न करता है।

संस्थागत प्रशिक्षण में मौलिक, सेवाकालीन, पदोन्नति एवं विशेष प्रशिक्षण आते हैं। इन सभी का उद्देश्य अलग–अलग स्तर पर बल के मानव संसाधन या बल के सदस्यों का विकास है। संस्थागत प्रशिक्षण व्यक्ति विशेष को प्रशिक्षित करता है। सम्पूर्ण बल को प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षित कर पाना संभव नहीं है और यह आवश्यक भी नहीं है। व्यक्ति विशेष द्वारा अर्जित कौशल जैसे शस्त्र कौशल, अभियान एवं युद्ध कौशल को वास्तविक तैनाती की स्थिति में वहां के वातावरण के अनुरूप उपयोग में लाने के लिए बल के सदस्यों को पूर्ण रूप से समायोजित करने की प्रक्रिया प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण पहलू है।

बल के हर स्तर के सदस्यों को अनेक प्रकार के प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भेजा जाता है, परन्तु उनके द्वारा अर्जित ज्ञान और कौशल को यूनिट स्तर पर परिचालन के वातावरण की आवश्यकतानुसार उपयोग में नहीं लाया जा रहा है। इस प्रकार अर्जित कौशल एवं ज्ञान व्यक्ति विशेष तक ही सीमित रह जाता है तथा प्रशिक्षण पर खर्च की गई धनराशि व्यर्थ हो जाती है। इसके अतिरिक्त यह भी देखने में आया है कि

संस्थागत विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए उपयुक्त व्यक्तियों का चयन नहीं किया जाता। अनुपयुक्त व्यक्ति यदि प्रशिक्षण पूर्ण भी कर लें तो भी उनके द्वारा अर्जित ज्ञान एवं कौशल का स्तर निम्न होगा क्योंकि स्वाभाविक कमियों के कारण वे प्रशिक्षण को पूरी तरह आत्मसात नहीं कर पाते। दोनों ही स्थिति स्वीकार योग्य नहीं हैं। परन्तु शायद आज की स्थिति यही है।

संस्थागत प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए यूनिट कमांडरों से अपेक्षा की जाती है कि प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों से वापस आने वाले कर्मचारियों को उपयुक्त कार्य दिया जाय तथा प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान व कौशल की गुणवत्ता के बारे में 03 महीने की अवधि के पश्चात संबंधित प्रशिक्षण संस्थान को स्थाई आदेश संख्या 11/88 के तहत निर्धारित प्रोफार्मा में एक फीड बैक रिपोर्ट दें। दुर्भाग्यवश इस आदेश पर भी अमल नहीं हुआ है।

संस्थागत प्रशिक्षण के जरिये ज्ञान व कौशल के विभिन्न क्षेत्रों में यूनिटों व ग्रुप सेन्टरों के लिए प्रशिक्षक तैयार किये जाते है। यूनिट स्तर पर होने वाले सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए विभिन्न विषयों में कुशल एवं दक्ष प्रशिक्षकों की आवश्यकता है। यूनिट कमांडर उत्तम व्यक्तियों का चयन कर प्रशिक्षण नीति के अनुसार यूनिटों को विभिन्न विशिष्ट पाठयक्रमों के लिये वितरित सीटों का समुचित लाभ उठा सकते हैं।

प्रशिक्षण संस्थानों में दिये जाने वाले प्रशिक्षण का अपना महत्व है, लेकिन जब तक इसको युनिट के प्रशिक्षण में समायोजित या आत्मसात नहीं किया जाता, बल की कुशलता एवं दक्षता की वृद्धि में इससे कोई लाभ नहीं होगा।



वॉनेट फायारंग का अभ्यास करते रंगरूट

कार्यक्षेत्र में बल को प्रभावकारी एवं दक्ष बनाने के लिए बल के विभिन्न स्तर के कर्मचारियों द्वारा अर्जित कौशल व जानकारी को समेकित कर परिचालन क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य निष्पादन के लिए इसका प्रयोग किया जाना चाहिए। इस प्रकार का प्रशिक्षण ही कार्य क्षेत्र में दक्षता उत्पन्न कर सकता है। शस्त्र कौशल एवं युद्ध कौशल का समेकित रूप है, इन्टिग्रेटेड वेपन ट्रेनिंग जिसके अंतर्गत एक दिये गये परिचालिनिक स्थिति में शस्त्र एवं युद्धकला (वेपन एवं टेक्टिक्स) को अवसर की आवश्यकतानुसार प्रयुक्त किया जाता है। शस्त्रकला या अन्य कोई भी कौशल परिचालनों के लिए तब तक कारगर सिद्ध नहीं है, जब तक इसका युद्ध कला से मिल कर प्रयोग न किया जाय।



परिचालनिक दक्षता के लिए भिन्न–भिन्न तरह की बाधाएं पार करने का नियमित अभ्यास करना जरूरी

वर्तमान रोटेशनल प्रशिक्षण व ऑन द जॉब प्रशिक्षण में इसी पहलू का समावेश है, ताकि प्रशिक्षण को परिचालिनिक वातावरण के अनुरूप प्रयोग किया जाय, जिससे टुकडी अपेक्षित परिचालनिक दक्षता प्राप्त कर सके एवं उच्चकोटि की उपलब्धियां हासिल कर सके। इस दिशा में रोटेशनल प्रशिक्षण के अंतिम दो सप्ताह में द्विपक्षीय प्रतिविद्रोहात्मक परिचालन अभ्यास का प्रावधान रखा है।

द्विपक्षीय प्रतिविद्रोहात्मक परिचालन अभ्यास के अंतर्गत एक वास्तविक परिचालनिक परिस्थिति का सृजन किया जाता है तथा कंपनी के अधिकारियों एवं जवानों से उस परिस्थिति में पोस्ट लगाना, पेट्रोलिंग व एम्बुश लगाना, क्यू.आर.टी. की कार्रवाई व चल नाका लगाना, रेड तथा सर्च ऐंड डेस्ट्राय मिशन आदि अभियान करने

को कहा जाता है, तथा उनकी कारवाइयों को एम्पायरों द्वारा विकसित किया जाता है। अंत में अभियान के दौरान की गई अच्छी कार्रवाईयों एवं कमियों की समीक्षा की जाती है। इस अभियान अभ्यास में एक कंपनी की परिचालनिक कुशलता जिसमें शस्त्र कौशल, युद्ध कौशल, मैप रीडिंग, गोपनीयता, संचार माध्यमों का सही उपयोग आदि सभी पहलुओं का प्रायोगिक परीक्षण हो जाता है। ट्रुप्स को अपनी क्षमता एवं विकास के क्षेत्रों का ऐहसास होता है। कमांडर व ट्रुप्स दोनों ही परिचालनिक दक्षता के विकास के लिए प्रेरित व प्रयत्नशील हो उठते हैं।

यदि इसका योजनाबद्ध तरीके से कार्यान्वयन किया जाय तो कार्यक्षेत्र या अभियान क्षेत्र में बल की दक्षता में आशातीत विकास एवं वृद्धि होगी तथा बल की उपलब्धियाँ समाचार पत्रों की सुर्खियों में होंगी।

प्रशिक्षण की नई प्रवृत्ति

डी० जी० महापात्र, जन सम्पर्क अधिकारी, के०रि०पु०बल



प्रशिक्षण के दौरान लक्ष्य पर निशाना साधती बल की महिला कर्मी

प्रशिक्षण एक आवश्यक संगठनात्मक क्रियाकलाप है जो कार्मिकों की वर्तमान तथा भविष्य के ज्ञान की पहचान कराता है तथा उनके रोजगार के लिए अपेक्षित दक्षता तथा कार्यपालन के लिए ज्ञान, कौशल व अभिरुचि प्रदान करता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु प्रशिक्षण, संगठन के ध्येय व उद्देश्य से संबंधित होना चाहिए। यथार्थ

परक तथा अर्थपूर्ण बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम को विभिन्न श्रेणियों के कार्मिकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही उसकी रुप–रेखा बनाई जानी चाहिए । उसका प्रभाव, कार्मिकों की कार्यक्षमता तथा उनके व्यवहार में आये सुधार से देखा जा सकता है ।

समाज के विभिन्न वर्गों में तेजी से उभरती अशान्ति सामान्यता, हिंसा का रुप धारण कर लेती है और इस कारण पुलिस कारवाई का केन्द्र अपराध कार्यों तथा कानून व्यवस्था से हटकर प्रतिविद्रोहात्मक अघोषित युद्ध में बदल गया है । काम–काज की आवश्यकता पर पूर्णरूप से आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम पुलिस कार्मिकों को नई चुनौतियों से निपटने हेतु सुसज्जित करने में अपर्याप्त पाया गया है । सशस्त्र पुलिस बल कार्मिकों का वर्तमान प्रशिक्षण कार्यक्रम, नई जरूरतों की पहचान तथा उसकी रूप-रेखा और साथ ही उनके लिए उचित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना, पुनरीक्षण हेतु सशक्त मामला है।

सशस्त्र पुलिस को अब सिविल पुलिस की कानून व व्यवस्था में सहायता हेतु पहले से अधिक बार और अधिक समय के लिए बुलाया जाता है। इसकी भूमिका में महत्वपूर्ण विस्तार हो गया है। कैदियों को लाने ले जाने की सुरक्षा, महत्वपूर्ण संस्थानों की पहरेदारी, अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सुरक्षा, डकैत विरोधी अभियानों, साम्प्रदायिक उपद्रवों, तथा सामान्य कानून व व्यवस्था समस्या के अलावा अब सेना की तरह आतंक विरोधी अभियानों, विद्रोही, उग्रवादी तथा अन्य अलगाववादी तत्वों से निपटने में सक्रियता से लगी है। भयंकर अग्नेयास्त्र तथा सुगठित राष्ट्रविरोधी इकाईयां, इन अपराधियों को पकड़ने में हर समय सशस्त्र पुलिस की वास्तविक कमियों को उजागर करने हेतु प्रदर्शन करती हैं। इन कामों को उनकी नई भूमिका तथा भारी जिम्मेदारियां निभाने के प्रति प्रशिक्षण दिये बिना केवल हथियार उपलब्ध कराकर पूरा नहीं किया जा सकता है। इसके विस्तृत कार्य विश्लेषण को, जिसमें कार्य का प्रत्येक स्तर पर अध्ययन तथा प्रशिक्षण इनपुट के प्रकार तथा सीमा का मूल्यांकन तथा प्रशिक्षण का अध्ययन भी शामिल है, प्रखर करने की जरूरत है।



निहत्थी लड़ाई का अभ्यास करते प्रशिक्षु

प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य, नए व्यक्ति को अपेक्षानुसार सांचे में ढालना है तथा एक युवा व प्रशिक्षण प्राप्त पुलिसकर्मी को फोर्स का एक सक्षम, आत्म विश्वासी तथा अनुशासित सदस्य बनाना है। बेसिक ट्रेनिंग में, चुस्त-दुरूस्त रहने, कुशल निशानेबाजी तथा उनके मन में निष्ठा व अनुशासन की भावना जागृत करने पर बल दिया जाना चाहिए। बेसिक ट्रेनिंग में युएसी, शस्त्र ट्रेनिंग, फील्ड क्राफ्ट, माइनर टैक्टिस, प्राथमिक चिकित्सा तथा आर.टी क्रिया-विधि शामिल होते हैं। आतंकवाद व विद्रोहात्मक शक्तियों से निपटने के लिए निगरानी, साईलेंट मूवमेंन्ट, पेट्रोलिंग, एम्बुश, तलाशी तथा घेराबंदी, प्रतिक्रिया क्षमता, तथा आईईडीज जैसे विषय बहुत अधिक महत्व रखते हैं। अधिकारियों व जवानों को कठिन से कठिन कार्य करने के लिए शारीरिक रूप से सक्षम बनाना बेसिक ट्रेनिंग का ध्येय होना चाहिए।

कई वर्षों के प्रयास से फोर्स ने एक बहुआयामी छवि बना पाने में सफलता प्राप्त की है, बल की पुलिस ड्यूटी बड़ा कर सेना जैसी डयूटियाँ भी दी गई हैं। केरिपु बल जैसे संगठन के लिए अधिकारियों व जवानों को बेसिक ट्रेनिंग का एक सर्वोच्च महत्व है। शुरू-शुरू में पर्यवेक्षण अधिकारियों व जवानों को बेसिक ट्रेनिंग का प्राथमिक दायित्व बटालियनों का था। इसके अलावा आर्मी कोर्सो से भी कुछ सीटों का लाभ उठाया जाता था। बेतार आपरेटरों को समन्वय निदेशालय, पुलिस बेतार द्वारा प्रशिक्षित किया जाता था। बल का पहला प्रशिक्षण संस्थान केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज नीमच में सन् 1960 में शुरू किया गया था। पहला रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र, बड़वाह (म०प्र०) में सन् 1968 में स्थापित किया गया था जिसे बाद में नीमच में ले जाया गया। वर्ष-दर-वर्ष इस संस्थान में कई गुना वृद्धि हुई है। हमारे बल में अब 3 केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज हैं जो क्रमशः नीमच(म०प्र०), कोयम्बटूर(तमिलनाडु), तथा

नान्देड़(महाराष्ट्र) में स्थित है तथा देश के विभिन्न भागों में स्थित चार रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र हैं। केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज अधीनस्थ अधिकारियों/अवर अधिकारियों तथा सिपाहियों के लिए बेसिक, सेवाकालीन व पदोन्नति कोर्स चलाते हैं। वे राज्य पुलिस बलों, उत्पाद एवं सीमा शुल्क तथा कैबिनेट सचिवालय के अधिकारियों व अन्य पदाधिकारियों के लिए भी ट्रेनिंग कोर्स चलाते हैं। नीमच (म०प्र०), आवड़ी(तमिलनाडु), पल्लीपुरम(केरल) तथा श्रीनगर(जम्मू व कश्मीर) स्थित रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र बेसिक व अनुवर्ता प्रशिक्षण चलाते हैं।

आंतरिक सुरक्षा अकादमी की स्थापना सन 1972 में माउंट आबू में हुई थी। यह अकादमी सीधे भर्ती राजपत्रित अधिकारियों का बेसिक ट्रेनिंग तथा विभिन्न सेवाकालीन कोर्स चलाती है। बल के अधिकारियों के साथ साथ अन्य राज्य व केन्द्रीय पुलिस संगठनों के अधिकारियों को आंतरिक सुरक्षा पर सेमिनार आयोजित करती है। यह शीर्षस्थ प्रशिक्षण संस्थान लगातार अपनी प्रशिक्षण सुविधाओं को उन्नत तथा व्यापक रूप से आंतरिक सुरक्षा मामलों को व्यापक रूप से शामिल कर रही हैं।

क्रियाकलाप या क्रियाकलाप के क्षेत्र में प्रभावशाली कार्यकुशलता अर्जित करने हेतु सिखलाई के जरिये अभिवृत्ति ज्ञान, दक्षता तथा व्यवहार आदि में सुधार के लिए प्रशिक्षण एक सुनियोजत प्रक्रिया है। प्रशिक्षण का उद्देश्य एक व्यक्ति की योग्यता को विकसित करना, जनशक्ति की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करना या उच्चतर दायित्व लेने के लिए प्रशिक्षित करना है। बल का आधुनिकीकरण करने की जरूरत है। इसके आधुनिकीकरण का मुख्य क्षेत्र इसके प्रशिक्षण में गुणात्मक तथा मात्रात्मक सुधार करना है। इसके लिए आधुनिक प्रशिक्षण इनपुट की आवश्यकता है। इसके लिए बल में आधुनिक प्रशिक्षण, तकनीक तथा शिक्षण साधनों और प्रशिक्षण के लिए जनशक्ति की भी आवश्यकता होगी। वर्तमान आंतरिक सुरक्षा के परिदृश्य में केरिपु बल के लिए प्रशिक्षण के महत्व पर अधिक जोर दिया जा सकेगा। बल अभी आधुनिकीकरण की एक पंचवर्षीय योजना लागू कर रहा है जिस पर काफी रूपये खर्च आने का अनुमान है। नब्बे के दशक में बल के परिचालन से संबंधित दो महत्वपूर्ण विकास हुए हैं।

बल की ड्यूटियों की प्रकृति धीरे-धीरे कानून तथा व्यवस्था से प्रति विद्रोहात्मक कार्रवाई में बदल रही है। इस समय बल की लगभग 84% नफरी प्रति विद्रोहात्मक कार्यवाही के लिए तैनात है। इससे पहले कभी भी केरिपु बल किसी भी समय परिचालन क्षेत्रों की ऐसी विविधता वाले क्षेत्र में तैनात नहीं रहा जैसा कि अभी जम्मू व कश्मीर, असम, त्रिपुरा, मणिपुर, नागालैण्ड, आंध्र प्रदेश और अब बिहार में तैनात है। प्रत्येक की अपनी-अपनी विलक्षण परिचालिनिक समस्याएं हैं। बहरहाल परिचालिनिक दक्षता सुधारने के लिए बल को इसकी बदलती हुई भूमिका के अनुसार प्रशिक्षित किया जाना है और विभिन्न परिचालनिक क्षेत्रों में परिचालनिक रणनीति अपनाई जानी है। बल की प्रतिबद्धता लगभग इस पूरे दौर में उच्च कोटि की रही है। बल का संचालन अधिक होने से बल के कार्मिकों का मानसिक तनाव तथा

दबाव बहुत बढ़ता है, जिसकी वजह से वे शारीरिक रुप से कमजोर हो जाते हैं।

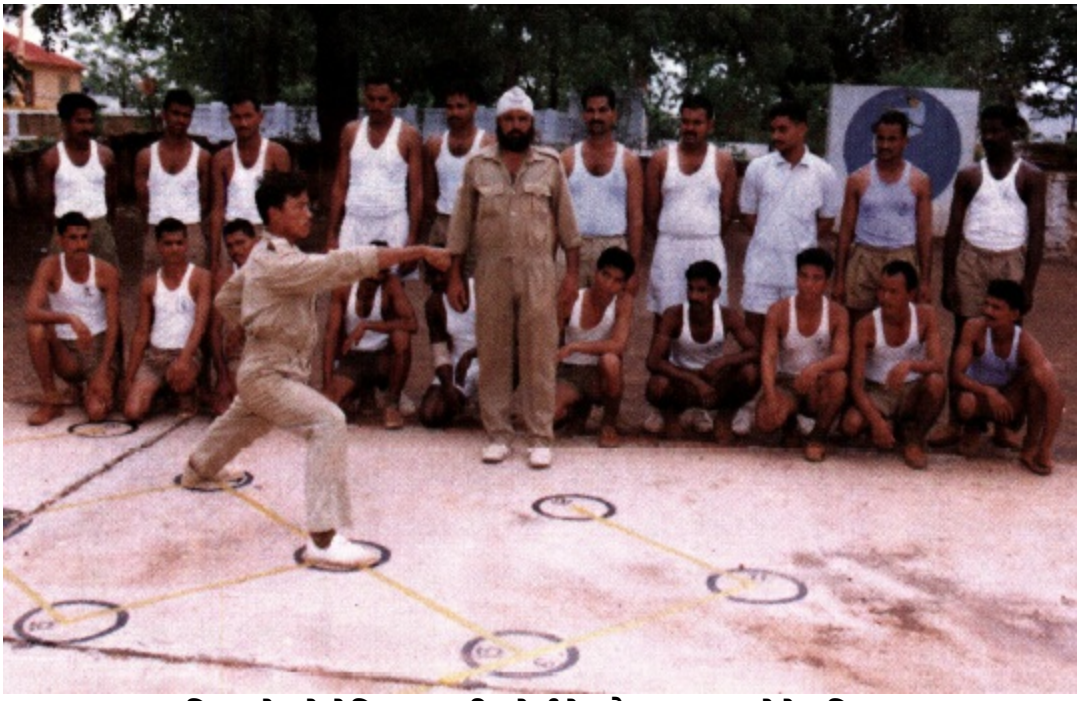


परिचालनिक कार्रवाई हेतु तैयार प्रशिक्षुओं को ब्रीफ करते प्रशिक्षक

इस समय लगभग बल के 95 प्रतिशत नफरी तैनात है, जिसकी वजह से बल के कार्मिकों को प्रशिक्षण, विश्राम या स्वास्थ्य लाभ के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल रहा है। बल के कार्मिकों को अपनी शरीरिक तथा मानसिक थकावट दूर करने के लिए विश्राम की आवश्यकता है, जिससे वे प्रशिक्षण प्राप्त करने की उपयुक्त हालत में हों। रोटेशन ट्रेनिंग जो सामूहिक कंपनी प्रशिक्षण है, बल की परिचालन दक्षता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

बल की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बल ने अल्पावधि तथा दीर्ध-अवधि दोनों ही रणनीति तैयार की हैं। अल्पावधि रणनीति में प्रशिक्षण देने तथा मध्य स्तर का नेतृत्व सुधारने पर जोर दिया जाएगा। अल्पविधि का उद्देश्य प्राप्त करने हेतु आन्ॅ-द-स्पॉट प्रशिक्षण देने की योजना तैयार कर ली गई है। न्यूक्लियस अनुदेशकों को प्रशिक्षित करने के लिए अनुदेशकों का एक ग्रुप विभिन्न परिचालिनिक सक्रिय क्षेत्रों में भेजा जा रहा है। तत्पश्चात इन्हे फील्ड की पोस्टों और कंपनियों के स्तर पर भेजा जाएगा और कार्य संबंधी उनकी रणनीति की गलतियों को सुधारने के लिए

तत्काल वहां पर आन-द-स्पॉट व्यवसायिक प्रशिक्षण देगा। बहरहाल यह रोटेशनल ट्रेनिंग का अनुकल्प नहीं होगा, केवल इसका अनुपूरक होगा, क्योंकि इस प्रकार के प्रशिक्षण में केवल सीमित व्यवसायिक दक्षताओं का ही प्रशिक्षण दिया जाएगा।



प्रशिक्षुओं को बेसिक यूएसी कोर्स के दौरान नमूना देते प्रशिक्षक

प्रशिक्षण के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षार्थियों तथा अनुदेशकों के बीच वार्ता करवाने के लिए बल समय-समय पर विचार-गोष्ठियाँ आयोजित करता आ रहा है। इस तरह की पहली विचार गोष्ठी जुलाई 1997 में नई दिल्ली में आयोजित हुई थी। दूसरी विचार-गोष्ठी जुलाई 1999 में केरिपु बल की जन्म स्थली नीमच में हुई थी। तीसरी विचार गोष्ठी भी जुलाई, 2000 में नीमच में हुई। तीन दिवसीय चौथी सेमीनार का आयोजन भी जुलाई 2001 को नीमच में किया गया था। पांचवी विचार-गोष्ठी नई आशाओं तथा आकांक्षाओं के साथ अब नीमच में आयोजित की जा रही है जिसमें भागीदारों से यह आशा की जाती है कि वे वर्तमान आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण को और सुसंगत बनाने के लिए समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेगें।



रस्सा चड़ना भी प्रशिक्षण का एक हिस्सा है।

प्रशिक्षण का आधुनिकीकरण



व्यवसायिकता दक्षता हासिल करने के लए प्रशिक्षण जरूरी है। अतः प्रशिक्षण की निरंतर आवश्यकता होने के कारण विद्यमान प्रशिक्षण सुविधाओं की पर्याप्तता और सुरक्षा बलों की बदलती हुई भूमिका एवं सौंपे गए कार्यों के अनुरूप उसके उन्नयन की आवश्यकता की नियमित आधार पर समीक्षा की जानी चाहिए। के.रि.पु. बल ने अपने जवानों को आधुनिक तौर–तरीकों पर आधारित प्रशिक्षण दिलाने के लिए 2000–01 से 2004–05 तक 5 वर्ष के लिए चरणबद्ध तरीके से इनफेन्ट्री वेपन इफेक्ट सिमुलेटर, सिस्टम (आई०डब्लू०ए०ई०एस०एस०), स्मॉल आर्स ट्रेनिंग सिमुलेटर सिस्टम, ड्राइविंग सिमुलेटर, विद्यमान आई०डब्लू०ए०ई०एस०एस० के उन्नयन, कंप्यूटरों तथा अन्य प्रशिक्षण सूचना प्राद्यौगिकी उपकरणों सहित अनेक आधुनिक प्रशिक्षण उपकरणों को खरीद कर आधुनिकीकरण की योजना बनाई है।

अभी तक के.रि.पु. बल के राजपत्रित अधिकारियों को बुनियादी प्रशिक्षण और सेवाकालीन प्रशिक्षण माउंट आबू (राजस्थान) में स्थित आंतरिक सुरक्षा अकादमी में अन्य अर्धसैनिक बलों और राज्य के पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों के साथ प्रदान किया जाता है। लेकिन बल का लगातार विस्तार होने के कारण यह संस्थान राजपत्रित अधिकारियों को बुनियादी और सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए आवश्यकताओं को पूरी नहीं कर पाने के वजह से सरकार ने गुड़गांव में के.रि.पु. बल को अपनी और अकादमी बनाने की स्वीकृति प्रदान की है। यह अकादमी आगामी 3 वर्षों में कार्य करने लगेगी।

बल में राजपत्रित/ अधीनस्थ/ अपर अधिकारियों तथा कांस्टेबलों के लिए निम्नलिखित सेवाकालीन, अनुदेशात्मक और पदोन्नति कोर्स चलाते है :–

केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज–नीमच

यह केन्द्रीय रिजर्व पुलिस का सबसे प्राचीन शिक्षण संस्थान है। वर्तमान में इस प्रशिक्षण संस्थान में वेपन एवं टैक्टिक्स कोर्स (अधिकारियों के लिए), वेपन और टैक्टिक्स कोर्स (अनुदेशकों के लिए), क्वार्टर मास्टर व मोटर परिवहन कोर्स (अधिकारियों के लिए) वाहन चालन एवं अनुरक्षण कोर्स, बेसिक ऑटो फिटर कोर्स, ऑटोफिटर तथा अपग्रेडेशन आदि नवीनतम कोर्स चलाए जाते हैं।

केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज–कोयम्बतूर :

यह केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का दूसरा बड़ा प्रशिक्षण केन्द्र है, जहाँ पर युवा कार्मिकों को बेसिक प्रशिक्षण देने के साथ–साथ अन्य व्यवसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है। अधीनस्थ अधिकारियों के लिए बुनियादी प्रशिक्षण, प्रतिविद्रोह और आतंकवाद विरोधी कोर्स, असूचना कोर्स, मानचित्र पठन कोर्स, भीड़ को तितर–बितर करने का कोर्स, (सभी केन्द्रीय पुलिस संगठनों व राज्य पुलिस के लिए), वरिष्ठ

इन्सपेक्टर सवग कोसं (पदोन्नांते) कोसं चलाए जाते हैं।

केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज–मुदखेड (महाराष्ट्र) :

इस प्रशिक्षण केन्द्र में मंत्रालयिक कर्मचारियों के लिए बुनियादी प्रशिक्षण तथा सामान्य डयूटी कार्मिकों के लिए प्रतिविद्रोह तथा आतंकवाद विरोधी कोर्स, एन्टी एक्सपलोसिव कोर्स तथा बम खोजी व निष्क्रिय स्कवाड रिफ्रेशर कोर्स, वरिष्ठ उप निरीक्षक काडर कोर्स (पदोन्नति), क्वाटर मास्टर राईटर कोर्स, ड्रिल अनुदेशक कोर्स आदि का प्रशिक्षण अत्याधुनिक तरीकों से दिया जाता है।

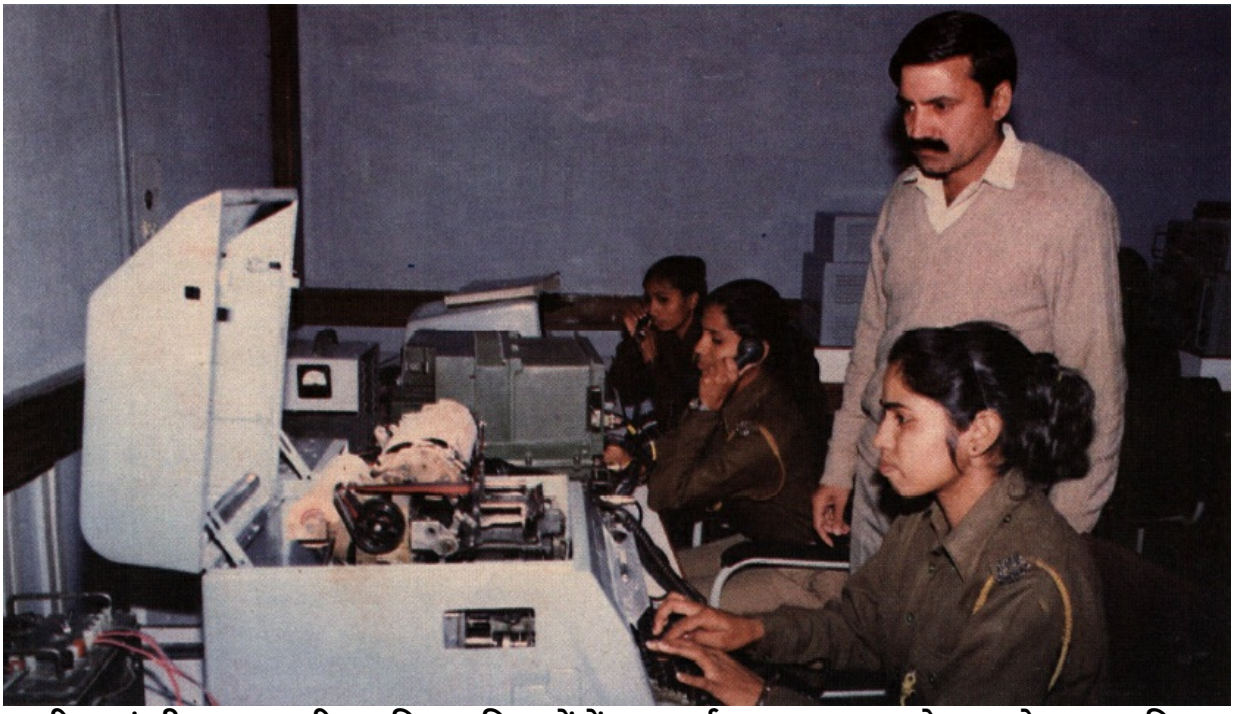
के.रि.पु. बल में 1215 रंगरूटों की क्षमता वाले 44 सप्ताह की अवधि का कांस्टेबलों (रंगरूटों) का बुनियादी प्रशिक्षण तथा बल के बिगुलरों व बैन्ड कर्मियों को 22 सप्ताह की अवधि का बुनियादी तथा 12 सप्ताह की अवधि का रिफ्रेशर प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चार रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र नीमच (म०प्र०) आवड़ी (तमिलनाडु) पल्लीपुरम (केरल) श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर) में स्थापित किए हैं। गत वर्ष के दौरान केन्द्रीय पुलिस संगठनों / राज्य पुलिस के 518 अधिकारियों/कर्मचारियों और जवानों सहित कुल 20846 अधिकारियों और जवानों को उपरोक्त प्रशिक्षण संस्थानों में आधुनिकतम हथियारों तथा नवीनतम तकनीक के अनुसार प्रशिक्षण प्रदान किया गया है।

प्रतिविद्रोहात्मक कार्यो में बल की बढ़ती हुई तैनाती को ध्यान में रखते हुए फील्ड में तैनात टुकड़ियों के लिए प्रतिविद्रोहात्मक अभियानों पर विशेष बल देते हुए रिफ्रेशर ट्रेनिंग की पुर्नसंरचना की जा रही है तथा तदनुसार प्रशिक्षण दिया जाएगा।



कम्प्युटराइज्ड फायरिंग का अभ्यास करते बल के जवान

नवगठित विशेष परिचालनिक यूनिटों यथा 137,138, 139 और 140 बटालियनों को बटालियन स्तर पर विशेष परिचालनिक अभ्यास कराये गये तथा प्रतिविद्रोहात्मक अभियानों पर विशेष बल दिया गया। ये अभ्यास नियंत्रित विद्रोही गतिविधियों (सिम्युलेटेड) के आधार पर कराये गये। इन अभ्यासों को कराते समय इन्फेन्ट्री के अत्याधुनिक हथियारों के प्रभाव की सिम्युलेटेड प्रणाली का प्रयोग भी किया गया था। यह उपकरण सामरिक परिस्थितियों में कार्मिकों के निशाने के कौशल का मूल्यांकन करता है।



"त्वरित एवं शीघ्र सूचना परिचालनिक अभियानों में अभूतपूर्व सफलता" वायरलेस आपरेटर का प्रशिक्षण लेती महिला कर्मी

फील्ड परिचालनिक दक्षता बढ़ाने के लिए कुछ फील्ड चिन्हित स्थानों पर प्रशिक्षण दिलाया जा रहा है। कुछ चयनित स्थानों पर उपलब्ध अव संरचना को बढ़ाकर और अधिक सुदृढ़ बनाया है। परिचालन पुलिस महानिरीक्षकों सहित सभी अंचल/सेक्टरों से ऐसे केन्द्रों, प्रधिमानतः ग्रुप केन्द्रों, जहां कम्पनियों का संयुक्त रोटेशनल प्रशिक्षण चलाने के लिए आवश्यक संरचनात्मक सुविधाएं तथा अन्य बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हैं, को चिन्हित करने का अनुरोध किया गया है। सभी संबंधित अधिकारियों से रिर्पोट प्राप्त कर उनका परीक्षण किया जाता है।

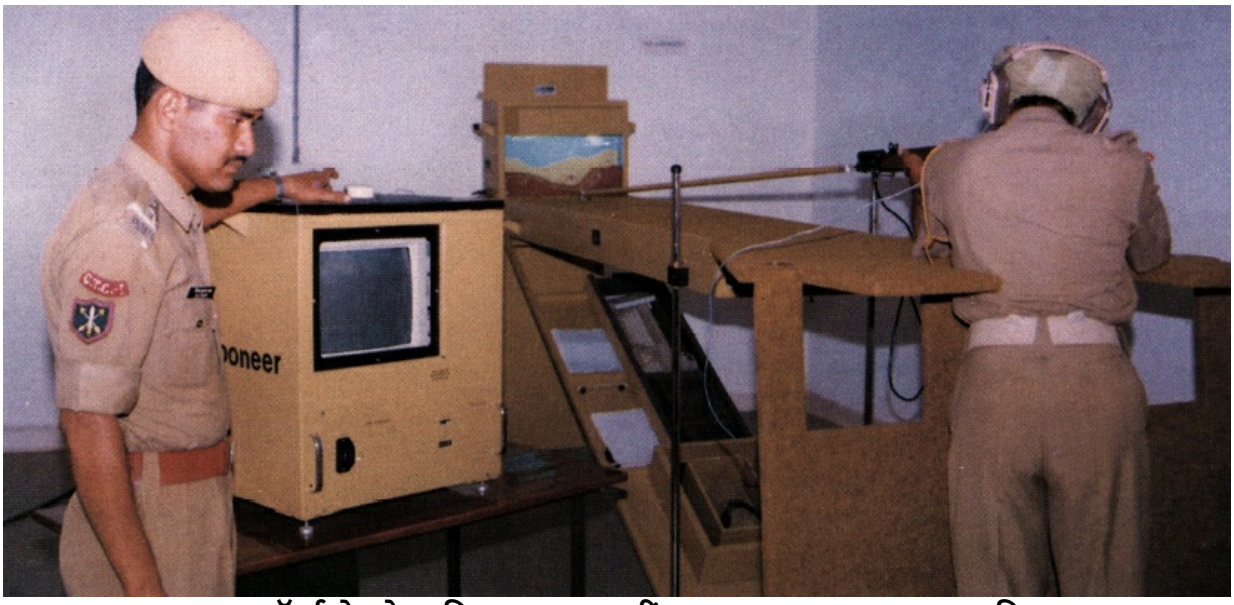
कम्पनी स्तर पर दोतरफा तीन अभ्यास यथा "अमन", "प्रहार" और "फाल्कन" के प्रतिविद्रोहात्मक अभियान विभिन्न स्थानों पर आयोजित किए थे और बल की परिचालनिक दक्षता में सुधार लाने के लिए अभ्यास दस्तावेज व फीडबेक रिपोर्ट, परिचालन सहित सभी अंचल/सेक्टरों को भेजी गई ताकि परिचालनिक क्षमता में सुधार लाने के लिए के.रि.पु. बल की यूनिटों को और अधिक अनुभव देने हेतु

प्रांशिक्षण निदेशालय आवश्यक सलाह मांग सके और योजना बनाने व ऐसे अभ्यासों के संचालन में सहायता प्रदान कर सके। गत वर्ष के दौरान 12 कम्पनियों को विशेष प्रतिविद्रोहात्मक अभियानों में प्रशिक्षण दिलाया गया। ऐसे अनुभवों से न केवल परिचालनिक दक्षता में वृद्धि होती है बल्कि इससे संबंधित कार्मिकों को प्रेरणा भी मिलती है।

वारंगटे स्थित सी०आई०जे०डब्ल्यू० स्कूल ऑफ आर्मी में आगामी बर्ष में यूनिटों के विशेष अभियानों की प्रतिविद्रोह एवं जंगल युद्ध कला की क्षमता को और बढ़ाने हेतु विशेष प्रशिक्षणों की व्यवस्था की गई है। आर्मी के काउन्टर इनसर्जेंसी व जंगल वारफेयर स्कूल, वारंगटे की पद्धति पर के.रि.पु. बल ने दयापुर में एक सीआईएटी स्कूल स्थापित करने का निर्णय लिया है। इस स्कूल को स्थापित करने के प्रथम चरण में पूर्वोत्तर में तैनात की जा रही यूनिटों को दयापुर में चयनित अनुदेशकों द्वारा प्रवेश पूर्व प्रशिक्षण प्रदान करने संबंधी प्रस्ताव हैं।

प्रकारणात्मक प्रशिक्षणों का बल में महत्व

एम.पी. चिटनिस, वी.एस.एम. प्राचार्य सी.टी.सी–III



स्माल ऑर्म्स सेमुलेटर सिस्टम पर फायरिंग का अभ्यास करता हुआ प्रशिक्षु

किसी भी संस्था के उद्देश्यों की सफलतापूर्वक प्राप्ति के लिए संस्था के कार्मिकों को आवश्यकता के अनुरूप प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ताकि संस्था की कार्यप्रणाली को दक्षतापूर्वक कार्यान्वित किया जा सके के.रि.पु. बल भी अपने समक्ष उत्पन्न नवीन चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने जांबाज जवानों को

आवश्यकता के अनुरूप प्रशिक्षण प्रदान करता है ताकि ये किसी भी कठिन से कठिन समय में परिस्थितियों के अनुरूप संयम पूर्वक उस परिस्थिति का सामना कर सकें । भारत जैसे विविधापूर्ण देश में, जहां भौगोलिक व क्षेत्रीय भिन्नता के अलावा अनेक भाषा, धर्म, जाति के लोग रहते हैं, आतंकवाद व अलगाववाद के अनेकों कारण व रूप हैं । के.रि.पु. बल जो केन्द्र सरकार का सबसे पुराना व बड़ा अर्ध सैनिक बल है और जिसके ऊपर देश की आन्तरिक सुरक्षा का दायित्व है। इस दायित्व के निर्वहन के लिए विभिन्न प्रकरणात्मक प्रशिक्षणों की आवश्यकता पड़ती है।

स्वतंत्रता के बाद से ही हमारे देश के समक्ष आंतरिक सुरक्षा सम्बन्धी अनेकों चुनौतियां समय-समय पर उपस्थित होती रही हैं। भारत जैसे विशाल जनसंख्या व बेरोजगारी युक्त देश में विद्रोही दुश्मन देशों की मदद से गलत प्रचार और पैसे की मदद से अलगाववाद जैसी अनेकों सुरक्षा सम्बन्धी चुनौतियां पैदा करते रहते हैं। चुंकि देश की अस्थिरता से हमारे दुश्मनों को अप्रत्यक्ष लाभ मिलता है। इसलिए ये दुश्मन अपने निहित स्वार्थो की पूर्ति इन अलगाववादियों को विभिन्न प्रकार का प्रशिक्षण व प्रभूय प्रदान करके देश के समक्ष चुनौतियां पैदा करते रहते हैं।

वर्तमान परिवेश में आतंकवाद ने उधोग का रूप ले लिया है जो पूरी तरह पेशेवर व संगठित हैं, यह आतंकवाद किसी एक देश विशेष की समस्या न होकर पूरे विश्व की समस्या बन गयी है। 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका पर हुए हमले के बाद से संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी आतंकवाद को परिभाषित करते हुए उसके विरूद्ध निरोधात्मक प्रस्ताव पारित किया है। भारत भी इस प्रकार के आतंकवाद का दशकों से सामना कर रहा है। जिसकी भयंकरता का ज्वलंत प्रमाण 13 दिसम्बर 2001 को देश की सर्वोच्च स्तम्भ संसद भवन पर हमला है। आतंकवाद का मुकाबला करते हुए हमारे जवानों ने समय समय पर शहादत देकर देश की रक्षा की है। वर्तमान में आतंकवाद लक्ष्यों की प्राप्ति तक सीमित न होकर आतंकवादियों के स्वार्थ सिद्धि का साधन हो गया है। हजारों मुजाहिद्दीन कहलाने वाले प्रशिक्षित लड़ाके दुनियां के किसी भी हिस्से में आतंकवाद फैलाने का कार्य कर सकते हैं। इन लड़ाकों को कई देशों की सेनाओं द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जिसमें उन्हें आतंकी कार्रवाईयों व सेना से युद्ध करने तक का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। चूंकि इस आतंकवाद या दहशतगर्दी फैलाने वाले लोगों के पास धन का कोई आभाव नहीं है। अतः ये अपने कार्य की पूर्ति हेतु अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्र तथा प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हैं। अतः केरिपु बल को भी अपनी प्रशिक्षण प्रणाली में व्यवहारात्मक परिवर्तन करने पड़े है ताकि इन नवीन परिस्थितियों का सामना सफलतापूर्वक किया जा सके। विभिन्न परिस्थितियों व विषयों पर बल द्वारा अनेक प्रकराणात्मक प्रशिक्षण प्रदान करते समय नवीनतम अस्त्र-शस्त्र के बारे में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जिससे परिस्थितियों के अनुरूप समस्या का सामना किया जा सके।

आज के दौर में व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा गरिमा के संरक्षण पर पूरे विश्व में विशेष ध्यान दिया जा रहा है तथा किन्ही भी परिस्थितियों में व्यक्ति के मानव अधिकारों के

हनन न हो पाए इसके लिए न्यायपालिका द्वारा विशेष आदेश व निदेश जारी किये गए हैं। इन सभी आदेशों व निर्देशों के सही निष्पादन के लिए गैर सरकारी संस्थाओं (एन0जी0ओज0) द्वारा सरकारी ऐजेन्सियों पर निगरानी रखी जा रही है। इन परिस्थितियों में सुरक्षा बलों को अपनी डयूटी के दौरान विशेष सावधानी व सतर्कता बरतनी पड़ती है जिससे गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा मानव अधिकार हनन सम्बन्धी कोई बात प्रचारित करने का मौका न दिया जा सके। इसलिए कोर्स के कार्यक्रमों में इन बातों को सम्मिलित करके जवानों को प्रशिक्षित किया जा रहा है जिससे न्यायपालिका के आदेशों और निर्देशों का सही निष्पादन हो सके।

जैसा कि सर्वविदित है कि भारत में विभिन्न धर्मावलम्बी साथ-साथ रहते हैं जिनमें परस्पर भाईचारा व सौहार्द्र विद्यमान है, किन्तु समय-समय पर अनकों कारणों से इनमें वैमनस्य पैदा होता रहा है जो साम्प्रदायिक दंगों का रूप अख्तियार कर लेता है। हांलाकि यह तनाव अशंकालिक होता है परन्तु कई बार इसकी विभिषिका बड़ी भयानक होती है। केरिपु बल इस प्रकार के साम्प्रदायिक तनावों से निपटने हेतु तैनात किया जा रहा है और इससे निपटने के लिए बल ने अपनी साधारण बटालियनों के अतिरिक्त दस द्रुत कार्यबल बटालियनें गठित की हैं। ऐसा महसूस किया जा रहा है कि वर्तमान में देश में साम्प्रदायिक दंगे केवल स्वाभाविक तनाव न होकर व्यवस्थित व सुनियोजित दुष्कृत्यों की परिणति है और सम्भवतः असमाजिक तत्व व देश के दुश्मन मिलकर इसको फैलाने का कार्य कर रहे हैं। इसके विरोधात्मक उपायों को विफल करने की भी साजिश करते रहते हैं। इन कठिन व विपरीत परिस्थितियों में बल को कार्य करने हेतु विशेष धैर्य, संयम, दक्षता की आवश्यकता है जिसके लिए बल के सदस्यों को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। बल द्वारा सम्पूर्ण परिवेश को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाये गये हैं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल हैं जैसे भीड़ पर नियंत्रण रखते हुए दंगाइयों पर काबू पाना, अश्रु गैस के प्रभावशाली प्रयोग करना आदि। वर्तमान में बल द्वारा भीड़ नियंत्रण अभियानों में स्टेन ग्रेनेड, कॉल स्टीगर ग्रेनेड व डाई मार्कर ग्रेनेड का प्रयोग किया जा रहा है जिससे दंगाई अपना मकसद भूलकर तितर-बितर हो सके। इसके साथ-साथ परम्परागत लाठियों के स्थान पर फाईबर लाठियों का प्रयोग किया जा रहा है जिससे देखने में अमानुषिकता का आभास न हो सके। इसके साथ-साथ परम्परागत केनसिल्ड के स्थान पर फाईबर ग्लास का प्रयोग किया जा रहा है। शॉक बैटन का भी प्रयोग करके दंगो पर आसानी से नियंत्रण किया जा रहा है। इसके अलावा भीड़ नियंत्रण के लिए वाटर कैनन और रबर बुलेट का भी प्रयोग केरिपु बल द्वारा किया जाता है। ये सब प्रकरणात्मक कोर्स चलाकर ही हो पा रहा है जिससे बल के जवानों को नवीन परिस्थितियों में लोगों की मानसिकता को समझकर उनपर काबू करने के लिए कम से कम बल प्रयोग करके दंगा नियंत्रण में भीड़ के मनोविज्ञान को समझ कर कार्य करने हेतु विषयों को पाठ्क्रम में सम्मिलित किया है।



विस्फोटों में आतंवादियों द्वारा अपनायी जा रही नित्य नई क्रियाविधि के बारे में प्रशिक्षुओं को जानकारी देते प्रशिक्षक

वर्तमान कानून-व्यवस्था व आतंकवाद/अलगाववाद को ध्यान में रखते हुए देश की आवश्यकता के अनुरूप व्यवहारिक प्रशिक्षण पर जोर दिया जा रहा है। ये समस्त प्रशिक्षण केरिपु बल द्वारा विभिन्न राज्यों में की जा रही सेवाओं, डयूटियों, बल की अच्छाईयों व कमियों को ध्यान में रखते हुए बनाए गए हैं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बल कार्मिकों की शारीरिक दक्षता के साथ-साथ दिमागी योजनाओं व व्यूह रचनाओं का अपना एक खास महत्व होता है। इसलिए प्रशिक्षण के दौरान बल के सदस्यों के उन सब पहलुओं से अवगत किया जा रहा है जिससे कि वे मनोवैज्ञानिक तरीके से समय व हालात के अनुसार परिस्थितियों से निपट सकें तथा बदनामी न उठानी पड़े। क्योंकि आतंकवादी आज कल टैक्टिस बदलते रहते हैं। तथा हमेशा सुरक्षा बलों को सुरक्षात्मक उपाय करने के लिए विवश करते रहते हैं। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए आजकल प्रशिक्षण में उन सब पहलुओं पर ध्यान एवम् प्रशिक्षण दिया जा रहा है जिससे कि सुरक्षा बलों की आक्रामकता में वृद्धि हो एवम आतंकवादी मजबूर होकर सुरक्षात्मक नीति अपनाने लगें। इसके लिए बल के सदस्यों को तुरन्त कार्रवाई ड्रिल एवम क्यू.आर.टी. के तौर पर कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।



नियमित अभ्यास कुशलता का प्रतीक "चांदमारी का अभ्यास करते रंगरूट"

प्रतिविद्रोहिता के अभियानों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए परम्परागत अभियानों को छोड़कर गैर-परम्परागत अभियानों का प्रशिक्षण बल के सदस्यों को दिया जा रहा है। स्माल टीम कोन्सेप्ट की महत्ता को ध्यान में रखते हुए छोटी टुकड़ियों द्वारा विद्रोहियों के खिलाफ अभियान तेज किये जा रहे हैं जिससे कि बल की गतिशीलता एवम कार्यकुशलता में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। जूनियर नेतृत्व प्रभावशाली तरीके से कार्य कर रहा है। विद्रोहियों पर दबदवा बनाने में सफलता मिल रही है।

प्रतिविद्रोहिता अभियानों में मनोवेज्ञानिक युद्ध का अपना एक खास महत्व होता है। इसलिए बल के सदस्यों को मनोवैज्ञानिक युद्ध प्रणाली का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। आम जनता की सहानुभूति व सहयोग विद्रोहियों के साथ न होकर सुरक्षा बल की तरफ हो जाये इसके लिए भाईचारा, सिविक एक्शन, प्रोपागेन्डा एव काउन्टर प्रोपागेन्डा का प्रशिक्षण बल के सदस्यों को दिया जा रहा है। इससे बल के सदस्यों को प्रति विद्रोही अभियानों में सफलताएं अर्जित हो रही हैं। जैसे-जैसे विद्रोही अपनी कार्य शैली में बदलाव करते हैं उसी प्रकार इनके बारे में जवानों को जानकारी देकर और प्रतिविद्रोहिता की कार्यवाईयों में बदलाव लाकर प्रकरणात्मक प्रशिक्षण द्वारा जवानों की कार्य-कुशलता व दक्षता को परिस्थितियों के अनुरूप किया जाता है।

क्योंकि देश में विद्रोहिता रिमॉट एरिया में है और वहां पर मैंपरीडिंग का एक खास महत्व होता है क्योंकि जंगल, पहाड़, नाले आदि भौगोलिक स्थितियों के कारण लक्ष्य तक पहुँचाने में कठिनाई होती है। इन कठिनाईयों को ध्यान में रखकर मैंपरीडिंग प्रशिक्षण की आवश्यकता है और इसे देना भी आवश्यक है। जिससे कि

बल की आक्रामकता एवं गोपनीयता बनी रहे और अभियानों को सही समय पर सरप्राइज रखते हुए पुरा किया जा सके।

आधुनिक प्रोद्योगिकी विकास के फलस्वरूप आतंकवादियों व अलगाववादियों द्वारा विभिन्न प्रकार के विस्फोटकों का व्यापक प्रयोग किया जा रहा है। इन विस्फोटको के रूप में विभिन्न रसायनो का प्रयोग आतंकवादियों द्वारा आतंकवाद फैलाने में सहज एवं सरल तरीका है। मुम्बई विस्फोट, कश्मीर विधान सभा व कोलकता अमेरिकी सेंटर पर हुए भयानक हमले इसी विधि के पूर्णनियोजित हमले हैं। जहां इन हमलों में हमलावर अदृश्य होकर दूर से रिमोट द्वारा हमले करते हैं वहीं सुरक्षा कर्मियों व बचाव कर्मचारियों को अपनी जान जोखिम में डालकर उनसे मुकाबला करने के लिए सुरक्षा बलों को अत्यन्त कुशलता व सर्तकता से काम करना पड़ता है। केरिपु बल लगातार इस प्रकार के हमलों का मुकाबला कर रहा है, ने अपने कार्मिकों को इन सबके बारे में अवगत करने के लिए व्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तैयार किये हैं ताकि इन आधुनिक विस्फोटकों की पहचान समय रहते की जा सके व उन्हें निष्क्रिय कर उनसे होने वाली जानमाल की हानि से बचा जा सके। बल के सदस्यों को प्रचलित रासायनिक विस्फोटकों से पहचान कराई जाती है तथा किन विस्फोटकों को किस प्रकार सुरक्षित तरीके से निष्क्रिय किया जा सकता है, का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकरणात्मक प्रशिक्षण से बल के जवानों व अधिकारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे है उन्हें इनकी पहचान उनसे निपटने के तरीकों व उनके सक्रिय होने के तरीको के बारे में इन कोर्सो में प्रशिक्षण दिया जाता है।

प्रकरणात्मक प्रशिक्षण का महत्व इस बात से भी समझा जा सकता है कि जहां सुरक्षा बलों को अपनी सीमाओं व नियंत्रण में समयानुसार कार्य करने की उपेक्षा की जाती है वहीं आतंकवादी जान माल की परवाह किये बिना दहशत फैलाने का कार्य करते है। साथ ही अपनी पहचान छुपाने के लिए भीड़ में मिले रहते हैं। बल के जवानो को अत्यन्त ही संयम से कार्य करना पड़ता है साथ ही उन्हें मानवाधिकार आयोग तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के मानवाधिकार मानकों का पालन करना होता है। जहाँ आतंकवादी बार-बार यह प्रयास करते हैं कि सुरक्षा बल अपना धैर्य खोकर कोई भी ऐसी कार्रवाई करें जिससे कहीं थोड़ा बहुत भी मानवाधिकार का अतिक्रमण हो और वे ऐसे प्रचार देकर सुरक्षा बलों के खिलाफ जनता में और अन्तर्राष्ट्रीय जगत में दुश्प्रचार कर सके। अतः इन विषम परिस्थितियों का सामना करने हेतु केरिपु बल ने अपने कार्मिकों को मानवाधिकार के मापदण्डों का पालन करते हुए प्रभावशाली कार्य करने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तैयार किये है ताकि बल के सदस्य निर्दोष सेवा कर सकें। इन पाठ्यक्रमों में इन नियमों से सदस्यों को अवगत कराया जाता है और इसके तहत कार्यप्रणाली का अभ्यास कराया जाता है जिससे विषम परिस्थितियों में अभियान करते वक्त इस प्रकार की समस्याओं से निपटा जा सके और विद्रोहियों के मनोबल को धक्का पहुँचाया जा सके।



बुनियादी प्रशिक्षण के दौरान बाधा पार करते नवारक्षी



प्रशिक्षण का अभिन्न भाग “जूडो-कराटे” का अभ्यास करते बल कार्मिक

किसी भी बल की प्रतिविद्रोह की आक्रामकता उसके खुफिया तंत्र पर निर्भर करती है। अतः इन्टेलीजेन्स नेटवर्क की महत्ता को पहचानते हुए केरिपु बल ने भी अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में खुफिया तंत्र को मजबूत करने के लिए कार्य करने की प्रणाली का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसमें सूचना मिलने पर त्वरित कार्यवाई करते हुए आक्रमण करने की रणनीति तैयार करना सिखाया जाता है ताकि आतंकवादियों के कार्य करने की शैली का पता लगाया जा सके और अपनी आक्रमकता बढ़ाई जा सके। बल द्वारा पकड़े गए संदिग्ध व्यक्तियों से सूचना प्राप्त करके अभियानों को सफल बनाने हेतु कैसे निपटा जाए, का प्रकरणात्मक प्रशिक्षण द्वारा अवगत कराया जाता है।

अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि दुश्मन या विद्रोहियों की बदलती कार्य शैली, उनके द्वारा प्राप्त अत्याधुनिक हथियारों, उनके कार्य करने के तरीकों के अनुसार उनके प्रति कार्य करने हेतु नई-नई व्यूह रचनाओं, नये व उत्तम उपकरणों व शस्त्रों के बारे में प्रकरणात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रमों से व्यापक प्रशिक्षण देकर जवानो की कमियों को दूर करके तैयार किया जाता है जिससे अभियानों को और अधिक कार्यकुशलता व दक्षता के साथ पूर्ण किया जा सके तथा बल को जान-माल की कम से कम हानि उठानी पड़े।



रस्से से बाधा पार करना भी प्रशिक्षण का अहम हिस्सा है

संचार क्रांति

एम.एस. अग्रवाल
प्राचार्य सी.टी.सी (टी) राँची



संचार क्रांति में सीटीसी (टी) राँची के बढ़ते कदम "कम्प्यूटर पर प्रशिक्षण लेते बल के कार्मिक"

मानवता के विकास में संचार प्रौद्योगिकी का एक अहम रोल रहा है। अठारवीं शताब्दी की औद्योगिक क्रान्ति के बाद संचार के क्षेत्र में हो रहे क्रमानुसार विकास ने हमारे समाज के लिए अद्भुत परिदृश्य तैयार किया है। उपग्रहों के इस्तेमाल से एक ऐसा जाल बनाया गया है कि विश्व के किसी भी हिस्से में बैठकर आप दूसरे हिस्से की घटनाओं को तुरंत देख/जान सकते हैं। आजकल संचार में नई तकनीकी की तेजी का प्रवाह विस्मयकारी है। सैलुलर, संचार के उच्च तकनीकी संसार में जादुई शब्द, शक्ति के गलियारों तथा व्यापार क्षेत्र पर प्रभाव डाल चुकी है। अब विश्व सेटेलाइट दूरभाष ने उनको चुनौती दी है। आई.एस.डी.एन. संसार में विभिन्न प्रकार की सेवाएं जैसे टेलीफोन नेटवर्क पर टेलीफोन लाइन के माध्यम से बाइस, डाटा एण्ड इमेज ट्रान्समिशन हेतु एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में सामने आ चुकी है। आजकल उपलब्ध जी०एस०एम० डिजिटल रेडियो टेलिफोन सेवा, बेतार (वायरलेस) के लिए एक अति उच्च प्लेटफार्म साबित हो चुका है। कम्प्यूटर स्वीचींग तथा रेडियो तकनीकी को बढावा देकर तकनीकी को और विकास किया गया है।

मानव का अनुकरण करती मशीनें-रोबोट ने पिछले काफी समय से लोकप्रिय कल्याणशीलता हासिल कर ली है। परन्तु यह छवि उनके वास्तविक कार्य और क्षमताओं से परे है। अभी तक रोबोट का प्रयोग केवल जोखिम भरे कचरे को हटाने,

कारखानों में सूक्ष्म पुर्जों को उठाने-लगाने एवं अन्य संसारेक मशीन कार्यो में किया जाता है।

विशेषज्ञ महसूस करते हैं कि देख पाने की शक्ति के साथ रोबोट मानव को पहचानने लगेगें, चीजें याद रखेंगे और उसी के अनुसार व्यवहार करेंगें। तब सोच पाने की क्षमता पाना दूर की बात नहीं होगी। कुछ टीमें सोचने वाले रोबोट विकसित करने में जुटी है। ब्रिटिश वैज्ञानिकों के एक दल ने अपने छोटे राबोट को कीटों जैसी सोचने की शक्ति दी है वे आपस में अवरक्त ट्रांसमीटर और रीसीवर के माध्यम से संप्रेषण कर सकते है।

अगला कार्य मानवाकृतियों को सीखने की शक्ति प्रदान करने और उन्हें अपनाने का है। किसी वयस्क जितनी मानसिक शक्ति वाला रोबोट विकसित करना कठिन होगा परंतु शिशु रोबोट आसानी से बनाए जा सकते हैं।

और इसे बहुत सी चीजें सिखाई जा सकती है। इस सोच में मैसेशुट्स तकनीकी संस्थान के कृत्रिम बुद्धि विभाग में "किस्मेट" नामक शिशु रोबोट को जन्म दिया। किस्मेट जो कि अभी विकसित किया जा रहा है, वह बच्चे की तरह अपने पर्यावरण के विषय में सीखता है। वह उत्तेजन और पारस्परिक क्रिया द्वारा सीखता है और वह और अधिक जानने के लिए अपने रखवाले पर आश्रित है। यह मानव की मूल भावनाओं को प्रस्तुत करने में सक्षम है। उसे आंखों भवों और पलकों जैसी मुख आकृति दी गयी है जो कि शिशु से मेल खाती है।



बल के आधुनिकीकरण में कम्प्युटर प्रशिक्षण अहम

पहले के रोबोट में निवेश एवं सूचना भरी जाती थी। एम०आई०टी० वैज्ञानिको का मानना है कि पारस्परिक सीखने के माध्यम से मूल व्यवहार बनाकर कृत्रिम बुद्धि निर्मित की जा सकती है। किस्मेट के पास प्रतिक्रया का एक बैंक है जो कि भावात्मक एवं व्यवहारात्मक कार्यप्रणाली द्वारा संचालित होता है, जब उद्दीपन के लिए दिखाई देने वाले संकेत नहीं होते तब एक चेहरे या खिलौने की तरह किस्मेट उदास और अकेला हो जाता है और वह खेलने के लिए लोगो की तरफ देखता है। यदि इसमें अत्याधिक सूचनाएं भरी जाए तो यह थक सकता है एवं सो सकता है।

रोबोट को हमेशा एक दास माना गया है जो कि उन्हें सौंपे गए और योजनाबद्ध कार्य निष्पादित करता है। परन्तु भविष्य के रोबोट की अपने सोच, व्यक्तित्व और व्यवहार पद्धति होगी वे लगभग मनुष्य के समान होंगे। जापान का रोबोट निर्माण में रूचि का यही कारण है। रोबोट का एक सबसे बड़ा उपयोग यह होगा कि वह बुजुर्गों की देखभाल करेगा और अकेलों को संगति देगा। वे फर्श साफ करने, दरवाजा खोलने और बीमार के परिचारक का कार्य कर सकते हैं। इसलिए अगर आप अकेले हैं तो निराश न हो। आप जन्द ही मानव मशीन मित्र पा सकते हैं।

कम्प्यूटर तथा संचार "सी० एण्ड सी० प्रभाव ने साधारण कम्प्यूटर स्क्रीन को

दूसरो दुनेया के पारेदृश्य के अन्वेषण को खेड़को बना दिया है। जरा विचार करे के एक व्यक्ति खरीददारी तथा बैंकिग अपने घर से कर सकता है। समाचार पत्र अपने कम्प्यूटर स्क्रीन से पढ सकता है। वीडियो कान्फ्रेन्स द्वारा अपने दोस्तो से आमने-सामने बात कर सकता है। अपना घर छोडे बिना एक व्यक्ति बहुमाध्यमों के द्वारा अपनी विश्व की समस्त सुविधाओं को उगलियों पर रख सकता है। आजकल अलग से टेलीविजन म्यूजिक सिस्टम, पी०सी०, फैक्स तथा टेलीफोन का कोई स्थान नहीं है। पी०सी० को टी०वी०, पी०सी० फैक्स तथा दूरभाष जैसी सुविधाओं से युक्त एक मल्टीमीडिया के मूलभूत रूप में बदल दिया गया है। 1981 में पी०सी० को एक अकेला साधारण कार्य निर्दिष्ट करने वाला समझा जाता था। परन्तु आजकल इसका उपयोग एक संगठन में और अनेक संगठनों के वीच में डाटा एक्सचेंजिग हेतु नेटवर्किग में प्रयोग किया जाता है। सूचना उच्च प्रकार और अति उच्च प्रकार के मीडियों के अन्य प्रकार जैसे सेटेलाईट तथा फाइबर ऑप्टिक्सों का प्रयोग कर जो कि विभिन्न चैनलों को ले जाने में तुरन्त सक्षम हैं, हर चैनल में विभिन्न प्रकार की सूचना बिना देरी तथा गलती के प्रयोग किए जाते है। इन्टरनेट की खोज संचार की एक बहुत ही शक्तिशाली एवं एक दूसरे को प्रभावित करने वाला साधन है, जहां एक से अधिक कम्प्यूटरों के साथ जोड़कर एक ही विषय पर सूचना का आदान-प्रदान करने के लिए अनेकों हजारों कम्प्यूटरों को जोड़ा जा सकता है। 21वीं सदी के प्रारंभ होने के बाद से ही हम भविष्य में समय के साथ संचार के क्षेत्र में एकाग्रता से ठहरने पर दृष्टि रखे हुए हैं। अगली शताब्दी में संचार की स्थिति मुख्यतया निम्नलिखित मार्ग दर्शनों पर आधारित होगी :-

*1.*तार पद्धति बेतार पद्धति के साथ सहयोग करेगी/

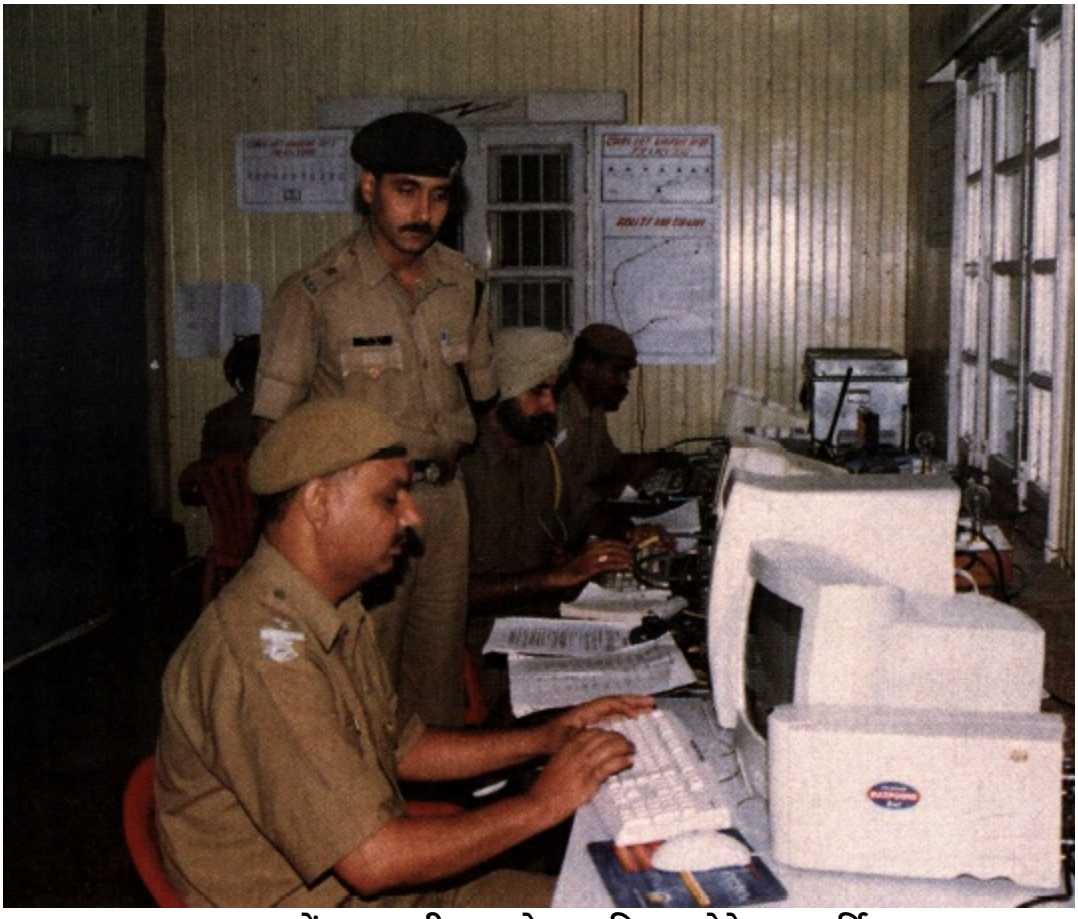
2. सेटेलाइट फोन, वायरलैस लोकर लूप तथा विश्व स्थितीय सेटेलाइट जोर मोबाइल संचार पर स्थानान्तरित होगा/

3. भाषण मान्यता तथा मान्यता की पद्धति सभी अनुवादों को नियंत्रित करेगी/

सतह सूचक राजमार्ग एक स्थान पर होगा। संचार सेवा प्रबंधक, केवल टी०वी० सेवा प्रबन्धक के साथ विलीन हो जायेगा या आई०एस०पी० और कैरी वाइस वीडियो तथा फाइबर के माध्यम से डाटा घरों तथा कार्यालयों में विलीन होगा।

आजकल हम न केवल विषय वस्तुओं और विचारों के चारो ओर है बल्कि अत्याधुनिक जगत, उपकरणों तथा जीवन शैली के भी। तकनीकी के मोर्चे पर यह लगातार सुधार कुछ अत्याधिक क्रान्तिकारी तथा प्रभावशाली कला तकनिकियों को सामने लाई है। वी-सेट, आवाज, डाटा तथा चित्र स्थानान्तरण के लिए असंवेदनशील दूरी, अत्याधिक कम मूल्य, प्रभावी और उच्च गति संचार चैनल उपलब्ध कराता है। वी-सेट स्टेशन गतिशील और कुछ ही घंटो में स्थापित किए जा सकते हैं और यह केरिपु बल के गतिशील रोल को और भी प्रभावशाली बना सकते है। वी-सैट पर प्रशिक्षण हमारे कार्मिको को पोलनेट की अत्याधुनिक तकनीकी के साथ चलाने के बराबर रखेगा, जिसका निकट भविष्य में कार्यान्वयन होने वाला है। पोलनेट जो कि

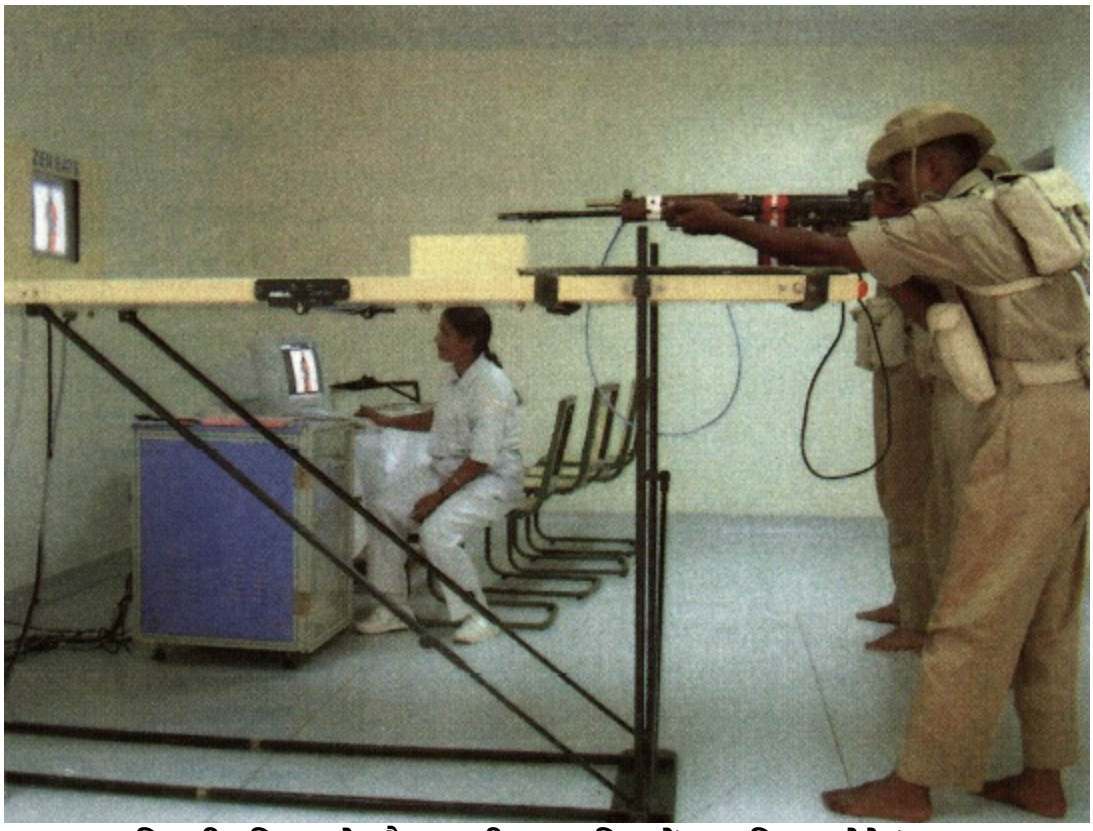
हमें उच्च गाते संचार चैनल देगा के सुधार के साथ हो वी०डी०ओ० कॉन्फ्रेन्सिंग प्रणाली को लगाना सम्भव होगा। यह क्षेत्र रचना तथा बल के मुख्यालय के बीच बी०डी०ओ० कान्फ्रन्स को कार्यान्वित करेगा। तदुपरान्त वर्तमान डाटा लाइनों पर, वर्तमान पारम्परिक सिग्नल केन्द्र टेविल से टेविल तक एक दूसरे से जुड़े नेटवर्क में बदले जायेंगे। यह बल को, रेन्ज मुख्यालयों यूनिट स्तर तक यूनिट स्तर पर फैले हुए बाईड नेटर्वक बनाने के लिए किसी भी कार्यों में उपलब्ध संगठनात्मक सूचना के मार्ग को तुरन्त प्रशस्त करेगा। इसी प्रकार समुह केन्द्रों में नेटवर्क को अधिक प्रभावशाली रूप देने हेतू फाइबर अप्टीकल्स का इस्तेमाल होगा। फाइबर ऑप्टिक्स अत्याधिक उच्च ढंग से सूचनाए देने की क्षमता रखते हैं, जो कि मल्टीचैनल एक साथ ले जाने में सक्षम है तथा प्रत्येक चैनल विना कोई देरी तथा विरूपण किए विभिन्न प्रकार का डाटा भेज सकता है। डाटा ऑडियो, वीडियो, इमेज टेक्सट इत्यादि को ले जाने हेतु फाइबर ऑप्टिक्स भावी संचार को अति प्रभावी ढंग से ऊपर उठाता है।



कम्प्यूटर में सूचना फीड करने का प्रशिक्षण लेते बल कार्मिक

केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय(संचार) ने अपने प्रारंभ होने के बाद से ही बल में संचार के क्षेत्र में तकनीकी विकास को उचित ढंग से जारी रखने में, कार्मिको को ऑप्रेटिंग प्रशिक्षण देने तथा रख-रखाव करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई है।

केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (संचार) का प्रारम्भ कोरेपु बल के पहले पी०आर०ओ० के द्वारा एक तदर्थ बेतार प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में सन 1952 में नीमच में किया गया था। जब 112 मैट्रिकुलेट प्रशिक्षार्थियों को नई खडी कम्पनियों में चयनित कर उन्हें बेतार का प्रशिक्षण दिया गया था। इसके उपरान्त इस तदर्थ बेतार प्रशिक्षण केन्द्र के द्वारा केवल नियमित रेडियो ऑपरेटर को प्रशिक्षण दिया जाने लगा। क्रिप्टो ऑपरेटर्स तथा तकनीतिज्ञों को उत्तर प्रदेश पुलिस बेतार प्रशिक्षण केन्द्र, लखनऊ तथा सी.पी.आर.टी.आई., दिल्ली में सन 1970 तक प्रशिक्षण दिया जाता रहा। जब तदर्थ बेतार प्रशिक्षण केन्द्र 71 विभिन्न पदों के साथ जिसमें 2 राजपत्रित अधिकारी भी थे नियमित किया गया तब इस केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज का नाम दिया गया तथा सिगनल ग्रुप केन्द्र का एक हिस्सा बना। प्रारंभ में इसे केबल रेडियो ऑपरेटरों तथा तकनीशियनों के प्रारंभिक प्रशिक्षण हेतु बनाया गया था। यथा समय इसमें एन.सी.ओज. को आपरेटर, क्रिप्टो तथा तकनीशियनों की श्रेणियों के उच्च कोर्सो का प्रशिक्षण भी दिया जाने लगा। सिग्नल रेन्ज के अधिकारियों मे तकनीकी ज्ञान में वृद्धि करने के विचार से केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (संचार) के द्वारा दिसम्बर 1975 से राजपत्रित अधिकारियों के लिए कोर्स प्रारम्भ किए गए। आज की तारीख में केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (संचार) मे द्वारा 25 विभिन्न प्रकार के तकनीकी कोर्स चलाए जा रहे हैं। सिगनल अधिकारियों के लिए कोर्सो के अतिरिक्त, इस प्रशिक्षण केन्द्र के द्वारा बल के उच्च अधिकारियों को संचार की अत्याधुनिक प्रवृतियों के संबंध में पूर्ण जानकारियाँ उपलब्ध कराने के अलावा उन्हें आधुनिक बनाने के लिए उपलब्ध संचार संसाधनों तथा उनका परिस्थिति के अनुसार प्रयोग करने हेतु प्रशिक्षण भी दिया जाता है।



बुनियादी प्रशिक्षण के दौरान नवीनतम हथियारों का प्रशिक्षण लेते रंगरूट

केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (संचार) अपने कोर्सो और इन्फ्रास्ट्रेक्चर की उन्नतिशील तकनीकी के साथ बढाता रहा है। विभिन्न कोर्सों से संबंधित पाठ्यक्रम माला की सामयिक समीक्षा कर यथासंभव सुधार किये गये हैं। वास्तव में केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (संचार) में चलाए जाने वाले तकनीकी कोर्सों की पाठ्यक्रम सी०पी०आर०टी०आई० में चलाए जा रहे कोर्सों से बहुत उच्च प्रकार की है। हमारे यहां चलाए जाने वाले आर०एम० ग्रेड-1 कोर्स को भारत सरकार के मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय के द्वारा डिप्लोमा इलैक्ट्रानिक तथा रेडियो इंजीनियरिंग के बराबर की मान्यता प्रदान की गई है। आजकल केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (संचार) के पास 14 तकनीकी प्रयोगशालाएं है जो सभी संचार से संबंधित अत्याधुनिक उपकरणों एवं प्रशिक्षण सामग्री से भरी है। जहां पर प्रशिक्षार्थियों को आपरेशन तथा संचार से संबंधित उपकरणों को चलाने तथा कलपूर्जों को सम्भालने में पूर्ण विश्वास प्राप्त करने के लिए गहन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। एक आडियोविजुअल प्रयोगशाला, एक मल्टी मीडियो प्रोजेक्ट तथा एक तकनीकी पुस्तकालय विषय को समझने में बहुत अधिक मदद करती है। अत्याधुनिक डिजिटल संचार तकनीकी के साथ प्रगति करते हुए केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (संचार) के द्वारा एक डिजिटल संचार प्रयोगशाला बनाई गई है जो कि माईक्रो प्रोसेसर प्रशिक्षण किट तथा डिजिटल एनालोग आई०सी०स्टडी0 किट्स आदि से सुसज्जित है।

पेपर रहित कार्यालय हेतु हमनें एक कम्प्यूटरीकृत बैंक बनाई है। प्रत्येक टॉपिक पर प्रश्नो का चयन, प्रश्नों के पूल से कर केवल माउस को एक बार दवाकर किया जाता है। उत्तर पुस्तिकाओं का अवलोकन करने के उपरान्त मूल्यांकन प्रक्रिया में दृष्टि चरित्र अभिज्ञान तकनीकी को सम्मिलित किया जाता है। यह मूल्यांकन प्रकिया गति प्रदान करने के साथ-साथ पूर्ण रूप से पारदर्शी है।

यह बांछनीय है कि हमारे प्रशिक्षार्थी, संचार में अत्याधुनिक बढती हुई प्रवृति के साथ स्वंय का ताल मेल बिठाए, जिसके लिए यह आवश्यक है कि उन्हें विभिन्न सरकारी एजेन्सियों और निजी क्षेत्रों में इस विषय पर आयोजित होने वाले कोर्सो संगोष्ठियों में जल्दी-जल्दी भागीदारी लेकर अपने आपको प्रदर्शित करना चाहिए तथा संबद्ध उद्देश्यों पर आधारित विभिन्न प्रदर्शिनियों में निर्देश भी देना चाहिए। यह एक उच्च समय है कि हमें अपने संचार में अधिक संवद्ध होना चाहिए। संचार की उपर उठाने वाली प्रवृति बल को अधिक प्रभावी और संक्षम बनाने में अपना प्रमुख पाठ निभा सकती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में के.रि.पु. बल में प्रशिक्षण की भूमिका व चुनौतियाँ

वाई.वी.के. रेड्डी,
प्राचार्य, आर.टी.सी-III



किसी भी बल अथवा संगठन के कार्यों का प्रदर्शन पूर्णतः उसके सदस्यों की क्षमता, स्तर तथा दक्षता पर निर्भर करता है। जो दिये गये प्रशिक्षण की परिणिति होती है।

किसी व्यक्ति के ज्ञान, उसकी क्षमता और उसके गुणों को उसके उद्देश्य की प्राप्ति हेतु सतत् निखार लाने के लिए लगातार किए जाने वाले प्रयास को भी प्रशिक्षण के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।

वर्तमान समय में हमारे संगठन में प्रशिक्षण की प्रक्रिया अभी भी उन्हीं पुरानी परंपरागत प्रणाली पर आधारित है। वर्तमान समय में आंतरिक सुरक्षा की स्थिति में लगातार आई गिरावट उपद्रवियों द्वारा अपनाये जाने वाले नए-नए साधन व तरीकें, लोगों के मन में बढ़ती असुरक्षा की भावना व्यक्तियों में स्वयं के अधिकार और मानवाधिकार की रक्षा जैसी बातों के जागृत होने से आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने प्रशिक्षण को एक इस प्रकार का नया आयाम दें जो न सिर्फ हमारी कार्यक्षमता और दक्षता को बढ़ाये बल्कि लगातार बिगड़ती हुई आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था से जुझने में पूर्णता प्रदान करें। इस संदर्भ में आज के परिपेक्ष्य में हमारे बल के सामने जो कुछ चुनौतियाँ हैं उनमें मुख्यतः निम्न हैं:–

1. जम्मू-कश्मीर व उत्तर पूर्व के क्षेत्र में बढ़ता आतंकवादः–

वर्तमान में केरिपु बल की अधिकाश बटालियन जम्मू कश्मीर या उत्तर पूर्व के क्षेत्र में तैनात है। हाल के दिनों में जम्मू कश्मीर के उग्रवादियों के द्वारा सुरक्षा बलों के कैम्पों पर किये जा रहे आत्मघाती हमले और इस श्रेणी में पिछले वर्ष अक्तूबर में जम्मू कश्मीर विधानसभा पर हुए आत्मघाती हमले ने इस बात को पुनः एक बार हमारे सामने ला खडा किया है कि क्या वास्तव में हम ऐसे हमलों से निपटने के लिए तैयार है। इस संदर्भ में आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने बुनियादी प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में इस तरह से हमलों से निपटने के लिए व्यापक योजना, तत्परता, व्यक्तिगत क्षमता जैसे विषयों को नए रूप में परिभाषित करें।



आधुनिक शस्त्रों पर फायरिंग का प्रशिक्षण लेती बल की महिला कर्मी

2. उदावादी संगठन पी.डब्ल्यू.जी की बढ़ती गतिविधियां और उनकी कार्य प्रणाली:–

देश के भागों आंध प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ, झारखंड, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, तामिलनाडु, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल व केरल जैसे राज्यों में पी.डब्ल्यू.जी. संगठन की बढती कार्रवाई उनके द्वारा प्रयुक्त विस्फोटों उनकी गुरिल्ला व छापामार लड़ाई पद्धति से आये दिन हमें जूझना पड़ रहा है। पी.डबलू.जी. संगठनों के विस्फोटक बनाने की तकनीक व उनके इस्तेमाल के तरीके के संबंध में जानकारी व अभाव हमारे बल के जवानों के लिए सदैव एक सोचनीय विषय रहा है और जब हमें ऐसे क्षणों में अपनी सेवा हेतु नियुक्ति देनी होती है तो इस बात की आवश्यकता और बढ़ जाती है कि हम और हमारे जवान विभिन्न प्रकार के विस्फोटकों की क्षमता के बारे में विस्तृत जानकारी रखें। वर्तमान में इस विषय को लगभग नगण्यता के साथ प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में शामिल किया गया है जबकि आवश्यकता इस बात की है इसे विस्तार दिया जाये।

3. विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा की जिम्मेवारी :–

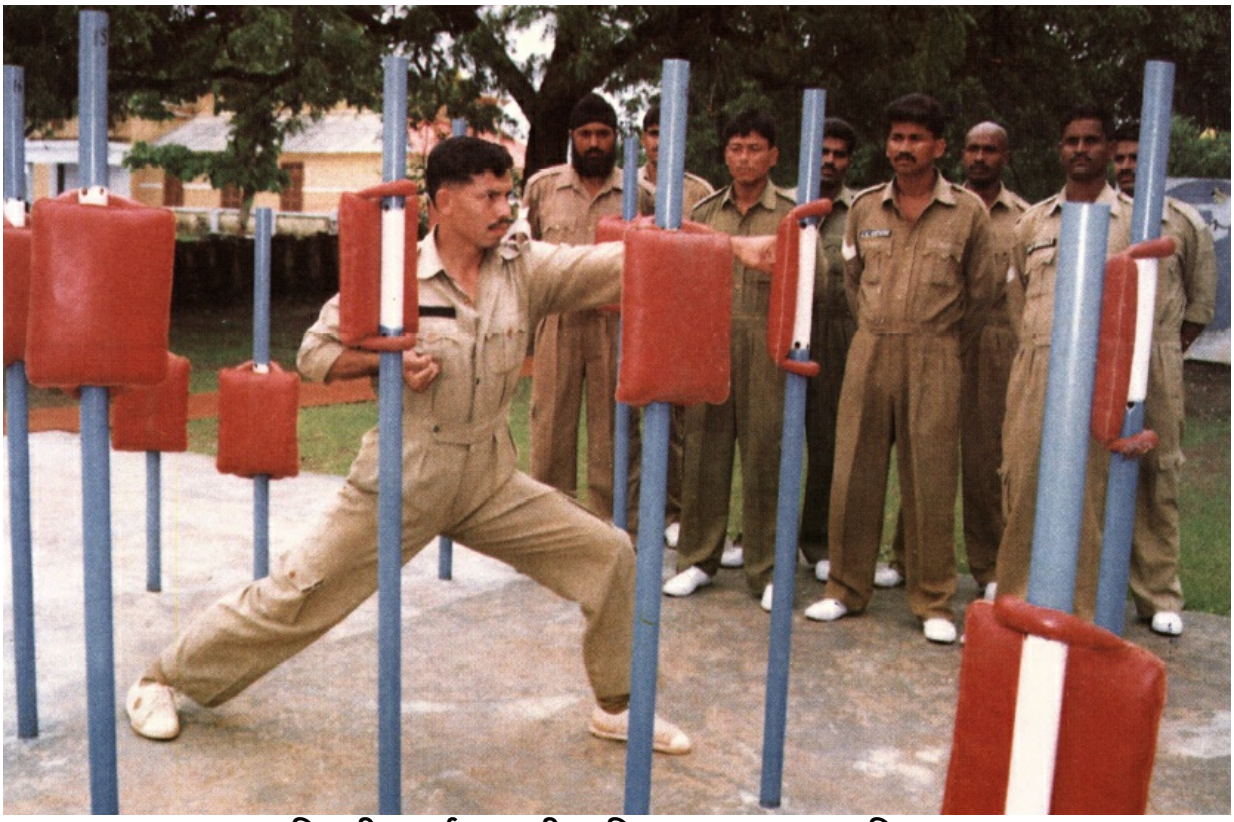
वर्ष 1987 में तत्कालीन गृहमंत्री श्री मुफ्ती मो० सईद की पुत्री सांबेया सईद के अपहरण से प्रारंभ होकर वर्ष 1999 में भारतीय विमान के अपहरण और अजहर मसूद की रिहाई से उग्रवादियों ने एक नये तरीके, महत्वपूर्ण व्यक्तियों का अपहरण और उसके बदले में भारी कीमत जैसी नयी परम्परा को जन्म दिया है। आज देश के कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों जो भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से संबंधित है और जिनकी व्यक्तिगत सुरक्षा की जिम्मेवारी हमारी है, ने हमें और अधिक सतर्क तथा संवेदनशील होने की ओर ध्यान दिलाया है। बढ़ते उग्रवाद के दौर में जब देश में अराजक तत्व इस तरह के प्रयास में लगे हों तो हमें व्यक्तियों की सुरक्षा व जिम्मेदारी जैसे विषयों पर पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान देना होगा।

4. महत्वपूर्ण संस्थानों की सुरक्षा व चुनौतियाँ :–

उग्रवाद का निशाना न सिर्फ महत्वपूर्ण व्यक्ति ही होते है बल्कि ऐसे तमाम महत्वपूर्ण संस्थान जो देश की सामरिक, प्रशासनिक और आर्थिक व्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते है, इनके निशानों पर हैं। श्रीनगर हवाई अड्डे पर हमला, दिल्ली के लाल किले में उग्रवादी हमला, श्रीनगर विधानसभा पर हमला और सबसे महत्वपूर्ण भारतीय लोकतंत्र की आत्मा संसद भवन पर हमले ने इस बात की तत्कालिक आवश्यकता पर बल दिया है कि क्या सिर्फ सुरक्षा गार्डों की नियुक्ति भर से ऐसे संस्थान सुरक्षित रह पायेंगे या फिर हमें भिन्न-भिन्न तरीकों व प्रणालियों को प्रयोग में लाकर इसे सुरक्षित रखना होगा। आवश्यकता इस बात की है कि इस संदर्भ में इजाद किये भिन्न-भिन्न तरीकों की विस्तृत जानकारी हमारे कार्मिकों को नियमित तौर पर दी जाये ताकि हम अपनी जिम्मेदारी का भली प्रकार निर्वहन कर सकें।

केरिपु बल को दिये गये जिम्मेदारियों के अलावा उपरोक्त समस्यायें आज के संदर्भ में महत्वपूर्ण और इससे निपटने के लिए हमारे प्रशिक्षण चाहे वह बुनियादी प्रशिक्षण हो, कम्पनी स्तर की ट्रेनिंग हो, प्रमोशनल कोर्स हो में निम्न बातों पर बल देना, परिवर्तित करना या फिर नये रूप में शामिल करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में निम्न सुझावों पर विचार किया जा सकता है :–

(क). वर्तमान में हमारी ड्यूटी में व्यापक परिवर्तन आया है आंतरिक सुरक्षा तथा कानून व्यवस्था को बनाये



निहत्थी लड़ाई *(यू.ए.सी.)* प्रशिक्षण का एक अहम हिस्सा

रखने में महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए हमारे वर्तमान पाठ्यक्रमों में जंगलवार फेयर के पाठ्यक्रमों को कम करते हुए पुलिस आपरेशन को बढ़ाने की आवश्यकता है ।

(ख). सामाजिक रहन–सहन व परिवर्तन व्यक्तियों की मानसिक दशा में परिवर्तन तथा वर्तमान में हमारी कार्यप्रणाली को ध्यान में रखकर हमारी प्रशिक्षण की योजना, सामग्री व उपकरण परिवर्तित किए जाय ।

(ग). शिक्षित कार्मिकों के भर्ती होने से प्रशिक्षण में स्वयं निर्णय लेने की क्षमता और पहल को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए ।

(घ). जवानों/अधिकारियों की व्यक्तिगत शारीरिक क्षमता व हथियार प्रशिक्षण में ज्यादा निपुणता की आवश्यकता है, इस संदर्भ में आज प्रयुक्त किये जा रहे नये–नये हथियारों, विस्फोटकों, नई–नई तकनीक की व्यापक जानकारी दी जाये ।

(ड). बेसिक प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थी को महत्वपूर्ण संस्थानों पर ले जाय वहां की कार्य प्रणाली, सुरक्षा खतरा, खामियों व सर्तकता जैसे विषयों पर जानकारी दी जाये ।

(च). उन्हें के.रि.पु. बल ऑप्स मैनुअल के पैरा नं० *1* से *7.8* में वर्णित तथ्यों जिनमें जोड़ियों में काम करना बताया गया है जैसी बातें बुनियादी प्रशिक्षण से ही शुरू की जाये ।

(छ). प्रोमोशन कोर्स में नेतृत्व क्षमता तथा निर्णय क्षमता जैसे विषयों पर ज्यादा ध्यान दिया जायें ।

(ज). विशेष विषयों का प्रशिक्षण जैसे कमांडो, सीआईएटी, मॉब डिस्पर्जल, यूएसी, बंब डिस्पोजल, मैप रिडिंग, डब्ल्यू. टी, जैसे प्रशिक्षणों में उन्हें ही भेजा जाये जो इन विषयों में रुचि रखते हों ।

(झ). राटेशनल प्रशिक्षण के दौरान युनिट की जिम्मेवारी बाल सीनों तथा वहां की जिम्मेवारी के अनुसार ही प्रशिक्षण की व्यवस्था हो न कि उन तमाम बातों को जो प्रासंगिक नहीं है ।

उपरोक्त तमाम बातों के अलावा अन्य कार्यक्रम जो आज के संदर्भ में प्रासंगिक है, को प्रशिक्षण के साथ शामिल कर हम अपने बल की कार्यविधि को वर्तमान समस्याओं से निपटने के पूर्णतः अनुरूप बना सकते हैं ।

श्रेष्ठता की ओर अग्रसर

विनय कुमार सिंह,
उप प्राचार्य, सी.टी.सी–I

1दिसम्बर 1960 को केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय प्रथम की स्थापना उस समय हुई जब हिन्दुस्तान में चारों तरफ असंतोष की अभिव्यक्ति एवं विद्धमान व्यवस्था का विरोध एक स्थापित प्रथा बन चुकी थी । सारा देश आंतरिक असुरक्षा के भयानक वातावरण में सांसे ले रहा था । यत्र–तत्र सर्वत्र श्मशान श्वान की छीना झपटी का दृश्य मानवता के सामने उपस्थित किया जा रहा था और घोर अंधकार में उजबुजाया सा मानव शांति एवं आशा की किरणें खोज रहा था । देश के विभिन्न भागों में आतंकवाद, विद्रोहिता और नक्सलवाद जैसे पृथकतावादी आंदोलन कुछ आंतरिक एवं कुछ अवांछनीय बाहरी ताकतों से नैतिक सहायता प्राप्त कर विकराल रूप धारण करने लगे तथा कानून एवं व्यवस्था तथा देश की एकता एवं अखंडता को चोट पहुँचाने लगे तब आंतरिक सुरक्षा के एक मात्र प्रहरी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को ऐसे प्रशिक्षण संस्थानों की आवश्यकता महसूस हुई जहां बल के जवानों एवं अधिकारियों को शस्त्र एवं युद्धकला तथा विद्रोहिता, आतंकवाद, राजद्रोह साम्प्रदायिक दंगों तथा धार्मिक कट्टरता (जैसे विनाशकारी, विध्वंसकारी एवं अलगाववादी ताकतों को कुंद बनाने के गुर सिखाए जा सके और मानसिक रूप से सर्तक एवं शारीरिक रूप से इतना सशक्त बनाया जा सके जिससे कि वे देश की अखंडता के सबल एवं सक्षम प्रहरी बन सकें । इन्ही बातों के मद्देनजर 1 दिसम्बर 1960 को केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय प्रथम की स्थापना नीमच (मध्य प्रदेश) में उसी स्थान पर की गई जहां 21 वर्ष पहले 1939 में क्राउन रिप्रजेंटेटिव पुलिस के रूप में इस गरिमामय बल की स्थापना की गई थी, जिससे यह संस्थान, बल के उन उच्चतम मानवीय मूल्यों को अपने साथ संजोये रखें तथा इसकी गौरवशाली परम्परा के साथ–साथ कदम से कदम मिलाकर निरंतर

श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होता रहे।



लेण्ड माइन्स का पता लगाने का प्रशिक्षण लेते बल के जवान

आज केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय–प्रथम शस्त्र एवं युद्धकला प्रशिक्षण प्रदान करने में बल की अग्रणी संस्था है जो न केवल बल के जवानों एवं अधिकारियों को अपितु अन्य पुलिस बलों के अधिकारियों व जवानों को भी शस्त्र एवं युद्धकला का प्रशिक्षण प्रदान कर रही है। आंतरिक सुरक्षा का वर्तमान परिपेक्ष्य पारंपरिक युद्ध परिस्थिति से काफी भिन्न है, जिसमें कि सुरक्षा बलों को अलग–अलग हालातों में विद्रोहियों व राष्ट्र विरोधी तत्वों से जूझना पड़ता हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रशिक्षण में काउन्टर इन्सरजेंसी और एण्टी टेरोरिस्ट ऑपरेशन को समुचित महत्व दिया जा रहा है। वेपन और टेक्टिस कोर्स तथा अन्य सभी प्रोमोशनल कोर्स के पाठ्यक्रमों का अधिकांश समय इस महत्वपूर्ण विषय पर प्रशिक्षण देने में लगाया जाता है। इसके अलावा भूमि कला एवं युद्धकला, फील्ड, फोटिफिकेशन, डिमोलिशन चार्ज का लगाना एवं ब्लाइन्ड को बर्बाद करना, रूकावटें लगाना व हटाना, आई.ई.डी. ढूढना और न्यूट्रिलाइज करना, पेट्रोलिंग और एम्बुश, रेड, सर्च ऑपरेशन, रोड ओपनिंग और कानवाई प्रोटेक्शन, घेराबंदी और तलाशी अभियान, नाकाबंदी, वी.आई.पी. सिक्यूरिटी, जेल सिक्यूरिटी, एयरपोर्ट सिक्यूरिटी, बैंक और ट्रेजरी ड्यूटी, बचाव एवं राहत अभियान व बंधक रिहाई आदि महत्वपूर्ण विषयों पर भी विस्तृत जानकारी व अभ्यास कराया जाता है। इसके साथ ही इस बात

पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है कि प्रशिक्षणार्थियों को अलग–अलग प्रकार के टारगेटों की पहचान व उन पर फायर करने का काफी अभ्यास भी कराया जा सके। ये टारगेट कई प्रकार के हो सकते हैं, जैसे–

1. तेज गति के वाहन से भागता हुआ विद्रोही, *2.* वाहन में चलते–चलते विद्रोही पर हमला. *3.* अचानक निकलकर सामने आया हुआ विद्रोही / *4.* गली कूची में भागता हुआ अथवा छिपा हुआ विद्रोही *5.* ऊंचे स्थान अथवा मकान की छत से कूदता हुआ विद्रोही और *6.* किसी बंधक को ढाल के तौर पर लेकर मकान के भीतर छुपा हुआ विद्रोही /

इन विभिन्न परिस्थितियों पर प्रभावी ढंग से काबू पाने के लिए इस संस्था ने अपने प्रशिक्षण में अनेकों प्रकार की फायरिंग प्रैक्टिस शामिल की है जिनका सभी प्रशिक्षार्थियों को गहन अभ्यास कराया जाता है ताकि जवानों को अपने स्वयं के ऊपर व अपने हथियार के इस्तेमाल पर पूरा भरोसा हो जाए और वह मौका पड़ने पर बेझिझक सीखे हुए तरीके से कार्रवाई कर सके। कुछ प्रेक्टिस इस प्रकार है :–

1. जंगल लेन शूटिंग

2. क्विक रिफलेक्स शूटिंग

3. चलती गाड़ी से व चलती गाड़ी पर फायर

4. रूम इन्टरवेंशन शूटिंग

5. काउन्टर एम्बुश शूटिंग इत्यादि

यह गौर तलब है कि काउन्टर इसरजेन्सी वातावरण में बल के जवानों को दो तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे हैं :–

1. विद्रोहियों या आतंकवादियों का बहुत कम समय के लिए दिखाई देना और

2. आम जनता के बीच विद्रोहियों को पहचान कर उन पर फायर करना / इस समय जरूरत होती है समझदारी के साथ तेज व दुरुस्त फायरिंग से विद्रोहियों को बर्बाद करने की तथा आम जनता को नुकसान से बचा कर उनमें सुरक्षा की भावना पैदा करने की / इसके लिए जरूरी है



शस्त्र प्रशिक्षण में महारथ हासिल करते नवारक्षी



“नए विकसित टारगेटों की जानकारी देते सी.टी.सी *-1* के प्राचार्य श्री ए.के. सिंह”

कि फायरर टारगेट का जल्दी से जल्दी दिमाग में खाका बनाए, टारगेट पर जल्दी से जल्दी निशाना साधे और टारगेट पर जल्दी से फायर कर उसे बर्बाद करे, जिससे

एक गोली एक विद्रोही का मुद्दा हासिल हो सके। इन्हीं मुद्दों को हासिल करने के लिए संस्थान ने कई नये टारगेटों का विकास किया है। जिसमें *1.* छुपा हुआ टारगेट, जो अचानक सामने आ जाता है *2.* स्वीमिंग टारगेट, जो आधा दिखाई देता है और पहचाना नहीं जाता, *3.* मूविंग या भागता हुआ टारगेट जो फायर या जिटरिंग कर भाग रहा होता है। *4.* ड्रॉपिंग या कूदता हुआ टारगेट जो किसी छज्जे, मकान की छत या दखरत से कूद कर भाग रहा होता है। इसके साथ-साथ हेडशॉट टारगेटों एवं ज्योमेट्रिकल टारगेटों का भी विकास किया गया है। जिसमें फायरर अपनी ड्यूटी के दौरान भीड़ में विद्रोहियों को उसके कम नजर आने वाले हिस्से का खाका अपने दिमाग में बिठा कर उसके ऊपर तुरन्त फायर करने की काबलियत पैदा कर सके।

प्रशिक्षण के दौरान अपनी फायरिंग की क्षमता को और बढ़ाने के लिये और लगभग वास्तविक युद्ध की स्थिति तैयार कर जवानों को एम्बुश लगाना व एम्बुश में फसने के उपरान्त तुरन्त कार्यवाई कर एम्बुश को तोड़ते हुए विद्रोही को बरबाद करने के उद्देश्य से इस प्रशिक्षण महाविद्यालय ने अपने पाठ्यक्रमों में गत वर्ष कुछ अत्यन्त आधुनिक उपकरणों का समावेश किया है जिसमें से एक इन्फैन्ट्री वेपन इफेक्ट सीमूलेसन सिस्टम है। इसकी सहायता से फायर करते-करते जवान को अपनी स्वंय की फायर करने की क्षमता व भूमि और आड़ के सही इस्तेमाल करने की योग्यता के बारे में सही-सही जानकारी मिल जाती है। इन कमियों के मालूम हो जाने के बाद जवान स्वयं व प्रशिक्षक उसमें समुचित सुधार लातें हैं।

इफेन्टरी वेपन सिमूलेसन सिस्टम एक लेजर आधारित सिस्टम है जोकि फील्ड एक्सरसाइज में जिन्दा गोली फायर होने का आभास देता है। इस सिस्टम से जवानों की कावलियत के दो मुख्य पहलूओं की जांच की जाती है।

1. दोतरफा एक्सरसाईज में फायर की काविलियत

2. जमीन का सही इस्तेमाल करने की काविलियत

जैसा कि विदित है यह प्रशिक्षण संस्थान आतंकवाद की विशेष परिस्थितियों से निपटने के लिए अपने प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न प्रकार की फायरिंग का सधन अभ्यास करता है। जिसमें से एक **रूम इन्टरवेन्सन शूटिंग** भी शामिल है। इस शूटिंग प्रैक्टिस के दौरान जवान इम्प्रोवाइज्ड मकानों में बंधक बनाए गए व्यक्ति को आतंकवादियों से छुड़वाने की कार्रवाई करता है। इस कार्यवाई के दौरान इसको मिलने वाले अलग-अलग प्रकार के टारगेटों जैसे पॉप अप टारगेट, होस्टेज टारगेट, ग्रुप होस्टेज, गुपिंग टारगेट, रनिंग तथा डिस्क टारगेट इत्यादि को मार गिराने का अभ्यास कराया जाता है। यह शूटिंग सीआईटी मार्क्समेनशिप पैकेज का हिस्सा है।

देश की वर्तमान समस्या से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए बल में गत वर्ष कुछ नये एवं शक्तिशाली हथियारों जैसे कार्ल गुस्ताव रॉकेट लांचर, ऑटोमेटिक ग्रेनेड लांचर सिस्टम, इन्सास राइफल तथा एलएमजी को शामिल किया गया जिसके एम्यूनिशन, उसके उपकरणों, उनके फायर पावर तथा बल में उनकी उपयोगिता की जानकारी एवं गोली बारी की दक्षता तथा शूटिंग स्किल में और भी महारथ हासिल

करने के लिए इस संस्था द्वारा इजाद किये गये कुछ नवीनतम तकनीकों/तरीकों के बारे में जानकारी, प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण देने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी जिसका एक कार्यवाई प्रदर्शन 27 जुलाई, 2001 को प्रशिक्षण संगोष्ठी/ कार्यशाला के दौरान महानिदेशक एवं अन्य प्रतिनिधियों को दिखाया गया साथ ही जम्मू कश्मीर एवं पूर्वोत्तर आप्स सेक्टरों की परिचालन क्षमता में और भी इजाफा करने के लिए उनकी टीमों को सीजीआरएल, एजीएल, एलएमजी का प्रशिक्षण देने की जिम्मेदारी भी सौंपी गई जिसे इस संस्था ने कुशलता पूर्वक एवं प्रभावकारी तरीके से पूरा किया।

अभी हाल ही में बल को इस संस्थान का बैटल इनोक्यूलेशन अभ्यास के लिखने एवं निर्मित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इस बेटल इनोक्यूलेशन अभ्यास का उद्देश्य शस्त्र एवं युद्धकला संबंधित सभी कोरी एवं सभी प्रोमोशनल कोरों के प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिविद्रोहिता की वास्तविक परिस्थिति पैदा कर सभी प्रकार के छोटे हथियारों जैसे एसएलआर, एलएमजी, प्लाटून के हथियारों, जैसे 2 इन्ज मोर्टार एवं इम्प्रोवाइजड एक्सप्लोसिव तथा अन्य विस्फोटकों से फायर पावर का आभास करना है जिससे उनके भीतर से गोली का डर तथा छलावे वाले घाती एवं प्रतिघाती हमले तथा अन्य प्रकार के प्रतिविद्रोही आपरेशनों में पैदा होने वाली परिस्थितियों का भय दूर किया जा सके तथा उनके अंदर घातक की नैसर्गिक प्रवृति पैदा की जा सके। इस अभ्यास का नाम अभ्यास अग्निपथ रखा गया है जिसे इस संस्थान ने समय पर पूरा किया है। इसे माननीय महानिदेशक महोदय की औपचारिक सहमति मिल चुकी है और इसका प्रदर्शन संस्था की फील्ड फायरिंग रेंज पर पुलिस महानिरीक्षक प्रशिक्षण के समक्ष प्रस्तुत किया जा चुका है। इसे पूरी तरह अनुमोदित कर दिये जाने के बाद सभी कोर्स में अनिवार्य रूप से लागू कर दिया गया है।



जंगल प्रशिक्षण के दौरान "रोड़ मार्च का अभ्यास करते जवान"



एक रंगरूट को दक्ष जवान बनाने के लिए वास्तविक प्रशिक्षण निहायत जरूरी

इस 42 वर्षों में इस संस्थान ने बल की अग्रणी प्रशिक्षण संस्था के रूप में अपनी जिम्मेदारियों का वहन अनवरत पूरी लगन एवं तन्यमता से किया है और बल में एक

सुदृढ सु-प्रशिक्षित एवं प्रभावी आधारशिला रखने की चेष्टा की है जिस पर स्थापित एवं व्यवस्थित यह गरिमामय बल अपनी परिचालन क्षमता एवं सफलता की गगनचुम्बी शैल शिखरों पर अपनी विजय वैजयन्ती फहराता जा रहा है। शस्त्र एवं युद्धकला प्रशिक्षण के साथ-साथ उन्हें किन-किन विविध हालातों में कार्य करने की आवश्यकता पड़ती है जिसमें शक्तिशाली हथियारों एवं गोलीबारी की दक्ष प्रवृति के साथ-साथ हालात, इलाका, खबर,, टारगेट तथा आसपास की आबादी वाले क्षेत्रों के धनत्व को भी ध्यान में रखने की जरूरत है अन्यथा कई प्रकार की आत्मधाती परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। अन्ततः, राष्ट्रकवि दिनकर की ये पंक्तियां कि :-

पाते हैं सम्मान तपोबल से
भूतल पर सूर
जाति जाति का शोर मचाते
केवल कायर क्रूर

इस संस्थान पर पूरी तरह चरितार्थ होती है। अपनी कर्मठता एवं तपोबल से पुलिस प्रशिक्षण के क्षेत्र में जो सम्मान केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय प्रथम ने अर्जित किया है वह अपने आप में बेमिसाल एवं दुर्लभ है।

और एक पंक्ति कि -

मूल खोजना बड़ा कठिन है
नदियों का और वीरों का

उन्ही सुप्रवाहित नदियों की भांति, तथा त्याग और वीरता की प्रतिमूर्ति उन वीरों की भांति यह प्रशिक्षण संस्थान भी प्रशिक्षण के क्षेत्र में नित नई बुलन्दियां हासिल करता जा रहा है तथा भविष्य में अपने लक्ष्य को चरितार्थ कर श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होता जा रहा है।

बल में प्रशिक्षण की भूमिका

मोहम्मद इमरान मलिक
उप. कमां., आर.टी.सी.-III

किसी व्यवसाय, कार्य या कल के करने में दक्षता कुशलता विकसित करने की प्रक्रिया को प्रशिक्षण कहा जाता है। प्रशिक्षण के माध्यम से ही किसी भी व्यक्ति या किसी विभाग में कार्यरत कर्मचारी की कार्यक्षमता एवं शारीरिक तथा मानसिक शक्ति को विकसित किया जा सकता है। प्रशिक्षण से व्यक्ति विशेष की बुद्धि में इस तरह की वृद्धि की जाती है कि वह वांछित दिशा में अपनी निजी वृतियों एवं क्षमताओं

का उपयोग करे तथा अपने आप में विभाग द्वारा निर्धारित मूल्यों का विकास कर सकें।

किसी विषय से संबंधित तथ्यों तथा तत्संबंधी ज्ञान का प्रचार-प्रसार एवं उनके बीच अतसम्बन्धों का निर्धारण कर सकना ही प्रशिक्षण है। इस प्रकार दिया जाने वाला ज्ञान प्रायः विशिष्ट प्रकार का होता है तथा उसकी प्रकृति भी व्यावसायिक होती है। प्रभावशाली प्रशिक्षण के अन्तर्गत तकनीकी विधियों से कार्य करने की शिक्षा का समावेश भी होता है। प्रशिक्षण प्रक्रियाओं के माध्यम से विभाग एवं संगठन से सम्बन्धित उपकरणों एवं यंत्रों का सही उपयोग करना प्रशिक्षणार्थी को आने लगता है। विभागीय स्तर निर्धारित एवं क्रियान्वित विविध प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थी की शारीरिक क्षमताओं तथा भौतिक वृत्तियों में इस तरह का विकास करते है कि कर्मचारी विशेष की नौकरी के क्षेत्र में उसे लाभ मिलना शुरू हो जाता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रशिक्षण किसी भी विभाग एवं संगठन के कर्मचारियों की क्षमताओं, वृत्तियों आदतों



शारीरिक चुस्त-दुरूस्तता के लिए खेलकूद जरूरी

तथा ज्ञान में इस तरह की वृद्धि करता है कि वह अपने वर्तमान कार्यों के सम्पादन में तो अधिक प्रभावशाली बन ही सकते है, साथ ही प्रशिक्षण की इन गतिविधियों से

प्राप्त ज्ञान एवं कौशल के कारण वे अपनी भविष्य में कार्य करने की स्थितियों को भी मजबूत कर सकते हैं। यह इसलिए संभव है क्योंकि प्रशिक्षण एक ऐसा सुनियोजित प्रयास है, जो कर्मचारियों में व्यवसायिक क्षमता और ज्ञान का संचार बखूबी करता है। संस्था अथवा संगठन के उद्देश्यों से परिचित करवाकर प्रशिक्षण कर्मचारियों में उनके कार्यों को करने की सहजता भी प्रदान करता है। इसका सुफल यह होता है कि अपनी-अपनी संस्थाओं के कार्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपना सक्रिय योगदान करने में कर्मचारी सफल हो जाते हैं। इस प्रकार प्रशिक्षण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति विशेष में कार्यकारी एवं व्यावसायिक कुशलताओं का विकास, दक्ष एवं योग्य प्रशिक्षकों की सहायता से अनुकूल प्रशिक्षण परिवेश में सावधानी से प्रशिक्षण विधाओं के माध्यम से किया जाता है। सर्वाधिक महत्व की बात यह है कि प्रशिक्षण के दौरान सही मूल्यों एवं वृत्तियों के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। प्रशिक्षण का सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य यह हो सकता है कि इसके माध्यम से नवनियुक्त कर्मचारी में जनसेवा के लिए पूर्ण निष्ठा, देश भक्ति की भावना तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण जैसी सकारात्मक अभिवृतियों का विकास किया जाए।

आजादी की भोर की नव-किरणों के उदय के साथ ही पुलिस तथा कानून व व्यवस्था बनाये रखने वाली संस्थाओं से यह अपेक्षा की जाने लगी थी कि उसे स्वतंत्र भारत की जनता के अधिकारों को बनाये रखने के लिए जागरूक रक्षक की भूमिका निभानी है। जिसका निहितार्थ यह है कि उन्हें सार्वजनिक सम्पति व शांति के संरक्षक का अहम कार्य निष्ठापूर्वक व जिम्मेदारी से संपूर्ण करना है।

आजादी के चार दशकों के अनुभव तथा पुलिस व्यवहार एवं भूमिका विषयक घटनायें संकेत देती है कि यदि पुलिस कार्मिकों के लिए सही प्रकार की प्रशिक्षण प्रणाली कायम हो जाये तो उन्हें नई जिम्मेदारियों के प्रति अधिक गम्भीरता से सचेत किया जा सकता है। इस प्रकार की नवचेतना के जरिए संगठन के आम जनता के साथ संबंध सौहार्दपूर्ण बनाने में कोई कठिनाई नहीं होगी। यद्यपि पुलिस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षणार्थियों की कार्य-कुशलता में वृद्धि कर संगठन की कार्य प्रणाली को बेहतर ढंग से समझने की दृष्टि पैदा करना है। परन्तु, पुलिस जैसे अनुशासनबद्ध संगठन में कार्यरत कर्मियों में प्रशिक्षण के माध्यम से संगठन एकता का भी विकास किया जा सकता हैं। इस प्रकार की भावना का विकास पुलिस की सुचारू कार्यप्रणाली के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण समझा जाता है।

पहले के जमाने में पुलिस का कार्य कुल मिलाकर एक खास रूढ परिपाटी पर चलता रहता था। ऐसे में वे लोग भी जो पुलिस व्यवसाय में प्रशिक्षित नहीं होते थे अपना कार्य बखूबी निभा सकते थे। लेकिन सभ्यता के विकास के साथ ही पुलिस की गतिविधियों एवं कार्य प्रणालियों में भी बहुत अधिक परिवर्तन की जरूरत महसूस होने लगी है।

पुलिस कार्मिकों को दी जाने वाली शिक्षा पुलिस कार्यों तथा उनकी व्यवसायिक प्रकृति के अनुकूल व उपयोगी होनी चाहिए। प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का निर्धारण करने

और विभिन्न स्तर के पुलिसजन को प्रशिक्षित करने का जिन लोगों को दायित्व सौपा जाता है, उन्हें चाहिए कि वे कुछ इस प्रकार के सवालों से मुखातिब हो, जो उन्हें पाठ्यक्रमों के निर्धारण में यथार्थवादी सोच से परिपूर्ण कर सके। ऐसे कुछ प्रश्न निम्नांकित हो सकते हैं। जनता अपनी पुलिस से क्या चाहती है? पुलिस क्या क्या करे? इस सम्बन्ध में उसकी अपेक्षाएं क्या है? पुलिस संगठन में भर्ती होने वाला आदमी कैसा होना चाहिए? पुलिसजन को किन-किन कार्यो को अन्जाम देना चाहिए? उनका व्यवहार कैसा होना चाहिए? अपने कार्य को उन्हें कैसे करना चाहिए? अपने कर्तव्य को सही ढंग से निभाने के लिए और अपने आप को उसके योग्य बनाने के लिए पुलिसजन को किस प्रकार के प्रशिक्षणों की जरूरत है? लोगों की अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए प्राप्त प्रशिक्षण को सर्वाधिक उपयोग का बनाकर लोगों को फायदा पहुँचाने के लिए पुलिस जन कैसे तत्पर बन सकते है?

प्रशिक्षण से अव्यावहारिक आशाएं रखने वालों को यह समझना चाहिए कि प्रशिक्षण की अपनी सीमाएं भी हुआ करती है। किसी भी प्रशिक्षण की अन्तिम सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि प्रशिक्षण के लिए जिन लोगों को भर्ती किया गया है उनकी मौलिक एवं आधारभूत क्षमता क्या है। निरे काठ के उल्लू को कोई भी प्रशिक्षण ज्ञानवान नहीं बना सकता है। सही रूप से रूपान्तरित होने का मूल मूद्दा भर्ती किए गए व्यक्ति में होना जरूरी है।



प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न प्रकार की आपातकालीन स्थिति से निपटने का अभ्यास करते प्रशिक्षु

प्रशिक्षण - एक सतत् प्रयास

नदीम अहमद समदानी
उप प्राचार्य, आरटीसी-1,

अन्य गतिविधियों की तरह ही प्रशिक्षण भी हमारे बल का एक महत्वपूर्ण अंग है। नित्य नये एवं बदलते हुए वातावरण से तालमेल बैठाने तथा लगातार बिगड़ते कानून व्यवस्था की समस्या से जूझने के लिए यह अति आवश्यक है कि हम अपने प्रशिक्षण को समयानुकूल बनाये एवं वर्तमान तथा भविष्य की जरूरतों के मद्देनजर प्रशिक्षण में परिवर्तन करें। प्रशिक्षण वस्तुतः व्यक्ति विशेष की क्षमता को बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण साधन है।

1968 से पूर्व, रंगरूटो का प्रशिक्षण बटालियन में एवं केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय-1 में होता था। कालांतर में बल के आकार में व्यापक वृद्धि के साथ ही

रंगरूटों के प्रांशेक्षण हेतु एक अलग प्रांशेक्षण केन्द्र का होना आंनेवाय सा हो गया। लिहाजा 1 अगस्त 1968 को "चोरल" नदी के किनारे बारवाह (म०प्र०) में रगंरूट प्रशिक्षण केन्द्र प्रथम की स्थापना की गयी। कालांतर में इस प्रशिक्षण केन्द्र को नीमच ले जाया गया एवं 7 जुलाई 1984 को यहां इसकी स्थापना की गयी। इस संस्थान की कुल क्षमता 1215 नवारक्षीयों को प्रशिक्षित करने की है।

प्रशिक्षण केन्द्र का प्रशासनिक नियन्त्रण, पुलिस महानिरीक्षक (प्रशिक्षण एवं परिचालन) एवं उप0 पुलिस महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) केरिपु बल नई दिल्ली के हाथों में होता है।

संस्थान में रंगरूटों को विभिन्न विषयों पर 44 सप्ताह का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रारम्भ में 12 सप्ताह में ड्रिल एवं शारीरिक प्रशिक्षण के द्वारा जवानों की दिनचर्या आदतें, टीम भावना, हुक्म मानना, टर्नआउट आदि पर विशेष जोर दिया जाता है। अहिन्दी भाषी नवारक्षियों को अलग से हिन्दी भाषा का ज्ञान कराया जाता है, ताकि वे प्रशिक्षण को अच्छी तरह समझ सकें। 13 से 25 सप्ताह के दौरान शस्त्र ड्रिल हथियारों के विषय में जानकारियाँ, मिनियेचर रेन्ज, शार्ट रेन्ज फायरिंग एवं कठिन शारीरिक प्रशिक्षण दिया जाता है। तब तक एक रंगरूट काफी हद तक फोर्स के माहौल से सामन्जस्य स्थापित कर चुका होता है। 25 सप्ताह के पश्चात 15 दिन का मध्यावधि अवकाश पर रंगरूटो को भेजा जाता है। अवकाश से लौटने के पश्चात् नवारक्षियों की दिनचर्या और भी व्यस्त हो जाती है। 25 से 44 सप्ताह के दौरान बिना हथियार लड़ाई, आब्सट्कल, विभिन्न हथियारों की हैन्डलिंग, फायरिंग, युद्ध करने का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिसके द्वारा प्रशिक्षार्थी में आत्मविश्वास पैदा होता है। इसके अतिरिक्त केरिपु बल अधिनियम, नियम तथा विशेषकर "मानव अधिकार" पर खास प्रशिक्षण दिया जाता है। रंगरूट प्रशिक्षण के अतिरिक्त इस संस्थान द्वारा बिगुलर रिफेशर कोर्स 12 सप्ताह, का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।



स्माल आर्म्स ट्रेनिंग सिम्युलेटर सिस्टम के तहत टारगेट पर निशाना साधता रंगरूट

आई.ई.डी **(IED)** के प्रशिक्षण हेतु इस संस्थान में एक माडल रूम भी उपलब्ध है जिसमें नवारक्षियों को आतंकवादियों द्वारा प्रयोग किये गये विभिन्न प्रकार के आई.ई.डी **(IED)** को दिखाया जाता है तथा उनको पहचानने तथा उनसे बचाव के बारे में जानकारी दी जाती है।

समय-समय पर विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन करके नवारक्षियों में प्रतिस्पर्धा एवं लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने के साथ-साथ टीम भावना को विकसित किया जाता है। विजयी टीम/कम्पनी/विंग को ट्राफी एवं अन्य पुरस्कारों के द्वारा सम्मानित करके प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षार्थियों के उच्च मनोबल को बनाये रखने का प्रयास किया जाता है।

आज जबकि देश आतंकवाद, उग्रवाद, एवं नक्सलवाद जैसी संक्रामक समस्याओं से जूझ रहा है, तथा ऐसे समय में जबकि सीमा पार से आतंकवादी गतिविधियों में लगातार वृद्धि हो रही है। उनके हिंसा करने की शैली में लगातार परिवर्तन हो रहा है, तथा नित्य नये हथियारों का प्रयोग देखने को मिल रहा है, यह अति आवश्यक है कि हम अपने प्रशिक्षण को भी समयानुकूल बनायें। प्रशिक्षण को आधुनिक रूप देने के लिए संस्थान को **IWESS** द्वारा **SATS** जैसे अत्याधुनिक उपकरण उपलब्ध कराये

गए हैं, जिससे निःसंदेह प्रशिक्षण का स्तर बढ़ा है। पारम्परिक प्रशिक्षण के अलावा नवरक्षियों को उग्रवाद एवं आतंकवाद ग्रसित इलाकों में ड्यूटी के दौरान पेश आने वाली वास्तविक परेशानियों, उग्रवादियों के पैंतरों से वाकिफ कराया जाता है।

SATS (स्माल आर्मस ट्रेनिंग सिम्युलेटर सिस्टम) का अभ्यास नवारक्षियों को फायरिंग कराने से पूर्व, मस्कटरी के साथ-साथ दिया जाता है ताकि नवारक्षी फायरिंग के दौरान की गयी अपनी कमियों को समझ सके तथा फायरिंग रेंज में उन गलतियों की पुनरावृति न करके अच्छे से अच्छा फायर कर सकें।

प्रशिक्षण के अंतिम चरण में 4 सप्ताह की जंगल ट्रेनिंग आयोजित की जाती है जिसके अन्तर्गत फील्ड में बल द्वारा प्रति विद्रोहिता के विरूद्ध किये जा रहे आपरेशन का विस्तृत रूप से प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन किया जाता है। संस्थान में उपलब्ध "इनफेन्टी वेपन इफेक्टस सिमुलेशन सिस्टम" ने उपरोक्त प्रशिक्षण में एक वास्तविक दृश्य की अवधारणा को उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उक्त उपकरण के इस्तेमाल से जवानो द्वारा की गयी कार्रवाई तथा आतंकवादी उग्रवादियों द्वारा की गयी कार्रवाई की सफलता एवं असफलता का वास्तविक पता चलने के अलावा नवरक्षियों को यह अहसास होता है कि फील्ड में दुश्मन के विरूद्ध उनकी फायरिंग कितनी प्रभावी है। जंगल कैम्प के दौरान ही फील्ड फायरिंग में 2" के मोर्टर के बम्बो एवं ग्रेनेडों की फायरिंग कराने के अलावा "बैटल इनाकुलेशन" का अहसास नवरक्षियों को कराया जाता है ताकि ऐसी परिस्थितियां आने पर उनकी घबराहट और झिझक दूर हो सके और वे बहादुरी के साथ सामाजस्य स्थापित करते हुए दुश्मन का सामना कर सके।

इस संस्थान द्वारा स्थापना से आज तक कुल 36727 रिकुटों को प्रशिक्षित किया है। वर्तमान में इस संस्थान में कुल 1308 नवरक्षी अपना बुनियादी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहें हैं। इस संस्थान में वर्ष-1998 से बिगुलर रिफ्रेशर कोर्स भी चलाया जा रहा है जिसके द्वारा अब तक कुल 293 बिगुलरों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है तथा वर्तमान में 62 सिपाही/बिगुलर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहें हैं। इस संस्थान द्वारा केरिपु बल के कार्मिकों को प्रशिक्षण देने के अतिरिक्त अन्य पुलिस संगठनों के कुल 2550 कार्मिकों को भी प्रशिक्षण दिया गया है जिनमें एसएसबी-1019, कस्टम-208, केबिनेट सक्ट्रीयर-33, एन.ई.पी.ए.-9, आरपीएसएफ-1139, जम्मू कश्मीर पुलिस-151, शामिल हैं।



"जंगल ट्रेनिंग" प्रशिक्षण का एक अहम हिस्सा है

बदलते सामाजिक परिदृश्य में प्रशिक्षण का महत्व

– एम.एस. यादव, प्राचार्य, आर.टी.सी. IV

बुनियादी प्रशिक्षण का मुख्य ध्येय जवान की कार्य दक्षता का विकास करना, उसमें विशिष्ट प्रतिबद्धता, प्रतिकूल परिस्थितियों में निर्णय लेने तथा कार्य करने की क्षमता, उच्च नैतिक मूल्यों एवम् उच्च कोटि के अनुशासन की भावना जागृत करना है, ताकि वह भविष्य में तेजी से बदलते सामाजिक परिदृश्य में व्याप्त अराजकता, अलगाववाद, आतंकवाद विद्रोह, क्षेत्रीय अशांति तथा बाहरी ताकतों के बढ़ते हुए हस्तक्षेप आदि से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए स्वयं को पूर्ण रूप से तैयार कर सके।

इन बदलती परिस्थितियों के कारण केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के तेजी से हो रहे विस्तार को देखते हुए नवारक्षी प्रशिक्षण केन्द्र चतुर्थ की स्थापना 01 अप्रैल 1990 को हुमामा, जिला बड़गाम, जम्मू एवं कश्मीर में हुई थी, परन्तु समुचित भवन व्यवस्था के अभाव तथा उस समय कश्मीर घाटी में व्याप्त आतंकवाद तथा चरमपंथी विद्रोह की हालत के कारण प्रारम्भिक दो वर्षों तक इसे प्रभावी नहीं किया जा सका। तत्पश्चात 7

मई 1992 को अवन्तीपुरा, जिला पुलवामा, जम्मू एवं कश्मीर में कार्य प्रारम्भ करके 29 मार्च 1994 को वर्तमान स्थान हुमामा, जिला बड़गाम में स्थानान्तरित किया गया।

इस प्रशिक्षण केन्द्र का मुख्य कार्य के.रि.पु. बल के नवारक्षियों को बुनियादी प्रशिक्षण प्रदान करना है। प्रशिक्षण के अर्न्तगत उन्हें शारीरिक प्रशिक्षण, निहत्थी लड़ाई, हथियार कवायद, विभिन्न हथियारों की जानकारी तथा उनसे फायर करना, विभिन्न प्रकार के विस्फोटकों की जानकारी, भूमि कौशल, युद्ध कला और प्रतिविद्रोहिता आदि का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही देश की कानून व्यवस्था, प्राथमिक चिकित्सा, सामयिक ज्ञान तथा मानव अधिकारों की शिक्षा कक्षाओं के माध्यम से प्रदान की जाती है।



व्यवहारिक रूप से आधुनिक शस्त्र चलाने का नमूना देते प्रशिक्षक



"स्वस्थ शरीर स्वस्थ दिमाग" हथियार के साथ शारीरिक व्यायाम

इस प्रशिक्षण केन्द्र की अधिकृत शिक्षण क्षमता 1215 नवारक्षियों की है। इस केन्द्र में चार अनुभाग हैं, जिनमें से तीन अनुभागों का कार्य नवारक्षियों को आऊटडोर प्रशिक्षण प्रदान करना है। चतुर्थ अनुभाग का कार्य प्रशिक्षण केन्द्र की प्रशासनिक आवश्यकताओं तथा नवारक्षियों की इन्डोर प्रशिक्षण कक्षाओं आदि का प्रबन्ध करना है।

वर्तमान हालात में बदलती हुई चुनौतियों का सामना करने के उद्देश्य से इस प्रशिक्षण केन्द्र में आधुनिक प्रशिक्षण साधनों के महत्व को प्राथमिकता दी जा रही है और इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए कई प्रबन्ध किये गये हैं। हाल ही में इस प्रशिक्षण केन्द्र में स्मॉल आर्म्स ट्रेनिंग सिम्युलेटर सिस्टम, इन्फेन्ट्री वेपन इफेक्ट सिमुलेटर सिस्टम, मल्टीमिडिया प्रोजेक्टर, कम्प्युटर और रिसोग्राफ जैसे अत्याधुनिक उपकरण स्थापित किए गए है। स्मॉल आर्म्स ट्रेनिंग सिस्टम के द्वारा प्रशिक्षार्थिओं को निशाना साधने, पकडना तथा ट्रिगर दबाने मैं होने वाली त्रुटियों का सुधार करके उन्हें दक्ष निशानेबाज में परिवर्तित करने में सहायता करता है। इन्फेन्ट्री वेपन इफेक्ट सिमुलेटर सिस्टम के द्वारा वास्तविक संघर्ष स्थिति को परिलक्षित किया जा सकता है, तथा ट्रूप्स एक दुसरे पर वास्तविक एम्यूनीशन का प्रयोग न करते हुए लेजर प्रौद्योगिकी द्वारा एक दूसरे पर फायर कर सकते हैं।

अभी तक इस प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा कुल 6292 नवारक्षियों को बुनियादी प्रशिक्षण दिया जा चुका है और वर्तमान में 1223 नवारक्षी प्रशिक्षण रत हैं। इसके अतिरिक्त समय–समय पर बेसिक बिगुलर कोर्स, बिगुलर रिफ्रेशर कोर्स भी चलाए जाते हैं,

जिसके अन्तगत अभी तक 76 सिपाहियों को बेसिक बिगुलर और 298 सिपाहियों को बिगुलर रिफ्रेशर कोर्स कराया जा चुका है।

इस प्रशिक्षण केन्द्र का कश्मीर घाटी में व्याप्त आतंकवाद तथा चरमपंथी विद्रोह के साये में स्थित होना ही अपने आप में विशेषता प्रदान करता है। मौजूदा हालात नवारक्षियों को आतंकवाद से लड़ने और सामना करने की व्यवहारिक शिक्षा हासिल करने में स्वतः मदद करता है। अतः वर्तमान की बदलती राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों के परिपेक्ष में इस बल के कार्यक्षेत्र की परिसीमा को अत्याधिक विस्तृत कर दिया गया है। अतः बल के सदस्यों को इन परिस्थितियों का सामना करने के लिए न केवल आवश्यक जानकारी और कार्य दक्षता की अपितु शारीरिक क्षमता की भी आवश्यकता होती है। अतः इस प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षार्थियों को उक्त चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाने के लिए सतत् प्रयास किये जा रहे हैं ताकि वह बल के सदस्य होने के नाते आन्तरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा कानून एवं व्यवस्था बनाये रखने के लिए शासन को कौशलपूर्ण और प्रभावी सहायता प्रदान कर सके।

प्रशिक्षण गुणवत्ता सुधार में प्रशिक्षक की भूमिका

उप निरीक्षक राजीव मलिक

प्रशिक्षक अधिगम को तकनीकों की सहायता से पथ प्रदर्शन के द्वारा और प्रशिक्षार्थियों के साथ मिलकर अपने ज्ञान को बाँटकर अनुभवों का आदान प्रदान करके, अपनी अर्न्तदृष्टि से ग्रहण करके, क्रिया प्रतिक्रिया और परस्पर सहक्रिया करके अधिनियम की क्रिया को गतिशील बनाता है। यद्यपि क्रिया ज्ञानोपार्जन अध्ययन और अध्यापन में आई जटिलताओं के चलते वह भी एक प्रशिक्षार्थी होता है और तदन्तर अनुभवों की भागीदारी में, प्रशिक्षार्थी के कार्य सम्पादन में उसका सहायक और पथ प्रदर्शक होता है। एक प्रवीण प्रशिक्षक प्रशिक्षार्थियों के प्रदर्शन, कार्य सम्पादन को देखकर प्रशिक्षण के उददेश्य तथा संबंधित विवरणीय विषयों को अधिगम की क्रिया में प्रशिक्षक की प्रक्रिया पर अभिकेन्द्रित कर देता है।

*1.*प्रशिक्षक के कार्य

(क) प्रशासनिक और प्रबन्धन संबंधी

(ख). संगठन की नीतियों को निर्धारित करना /

(ग). कार्यक्रम के उद्देश्यों को जीवन्त रूप देना /

(घ). विकास संसाधनों का अनुमान लगाना व उनको उपलब्ध करना, सुविधाएँ उपलब्ध करना भागीदारों का चयन करना, उपलब्धियों के कार्य सम्पादन पर विश्लेषित रिपोट उपलब्ध करना, नीतियों को संचारित करना ।

(ख) सलाहकार व परामर्शदाता कार्य सम्पादन की समस्याओं का विश्लेषण करना, प्रशिक्षण की आवश्यकताओं को जानना, संबंधित पाठ्यक्रम के लक्ष्यों को निर्धारित करना और उसकी रूपरेखा को सही प्रारूप देना. तकनीकी एवं संचार के साधनों में निरपेक्ष/निष्पक्ष भाव से सहायता प्रदान करना । नवीन साधनों का प्रयोग, सहायक सामग्री, नवीन विषयानुसार प्रौद्योगिकी के साथ, उच्च मानदण्डों को स्थापित करने में विषयानुसार नये उपकरणों का अन्वेषण करके प्रशिक्षक के कार्य में नवीन तकनीक का समावेश करना ।प्रशिक्षक के प्रशिक्षण को एक व्यवसायिक आयाम देना ।

(ग) अध्यापन और अधिगम

(1). अधिगम के लक्ष्यों का निर्धारण दीर्घ एवं प्रशिक्षण

(2). आवश्यकताओं की पहचान करना और उसके अनुरूप योजना तैयार करना ।

(3). पाठ्यक्रम की रूपरेखा एवं विषय सूची का विकास करना, पाठ योजना ।



आर.टी.सी.–*III*, पल्लीपुरम में रंगरूटों के प्रशिक्षण का जायजा लेते उप महानिरीक्षक *(प्रशि.)* कमलेन्दर प्रसाद



यू.ए.सी. प्रशिक्षण के दौरान जलती आग की रिंग से निकलने का डेमो देता प्रशिक्षक

तैयार करना एवं कार्यकलापों की रूपरेखा सुनिश्चित करना।

पाठयक्रम संबंधी प्रशिक्षण के सही तरीके तथा तकनीकों का चयन करना तथा सुझाव देकर मार्गदर्शन करते हुए सत्र बताना, अधिगम के समय लागू किये गए पाठ्यक्रम पर विश्लेषित टिप्पणी करना उसका विश्लेषण करना तथा संसाधनों को व्यवहार में लाना।

2. प्रशिक्षक की भूमिका

(क) प्रशिक्षक द्वारा अपेक्षित कार्यो के सम्पादन में इनका बहुत महत्व है।

1. प्रशिक्षण की दशा एवं श्रोताओं की प्रतिक्रिया।

2. प्रशिक्षक की व्यवहारिक पृष्ठभूमि।

3. प्रशिक्षक की विषयवस्तु पर अधिकार।

4. प्रशिक्षक का व्यक्तिगत आवरण।

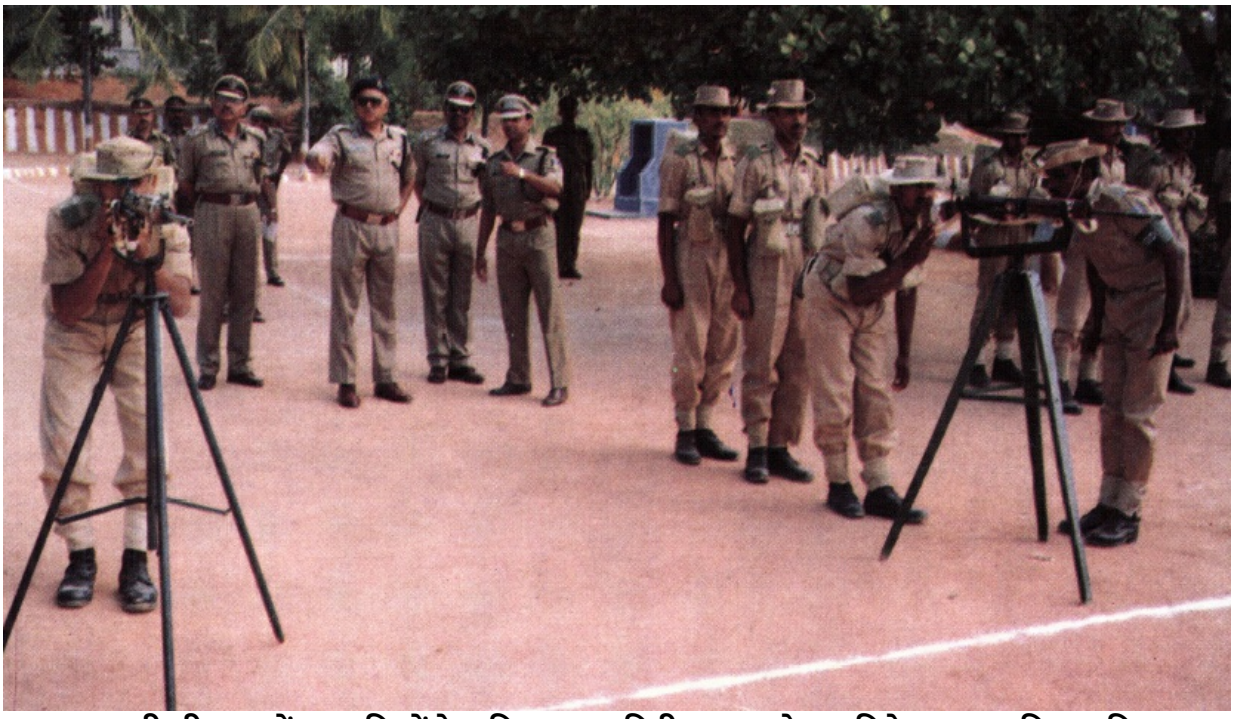
5. संस्था की कार्यप्रणाली/परम्परा जिसके अनुरूप वह अपने कार्य का सम्पादन कर रहा हो।

(ख) व्यापक रूप में किसी प्रशिक्षक की भूमिका निम्नांकित द्वारा तय की जा सकती है।*1.* प्रशिक्षण नीति का सुत्रधार।

2. प्रशिक्षण के उद्देश्यों के अनुरूप लक्ष्य का निर्धारण करना।



प्रशिक्षापरान्त कर्तव्य निष्ठा की शपथ लेने के बाद सलामी देते नवारक्षी



आर.टी.सी.-*III*, में नवारक्षियों के प्रशिक्षण का निरीक्षण करते महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र

3. पाठ्यक्रम का प्रारूप और विकास।

4. प्रशिक्षण को कार्य प्रणाली की परिकल्पना रचनात्मक विचारधारा रखते हुए निरंतर

नये संसाधनों का विकास करना और समायोजन करना।

5. प्रशिक्षण का गतिविधियों की योजनायें बनाने वाला, सहायक मार्गदर्शक, सुविधाजनक, शिक्षक, परामर्शदाता और सलाहकार, प्रवर्तक। विषयिक ज्ञान, तथा कौशल के अतिरिक्त एक सफल प्रशिक्षक के पास वैयाक्तिक संपर्क स्थापित करने के लिए व्यवहारिक दक्षता का होना भी अनिवार्य है। परस्पर सहयोग से कार्य करने का दृष्टिकोण और क्षमता। समूह में प्रशिक्षण के प्रति उत्साह का संचार करने तथा अभिरुचि जागृत करने की क्षमता। प्रशिक्षार्थी और प्रशिक्षक के मध्य दूरी कम करने की क्षमता। प्रशिक्षण के दौरान विचारों का परस्पर आदान-प्रदान करने की क्षमता। प्रबंधन का ध्यान आकर्षित करने की योग्यता। प्रशिक्षक के विकास में प्रबंधन की भूमिका

ध्येय निर्धारण:-

प्रबंधन द्वारा प्रशिक्षक के कार्यस्वरूप को स्पष्टता से निर्धारित करने से प्रशिक्षक के विकास में सुविधा होती है। जिससे वह अपने कार्य को बेहतर आयाम देते हुए संस्थागत ध्येय हासिल कर सकता है। बहुधा प्रशिक्षण के कार्यस्वरूप की अस्पष्टता से प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

प्रशिक्षक का चयन:

प्रबंधन द्वारा प्रशिक्षकों के चयन करते समय इन सभी को बराबर प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

1. विषय ज्ञान पर अधिकार
2. चरित्र तथा प्रशिक्षार्थी की जरूरतों के प्रति संवेदी व्यवहार।
3. अपने विचारों को सफलतापूर्वक अभिव्यक्त करने की क्षमता।
4. लचीलापन तथा सुग्रहयता।
5. विषय ज्ञान को व्यवहारिक प्रयोग में बदलने की सृजनात्मकता।

प्रशिक्षण गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रशिक्षक का विकास आवश्यक है। प्रशिक्षक के विकास में स्वयं प्रशिक्षक तथा प्रबंधन दोनों की संयुक्त रूप से अहम भूमिका होती है। प्रशिक्षक के सामने संस्थागत ध्येय तथा प्रशिक्षण आवश्यकताओं की सुस्पष्ट तस्वीर होनी चाहिए इससे प्रशिक्षक की जिम्मेवारी तथा कार्यपरिधि निर्धारित होती है तथा उसे अपने कार्य का समग्र विश्लेषण और आकलन में मदद मिलती है।

संस्थागत उद्देश्यों को देखते हुए प्रशिक्षक का समायोजित दृष्टिकोण ही उसे आदर्श की जगह पर सुस्थापित कर सकता है।

आतंकवाद कारण एवं प्रभाव

अनिल कुमार ध्यानी
उप कमाडेन्ट, आर.टी.सी.-2,



नियमित कक्षाएं भी प्रशिक्षण का एक हिस्सा

आज का वैश्विक समाज आतंकवादी गतिविधियों से त्रस्त है। दुनिया के मशहूर समाचारपत्रों में प्रतिदिन आतंकी गतिविधियों की खबरें छपती है। विश्व जनसंख्या के लगभग एक तिहाई लोग आतंकवाद से पीडित हैं, तथा प्रतिवर्ष खरवों रूपये की आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास की तीव्रता के साथ आतंकवादी संगठनों एवं गतिविधियों में भी तीव्रता से विकास हो रहा है। यदि विश्व समुदाय इसे स्थानिक या क्षेत्रिय समस्या समझकर अनदेखा करते रहे या अप्रत्यक्ष रूप में आतंकवादी गतिविधियों को प्रोत्साहित करते रहे तो आगामी दस वर्षों में समूचा समुदाय इनके नियंत्रण में होगा।

भारतीय समाज में आतंकवाद कोई नवीन परिदृश्य नहीं है। इस देश के गरिमामयी साहित्य, गीता, रामायण, पुराण, उपनिषद आदि में यत्र-तत्र आतंकवाद का प्रतिबिम्ब मिलता है। आर्यों एवं अनार्यो के झगड़े (दैव-दानव वृतान्त) प्रसिद्ध है। आतंकवादी गतिविधियों के नियंत्रण हेतु सामूहिक गुहार (प्रार्थना) एवं अवतारों के माध्यम से आतंकियों के सफाये की परिकल्पना का मूर्त परिदृश्य भारतीय वांण्डमय का प्रमुख भाव पक्ष है। यद्यपि धर्मग्रन्थों में वर्णित घटनाएं वाद-विवाद का विषय बन सकते हैं। एक समूह का कृत्य यदि दूसरे समूह के लिए आतंकवादी घटना हो सकी

है, तो उसके लिए वह कृत्य धर्मपालन की परिधि में आ सकता है। अतः आतंकवादी परिदृश्य भू-राजनैतिक पृष्ठभूमि में समावेशित करते हुए देश एवं काल के परिप्रेक्ष्य में समझाना उचित होगा।

आतंकवाद की संकल्पना:

कुल, समाज, राष्ट्र या अन्तराष्ट्रीय मान्य नियमों, कानूनों के विपरीत किया जाने वाला आचरण या व्यवहार जो बलात स्वीकार कराया जाय आतंक की परिधि में आता है। आतंकवाद एक ऐसी अवधारणा है जिसमें सामाजिक मान्यता नहीं होती है। आतंकवाद के पोषक जबरदस्ती भय पैदा करते हुए अपने लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। हिंसा इनका मूल मंत्र है, जो आतंकवादी संगठनों द्वारा पूरा किया जाता है। अतः यह कृत्य सामाजिक जीवन की विभन्न विधाओं में गैर कानूनी प्रभुत्व की स्थापना के लिए किया जाता है।

आतंकवाद के कारण एवं प्रभाव के अध्ययन हेतु निम्नलिखित घटकों का अवलोकन किया गया है।

1. धरातल/

2. समाज की प्रकृति/

3. धर्म/

4. अर्थव्यवस्था/

5. राजनैतिक तत्व/

6 अन्तराष्ट्रीय आतंकवादी सोच एवं व्यवहार/

उपयक्त घटकों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार आतंकवादी गतिविधियों के लिए प्रमुख उत्तरदायी तत्व निम्नानुसार है :-

आतंकवाद के कारण:

विश्व में आतंकवाद से ग्रस्त प्रमुख क्षेत्रों में द.पू. एशिया के राष्ट्र यथा भारत, श्रीलंका, पाकिस्तान, म्यांमांर, नेपाल आदि द.पू. एशिया के अन्तर्गत अफगानिस्तान, चैचन्या, ईराक, ईरान, कवैत, इजराइल, फिलस्तीन तथा आस्ट्रेलिया महाद्वीप में फीजी प्रमुख है। भारत के प्रमुख आतंकवाद गतिविधियों के प्रदेशों में जम्मू-कश्मीर पंजाब, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ नागालैण्ड, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा एवं आन्ध्र प्रदेश है। इसी प्रकार पाकिस्तान का पंजाब एवं सिंध प्रदेश अफगानिस्तान में कमरान की पहाड़ियाँ श्रीलंका का उत्तरी भाग, म्यांमांर में आरामान पहाडियाँ आदि। यद्यपि इनकी गतिविधियां समुचे विश्व में जड़ जमा चुकी है, किन्तु उपर्युक्त वर्णित प्रदेशों में इनकी बारम्बारता अधिक है। अतः देश एवं काल परिस्थितिजन्य प्रमाणों के अनुसार आतंकवादी क्रिया कलाप हेतु निम्नांकित भौगोलिक दशायें अनुकूल होती हैं।

1.* भौतिक परिप्रेक्ष्य *(धरातल)

***2.* सामाजिक कारण**

***3.* आर्थिक कारण**

***4.* राजनैतिक कारण**

निष्कर्ष रूप में भौतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक आदि कारण आतंक के लिए उत्तरदायी तथ्य हैं। आतंकवादी गतिविधियों के प्रमुख प्रभाव निम्नानुसार है।

***1.* सामाजिक जीवन में अस्थिरता एवं तनाव**



जंगल ट्रेनिंग के दौरान लक्ष्य पर निशाना साधते जवान



हथगोले फेंकने का प्रशिक्षण लेते जवान

2. जनसंख्या का पलायन

3. अकाल मौत

4. बलात्कार, वेश्यावृति जैसे सामाजिक कृत्यों को प्रोत्साहन

5. आर्थिक विकास का ठप्प हो जाना

6. बेरोजगार नवयुवकों का अनचाहे आतंकवादी संगठन में लिप्त

7. राजनैतिक अस्थिरता

निष्कर्ष रूप में आतंकवाद प्रभावित क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक सभी क्रिया कलाप ठप्प हो जाते है, तथा जंगल राज जैसे माहौल विकसित हो जाता है, जहां कोई सुरक्षित नहीं रह सकता।

आतंकवाद का प्रभाव निम्न प्रयासों द्वारा कम किया जा सकता है।

1. धरातलीय बनावट के अनुसार आतंकवाद निरोधक दस्तों को प्रशिक्षित कर त्वरित कार्रवाई द्वारा।

2. आतंकवाद निरोधक दस्तों में समयानुकूल बेहतर तालमेल।

3. दृढ राजनैतिक इच्छा शक्ति।

4. आतंकवादग्रस्त क्षेत्र के समुचित विकास एवं वहां निवास करने वाले सभी समुदायों के समग्र विकास की एक दृष्टि।

5. अन्तराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ कड़ा रुख।
6. विकसित राष्ट्रों का फूट डालो, राज्य करो के नजरिये में परिवर्तन।
7. बेरोजगारी समस्या का उन्मूलन।

उपर्युक्त प्रयासों द्वारा आतंकवाद के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

निष्कर्ष के तौर पर हम यह कह सकते हैं कि दुनिया में व्याप्त आतंकवाद किसी एक कारण से नहीं इसके व्यापक प्रसार के अनेक कारण हैं। मुख्य तौर से राजनीतिक, धार्मिक प्रसारात्मक साम्प्रदायिकता और आर्थिक कारण प्रमुख हैं। इन कारणों को दूर करने के लिए दुनिया में व्याप्त राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक असन्तोष में कमी लाकर सन्तुलन स्थापित करने के प्रयास होने चाहिए। दूसरी ओर विभिन्न देशों में जो राजनैतिक विरोधों के कारण आतंक को बढ़ावा दिया जा रहा है, उसे भी समाप्त करना होगा। राजनैतिक शक्तियों को दूसरे राष्ट्रों में हस्तक्षेप कम करना होगा। इस के लिए भावनात्मक और सास्कृतिक एकता के अवसर तलाशने होगें।

परिचालनिक दक्षता के लिए प्रशिक्षण

डी.टी बनर्जी उप कमां0 (समन्वय)



काउन्टर एम्बुंश ड्रिल का अभ्यास करते रंगरूट

किसी भी सार्वजनिक या प्राइवेट संस्थान के कार्मिकों के पूर्ण विकास के लिए अन्य चीजों का ज्ञान होने के साथ साथ उनके लिए प्रशिक्षण तथा शिक्षा बहुत आवश्यक है। श्रेष्ठ विधि से भर्ती, चयनित तथा नियुक्ति किए गये कार्मिक भी अप्रभावी साबित होंगे जबतक कि उन्हें एक साथ एक जैसा प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है। इस से नये कार्यों को पूरा करने के लिए कार्मिक पैदा किए जा सकते हैं परन्तु इन कार्यों को कुशलता पूर्वक निष्पादन करने के लिए उन्हें एक विशेष प्रकार से कुशल तथा व्यवसायिक ज्ञान की जरूरत होती है। इस लिए एक संगठन को आगे बढ़ाने के लिए उसके कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण एक अभिन्न हिस्सा है। जिससे कार्मिक की दक्षता में वृद्धि कर उसके कार्य क्षेत्र को बढ़ाया जा सकता है। अच्छी पृष्ठभूमि तथा अनुभव कर्मचारियों को अपनी जिम्मेदारी और बेहतरीन तरीके से निभाने के लिए तैयार करता है।

प्रशिक्षण एक आवश्यक संगठनात्मक कार्य है जिससे कर्मचारियों की विद्यमान तथा भविष्य की शैक्षिणक आवश्यकताओं की पहचान की जाती है तथा उन्हें अपनी ड्यूटियों को प्रभावी रूप से निष्पादित करने के लिए ज्ञान, कौशलता तथा क्षमता की जरूरतों को पूरी करता है। संगठन का लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रशिक्षण का ध्येय तथा उद्देश्य लक्ष्य से संबंधित होना चाहिए। प्रत्येक संगठन की अपनी विशेष प्रशिक्षण आवश्यकता है जिसका मूल्यांकन एक विस्तृत कार्य विश्लेषण कर हर स्तर के स्टाफ के लिए संगठन के अन्वेषण तथा विकास विंग द्वारा पहचान कराई जानी चाहिए। विभिन्न वर्गों के कर्मचारियों की वास्तविक प्रशिक्षण आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर प्रशिक्षण पाठ बनाए जायं ताकि ग्रहण की गई जानकारी में वृद्धि कर कार्यपस्थितियों से संबंधित कौशलता प्राप्त की जा सके। इसकी प्रभावशीलता का निर्धारण कर्मचारियों की कार्यकुशलता तथा उनके व्यवहार में होने वाले बुनियादी सुधार से आंकी जाती है।

समाज के विभिन्न समुदायों के बीच तेजी से बढ़ते असंतोष के कारण पुलिस का कार्य अपराध रोकने के बजाय कानून व्यवस्था बनाए रखने तक सिमट कर रह गया है। इस वजह से केरिपु बल को जल्दी जल्दी तथा अधिक समय के लिए कानून व्यवस्था बनाए रखने में सिविल पुलिस की मदद के लिए बुलाए जाने से इसकी भूमिका में और अधिक वृद्धि हुई है। पूर्व में निभाई जा रही कैदियों की एस्कार्ट ड्यूटी, प्रमुख संस्थानों की सुरक्षा, अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सुरक्षा, चुनाव सम्पन्न कराना, साम्प्रदायिक उपद्रवों से निपटने संबंधी ड्यूटियां करने के अलावा अभी हम आतंकवादी, उग्रवादी, अलगाववादियों तथा अन्य विघटनकारी तत्वों के विरूद्ध चलाए जा रहे अभियानों में सक्रीय रूप से शामिल है। कुछ सुव्यवस्थित अराजक तत्वों द्वारा दुर्जेय फायर शक्ति तथा अधिक प्रोत्साहन हर बार सुरक्षा बलों की कमजोरी बन जाते हैं। इस कमजोरी को केवल अच्छे हथियार देकर, उनकी नई भूमिका तथा भारी जिम्मेदारियों के अनुरूप विना उपर्युक्त प्रशिक्षण दिए पूरा नहीं किया जा सकता है। इस लिए विस्तृत कार्य विश्लेषण होना चाहिए जिसमें प्रत्येक स्तर के कार्य का हर प्रकार से मुल्यांकन कर विस्तृत प्रशिक्षण इनपुट डालने की

आवश्यकता है । सुरक्षा बलों के लिए मुख्यतया प्रांशेक्षण को दो भागों में बांटा जा सकता है :-

*1.*बेसिक/बुनियादी प्रशिक्षण

*2.*सेवाकालीन/दूरगामी

बुनियादी प्रशिक्षण बेसिक बुनियादी प्रशिक्षण :-

बेसिक प्रशिक्षण का लक्ष्य नये कार्मिकों को एक कच्ची धातु की तरह तोड़-मोड़ कर नयी वस्तु तैयार की जाती है उसी तरह पुलिस कार्मिकों को प्रशिक्षण देकर कुशल तथा योग्य एवं सक्षम, आत्मविश्वासी सुअनुशासित बल का सदस्य बनाना है। बुनियादी प्रशिक्षण में शारीरिक सुदृहणता, शूटिंग कुशलता, सेवाभक्ति, अनुशासन तथा सहयोग की



सीटीसी-*3* नादेड़ में संशोधित आधुनिक शुटिंग रेंज पर फायरिंग का अभ्यास करते बल कार्मिक



आरटीसी-*3* में प्रशिक्षण के दौरान आरओपी का अभ्यास करते नवारक्षी

भावना पर जोर देना चाहिए। विभिन्न स्तरों पर आवश्यकतानुसार विधि, प्रबन्धन, तथा व्यावहारिक विज्ञान आदि जैसे आंतरिक विषय दैनिक इनपुट में शामिल किए जाए। पी.टी. ड्रिल तथा हथियार चलाना आदि बुनियादी विषयों के अलावा बेसिक प्रशिक्षण में यू.ए.सी. अस्त्र-शस्त्र प्रशिक्षण फील्ड क्राफ्ट एवं टेकटिस आदि भी शामिल किये जाए। पर्यवेक्षण, चुपके-चुपके आवागमन, पैट्रोलिंग, घात लगाना, खोज खबर प्रतिक्रिया क्षमता तथा आई.ई.डी. जैसे विषयों को आतंकवाद तथा उग्रवाद के विरूद्ध संघर्ष के संदर्भ में विशेष महत्व दिया जाए। बेसिक ट्रेनिंग का उद्देश्य अधिकारियों तथा जवानों को कठिन एवं दुर्गम कार्यों को सफलता पूर्वक करने के लिए सक्षम बनाना होता है। अतः कार्मिकों के ग्राऊंड उपयोग के लिए लक्ष्य बनाया जाए तथा विस्फोटक अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्रों को चलाने एवं प्रयोग करने की जानकारी दी जानी चाहिए। रात्रि प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाए। प्रशिक्षकों को रात्रि फायरिंग में ऐसे प्रशिक्षित किया जाए कि वे एक उच्चकोटि के निशानेबाज बन सके। सभी रैंक के कार्मिकों में फायरिंग अनुशासन बनाये रखने की आवश्यकता है ताकि वे नियंत्रित रूप से अभ्यास करें तथा किसी प्रकार की हडबड़ी में फायर न करें।



प्रशिक्षण केन्द्र में परेड मार्च का रिर्हसल करते नवारक्षी

सेवाकालीन/दूरगामी प्रशिक्षण :-

पुलिस कार्यों की बढ़ती हुई उलझनों से अर्द्ध सैनिक बलों को विभिन्न भूमिकाएँ एवं कार्य क्षेत्र प्रभावित होने के कारण प्रशिक्षण की लगातार आवश्यकता है। अर्द्ध सैनिक बलों का सेवा कालीन प्रशिक्षण दो प्रकार का होता है :–

1. व्यक्तिगत प्रशिक्षण

2. सामूहिक प्रशिक्षण

१. व्यक्तिगत प्रशिक्षण :–

व्यक्तिगत प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति के ज्ञान व कौशल में वृद्धि कर निपुण सैनिक बनाना है ताकि वह अपने दिये हुए कार्यों को अधिक कुशलता पूर्वक पूरा करने योग्य बन सकें। व्यक्तिगत प्रशिक्षण, केडर कोर्स, सेमीनार, पेनल चर्चा, आपसी वार्तालाप तथा कार्यशालाएं आदि के अलावा अधिकारी तथा जवानों के लिए अलग अलग योजना बनाकर कुछ कमांडो जैसे विशेष कोर्स सभी रैंको के लिए संयुक्त रूप से चलाये जा सकते हैं। इसके अलावा एम.टी., वायरलेस, स्टाफ डयूटी, वी.आई.पी. सुरक्षा आसूचना तथा विस्फोटकों का पता लगाने जैसे विशेष कोर्सों के लिए नामांकन व्यक्ति की क्षमता एवं सामान्य कार्यकुशलता के लिए किये जाने

चाहिए। इन कोसों को और आकर्षक बनाने के लिए कोर्स करने वाले अधिकारी व जवानों को महत्वपूर्ण कार्यों में तैनाती की जानी चाहिए तथा इन कोर्सों को अतिरिक्त योग्यता मानने पर भी विचार किया जाना चाहिए।



परिचालनिक दक्षता के लिए वास्तविक प्रशिक्षण जरूरी



सेवाकालीन प्रशिक्षण के दौरान प्रतिविद्रोहात्मक कार्रवाई का अभ्यास करते बल कार्मिक

रोटेशनल ट्रेनिंग :–

बटालियन को फिजीकली फिट तथा विपरीत परिस्थितियों में तैनात रहने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक बटालियन को अनिवार्य रूप से रोटेशनल ट्रेनिंग कराई जाए। इस समय बल की तैनाती एवं उपयोग लगातार अधिक समय तक ज्यादा नफरी में होने के कारण रोटेशनल ट्रेनिंग देना असम्भव सा हो गया है। इस वजह से यूनिटों की व्यवसायिक कार्यकुशलता में कमी ही नहीं आ रही है बल्कि जवानों का मनोबल भी प्रभावित हो रहा है, क्योंकि न तो वे आराम कर पाते हैं और न ही कम्पनियाँ क्रमवार रोटेशनल प्रशिक्षण ले पा रही है।

पूर्वाभ्यास ट्रेनिंग : –

आतंकवाद तथा उग्रवाद विरोधी अभियानों में शामिल यूनिटों को आतंकवादी, उग्रवादी आन्दोलनों की एतिहासिक पृष्ठभूमि तथा पैदाइश, नफरी, विभिन्न ग्रुपों का नेतृत्व तथा उनकी कार्यप्रणाली, रणनीति, सामरिक योजना, स्थानीय जनता का उनके प्रति व्यवहार, क्षेत्रीय विशिष्टताओं जिसमें उन्हें कार्रवाई करनी है, से आवश्यक रूप से परिचित होना जरूरी है। जल्दबाजी, बिना उचित योजना के ऐसे क्षेत्रों में तैनात की गई टुकड़ियों को आरम्भ में ही नुकसान उठाना पड़ता है जिससे कभी-कभी जवानों का मनोबल भी गिरता है। यह बहुत आवश्यक है कि इस प्रकार सौंपी गई जिम्मेदारियों वाली सभी यूनिटों को पूर्व निर्धारित अभ्यास निश्चित रूप से कराया जाए। यूनिटों के जो अधिकारी तथा जवान पहले ऐसे क्षेत्रों में कार्य करने का अनुभव प्राप्त कर चुके हैं, को इस प्रकार का प्रशिक्षण देने में लगाया जाना चाहिए।



नियमित कक्षायें केरिपु बल प्रशिक्षण की विशेषता

किसी प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता का पता जब चलता है तब उस



प्रशिक्षण का अहम हिस्सा "रॉक क्लाइमिंग"

यूनिट के कार्मिक प्रशिक्षण से प्राप्त जानकारी तथा कौशलता का प्रयोग स्वेच्छा से करते हैं तथा इसका प्रभाव दक्षता व सुधार उनके कार्य क्षेत्र में देखने को मिलता है। फील्ड यूनिटें एवं प्रशिक्षण संस्थान आपस में लगातार वार्तालाप करके यह सुनिश्चित कर सकती हैं।

अच्छा यह होगा कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार लाने के लिए अनुदेशकों की टीमें खाली समय में फील्ड यूनिटों में जाकर अधिकारियों तथा जवानों से जब वे अपनी ड्यूटी पर तैनात होते हैं, उस समय उनसे विचार-विमर्श कर अन्य आवश्यक सूचनाएं प्राप्त कर संयुक्त रूप से अध्ययन करें। देश के विभिन्न भागों में आतंकवादियों, उग्रवादियों द्वारा अपनाई जा रहे तरीकों को ध्यान में रखकर प्रशिक्षण की विषय वस्तु तथा प्रशिक्षण प्रणाली की लगातार समीक्षा तथा पुनर्विचार करने की जरूरत है। एक जैसी दिखाई देने वाली समस्याओं पर बने पुराने प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अब फील्ड डयूटियों की आवश्यकतानुसार पुनः बनाया जाए। प्रशिक्षण कार्य पद्धति को प्रोन्नत किया जाए तथा दृश्य, श्रव्य, प्रदर्शी तथा अन्य विधियों की सहायता

लेकर प्रशिक्षण में सुधार किया जाए।

अच्छे प्रशिक्षण की उपयोगिता :–

अच्छे प्रशिक्षण की नियमित उपयोगिता निम्नानुसार है :–

1. व्यावसायिक दक्षता हासिल होती है।

2. व्यवसायिक अभिवृति पैदा होती है।

3. आवश्यक समाघात कौशलता आती है।

4. उत्पन्न स्थिति से प्रभावशाली रूप से निपटने का हौसला मिलता है।

5. जागरूकता पैदा होती है।

6. जोखिम उठाने का साहस आता है।

7. शारीरिक उपयुक्तता तथा व्यक्तिगत जागरूकता एवं इसके महत्व का पता चलता है।

8. ऊँचा मनोबल पैदा होता है।

निष्कर्ष :–

जम्मू एवं कश्मीर में आंतरिक उथल पुथल तथा पूर्व में उग्रवाद, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा तथा पश्चिमी बंगाल आदि में जनता में बढ़ती असंतोष की भावना, देश के शहरी क्षेत्रों में बढ़ती उग्रता, साम्प्रदायिक तनाव एवं उपद्रवता आदि सभी उपरोक्त तत्व देश के विभिन्न भागों में कानून एवं व्यवस्था को जाम कर हमारे लोकतंत्र के लिए भारी चुनौती बन गए हैं। आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने में आ रही नई चुनौतियों से प्रभावी रूप से निपटने के लिए कार्मिकों को मात्र अधिक अर्थपूर्ण तथा कार्यपरक प्रशिक्षण की जरूरत ही नहीं बल्कि आतंकवाद प्रभावित क्षेत्र में आतंकवादियों द्वारा उपयोग किये जा रहे नित नए हथियारों से मिलते जुलते आधुनिक हथियार भी मुहैया कराने की जरूरत है। प्रत्येक स्तर के अधिकारी में अपने कर्त्तव्य निर्वाह हेतु उच्च कोटि का मनोबल तथा प्रभावी नेतृत्व होना जरूरी है। प्रशिक्षण कार्मिकों में समस्याओं से निपटने का साहस पैदा करता है ताकि वे बदलते राष्ट्रीय परिवेश में अपने आप को परिस्थितियों के अनुरूप ढाल सके। अभी हमारे सामने भारी दबाव तथा तनाव का समय आने वाला है, इसलिए सही तरह से प्रशिक्षत, उच्च अभिप्रेरणत तथा उचित अधिष्ठत कार्मिक हमारी सबसे बड़ी धरोहर हो सकते हैं।



सात्रिया नृत्य करती प्रख्यात नत्यागंना श्रीमती प्रतिशा सुरेश


रजि. न. 4767/87

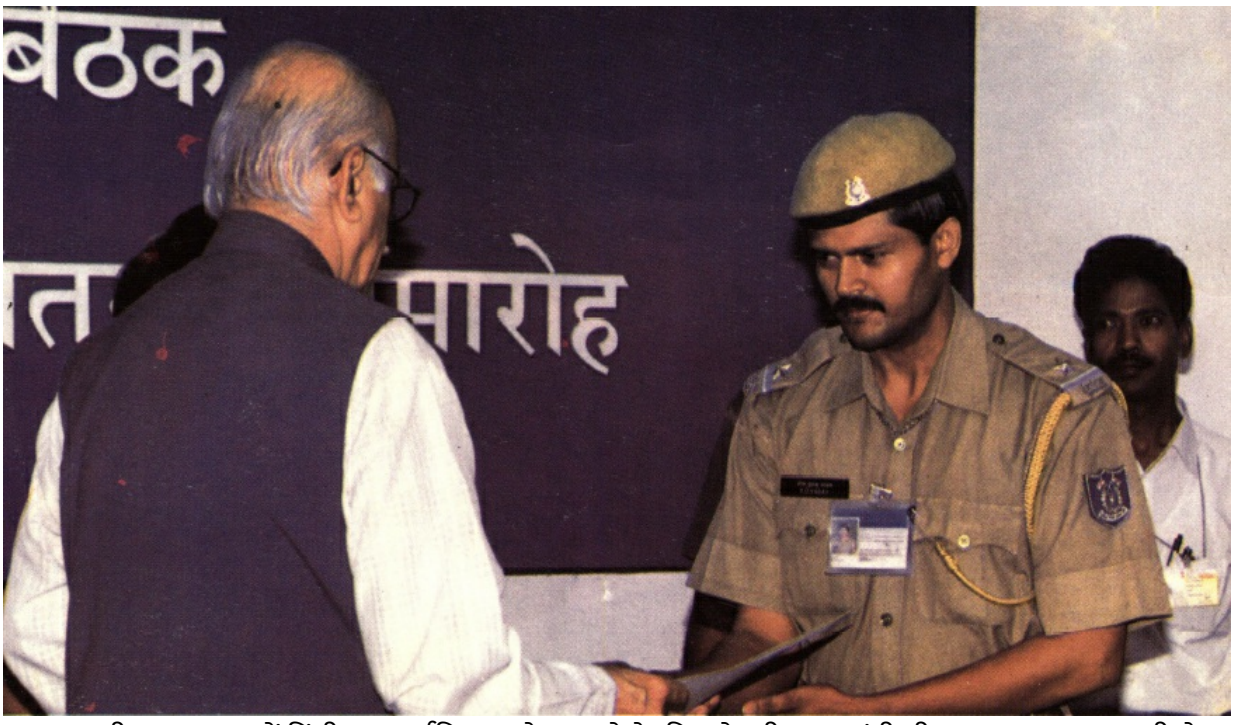
सी. आर. पी. एफ.

समाचार

31 अगस्त, 2002



हिन्दी दिवस पर विशेष



सरकारी काम काज में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने के लिए केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी से प्रशंसा प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए बल मुख्यालय के स. उ. नि (मं) रामदरस यादव



पूर्व केन्द्रीय विधि व न्याय मंत्री श्री अरूण जेटली से सरकारी काम काज में हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए प्रशंसा पत्र प्राप्त करते मध्य सेक्टर मुख्यालय, लखनऊ के स.उ.नि (मं) मनोबल मेथानी,

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड-15 अंक-5

31 अगस्त, 2002
9 भाद्र, शक 1924

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1,सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ोदा कलां, नई दिल्ली-**72**



इस अंक में

1. राजभाषा संदेश

2. राष्ट्रीय एकता एवं भाषा

3. भारत संघ की राजभाषा से सबंधित महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रावधान- अधिनियम, नियम तथा अपेक्षाएँ और दायित्व

4. विश्व की भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग

5. इंटरनेट शब्दावली का हिन्दी रूपान्तरण

6. हिन्दी का सरलीकरण

7. भारत की प्रगति और राजभाषा

8. राजभाषा “हिन्दी” की उपयोगिता एवं आवश्यकता

9. राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति

10. संगणक

11. राजभाषा के विकास के लिए साहित्य और मातृभाषा का विकास जरूरी

12 कविता

13. राष्ट्रभाषा “राजरानी हिन्दी”

14. ग्रुप केन्द्र, केरिपु बल, जालंधर में हिन्दी कक्षाओं का आयोजन

15. संपर्क और सरकारी काम-काज की भाषा-हिन्दी एवं कविताएँ

16. राजभाषा बनाम मानसिकता

17. राष्ट्रभाषा के विषय में महापुरूषों के विचार

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-संपादक

राजभाषा संदेश



जैसा कि आप सभी जानते हैं *14* सितम्बर, *1949* को भारत की संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसलिए प्रतिवर्ष *14* सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। वास्तव में हिंदी दिवस सभी भारतीय भाषाओं का दिवस तथा भाषाओं के आपसी सौहार्द का दिवस भी है। हिंदी एक बहुत ही सरल भाषा है, जिसे सभी आसानी से समझ और बोल सकते हैं, लेकिन कुछ लोगों को यह भ्रम है कि हिंदी एक जटिल तथा कठिन भाषा है। वास्तव में कोई भाषा कठिन नहीं है। आवश्यकता है भाषा के प्रति मानसिकता की, सीखने की लगन की, लिखने पढ़ने के अभ्यास की। जब तक हिंदी के प्रति लोगों की मानसिकता में परिवर्तन नहीं होगा, लोग इसके प्रयोग से दूर भागते रहेंगे। हमारे स्वतंत्रता संग्राम की भाषा होने का श्रेय राजभाषा हिंदी को ही जाता है। एक अन्य स्मरणीय तथ्य यह है कि केन्द्र में हिंदी को राज सिंहासन पर विराजमान करने का श्रेय प्रमुखतः उन भारतीय प्रतिभाओं को जाता है, जो अहिंदी भाषी क्षेत्रों से थे तथा जिन्होंने राष्ट्रीय सूत्र तथा संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के महत्व को सर्वप्रथम पहचाना था।

आज हम, सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में अपने दिन-प्रतिदिन के कामकाज में मशीनों और इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों जैसे कंप्यूटर आदि पर बहुत निर्भर करते हैं। आने वाले समय में यह निर्भरता और बढ़ेगी। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि इन उपकरणों को अपनी भाषाओं से युक्त करें ताकि भविष्य में इन उपकरणों तथा हमारे कार्यों के बीच कोई भाषाई गतिरोध उत्पन्न न हों। इसके लिए यह आवश्यक है कि कंप्यूटर संबंधी विकास कार्यों के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के

साफ्टवेयर तैयार किए जाएं। इससे हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग का मार्ग प्रशस्त होगा।

हिंदी में विश्व मानव की चेतना भरी पड़ी है। यह संगठन और स्नेह की भाषा है। इसमें अनेकता में एकता परिलक्षित होती है। भारतीय संस्कृति का इसमें अनुपम भण्डार है। यह ज्ञान-विज्ञान की भाषा होने के साथ ही केन्द्र सरकार के प्रशासन की भाषा भी है तथा इसमें अपने विचारों को व्यक्त करना आसान है।

मैं आज, हिंदी दिवस के अवसर पर बल के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु एकजुट होकर प्रयास करें और वे अपने कार्यालय/अनुभाग में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा हिंदी कार्य को हिंदी पखवाड़े तक ही सीमित न रखकर उसे दैनिक कामकाज की आदत के रूप में अपनाएं और हिंदी में कार्य करके राष्ट्र का गौरव बढ़ाएं। इस दिवस के शुभ अवसर पर मैं बल के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

सीआरपीएफ सदा अजय, भारत माता की जय।

(डा० त्रिनाथ मिश्र)
मानिदेशक, केरिपु बल

राष्ट्रीय एकता एवं भाषा

डी.जी. महापात्र
जन सम्पर्क अधिकारी, केरिपु बल

प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण षड् ऋतुओं का संगम स्थल, कल-कल करती नदियाँ और विशाल समुद्रों की सीमा "ख" रेखा से बँधा हिमालय जैसे महान पहाड़ियों का स्वामी "भारतवर्ष" हमारी प्रिय मातृभूमि है। मातृभूमि जिसके रज में लोट-लोट होकर हमने अपना बचपन बिताया, घुटने के बल चलना सीखा, जिसके अन्न एवं जल का पान करके हम सामर्थ्यवान बने, वह स्वर्ग से भी सुन्दर पथ्वी हिन्दस्तान की है।

"जननी जन्म भूमिस्य स्वर्गादवि गरीयसी"

अर्थात माँ के समान मातृभूमि भी सुख देने वाली होती है, इसलिए उन दोनों की

महानता को स्वर्ग से भी बढ़कर आंका गया है। जिस प्रकार हम माता और मातृभूमि के सम्मुख श्रद्धा से नत-मस्तक होते हैं उसी प्रकार राष्ट्रभाषा भी वन्दना के योग्य है।

वर्तमान काल में राष्ट्रीय एकता का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि आज चारों ओर से राष्ट्रीय एकता को खण्डित करने के स्वर मुखरित हो रहे हैं। राष्ट्रीय एकता द्वारा ही कोई भी देश एक राष्ट्र के रूप में जीवित रह सकता है। आज भारत विश्व का सबसे बड़े लोकतंत्रों में गिना जाता है। किन्तु यह हमारे देश की विडम्बना है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के 54 वर्ष बीत जाने के बाद भी हम देश की राजभाषा को पूरी तरह लागू नहीं करवा सके।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए दूसरों से संबंध बनाने के लिए वह किसी भाषा या बोली को अपना माध्यम बनाता है और उसी भाषा के द्वारा वह अपने भावों एवं विचारों को दूसरों तक पहुँचाता है। भाषा का जन्म समाज से ही होता है। भाषाहीन समाज की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। विचारों के सम्प्रेषण के समय व्यक्ति अपनी भाषा के माध्यम से अपनी संस्कृति विश्वास एवं आस्थाओं को दूसरों तक पहुँचाता है। मनुष्य अपनी बात जितनी आत्मीयता एवं गहराई के साथ अपनी भाषा के माध्यम से सम्प्रेषित कर सकता है, उतनी किसी अन्य भाषा के द्वारा नहीं कर सकता।

भाषा मानव भाव की अभिव्यक्ति का एक प्रमुख साधन है जिसके अभाव में वह पशु समान है। व्यापक रूप में विचार विनियम के साधनों को भाषा कहा जाता है। भाषा ज्ञान प्राप्ति का एक मुख्य साधन भी है। भाषा द्वारा ही किसी भी जाति या समाज का अस्तित्व सुरक्षित रहता है, किन्तु भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं वरन् अर्जित सम्पत्ति है। भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है। भाषा का कोई अंतिम स्वरूप नहीं, वह चिरपरिवर्तनशील है। मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में भाषा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसलिए "ऐ पैई" नामक विद्वान ने कहा है "भाषा एक कहानी है।" महर्षि पंतजलि ने यह परिभाषा इस प्रकार व्यक्त की है "भाषा वह व्यापार है जिससे हम वर्णनात्मक या व्यक्त शब्दों के द्वारा अपने विचार प्रकट करते हैं।

हमारे देश में सौ से भी अधिक भाषाएँ एवं बोलियाँ बोली जाती हैं उनमें से कई भाषा तो साहित्य की दृष्टि से भी समृद्ध है यथा बंगला, तामिल, तेलगू, गुजराती, मराठी इत्यादि किन्तु फिर भी अगर सम्पूर्ण रूप से गणना की जाए तो हिन्दी भाषी प्रदेश का क्षेत्र सबसे विस्तृत है। हिन्दी भाषा की लिपि का सरल एवं सुबोध रूप शीध्र ही समझ में आने वाला है। यूँ तो भारत की सभी भाषाएँ संस्कृत भाषा से प्रभावित हुई है। संस्कृत भाषा में वह महान् शक्ति निहित है जो इन सभी भाषाओं को एक सूत्र में बांधे रखती है। आज संस्कृत की भांति हिन्दी भी देवनागरी लिपि के द्वारा अन्य भाषाओं के साथ-साथ तालमेल बनाए बैठी है।

उत्तरी-पूर्व भारत की सभी भाषाएँ- असमिया, मणिपुरी, उड़िया, बांग्ला, कश्मीरी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, कुंकणी, हिन्दी तथा सिन्धी भाषाओं में स्पष्ट ही निकट संबंध हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह सभी भाषाएँ एक ही माँ की बेटियाँ है और उनके रगों

में एक खून बहता है। इनमें से यादे किसी एक भाषा का ज्ञान प्राप्त हो तो थोड़े प्रयास के साथ अन्य भाषाओं को समझा जा सकता है। चार दक्षिणी भाषाओं - कन्नड़, तेलगू, तमिल और मलयालम की स्थिति कुछ भिन्न है। इन भाषाओं का वैदिक अथवा संस्कृत भाषा से कोई उत्तर भारतीय भाषाओं की तरह सीधा संबंध नहीं है। किन्तु देश की दीर्घ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्परा की एकता के फलस्वरूप यह सभी भाषाएँ संस्कृत से अधिक प्रभावित हुई हैं। आज इन दक्षिणी भाषाओं में संस्कृत शब्दों की इतनी बहुलता है कि यह सभी भाषाएँ उत्तरी भाषाओं के निकट प्रतीत होती है। अतः हमारे लिए यह अत्यन्त विवेकहीन होगा कि हम भारत की किसी भाषा को मातृभाषा तथा उसकी अन्य भाषा को परायी एवं उनके बोलने वालों को विदेशी माने। भारतीय भाषाएं बुनियादी तौर पर एकता का माध्यम होना चाहिए, घृणा का कारण नहीं।

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक निजी भाषा होती है, जिसे राष्ट्रभाषा का नाम दिया जाता है। उस भाषा को देश की अधिकांश जनता जानती, समझती अथवा बोलती है। इसी भाषा का प्रयोग प्रशासनिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यों में प्रमुख रूप में किया जाता है। जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति दूसरे की आत्मा उधार लेकर जीवित नहीं रह सकता उसी प्रकार कोई भी राष्ट्र विदेशी भाषा के सहारे जीवित नहीं रह सकता। राष्ट्रभाषा के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए कविवर **रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा थां कि**– "भाषा कोई छाता या ओवरकोट नहीं जिसे माँग माँग कर अपना काम चलाया जा सके।"

किसी भी राष्ट्र की निजी भाषा वही भाषा होती है जिसका उद्गम उस देश में हुआ हो जिसका उस देश की संस्कृति सभ्यता एवं साहित्य से गहन संबंध हो, जो बोलने समझने में सरल हो और जिसके बोलने वाले देश में अधिकांश पाए जाते हैं, वही उस राष्ट्र की निजी भाषा होती है और इस निजी भाषा के उन्नति की बात साहित्य के आधुनिक युग के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने की है:-

"निज भाषा उन्नति अहै
सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा उन्नति के
मिटे न हिय के शूल।

इस कसौटी के अनुसार हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा बन सकती है। हिन्दी को किसी ने राष्ट्रभाषा बनाया नहीं वह तो उस सिंह की तरह भारत की राष्ट्रभाषा बनी है जो अपने पौरूष एवं पराक्रम से वन का राजा कहलाता है।

हिन्दी राष्ट्रभाषा ही भारत स्वतंत्र होने से पूर्व भारत की सम्पर्क भाषा थी। भिन्न-भिन्न प्रान्तों के लोग जब परस्पर सम्पर्क में आते हैं तो वे एक दूसरों की प्रान्तीय भाषा नहीं समझते हैं। ऐसे समय में वह किसी भाषा का आश्रय लेते हैं जिसका थोड़ा बहुत ज्ञान दोनों को हो।

हिन्दी को निज भाषा मानने से कदापि यह तात्पर्य नहीं कि हम अन्य देशी या विदेशी भाषाओं को बिल्कुल भुला दें। दूसरी भाषाओं का ज्ञान भी अत्यन्त आवश्यक

है। अंग्रेजी भाषा के समृद्ध साहित्य एवं वैज्ञानिक विकास को जानने के लिए हमें उस भाषा का ज्ञान होना चाहिए, किन्तु मात्र उसी भाषा के ज्ञान से हम अपने ही देशवासियों के बीच अजनबी बने रहेंगे यदि हम अपनी ही भाषा को नहीं जानते तो हम अपने ही कम पढ़े-लिखे परिवार वालों से बात तक नहीं कर पाएँगे। उनका अपने प्रति और अपना उनके प्रति विचारों को अपने मन में ही संजोये रखेंगे और उद्‌घटित नहीं कर पायेंगे।

हिन्दी को अन्य भाषाओं के समीप लाने के लिए इसमें कुछ सरल शब्दावली का प्रयोग करके, इसे एक हिन्दुस्तानी भाषा का रूप प्रदान किया जा सकता है। किन्तु राष्ट्र की उन्नति के लिए हमें हिन्दी भाषा को जानना ही होगा अन्यथा हम अपनी संस्कृति, साहित्य एवं महानता से हाथ धो बैठेंगे। राष्ट्र भाषा ही किसी भी राष्ट्र की महत्ता का प्रतीत होती है। किसी भी राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने वाला सूत्र होता हैं।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का महत्व दिलवाने हेतु अपने विचार प्रकट करते हुए **महात्मा गाँधी ने यह कहा था कि:–**

"आज अगर भारत को एक राष्ट्र बनाना है चाहे कोई माने या न माने राष्ट्र भाषा हिन्दी ही बन सकती है क्योंकि जो स्थान आज हिन्दी को प्राप्त है वह किसी अन्य भाषा को कदापि नहीं मिल सकता।"

भारत संघ की राजभाषा से संबंधित महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रावधान-अधिनियम, नियम तथा अपेक्षाएँ और दायित्व

संकलन : हंस राज गुगनानी,
सूबेदार मेजर (व.हिं.अनु.)

भारत का संविधान भाग

17, अनुच्छेद-343 (1)

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा जैसे -1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0 आदि।

The Constitution of India Part-17, Article 343 (1)

The Official Language of the Union shall be Hindi in Devanagari script. The form of numerals to be used for the official purposes of the union shall be the international form of Indian numerals viz; 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0.

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा की उपधारा(3) हिन्दी और अंग्रेजी भाषा दोनों ही:-

1. संकल्पों, सामान्य आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेस विज्ञप्तियों के लिए,

2 संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज-पत्रों के लिए,

3. कार्यालय द्वारा निष्पादित संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली गई अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञापत्रों सूचनाओं और निविदा प्रारूपों के लिए प्रयोग में लाई जाएगी।

Sub-Section (3) of Section 3 of the Official Languages Act, 1963 (As amended, 1967)

Both Hindi and the English language shall be used for-

(i) resolutions, general orders, notifications, administrative or other reports of press communiques;

(ii) administrative and other reports and official papers laid before a House or the Houses of parliament;

(iii) Contracts and agreements executed, and licences, permits, notices and forms of tenders issues.

राजभाषा नियम (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग), 1976 (यथा संशोधित, 1987)

नियम 2

(च). “क्षेत्र क”

बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल राज्य अंडमान और निकाबार द्वीप समूह और दिल्ली संध राज्य क्षेत्र।

(छ). “क्षेत्र ख”

गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य और चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र।

(ज) “क्षेत्र ग”

खण्ड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र।

The Official Languages (Use for Official purposes of the Union Rules, 1976 (as amended, 1987)

Rules 2

(f): “Region A”

States of Bihar, Jharkhand, Haryana, Himachal Pradesh, Madhya Pradesh, Chhatisgarh, Rajasthan, Uttar Pradesh and Uttaranchal and the Union Territories of Andaman and Nicobar Islands and Delhi.

(g): “Region B”

States of Gujrat, Maharashtra and Punjab and the Union Territory of Chandigarh.

(h): “Region C”

States and the Union Territories other than those referred to in clause (f) and (g).

नियम 5

हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर हिंदी में दिये जाएंगे।

Rule-5

Replies to communications received in Hindi shall be in Hindi.

नियम 6

हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जायेगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिंदी और अंग्रेजी दोनों में ही तैयार की जाती है, निष्पादित की जाती है और जारी की जाती है।

Rule-6

Use of both Hindi and English-

Both Hindi and English shall be used for all documents referred to in sub-section (3) of section 3 of the Act and it shall be the responsibility of the

persons signing such documents to ensure that such documents are made, executed and issued both in Hindi and English.

नियम 11

मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया साहित्य, लेखन सामग्री आदि –

1. कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल संविदाएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिंदी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जायेगा और प्रकाशित किया जाएगा।

2 कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक हिंदी और अंग्रेजी में होंगे।

3. कार्यालय के प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी।

Rule-11

Manuals, codes, procedural literature, articles of stationery etc.

(1) All manuals, codes and other procedural literature relating to offices shall be printed or cyclostyled, as the case may be, and published both in Hindi and English in diglot form.

(2) The forms and heading of registers used in office shall be in Hindi and English.

(3) All name plates, sign boards, letter heads and inscription on envelopes and other items of stationery written, printed or inscribed for use in office shall be in Hindi and in English.

नियम १२

अनुपालन का दायित्व –

1. प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह –

(क) यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और नियमों के उपबन्धों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है, और

(ख) इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

2 केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के समयक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों को समय-समय पर आवश्यक निर्देश जारी कर सकती है।

Rule-12

Responsibility for compliance -

(1) It shall be the responsibility of the administrative head of each office-

(A) to ensure that the provisions of the Act and these rules are properly complied with: and

(B) to devise suitable and effective check-points for the purpose.

(2) The Central Government may from time to time issue such directions to its employees for the due compliance of the provisions of the Act and these rules.

ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की *34*वीं अखिल भारतीय टिप्पणी/प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में उ. नि.*(*मं*)* राजीव कुमार अरोड़ा को हिंदी भाषी प्रथम पुरस्कार रू. *751/*चल वैजयंती/पदक/प्रशस्ति पत्र तथा उ.नि. *(*मं*)* नवनीत कुमार चोपड़ा व सं.उ.नि.*(*मं*)* अनिल कुमार द्विवेदी को क्रमशः रू. *101/-* और रू. *75/-* केन्द्र प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार/प्रशस्ति पत्र दिनांक *27-6-2002* को आयोजित समारोह में केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्री माननीय श्री अरूण जेटली, द्वारा प्रदान किए गए।

सरकारी कामकाज में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य से महानिदेशालय द्वारा पहली बार लागू की गई "सर्वोत्तम सेक्टर" राजभाषा रनिंग शील्ड के परिपेक्ष्य में उत्तरी सेक्टर, केरिपु बल, नई दिल्ली द्वारा 1-10-2000 से 31-7-2001 तक की अवधि में सर्वाधिक काम हिन्दी में करने तथा राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए "सर्वोत्तम सेक्टर" घोषित किया गया तथा 62वी सी.आर.पी.एफ. वर्षगांठ के दौरान 29/30 - 12-01को आयोजित सीनियर अधिकारी सम्मेलन में बल के महानिदेशक ने उत्तरी सेक्टर को "सर्वोत्तम सेक्टर" राजभाषा रनिंग शील्ड प्रदान की।

विश्व की भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग

डा. परमानन्द पांचाल

भाषा विचारों के आदान प्रदान का माध्यम होती है, जिन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए कुछ भाषा संकेतों का सहारा लिया जाता है, जो लिपि चिह्न कहलाते हैं। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न भाषाओं के लिए अनेक प्रकार की लिपियों का

आविष्कार किया गया। ये लिपियां अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को व्यक्त करने का साधन बनी। आज वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ विश्व इतना छोटा हो गया कि हमें विभिन्न देशों के साथ निकट का सम्पर्क रखना पड़ता है। किन्तु विभिन्न लिपियां सभी भाषाओं की ध्वनियों को व्यक्त करने में इतनी समर्थ नहीं हैं।

पाश्चात्य साहित्य और संस्कृति के प्रसार के साथ-साथ रोमन लिपि का भी प्रचार प्रसार बढ़ा, किन्तु क्या रोमन लिपि विभिन्न भाषाओं की ध्वनियों को व्यक्त करने में सक्षम है? इसका उत्तर शायद हम इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध साहित्यकार जार्ज बर्नाड शा द्वारा की गई वसीयत में व्यक्त इन विचारों में ढूंढ सकते है कि "मैं अपनी सम्पत्ति का एक अंश ऐसे व्यक्ति को देना चाहता हूँ जो रोमन लिपि में आवश्यक सुधार कर इसे आदर्श लिपि बना सके"। इसी प्रकार के विचार उन विद्वानों ने भी रखे हैं जिन्हें रोमन लिपि की कमियाँ खलती रही हैं। अनके विदेशी विद्वानों ने भी नागरी लिपि को सर्वश्रेष्ठ लिपि बताया है। व्यूलर, आर्नले, हुष्य, मेकडानल, थामस, आइजैक टेलर आदि ने नागरी लिपि की वैज्ञानिकता की प्रशंसा की है। आइजैक पिटमैन लिखते हैं "संसार में यदि कोई पूर्ण अक्षर है, तो देवनागरी के हैं।" प्रो. मोनियर विलियम्स ने कहा था देवनागरी अक्षरों से बढ़कर पूर्ण और उत्तम अक्षर दूसरे नहीं हैं। जान कास्इट तो यहाँ तक कहते है" मानव के मस्तिष्क से निकली हुई वर्णमाला नागरी सब से पूर्ण वर्णमाला है।" सर विलियम जोन्स नागरी को रोमन की अपेक्षा श्रेष्ठ बताते हुए कहते है "हमारी भाषा अंग्रेजी की वर्णमाला तथा वर्तनी अवैज्ञानिक तथा किसी रूप में हास्यास्पद भी है।"

देवनागरी एक पूर्ण वर्णमाला

देवनागरी में प्रायः सभी ध्वनियों के लिए संकेत चिह्न है जो लगभग पचास से अधिक हैं। जो कुछ बोला जाता है प्रायः वही लिखा भी जाता है। इस में एक ध्वनि के लिए एक ही लिखित रूप स्वीकार किया गया है। रोमन लिपि की भांति यह नहीं कि 'क' ध्वनि की अभिव्यक्ति के लिए **C, K, CH, Q** तथा 'ज' ध्वनि के लिए **J, G, Z** आदि कई कई वर्ण मिलते हैं। नागरी में एक ठीक वर्ण से एक ही ध्वनि निकलती है। रोमन आदि में ऐसा नहीं है। जैसे – **'U'** वर्ण **But** में 'अ' ध्वनि, **Put** में 'उ' ध्वनि, **Unit** में 'यू' ध्वनि लगभग यही स्थिति फारसी लिपि में भी है। 'ज' ध्वनि के लिए (जीम) (जे) (जाल) (ज़्वाद) (जोय) आदि हैं। (सीन) और (स्वाद) की ध्वनियों में अन्तर बताना कठिन है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रोमन लिपि में 'विश्व लिपि' के रूप में स्वीकार्य किए जाने की क्षमता नहीं है। फिर भी, विश्व लिपि में स्वीकार किए जाने की दृष्टि से सबसे अधिक गुण संभवतः देवनागरी लिपि में ही मिल सकते हैं। इस तथ्य पर सबसे अधिक चिन्तन आचार्य विनोबा भावे का रहा है, जिन्होंने देवनागरी लिपि को न केवल इस देश की भाषाओं के लिए उपयोगी बताया था, बल्कि देश के बाहर के पड़ोसी देशों और विश्व की अन्य भाषाओं के लिए नागरी लिपि को सुविधाजनक माना था। भारतीय

भाषाओं की लिपियों के सम्बन्ध में उनका कहना था कि–

"हिन्दुस्तान की एकता के लिए हिन्दी भाषा जितना काम करेगी उससे कहीं अधिक काम देवनागरी लिपि देगी/ इस लिए मैं चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की समस्त भाषाएं देवनागरी में भी लिखी जाएं/ लिपि सब भाषाओं में चले इसका मतलब दूसरी लिपियों का निषेध नहीं है/ दोनों लिपियाँ चलेंगी/"

विनोबा जी चाहते थे कि सभी भारतीय भाषाएं अपनी लिपियों के साथ-साथ वैकल्पिक लिपि के रूप में देवनागरी का भी प्रयोग करें। इससे देश की भाषायी एकता में सहायता मिलेगी।

विनोबा भावे ने नागरी लिपि को जहां इस देश की भाषाओं के लिए उपयोगी बताया, वहीं देश से बाहर पड़ोसी देशों की भाषाओं के लिए भी इसे सुविधाजनक माना था। वे चाहते थे कि नागरी लिपि की वैज्ञानिकता और सरलता को देखते हुए यदि पड़ोसी देश भी इस लिपि का प्रयोग करें तो अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना में अवश्य वृद्धि होगी।

उन्होने एक लेख में जापानी और नेपाली तथा चीनी आदि भाषाओं का भी उल्लेख किया। उन्होने कहा कि पड़ोसी देश नेपाल की भाषा नेपाली है किन्तु इसकी लिपि नागरी है। इस प्रकार दोनों देशों की पारस्परिक संस्कृति और सामाजिक सद्भावना का बहुत कुछ श्रेय इस लिपि को भी है। जापानी भाषा के संबंध में उन्होंने कहा "जापानी भाषा की लिपि चित्रमय लिपि है, इसलिए इसके पास चित्रों की संख्या लगभग दो हज़ार है जिसे सीखना सरल काम नहीं है। इसलिए वे लोग नई लिपि की खोज कर रहें हैं। विनोबा जी ने जापानी भाषा और उसकी संरचना के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा "भारतीय और जापानी भाषा की बनावट और एकरूपता की दृष्टि से लगभग समान है। इसमें प्रीपोजिशन (पूर्व प्रत्यय) नहीं है। पोस्ट पोजीशन (उत्तर प्रत्यय) है इस रूप में ऐसा नहीं है "कोठरी में ऐसा चलता है। वाक्य के पहले कर्ता फिर कर्म और फिर क्रिया ऐसा चलता है। मतलब शब्द जापानी का तजुर्मा करें तो हिन्दी मराठी में हो सकता है जापानियों को 'ल' बोलना कठिन होता है 'र' बोलना कठिन होता है। बचपन में राम राम बोलने के लिए कहते तो मैं लाम लाम कहता। ईंग्लिश के कारण जापानी शब्द गलत ढंग से हमारे पास आते हैं। 'टोकियो का उच्चारण है तोकियो। जापानी कोश में पहला शब्द है 'आई' मराठी में भी वह शब्द है। उसका मतलब है 'माता' और जापानी में उसका अर्थ है 'प्रेम' तो बहुत समानता है। जापानी वर्णमाला का क्रम ठीक संस्कृत वर्णमाला के क्रम पर बना है। वाक्य विन्यास और उच्चारण की दृष्टि से भी हिन्दी और जापानी खूब मिलती जुलती है। जापानी विद्वान क्यूबा दोई भी जापानी के लिए नागरी लिपि के पक्षधर थे।

यही बात चीनी भाषा के सम्बन्ध में भी है। यदि चीनी और जापानी देवनागरी लिपि को अपना लें तो इसमें उनका भी भला है। चीनी भाषा के संम्बंध में मैं अपने एक मित्र द्वारा सुनाए गए एक संस्करण का उल्लेख करना चाहता हूँ जिसमें उन्होंने बताया था कि जब चीन के प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई भारत यात्रा पर आए थे, तो कहा जाता है

कि उन्होंने चीनी लिपि की जटिलता को देखते हुए चीनी भाषा के लिए नागरी लिपि अपनाए जाने की संभावनाओं के संबंध में पं. जवाहर लाल नेहरू के सामने अपने विचार रखे थे, किन्तु इसकी औपचारिक अभिव्यक्ति आज कहीं नहीं मिलती।

उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ प्राचीनकाल से ही भारत के बड़े निकट संबंध रहे हैं। नेपाल, चीन इन्डोनेशिया, जावा, सुमात्रा, बोनियो, वियतनाम, म्यांमार, थाईलैंड तथा मंगोलिया, जापान और कोरिया तक हमारे गहन सांस्कृतिक सम्बंध रहें है। बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ-साथ भारतीय दर्शन और साहित्य इन देशों में पहुंचा और व्यापारिक तथा राजनैतिक सम्बंध भी काफी प्रगाढ़ रहे। इन भाषाओं की शब्दावली में भारत से गए अनेक समान शब्द आज भी उपलब्ध हैं। भाषा-इण्डोनेशिया में भारतीय संस्कृति के अनेक शब्द आज भी विद्यमान हैं। इन देशों की भाषाओं की लिपियां भी भारत की प्राचीन ब्राह्मी लिपि से ही निकली हैं और उनकी वर्णमाला का क्रम भी प्रायः वही है। इस प्रकार इन दोनों में यदि देवनागरी लिपि का भी प्रचार किया जाए तो ये देश स्वेच्छा से स्वंय ही इस लिपि को एक वैकल्पिक लिपि के रूप में ग्रहण करने के लिए तत्पर हो सकते हैं।

जहां तक पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देश का सम्बंध है वहां की राजभाषा उर्दू है, जो एक प्रकार से हिन्दी की विशेष शैली या सहोदर है। यदि इस भाषा को देवनागरी लिपि में भी लिखा जाए तो बड़ी सरलता होगी क्योंकि भारत में उर्दू का साहित्य अब देवनागरी में भी लोकप्रिय होता जा रहा है। उर्दू तो मूलतः भारत में ही जन्मी और विकसित भाषा है। इससे भारत और पाकिस्तान के सम्बंधों में भी सौहार्द आएगा। एक ईरानी विद्वान ने उर्दू के सम्बंध में अपनी पुस्तक 'आउट ऑफ इस्लामिक कल्चर' खंड 1, पृ. 160 में लिखा है कि यदि उर्दू लेखक नागरी लिपि को अपना लें, तो भारत में ही उर्दू के तीव्र गति से प्रसार कार्य की दिशा में महान सेवा होगी।

हमें सबसे पहले इस कार्य को विनोबा भावे द्वारा बताए मार्ग पर चलते हुऐ नेपाल जैसे देशों के सहयोग से आगे बढ़ाना होगा। नेपाल सार्क अर्थात 'दक्षेस देशों का मुख्यालय है और दक्षिण एशिया के देशों की बैठकें प्रायः यहां होती हैं और उनके साथ पत्राचार नेपाल स्थित कार्यालय से ही होता है। इसलिए इस मुख्यालय के देशों की नागरी लिपि के समीप लाने के काम करने की काफी गुंजाइश है।

नागरी लिपि परिषद् ने जहां भारतीय भाषाओं के लिए नागरी लिपि में पुस्तकें तैयार करने की योजना बनाई है। पड़ोसी भाषाओं के लिए भी उसी प्रकार की योजनाएं बनाए जाना श्रेयस्कर होगा। नागरी लिपि परिषद् ने भाषा-इण्डोनेशिया, आधुनिक अरबी, फारसी, सिंहल स्वयं-शिक्षक जापानी भाषा प्रवेश, आधुनिक फारसी, हिन्दी-चीन प्राइमर, इतालवी भाषा-प्रवेश, तथा रूसी भाषा-प्रवेशिका जैसे उपयोगी ग्रन्थों की रचना की है। यह आवश्यक है कि हमें यथावश्यक नागरी में विशेष ध्वनियों के लिए और चिह्न में बनाने होंगे। त्रिनिडाड और टुबैगों में 1996 में आयोजित पांचवे विश्व हिन्दी सम्मेलन में भी नागरी लिपि के प्रचार प्रसार पर विशेष बल दिया गया था।

साभार
-राजभाषा, पुष्पमाला भारती

इंटरनेट शब्दावली का हिन्दी रूपान्तरण

-कृष्ण कुमार गुप्त

प्राचीन समय में समाचारों के आदान-प्रदान में बड़ी कठिनाई होती थी। विश्व स्तर पर समाचार भेज पाना तो दूर एक शहर से दूसरे शहर तक भी समाचार भेजने में बड़ी कठिनाई थी। आजकल की तरह समाचार भेजने के लिए कोई विशेष साधन उपलब्ध नहीं थे। पहले लोग समाचार भेजने के लिए पशुओं, पक्षियों का सहारा लेते थे। पशुओं और पक्षियों को समाचार भेजने के लिए प्रशिक्षित किया जात था। पत्र लिखकर उनके गले में बांध दिये जाते थे और उनको गन्तव्य स्थान तक जाने के लिए छोड़ दिया जाता था। इन माध्यमों से पत्र भेजने में एक तो अधिक समय लगता था दूसरे यह संभावना रहती थी कि रास्ते में पत्र ले जाने वाले पशु या पक्षी के साथ दुर्घटना हो जाय तो पत्र पहंचते ही नहीं थे। पत्र किसी अवांछित व्यक्ति के हाथ भी लग जाते थे। शनैः शनैः पत्राचार शीघ्र और सुरक्षित रूप से भेजने के लिए अनेक साधन खोजे गए। पत्र विभिन्न माध्यमों से देश-विदेश के शहरों में भेजे जाने लगे।

शिक्षा के विकास के साथ-साथ मनुष्य की सुविधा के लिए प्रत्येक क्षेत्र में अनेक अनुसंधान और शोध कार्य प्रारंभ किए गए। वैज्ञानिकों ने आज पृथ्वी पर हमको ऐसी सुख-सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं जिनकी प्राचीन समय में कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। इन सुविधाओं का भोग करते समय आज भी हमको आश्चर्य होता है और यह जीवन हमको एक दिव्य स्वरूप जैसा प्रतीत होता है।

संचार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान एवं शोध कार्यों ने हमारे जीवन को ही बदल डाला है तथा लोग आज बड़ा सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। मनुष्य के जीवन में संचार साधनों का विशेष महत्व है। संचार के क्षेत्र में हुए अनुसंधानों से प्रत्येक क्षेत्र में चहुँमुखी विकास हुआ है। चाहे वह व्यापारिक क्षेत्र हो या शिक्षा का क्षेत्र हो या चिकित्सा का क्षेत्र हो, यातायात के क्षेत्र हो या प्राकृतिक आपदा से निपटने का मामला हो, संचार सुविधाओं ने सब कुछ बहुत सरल बना दिया है तथा मनुष्य किसी भी क्षेत्र में वांछित कार्य करने में समर्थ हैं।

आज से दो दशक पूर्व की बात करें तो टेलिफोन सुविधा किसी समृद्ध व्यक्ति के यहां होती थी और टेलिफोन को एक स्टेटस सिम्बल माना जाता था। आज हम देखते हैं कि टेलिफोन घर-घर में दिखाई देता है। दुकानों में, गलियों में, बाजारों में जगह-जगह पी.सी.ओ., एस.टी.डी, आई.एस.डी, लगे हुए हैं। जहां से हम देश-विदेश में

अपने रिश्तेदारों मित्रों, डाक्टरों, व्यापारियों से बात कर सकते हैं। अब तो 200 किलोमीटर तक बात करने के लिए एस टी डी की भी आवश्यकता नहीं है। घर बैठे ही 200 किलोमीटर तक 2 रूपये में बातें की जा सकती है। इसके अतिरिक्त फैक्स सुविधा भी उपलब्ध है जिसके माध्यम से कोई बड़ा पत्र, दस्तावेज आदि कुछ ही क्षण में एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेज सकते हैं।

संचार के साधनों में एक और नाम जुड़ा "सेलुलर फोन" वार्तालाप के लिए यह बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ है। व्यापार, डाक्टरी, वकालत, राजनीति, अध्यापन, सामाजिक आदि क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तियों के लिए सेलुलर बहुत उपयोगी है। यह बहुत ही छोटा इंस्ट्रमेंट है जिसको जेब में या हाथ में रखा जा सकता है। व्यक्ति इसको हर समय अपने पास रखता है और जरूरत पड़ने पर इसका प्रयोग कर सकता है।

आजकल समाचार भेजने के लिए इंटरनेट का विशेष रूप से प्रयोग किया जा रहा है। इसका अधिकतर प्रयोग ई-मेल (इलेक्ट्रानिक पत्र) भेजने के लिए किया जा रहा है। ई-मेल भेजने या प्राप्त करने के लिए एक ई-मेल पता होना आवश्यक है।

इंटरनेट का प्रयोग करने के लिए एक पी.सी. (पर्सनल कंप्यूटर), टेलिफोन लाईन, एक मोडम और साफ्टवेयर होना अनिवार्य है। कंप्यूटर द्वारा आंकड़े डिजिटल फार्मेट में इकट्ठा होते हैं और टेलिफोन लाइन उन आंकड़ों को 'एन लाग फार्मेट' में संचारित करती है।

इंटरनेट पर काम करने के लिए इंटरनेट शब्दावली का ज्ञान होना भी अनिवार्य है। सुमन सौरभ के अप्रैल, 2001 के अंक में प्रकाशित इंटरनेट शब्दावली निम्नलिखित है:–

इंटरनेट-शब्दावली

ए

अड्रेस :- इंटरनेट वेब पर आने वाला एक विशेष स्थान।

अड्रेस बुक :- एक सॉफ्टवेयर जो आन लाइन जुड़ने वाले अड्रेस को संग्रहित करे प्रायः सभी ई-मेल पैकेज में उपलब्ध।

एनॉलाग सिग्नल :- फोन लाइन पर भेजे जा सकने वाले इलेक्ट्रानिक संकेत।

एंटी वायरस प्रोग्राम :- कंप्यूटर में आए वायरस या किसी फाइल में आए वायरस को समाप्त करने की सुविधा।

एप्लिकेशन :- कंप्यूटर प्रोग्रामिंग में व्यवहृत प्रचलित शब्द।

अटैचमैंट :- वर्ड, ई-मेल पैकेज आदि में उपलब्ध व्यवस्था, जिससे फाइल को ई-मेल से जोड़ा जा सके।

आटोकंप्लीट :- एक स्वचालित प्रक्रिया, जिसके तहत प्रारंभिक वेब अड्रेस दर्ज होते

हो ब्राउजर आगे के शब्द को ढूंढने का प्रयास करे।

बी

बीबीसी :- ब्लांइड कार्वन कापी (बीबीसी) का इस्तेमाल ई-मेल की कापी अन्य पते पर भेजने के समय होता है (कई पते हों तो)।

बिट :- कंप्यूटर डाटा की सबसे छोटी इकाई।

बुकमार्क :- वह प्रक्रिया, जिस से आप की पसंदीदा वेबसाइट अड्रेस बुक में सामने आए।

बॉट :- खुद व खुद सर्च करने की सुविधा वाला प्रोग्राम।

ब्रोकेन लिंक :- एचटीएमएल लिंक ठीक से काम न करे।

बाइट :- कंप्यूटर डाटा की एक इकाई।

सी

केबल मोडम :- नेट सुविधा उपलब्ध कराने की एक तीव्रतम व्यवस्था।

कैंची :- वेब पेज पर उपलब्ध सामग्री ब्राउजर द्वारा इस हार्ड डिस्क में सेव की जाती है।

सी सी :- मेन रेसिपेंट के अलावा अन्य पते (एक) पर भेजने के लिए प्रयोग।

चैट प्रोग्राम :- इंटरनेट के सहारे दूसरे नेट उपभोक्ता के एक समय पर जोड़ने वाला प्रोग्राम।

चैट रूम :- एक ही समय में अन्य विजिटर्स को संदेश भेजने में व्यवहृत वेब पेज।

कंप्रेशन प्रोग्राम :- कई बड़ी फाइलों को नेट पर लाने में होने वाली परेशानी से बचने के लिए जिप द्वारा फाइल छोटा करने का प्रोग्राम।

कुकी :- वेब ब्राउजर पर उपलब्ध एक फाइल जो आप के द्वारा नेट के इस्तेमाल वगैरहा का ब्योरा उपलब्ध कराए।

साइबर स्पेस :- वर्ल्ड वाईड वेब का काल्पनिक क्षेत्र, प्रचलित शब्द।

डी

डिफाल्ट ब्राउजर :- एक स्वचालित प्रक्रिया जो नेट से जुड़ते ही काम करने लगे।

डिजिटल सिग्नल :- कंप्यूटर का एक संकेत, जो मोडम के सहारे एनालाग डाटा और फिर डिजिटल सिग्नल के रूप में चले।

डाइरेक्ट्री :- वेबसाइट, जो अन्य साइटों को ढूंढने में सहायता करे।

डोमेन नेम :- इंटरनेट से जुड़े कंप्यूटर की पहचान कराने वाला तकनीकी नाम।

डोमेन नेम सिस्टम :- इंटरनेट अड्रेस का कंप्यूटरीकृत डाटा समूह।
डाउनलोड :- किसी वेबसाइट से कोई सामग्री अपने कंप्यूटर में डालने की प्रक्रिया।

ई

ई बुक :- स्पेशल पैकेज में तैयार की गई इलेक्ट्रानिक बुक।
ई मेल :- इंटरनेट के जरिए डाक हस्तांतरण की प्रक्रिया।
ई मेल प्रोग्राम :- ई मेल व्यवस्था उपलब्ध कराने वाले प्रोग्राम।
ईमोट आइकंस:- मानवीय भावनाओं का सूक्ष्म संकेत।
इनक्रिप्शन :- अलग-अलग तरह के डाटा को इकट्ठा करना।
ई जीन :- वेब पर उपलब्ध एक पत्रिका।

एफ

फेवरेट :- वेब ब्राउजर की वह सुविधा, जिसमें आपके विजिटेड साइटों को संगृहीत करे।
फिल्टर्स :- उपभोक्ता के निर्देशानुसार, आए ई मेल संदेश को छांट कर खुद व खुद हटा देने की प्रक्रिया।
फायरवॉल :- अनाधिकारिक रूप से निजी नेटवर्क में घुसपैठ पर पाबंदी के लिए सुरक्षा व्यवस्था।
फारवर्ड :- ई मेल को दूसरे किसी नेट उपभोक्ता तक पहुंचाने का आदेश।
फ्रेम्स :- वेब पेज को एक निश्चित क्षेत्र के अंदर फ्रेम करने की प्रक्रिया।
फ्रीवेयर :- मुफ्त में इस्तेमाल किए जा सकने वाले प्रोग्राम।
एफटीपी प्रोग्राम्स :- एक सॉफ्टवेयर प्रोग्राम जो फाइल की अपलोडिंग तथा डाउनलोडिंग में अतितीव्र गति से काम करे।

जी

गेटवे :- एक कंप्यूटर नेटवर्किंग व्यवस्था, जिसके सहारे विशेष कंप्यूटर आप की नेट गतिविधियों पर नजर रखे।
गिफ :- एक फाइल फारमेट जो इमेज सेव करने में काम आता हो।

एच

हिस्ट्री :- किसी निर्धारित अवधि के दौरान नेट पर आप की गतिविधियों का रिकार्ड रखने की व्यवस्था।

ंहेट :- वेब साइट से जुड़ने की प्रक्रिया।
होम पेज :- कंप्यूटर स्क्रीन पर आने वाला एक पेज जो या तो वेब ब्राउजर का होता है या आप के कंप्यूटर का निजी।
एच टी एम एल :- वेब पेज निर्माण में काम आने वाली सांकेतिक भाषा।
एच टी एम एल एडिटर्स :- वेब पेज निमार्ण में संकेत लिखने की प्रक्रिया।
एच टी टी पी :- ब्राउजर कंप्यूटर तथा इंटरनेट के बीच संदेशों के आवागमन हेतु संकेत।

आई

आई आर सी :- इंटरनेट के माध्यम से सीधे बातचीत।
आई एस डी एन :- एनालाज फोन लाइन के स्थान पर डिजिटल तकनीक पर आधारित कंप्यूटर नेटवर्किंग व्यवस्था।
आईएसपी :- नेट सुविधा उपलब्ध कराने वाली कंपनी।

जे

जावा :- वेब पेज की प्रोग्रामिंग में प्रयुक्त विशेष भाषा।
जावा स्क्रिप्ट :- वेब पेज की विशेषताओं के लिए व्यवहृत विशेष प्रोग्रामिंग भाषा।
जेपीईजी :- फाइल के साइज को छोटा कर तेजी से लोड करने की प्रक्रिया।

के

कीवर्ड :- वेबसाइट खर्च करते समय इस्तेमाल किए गए शब्द।

एल

लिंक :- माउस कर्सर की वेब पेज पर बदलती आकृति, जिसके सहारे अन्य वेब पेज पर क्लिक किया जा सके।
लोकेशन बार :- वेबवाइट का अड्रेस टाइप करने का स्थान।

एम

मैक :- डिजाइनरों द्वारा व्यवहृत प्रचलित कंप्यूटर।
मेल सर्वर :- आईएसपी द्वारा इस्तेमाल किया जा रहा हार्डवेयर व सॉफ्टवेयर।
मेल बाक्स :- ई मेल अकाउंट का आईएसपी के पास वाला इलेक्ट्रानिक डाक बाक्स।
मेलिंग लिस्ट :- किसे ई मेल भेजा गया, जानने की प्रक्रिया में देखा जाता है।

एन

न्यूजग्रुप्स :- सार्वजनिक व्यवहार के लिए तैयार नेट की सुविधाएं उपलब्ध कराने वाले।

ओ

आफ लाइन :- जब ब्राउजर कंप्यूटर नेट से जुड़ा न हो।
आन लाइन :- जब ब्राउजर कंप्यूटर नेट से जुड़ा हुआ हो।
आन लाइन सर्विस :- अपने सदस्य उपभोक्ताओं को आईएसपी द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधा।

पी

प्लग इन :- वेब ब्राउजर की उपयोगिता को बढ़ाने वाला सॉफ्टवेयर।
पीओपी :- आईएसपी कंपनी का ई मेल प्रभारी अधिकारी।
पब्लिक डोमेन :- बिना रोकटोक के इस्तेमाल किया जा सकने वाला प्रोग्राम।

आर

रैम :- कार्यरत कंप्यूटर की मैमोरी जो उस के बंद होते ही समाप्त हो जाए।
रीयल टाइम :- मूल जीवन में कोई कार्य जितने समय में हो उतना ही समय तकनीकी दृष्टि से लगे।

एस

सिक्योर सर्वर :- डाटा का सही इस्तेमाल निश्चित कराने वाला विशेष कंप्यूटर।
सर्वर :- अन्य कंप्यूटरों को सूचना उपलब्ध कराने वाला शक्तिशाली कंप्यूटर।
शेयर वेयर :- निश्चित समय के लिए मुफ्त में उपलब्ध प्रोग्रामिंग सेवा।
सिग्नेचर :- ई मेल मैसेज के अंत में स्वमेव आने वाले शब्दांश।
एस एम टी पी :- ई मेल हस्तांतरण में व्यवहृत कोटि का प्रोटोकॉल।
स्पाम :- खराब मेल का इलेक्ट्रानिक रूप हटाया जाना।
एस एस एल :- सर्फिंग करने वाले का पहचान संकेत।

टी

टेंपरेरी इंटर फाइल्स :- इंटरनेट एक्सप्लोरर का एक कैंची।

यू

अपलोड :- एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर तक डाटा संप्रेषण।
यूआरएल :- वेब साइट अड्रेस में व्यवहृत एक शब्द संकेत।

वी

व्यूअर्स :- कंप्यूटर स्क्रीन पर फाइल देखने की क्रिया।

डब्ल्यू

वैप :- इंटरनेट व्यवस्था की नवीनतम वायरलेस तकनीक।
वेब मास्टर :- वेबसाइट की सूचनाओं पर काम करने वाला।
वर्ल्ड वाईड वेब :- इंटरनेट व्यवस्था में व्यवहृत विशेष तकनीकी शब्द।

जेड

जिप :- इंटरनेटर पर फाइल ट्रांसफर करने की प्रचलित विधि।
इंटरनेट के आविष्कार से हमारी अनेक समस्याएं घर बैठे ही हल हो गई है। इंटरनेट द्वारा आज घर बैठे देश-विदेश की कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, संदेश भेज सकते हैं और शापिंग आदि कर सकते हैं। अपने पी सी पर माउस क्लिक करिए और इंटरनेट के माध्यम से सभी प्रकार की जानकारी कुछ क्षणों में आपको मिल जाएगी। इंटरनेट इतना उपयोगी सिद्ध हुआ है कि अब इसकी पहुंच भारत के सभी प्रमुख शहरों तक हो गई हैं। बंगलौर, नौएडा आदि कुछ शहर तो विश्व के चंद आई टी शहरों में गिने जाते हैं। हमारे सॉफ्टवेयर इंजीनियर्स अन्य देशों में आई टी क्षेत्र में विशेष सहयोग प्रदान कर रहे हैं। तथा उनके विकास में हमारे इंजीनियर्स का विशेष योगदान है।

साभार
-समन्वय संचार

हिन्दी का सरलीकरण

श्रीमती रीना

यह एक विडम्बना है कि जब कभी हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सभा

आयोजित की जाती है, गोष्ठियाँ या सेमिनार आयोजित की जाती है, वकता प्रायः अपने भाषण में इस बात पर अवश्य जोर देते हैं कि सरल हिन्दी का प्रयोग किया जाना चाहिए। क्लिष्ठ और संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के प्रयोग के कारण ही हिन्दी पिछड़ रही है। इस संबंध में यह कहना है कि अपनी भाषा सदैव सरल होती है। 80% से अधिक भारतीय अच्छी हिन्दी जानते हैं। उनके लिए हिन्दी बहुत सरल है क्योंकि हिन्दी उनकी अपनी भाषा है। अंग्रेजों के लिए अंग्रेजी, जापानियों के लिए जापानी, चीनियों के लिए चीनी सरल भाषा है। क्योंकि ये उनकी अपनी भाषा हैं। किन्तु भारत में मात्र दो प्रतिशत व्यक्तियों ने अपने-अपने स्वार्थवश लोगों में ऐसी भ्रांति भर दी है कि हिन्दी एक क्लिष्ठ भाषा हैं उसको समझना बड़ा कठिन है। अतः हिन्दी अंग्रेजी का स्थान नहीं ले सकती हैं।

जो हिन्दी के सरलीकरण की बात करते हैं उनका मत है कि हिन्दी का प्रयोग करते समय अंग्रेजी या अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग किया जाएं चूंकि इस समय भारत में दो प्रतिशत अंग्रेजीदा व्यक्तियों का वर्चस्व व्याप्त है। अतः हम अंग्रेजी के बारे में देखेगें कि यह भाषा हिन्दी के मुकाबले कितनी सरल है। अंग्रेजी व्याकरण की दृष्टि से, उच्चारण की दृष्टि से शब्द अर्थ की दृष्टि से एक भ्रामक भाषा है। उच्चारण की दृष्टि से देखें – chemistry और camel, but और put, see और sea, riot, right, rite और write आदि। इन शब्दों के उच्चारण और स्पेलिंग्स में कितनी भिन्नता है। समानार्थी शब्दों में भिन्नता देखिये। Jail और Prison का अर्थ है जेल या कारागार या कैद। यदि Jail के साथ er जोड़ दिया जाए तो Jailer (जेलर) हो जाएगा और यदि Prison के साथ er जोड़ दिया जाए तो Prisoner अर्थात जेली या कैदी हो जायेगा। अतः अंग्रेजी का कोई एक सूत्र नहीं है। इसके विपरीत हिन्दी भाषा की लिपि अर्थात देवनागरी लिपि की सबसे प्रमुख वैज्ञानिकता है इसके उच्चारण और लेखन में एकरूपता है। किसी भी संपूर्ण लिपि में एकरूपता, निश्चिंतता, स्पष्टता, यंत्र योग्यता, सुसाध्यता, सुंदरता तथा गत्यात्मकता आदि विशेषताएं होनी चाहिए।

देवनागरी लिपि में इन सभी विशेषताओं का समावेश है। हिन्दी की देवनागरी लिपि है और यह लिपि भाषा के उच्चारण के अनुरूप ही लिखी जाती है। इस लिपि में कोई भी वर्ण लुप्त नहीं होता है अर्थात् प्रत्येक वर्ण का उच्चारण होता है जबकि अंग्रेजी में ऐसा नहीं है। यह उच्चारण एवं लेखन में साम्य होने के कारण वर्तनी की भी कोई समस्या नहीं होती है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में देश के पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण भाग के सभी नेताओं ने भाग लिया था। उस समय स्वतंत्रता के दीवाने देशभक्तों की संपर्क भाषा हिन्दी ही थी। हिन्दी के माध्यम से ही सबको सूचनाएं दी जाती थी जबकि उस समय अंग्रेजी हुकूमत थी और सभी काम काज अंग्रेजी में ही होते थे। जब अंग्रेजी राज में हिंदी सभी लोग समझते थे, लिखते-पढ़ते थे तो अब स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद हिन्दी क्लिष्ठ कैसे हो गयी। इस और कुछ नहीं बल्कि हमारी मानसिकता का दिवालियापन ही कहा जाएगा।

प्रत्येक भाषा की अपनी अलग प्रकृति होती है, स्वरूप होता है, संरचना होती है। यदि किसी भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों को अनावश्यक रूप से ठूंसा जाए तो उस भाषा का स्वरूप, प्रकृति उसी प्रकार नष्ट हो जाएगी जिस प्रकार यदि एक मूर्तिकार मोर की मूर्ति बनाते समय मोर का नीचे का हिस्सा तो मोर का ही बनाए और उसकी गर्दन के ऊपर का हिस्सा सारस का बना दे तो न वह मूर्ति मोर की मानी जाएगी और न सारस की मानी जाएगी। इसका तात्पर्य यह है कि हिन्दी भाषा के सरलीकरण के नाम पर अन्य भाषाओं के शब्दों का अनावश्यक रूप से प्रयोग करें तो वह न ही हिन्दी रहेगी और न अंग्रेजी, या फारसी या अरबी या उर्दू आदि भाषाएं ही रहेंगी। प्रत्येक भाषा का स्वरूप, प्रकृति यहां तक कि भाषा का अस्तितव ही नष्ट हो जाएगा।

भाषा कोई भी कठिन नहीं होती है। यदि आवश्यकता है तो शब्दों का प्रयोग प्रचलन में लाना है। Telephone अंग्रेजी का एक प्रचलित शब्द है। इसका हिन्दी पर्याय बना दूरभाष। प्रारंभ में दूरभाष का प्रयोग बड़ा अस्वाभाविक लगता था। किन्तु इस दूरभाष शब्द का प्रयोग अब बहुत लोगों द्वारा किया जा रहा है। अब यह शब्द बहुत सहज प्रतीत होता है। भाषण देते समय प्रायः लोग कामरेड शब्द का प्रयोग करते हैं। यदि कामरेड के स्थान पर साथी शब्द का प्रयोग किया जाय तो यह बोलने तथा समझने में बहुत ही सरल और उपयुक्त शब्द है। क्या हम साथी जैसे सरल शब्द को छोड़कर कामरेड शब्द का प्रयोग करके हिन्दी को सरल बनाएंगे। हमारा यह प्रयास वास्तव में बहुत ही अप्राकृतिक होगा। अंग्रेजी का Technology इतना आसान शब्द नहीं है फिर भी प्रचलन में है क्योंकि इसका प्रयोग काफी समय से हो रहा है। इसका हिन्दी पर्याय प्रौद्योगिकी पहले इतना प्रचलन में नहीं था किन्तु अब इस शब्द का प्रचलन बढ़ता जा रहा है और धीरे-धीरे यह शब्द लोगों के अभ्यास में आने से स्वतः सरल हो गया है। इस प्रकार अंग्रेजी के अनेक कठिन शब्द हैं जिसका आम आदमी के लिए उच्चारण करना भी कठिन होता है किन्तु अंग्रेजी 200 वर्ष से हमारे ऊपर राज कर रही है। अतः अंग्रेजी के कठिन शब्द भी सुनते-सुनते या लिखते-पढ़ते सरल महसूस होते हैं। अतः भाषा कोई कठिन नहीं है। आवश्यकता केवल शब्दों के प्रयोग की है। शब्द का जितना अधिक प्रयोग होगा शब्द उतना ही सरल और सहज प्रतीत होगा।

भाषा के शब्द-भंडार को बढ़ाने के लिए निःसंदेह दूसरी भाषा के भी प्रचलित शब्दों को भी लिया जाता है। हिन्दी में भी अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को लेकर इसके शब्द भंडार को बढ़ाया गया है। अंग्रेजी के भी ऐसे शब्दों को हिन्दी भाषा में जोड़ा गया है जो पूरी तरह रच-पच गए हैं। युद्ध के दौरान अंग्रेजी शब्द कोटा, परमिट, राशन ब्लैकआउट आदि हिन्दी में रच-पच गए हैं और ये शब्द जाने पहचाने लगते हैं। हमारा यह कहना नहीं है कि हिन्दी में जो विदेशी शब्द प्रचलन में आ गए हैं उनका बहिष्कार किया जाए। बटन, कोट, चाकू, छुरी, कैंची आदि घरों में प्रयोग किए जाने वाले शब्द अन्य भाषाओं से आए हैं किन्तु ये शब्द हिन्दी के ही हो गए हैं। इसी प्रकार बस, टिकिट, स्टेशन प्लेटफार्म आदि भी हिन्दी के ही शब्द बन | गए हैं। किन्तु जान-बूझ कर हिन्दी में अंग्रेजी या अन्य भाषाओं के शब्दों की सरलता के नाम पर घुसपैठ

अवांछनीय है। निश्चेतकालीन के स्थान पर बीमेयाद, विश्वास को यकीन, खेद को अफसोस, प्रसन्नता को खुशी, घृणा को नफरत, सहन को बर्दाश्त, स्वीकार को कबूल, वेशभूषा को पोशाक, आशा को उम्मीद, प्रबन्ध को इन्तजाम आदि कहना सर्वथा त्याज्य होना चाहिए और इस प्रवृति को रोकना चाहिए। प्रचलित सरल हिन्दी शब्दों के स्थान पर अन्य भाषाओं के शब्दों के प्रयोग से यह मिथ्या धारणा बनती है कि हिन्दी में शब्दों की कमी है।

भाषा संस्कृति का निर्माण करती है, संस्कार देती है, रिस्ते बनाती है। यदि सरलीकरण के नाम पर अंग्रेजी रिश्तों को अपनाया जाए तो रिश्तों की पहचान करना ही कठिन हो जाएगा। प्रत्येक देश, समाज के रिश्ते भिन्न होते हैं। अंग्रेजों का समाजिक गठन भारतीय सामाजिक ढांचे से बिलकुल भिन्न है। अंग्रेजी में अंकल शब्द प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रयोग होता है किन्तु भारत में अंकल शब्द से हमारे रिश्तों का मान ही नहीं होगा। आजकल अंग्रेजीदां व्यक्तियों ने हमारे रिश्तों को ही समाप्त कर दिया है। आज मामा, चाचा, ताऊ, फूफा मौसा आदि शब्दों के लिए प्रायः अंकल शब्द का प्रयोग किया जा रहा है किंतु अंकल कहने से यह पता ही नहीं चलता है कि जिस व्यक्ति को अंकल कहा जा रहा है वह मामा है या चाचा, ताऊ या फूफा है। इसी प्रकार ऑन्टी शब्द से मामी, चाची, बूआ, ताई, मौसी आदि शब्दों से रिश्तों की पूरी कल्पना नहीं होती है। ब्रदर-इन-लॉ के प्रयोग से यह स्पष्ट नहीं होता है कि व्यक्ति बहनोई, साला और साढू में से किस रिश्ते में है। अगर सरलीकरण के नाम पर अंकल या ब्रदर-इन-लॉ जैसे शब्दों का प्रयोग प्रचलन में रहा तो संभव है हमारी आगे आने वाली पीढी के बच्चों को मामा, फूफा, मौसा, ताऊ, बहनोई, साला या साद जैसे शब्द बड़े कठिन दिखाई देंगे और इनका अर्थ समझने के लिए शब्दकोशों का सहारा लेना पड़ेगा।

वास्तव में भाषा का मुख्य तात्पर्य यह है कि जो भी हम लिख रहे हैं या बोल रहे हैं वह दूसरों की समझ में आना चाहिए। अतः लिखते या बोलते समय हमकों दूसरों की सुविधा का भी ध्यान रखना पड़ता है। आजकल दूरदर्शन, रेडियो से हिन्दी में प्रसारित कार्यक्रमों को देश की 90% जनता देखती है और समझती है। जब दूरदर्शन पर हिन्दी में प्रसारित कार्यक्रमों को पढ़ा और अनपढ़ तथा प्रत्येक राज्य का व्यक्ति देख सकता और समझ सकता है तो हम कैसे कह सकते हैं कि हिन्दी कठिन है। जहां भी हिन्दी का विरोध हआ है या हो रहा है वह केवल राजनीति से प्रेरित है या 2% अंग्रेजीदां व्यक्तियों ने हिन्दी के विरूद्ध एक भ्रांतिपूर्ण वातावरण तैयार कर दिया है।

मातृभाषा कभी कठिन नहीं होती है। यदि भाषा अनुदित होगी तो नैसर्गिक भाषा की अपेक्षा अधिक कठिन होगी। यदि हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद किया जाए तो अनुदित अंग्रेजी भाषा मूल अंग्रेजी की अपेक्षा कठिन महसूस होगी। इसी प्रकार अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया जाए तो भी अनुदित हिन्दी भाषा कठिन लगेगी चाहे हमारी मातृभाषा हिन्दी हो या अंग्रेजी। अतः यदि हम अपने कामकाज में हिन्दी भाषा का प्रयोग मूल रूप में करें तो हिन्दी भाषा के कठिन या क्लिष्ठ होने का प्रश्न ही नहीं

उठता है। अनुदित भाषा कठिन होने के कई कारण होते हैं। एक तो अनुवादकों को विषय वस्तु का पूरा ज्ञान नहीं होता है। अतः उनको बार-बार शब्दकोशों का सहारा लेना पड़ता है। शब्दकोश से प्रायः अनुवादक बोझिल शब्दों का ही प्रयोग कर बैठते हैं। परिणामस्वरूप अनुदित भाषा, चाहे अंग्रेजी भाषा हो या हिन्दी, भाषा कठिन महसूस होने लगती है। दूसरे अनुवादक को मूल भाषा का और अनुदित भाषा का पूरा ज्ञान होना चाहिए। दोनों भाषाओं में पूरी मास्टरी होने पर और विषय वस्तु का ज्ञान होने पर अनुदित भाषा मौलिक तथा मूल भाषा प्रतीत होगी। अतः यदि अनुवाद में कुछ मौलिक सिद्धान्तों का ध्यान रखा जाए तो अनुदित भाषा भी सरल एवं मूल भाषा जैसी ही प्रतीत होगी। अनुदित भाषा कठिन होने का एक विशेष कारण यह भी है कि कोई दस्तावेज अंग्रेजी हिन्दी दोनों भाषाओं में भेजना होता है तो अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करने पर अनुवादकों को बहुत कम समय मिलता है और अनुवादक पर हिन्दी में जल्दी अनुवाद करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों का दबाव बना रहता है। अतः जल्दी-जल्दी में अनुदित भाषा कठिन हो जाती है। प्रायः अधिकारीगण समझते हैं कि अनुवाद करना बहुत ही आसान है और चन्द मिनटों में अनुवाद हो जाएगा। किन्तु अनुवाद कार्य ही सबसे कठिन कार्य है। अनुवाद करते समय मूल भाषा की आत्मा को टोहना पड़ता है, उसमें आत्मसात होना पड़ता है फिर मूल भाषा के अर्थ को अनुदित भाषा में परिवर्तित करना होता है। यह तभी संभव है जब मूल भाषा और अनुदित भाषा की मास्टरी हो अन्यथा अनुदित भाषा एक अटपटी और क्लिष्ठ भाषा प्रतीत होगी, क्योंकि उससे संप्रेषण सही नहीं होगा। जो भाषा सही संप्रेषण नहीं करती है वह लोगों को पसंद नहीं आती है। यदि हम कार्य को मूल रूप से हिन्दी में करें तो यह पूरे विश्वास से कहा जा सकता है कि भाषा में क्लिष्ठता बिलकुल नहीं दिखाई देगी। अतः हिन्दी को मूल भाषा के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए न कि अनुवाद की भाषा के रूप में।

भारत में सैकड़ों वर्षों से अंग्रेजी का वर्चस्व रहा है। अतः प्रारंभ में हिन्दी में कार्य करने में अवश्य थोड़ी कठिनाई हो सकती है क्योंकि हिन्दी में कार्य करने का अभ्यास नहीं है। किन्तु इसका यह अर्थ तो नहीं कि हम अब भी अंग्रेजी पर निर्भर रहें जबकि हिन्दी एक सशक्त और बहु प्रचलित भाषा है। आज विश्व में हिन्दी का चीनी भाषा के बाद दूसरा स्थान है जबकि अंग्रेजी तीसरे स्थान पर है। हम प्रारम्भ में गलती कर सकते हैं, भूल कर सकते हैं लेकिन हमको अपनी भाषा में ही काम करने पर गर्व होना चाहिए। इस संदर्भ में महात्मा गांधी की निम्न पंक्ति युक्ति संगत है :–

"यदि हिन्दी बोलने में भूले हों, तो भी उनकी कतई चिन्ता नहीं करनी चाहिए। भूलें करते-करते भूलों को सुधारने का अभ्यास हो जाएगा, पर भूलों की चिन्ता न करने की सलाह आलसी लोगों के लिए नहीं, वरन् मुझ जैसे भाषा सीखने के इच्छुक अव्यवसायी सेवकों के लिए है।"

"संस्कृतनिष्ठ हिन्दी कठिन है, यह मत है उर्दूदां लोगों का। हिन्दी-उर्दू के व्याकरण में कोई अन्तर नहीं हैं, अतः इस वर्ग का असंतोष व्याकरण को लेकर नहीं शब्द

भंडार को लेकर है। इसके लिए देश, जनता प्रजातंत्र जैसे शब्द कठिन हैं, मुल्क, आवाम, जम्हूरियत सरल हैं।

हिन्दी को कठिन कहने वाला दूसरा वर्ग अंग्रेजीदां लोगों का हैं इन्होंने अंग्रेजी पढ़ी ही इसलिए कि वह शासन की भाषा रही। ये दफ्तर की भाषा की बनी बनाई लीक पर चलने के आदी हो गये हैं। हिन्दी शब्दों के प्रयोग में जो थोड़ा-बहुत प्रयास अपेक्षित है, वह उन्हें कष्टकर प्रतीत होता है। इनके लिए देश/ मुल्क,जनता/आवाम, प्रजातंत्र/ जम्हूरियत सभी कठिन हैं, कन्ट्री, पब्लिक, डेमोक्रेसी ही आसान है, इसलिए उनका आग्रह है कि अंग्रेजी के शब्द यथावत् हिन्दी में अपना लिए जाएं। इस प्रकार कठिनाई एक नहीं, जो अरबी-फारसी के शब्दों को सरल मानते हैं, उन्हें अंग्रेजी शब्दों से संतोष नहीं होगा और जो अंग्रेजी शब्दों के अभ्यासी हैं, उनकी कठिनाई अरबी-फारसी शब्दों से दूर नहीं होगी।

वास्तव में भाषा कोई कठिन नहीं है। आवश्यकता है भाषा के प्रति मानसिकता की, सीखने की लगन की, लिखने-पढ़ने के अभ्यास की। जब तक हिन्दी के प्रति लोगों की मानसिकता में परिवर्तन नहीं होगा, लोग हिन्दी में कार्य करने पर गौरव महसूस नहीं करेंगे तब तक हिन्दी संविधान में राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने पर भी अंग्रेजी के सामने टिक नहीं पाएगी और स्थिति वही बनी रहेगी जो पचास वर्षों से हम देख रहें है। यही कारण है कि चंद अंग्रेजीदां व्यक्ति किसी न किसी बहाने हिन्दी को नकारने की बात करते हैं ताकि सरकार और समाज में उनका वर्चस्व बना रहे। यह घोर चिंता का विषय है कि हम स्वतंत्रता के 55 वर्षों के बाद भी हिन्दी को अपना स्थान नहीं दिला पाए हैं। इस पर सभी हिन्दी प्रेमियों, साहित्यकारों, सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों और देशवासियों को अविलम्ब ध्यान देना चाहिए। अपनी भाषा के प्रयोग के संबंध में भारतेन्दु हरिश्चन्द की निम्नलिखित पंक्तियां बहुत सटीक है :–

”निज भाषा उन्नति अहै सब
उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के
मिटत न हिय को शूल।”

साभार -संचार समन्वय



मई *2002* में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर द्वारा किये गये उत्कृष्ठ हिंदी कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया / डी.एस.पी. के अध्यक्ष व प्रबन्ध निदेशक द्वारा यह प्रशस्ति पत्र ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर को एक समारोह में प्रदान किया गया /



सरकारी कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया /कार्यशाला का उद्घाटन ग्रुप केन्द्र के श्री विजय कुमार, द्वितीय कमान अधिकारी ने दीप प्रज्वलित करके किया /



ग्रुप केन्द्र जालंधर में अहिंदी भाषी नवारक्षियों के लिए अंशकालिक हिंदी कक्षाओं का आयोजन किया गया / प्रशिक्षण समाप्ति पर रंगरूटों को हिंदी शिक्षण योजना के तहत परीक्षा पास करने पर प्रमाण पत्र दिये गये /





संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति ने ग्रुप केन्द्र आवड़ी द्वारा सरकारी काम काज में राजभाषा के प्रयोग की प्रगति का दिनांक *09–01–2002* को जायजा लिया । इस अवसर पर श्री जार्ज सी. फांसिस, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, आवड़ी ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निदेशक व महानिदेशालय के हिन्दी अधिकारी के साथ समिति के सदस्यों को राजभाषा के प्रयोग संबंधी जानकारी उपलब्ध कराई । प्रश्नावली में वर्णित प्रश्नों के उत्तरों पर चर्चा की और सुझाव दिये । समिति के सभी सदस्यों ने ग्रुप केन्द्र के राजभाषा संबंधी काम–काज पर खुशी जाहिर की व किये गये प्रयासों की प्रशंसा की । फलस्वरूप निरीक्षण सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ ।



ग्रुप केन्द्र गोहाटी को वर्ष *2001* में पूर्वोत्तर सेक्टर शिलांग के सभी कार्यालयों में से सरकारी काम काज में हिन्दी का सर्वाधिक प्रयोग करने के लिए पुलिस महानिरीक्षक पूर्वोत्तर सेक्टर श्री राजदीप सिंह ने एक रंगारंग कार्यक्रम में रनिंग शील्ड प्रदान की ।



वर्ष *2001* में आयोजित *34*वीं अखिल भारतीय हिंदी टिप्पणी तथा प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में ग्रुप केंद्र पल्लीपुरम के स. उ. नि. *(*म*)* रामास्वामी आर. को हिन्दीतर भाषी वर्ग में केन्द्र का प्रथम परस्कार एवं प्रशस्ति पत्र केन्दीय विधि एवं न्याय मंत्री श्री अरुण जेटली द्वारा प्रदान किया गया ।



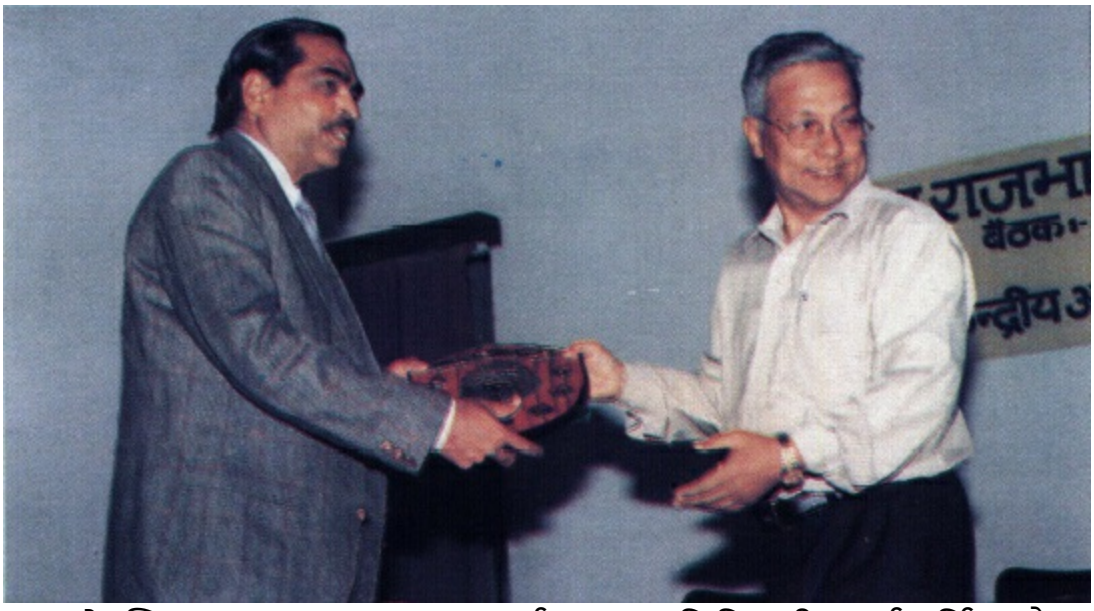
गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष *1999.2000* के लिए *"ख"* क्षेत्र, में स्थित केन्द्रीय कार्यालयों में से हिन्दी में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने के लिए *136* बटा० को चुना गया । जी.एन. डी. यूनिर्वसिटी, अमृतसर में आयोजित राजभाषा सम्मेलन तथा पुरस्कार वितरण समारोह में बटा० के कमां. श्री ए.एस. सिद्धू को ट्राफी और प्रशस्ति पत्र प्रदान किर्या । समारोह में श्री जसपाल सिंह, कार्यकारी निदेशक, आई०ओ०सी० पानीपत, श्री एम०एल० गुप्ता, संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, श्री डी०आर० वर्मा, मुख्य आयकर आयुक्त एवं श्री एस०पी० सिंह, कुलपति, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, ने भी भाग लिया ।



सरकारी कामकाज में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने के लिए के.रि.पु. बल महानिदेशालय के स.उ.नि.(मं) समीर हलदर को *28* अप्रैल *2002* को विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में केन्द्रीय गृह मंत्री श्री एल.के. आडवाणी ने प्रशंसा पत्र प्रदान किया ।



वर्ष *1999–2000* के राजभाषा नीति के सर्वोत्तम कार्यान्वयन में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए, फरवरी, *2002* के दौरान बैंगलोर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल, पल्लीपुरम को, राजभाषा शील्ड व प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया गया । श्री एम.एल. गुप्ता, संयुक्त सचिव गृह मंत्रालय ने ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम के निरी./हिंदी अनुवादक पी.पी. सुनील को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया ।



लखनऊ में स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्द्धवार्षिक बैठक में केन्द्रीय सरकार एवं सार्वजनिक उपक्रमों के *139* कार्यालयों ने भाग लिया । बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति के मूल्यांकन के पश्चात् *139* कार्यालयों में से ग्रुप केन्द्र लखनऊ को पहला स्थान प्राप्त हुआ । ग्रुप केन्द्र लखनऊ के द्वितीय कमान अधिकारी श्री एस.पी. सक्सेना, ने नराकास के अध्यक्ष से शील्ड प्राप्त की ।



नगर रा०भा० कार्यान्वयन समिति, तिरुवनंतपुरम, केरल में गत वर्ष हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए लगातार तीसरी बार, ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम को चल वैजयन्ती पुरस्कार से सम्मानित किया । केरल के विख्यात मलयालम लेखक श्री अयप्पा पणिकर मुख्य अतिथि द्वारा ग्रु.के. पल्लीपुरम के उ.कमां./रा.भा. अधिकारी श्री रामचरित्र को ट्रॉफी प्रदान की ।

भारत की प्रगति और राजभाषा

एम.बी. प्रसाद
हिन्दी अधिकारी, के.रि.पु. बल

यह सच है कि प्राचीन काल में हमारे यहां खगोल विद्या, आयुर्वेद तथा गणित आदि क्षेत्रों में कई वैज्ञानिकों ने समुचे विश्व में ख्याति प्राप्त की थी, परन्तु लम्बे समय तक हम लोग अंधविश्वास एवं रूढ़िवादिता के जड़ में समाये रहे जिसने हम लोगों को इतना पंगु बना दिया था कि लोहे की एक सुई भी भारत में विदेशों से ही बनकर आने लगी थी।

20वीं शताब्दी में भारत ने विज्ञान के क्षेत्र में कई उपलब्धियां हासिल की जिसका श्रेय सर जगदीशचन्द्र बोस, पी.सी. राय, श्रीनिवास रामानुजम, डा. विश्वश्वरैया, सी.वी. रमण, मेघनाथ साहा, एस.एन. बोस, होमी भाभा, विक्रम साराभाई, बीरबल साहनी, डा. हरगोविन्द खुराना एवं डा. सी. चन्द्रशेखर आदि को जाता है। इन सभी वैज्ञानिकों ने विज्ञान के अपने–अपने क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने देश की प्राथमिकताओं के निर्धारण में आम व्यक्ति की जरूरतों पर विशेष ध्यान देकर अपनी बुद्धिमता एवं दूरदर्शिता का परिचय दिया। गांधी जी हमेंशा चाहते थे कि "सभी को मानवीय गरिमा के साथ भोजन मिले।" नेहरू जी ने भी सदा "वैज्ञानिक दृष्टिकोण" विकसित करने पर बल दिया था एवं उनका विश्वास था कि गरीबी एवं बेरोजगारी जैसी समस्याएं एवं जीवन यापन के स्तर में सुधार के लिए विज्ञान एवं टेक्नोलोजी की भूमिका सहायक सिद्ध होगी। वैज्ञानिकों की खोज एवं राष्ट्रीय नेताओं के मार्गदर्शन ने हमारे राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज भारत का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जो विकास की उन शक्तिशाली तरंगों से अछूता रहा हो जो विश्व में व्याप्त है।

इन सभी विभागों के कार्य के बदौलत आज भारता खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर है। भारत में अकाल पड़ना एक आम बात थी, पहले अनाज हम विदेशों से मंगवाते थे परन्तु अब हम सिर्फ खाद्यान्न ही नहीं अपितु कई कृषि उत्पादनों को निर्यात करने की स्थिति में भी आ गए हैं। पिछले कुछ दशकों में आयी हरित क्रांति से अनाजों के अलावा गन्ना, फल, सब्जी, प्याज, आलू, कपास, तिलहन आदि के उत्पादन में भी कई गुणा वृद्धि हुई है। इस क्रांति का श्रेय एक ओर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् को तो दूसरी ओर देश के किसानों को जाता है। साथ ही साथ हमारे देश की सशक्त जन वितरण प्रणाली के माध्यम से हर किसी को विशेषकर समाज के कमजोर तबकों के नागरिक को भी पर्याप्त अनाज उपलब्ध होने लगा है।

इस संदर्भ में डा. एम.एस. स्वामीनाथन ने ठीक ही कहा है, "भुखमरी समाप्त करना गरीबी को समाप्त करने से आसान है।"

भारत विश्व का सबसे बड़ा गणराज्य है एवं इसके लोकतंत्र की मूल परम्परा पर भी हमें गर्व है, जहाँ हमारे साथ ही स्वतंत्र हुए हमारे पड़ोसी देश सैनिक या तानाशाह शासन तंत्र का अनुभव कर रहे हैं, तथापि हमारे यहां लोकतांत्रिक पद्धति सुगमतापूर्वक जारी है। विश्व शांति में भी गुटनिरपेक्षता की नीति अपना कर हम विश्व तनाव को कम करने में सफल हुए हैं।

हमारा देश समूचे विश्व के कंप्यूटर बाजार में एक अग्रणी भूमिका निभा रहा है। कंप्यूटर विज्ञान की दोनों ही शाखाओं हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर के विकास एवं तकनीकी ज्ञान में भारत ने नये आयाम जोड़े हैं एवं विश्व में अपनी उपस्थिति का अहसास कराया है।

आज भारत में उच्च श्रेणी के कंप्यूटर सॉफ्टवेयर बनने लगे हैं एवं उनका निर्यात कर रहे हैं। आज भारत से निर्यात होने वाले समस्त उत्पादों में सॉफ्टवेयर निर्यात की विकास दर सबसे ज्यादा है। हमने विभिन्न क्षेत्रों में सफलता एवं विकास की मिसाल तो कायम कर दी लेकिन भाषा के क्षेत्र में हम अभी भी पिछड़े है। चीन जापान, जर्मन कोरिया अन्य बहुत सारे छोटे देशों ने भी अपने विकास में भाषा को आड़े नहीं आने दिया और प्रोद्योगिकी, तकनीक, विज्ञान चिकित्सा विज्ञान आदि का अपनी भाषा में ही विकास किया लेकिन दुर्भाग्य से हम अपनी राजभाषा में यह सब नहीं कर पाये। इस सब के पीछे हमारी अपनी मानसिकता है इसलिए हम हिंदी में काम करने से सकुचाते हैं।

यह सही है कि अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए वैज्ञानिको को कई बार असफलता भी मिली, प्रत्येक असफलताओं से हम लोगों ने सीख ली। दरअसल, वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्थितिप्रज्ञ होता है, जहां उसे आनन्द की अनुभूति अपने लक्ष्यों से नही भटकती और असफलता का नैराश्य उसे ऊर्जा–विहीन नहीं करता।

अभी हम लोगों को मीलों दूर जाना है। कई समस्याओं का समाधान अभी पूरा करना है जिसमें प्रमुख समस्या तीव्रगति से बढ़ती जनसंख्या, जातिवाद, साम्प्रदायवाद एवं क्षेत्रीय असंतुलन है, जिसने विकास के अनेक परिणामों को बेअसर बना दिया है। हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने स्वतंत्रता की प्रभातवेला में राष्ट्र के जिस स्वरूप का सपना संजोया थी, हमें राष्ट्र को समृद्ध एवं शक्तिशाली बनाकर उसे पूरा करना है। हमारी सच्ची श्रद्धांजलि उन सेनानियों के लिए होगी जिन्होने अपनी जान की परवाह न कर अंग्रेजों की गुलामी से भारत को स्वतंत्र कराया लेकिन दुःख के साथ यह कहना पड़ रहा है हम भाषा की तरफ से अभी भी गुलाम हैं जरूरत है अभी अपनी राष्ट्रभाषा को उच्च शिखर तक पहुँचाने की।

राजभाषा "हिन्दी" की उपयोगिता एवं आवश्यकता

सउनि (म) एके सिंह 'रघुवंशी'
युप केन्द्र, इलाहबाद

भविष्य की सम्भावनाएं प्रत्येक भारतवासी के लिए बहुत ही उत्साहवर्धक होंगी, अगर हम सब हिन्द वासी मिल–जुल कर अपनी राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए कुछ कर सकें, क्योंकि इसका प्रचार–प्रसार वर्तमान परिवेश एवं परिस्थितियों में किसी राष्ट्रभाषा से कम नहीं हैं। यह राष्ट्र और राष्ट्र की राजभाषा हिन्दी के प्रति समर्पित होने की भावना का सूचक हैं।

हमारा देश एक प्रजातंत्रीय देश है, जहाँ पर प्रत्येक धर्म के लोग निवास करते हैं और सभी को संविधान में समान अधिकार प्राप्त हैं। स्वाधीनता के बाद अपने ही देशों के महापुरूषों द्वारा गम्भीरता से विचार करने के बाद यह आवश्यकता महसूस की थी कि अपने देश की कोई राजभाषा होनी चाहिए। राजभाषा की उपयोगिता पर चर्चा करते हुए यह अनुभव किया गया कि राजभाषा के बिना कोई भी देश गूंगा है अर्थात उसके पास अभिव्यक्ति के लिए कोई भाषा नहीं है। भारत जैसे देश में जो कि भाषा की दृष्टि से समुद्र है, किसको राजभाषा माना जाए यह एक जटिल प्रश्न था। ऐसे ही कठिन समय में 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा में हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करते हुए सम्पर्क की भाषा कहा गया। इससे ही हिन्दी की उपयोगिता/महत्ता सिद्ध हो जाती है। हिन्दी राजभाषा के रूप में इसलिए स्वीकार नहीं की गई कि यह किसी विशेष राज्य से संबंधित है, बल्कि यह देश के अधिकाशः लोगों द्वारा बोली और समझी जाने के कारण राजभाषा के रूप में स्वीकार की गई थी।

भारत जैसे देश में जहाँ बहुत भाषाएँ बोली जाती हैं वहाँ पर सम्पर्क भाषा की बहुत जटिल समस्या थी, जो कि हिन्दी को राजभाषा स्वीकार करते ही अपने आप समाप्त हो गई, क्योंकि इसको जानने वाले, समझने वाले भारत के प्रत्येक कोने में विद्यमान हैं और उनमें आपस में सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग किया जाने लगा। यह हमारी राजभाषा हिन्दी का ही चमत्कार है कि भाषा, धर्म और प्रकृति की दृष्टि से इतनी बड़ी विविधता होते हुए भी अनेकता में एकता के सूत्र में बंधकर हम प्रत्येक भारतवासी कन्धे से कन्धा मिलाकर अपने देश के प्रति अपनी राजभाषा के प्रति अपना सर्वस्य त्याग करने के लिए सदैव तैयार रहते हैं जो गर्व की बात है। राजभाषा हिन्दी हमारे देश को जोड़ने की भाषा, देश की एकता की पहचान ही नहीं बल्कि प्रत्येक देशवासी की आवाज है।

हम सब हिन्द वासी अपने जीवन में विकास और सम्मान चाहते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि यही भावना यही स्थान हमारे प्रत्येक हिन्दुस्तानी के हृदय और मानस

पटल पर अपनी राजभाषा के लिए भी है। यह किसी भी देश के लिए सुखद अनुभूति है कि उसके देशवासी अपनी राजभाषा के प्रति इतनी सजग हैं। कोई भी देश एक नहीं रह सकता जब तक वह एक भाषा के मूल मंत्र से जुड़ा न हो। किसी भी देश में राजभाषा की आजादी होना गौरव की बात है। जिस देश में अपनी राजभाषा के लिए स्थान नहीं है वह न तो राष्ट्र कहलाने के योग्य है और न हीं उसमें एकता कायम रह सकेगी और न ही राष्ट्र। राजभाषा की अवनति देश की अवनति का संकेत/प्रतीक है। अपनी राजभाषा की रक्षा देश की सीमाओं की रक्षा से भी जरूरी है।

हिन्दी अब हमारे देश की राजभाषा ही न रहकर हमारे देश के गौरव का प्रतीक बन गई है। हमें इसका गहन अध्ययन तथा इसके प्रचार, प्रसार करने पर इसके उन्नति करने पर गर्व का अनुभव करना चाहिए और अंग्रेजी बोलने की अपेक्षा शुद्ध हिन्दी में बोलने में संकोच नहीं करना चाहिए। हमारी यही कोशिश राष्ट्र के प्रति राजभाषा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

भारत के कुछ राज्यों में हिन्दी को राजभाषा के रूप में गम्भीरता से नहीं लिया जा रहा है। इनके लिए बस एक ही संदेश होना चाहिए कि वर्तमान में हिन्दी सीखने का कार्य अपने राष्ट्र और राष्ट्र की राजभाषा के लिए एक ऐसा त्याग है इससे बढ़कर कोई राष्ट्रसेवा हो ही नहीं सकती। हमें राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को मजबूत बनाने में राजभाषा हिन्दी के योगदान को स्वीकार करना चाहिए तथा इसके विषय में कोई संशय नहीं रखना चाहिए, क्योंकि राजभाषा हिन्दी ही वह पहली कड़ी है जिस पर आगे चलकर इस देश की अखण्डता और एकता की एक ऐसी समृद्धशाली नींव रखी जाएगी जो हमारे देश और राजभाषा हिन्दी के लिए बहुत ही गौरव की बात होगी अतः जरूरत है हम सभी को राजभाषा हिंदी को समृद्ध–सुदृढ़ बनाने के लिए निरन्तर प्रचार प्रसार करने की।

राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति

स.उ.नि. *(मं.)* आर.डी. सिंह भदौरिया
ग्रुप केन्द्र, बैगलोर

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों को दूसरों तक एवं दूसरों के विचारों को सहज और सरल रूप से ग्रहण करता है। 14 सितम्बर 1949 को भारतीय संविधान सभा ने सर्वसम्मति से हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा का गौरव प्रदान कर देश के सभी सरकारी दफ्तरों संस्थानों एवं शैक्षणिक संस्थाओं में कामकाज हिन्दी भाषा में किये जाने का प्रावधान भी रखा।

गौरतलब है कि अन्य भाषाओं की तुलना में हिन्दी भाषा सहज अमृतवाणी की

तरह है। वैसे भी भारतवर्ष की अधिकांश आबादी हिन्दी भाषा में ही आपसी विचारों को अभिव्यक्त करती है, लेकिन आज का बदलता शैक्षणिक परिवेश बिलकुल उल्टा है। आज राष्ट्र भाषा हिन्दी का स्थान अल्पसंख्यक लोगों द्वारा बोली जाने वाली अंग्रेजी भाषा ले रही है। यह सच्चाई कितनी ही अपमानजनक क्यों न हो पर अब इसे स्वीकार कर लेना चाहिए कि आजाद भारत में हिन्दी, अंग्रेजी से पराजित होती जा रही है, जो काम अंग्रेजों के शासन काल में नहीं हो सका वह अब हो रहा है। अंग्रेजों के जाने के बाद उनकी भाषा के प्रति इस देश में प्रेम का जो सैलाब उमड़ा है, मुहल्ले में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खुल गये। उनके नाम भी अंग्रेजी तर्ज पर रखे गये हैं। विवेकानन्द मेमोरियल्स, सेंट चैतन्य आदि नामों में विवेकानन्द चैतन्य जैसे भक्तों को सन्त कहते वक्त यह भी भुला दिया गया है कि भारतवर्ष में सन्तों की एक अलग परम्परा रही है। जिसमें विवेकानन्द, चैतन्य आदि नहीं आते। दरअसल कुछ वर्षों से अंग्रेजी स्टेटस सिम्बल और रूतवे का प्रतीक बन गयी है।

आखिर इस स्थिति तक हम पहुँचे कैसे ? आजादी मिलने के बाद जो समस्याएँ लम्बित रही, उनमें कश्मीर की और भाषा की समस्या प्रमुख है। इन दोनों समस्याओं की लीपापोती करके यह मान लिया गया कि इससे काम चल जायेगा लेकिन समाधान तक न पहुँची समस्या कितना कष्ट दे सकती है, इसे हम कारगिल में देख चुके हैं। इसी तरह भाषा की समस्या को भी अपरिभाषित अमूर्त मानदण्डों के हवाले कर दिया गया। कहा गया, जब तक हिन्दी समर्थ नहीं हो जाती, तब तक अंग्रेजी जारी रहेगी। हिन्दी के सामर्थ्य का प्रमाण पत्र क्या होगा ? कौन देगा यह प्रमाण पत्र ? कैसे देगा ? सामर्थ्य को कैसे मापा जाएगा ? इन प्रश्नों पर विचार ही नहीं किया गया। इस पर गहरा मन्थन करना होगा।

मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को चलाकर एवं पश्चिमी संस्कृति के प्रति हमारे मन में भक्ति जगायी थी, उसकी कल्पना से बढ़कर हम अंग्रेजी और पश्चिमी संस्कृति के भक्त हो गये। अंग्रेजी भाषा सीखने-सीखाने की अनिवार्यता के बारे में मैकाले ने सन् 1835 ई0 में प्रस्तुत "मिनट ऑन इण्डियन एजूकेशन" में जो बात कही उसमें विक्टोरिया युग के ब्रिटिशों के दम्ब और दर्प की मनोवृति झलकती है। उसने यह घोषणा की, "जिसको अंग्रेजी भाषा का ज्ञान है, उसको दुनियां के सभी अकलमंद देशों द्वारा निर्मित सम्पूर्ण विपुल ज्ञान-राशि प्राप्त है।"

यह उपनिवेशीय मनोवृत्ति जब बदलेगी, तब हिन्दी अपने आप आयेगी। क्योंकि हिन्दी लोकवाणी है, इसलिए तिरस्कार सच्चे माने में लोकतन्त्र का तिरस्कार है। भारतवर्ष के लाखों करोड़ों देहाती जनता के हर्ष-विषाद और आशा-आकांक्षाओं की भाषा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को ठुकराकर उनके जीवन अंग्रेजी की भट्टी में झुलसने का निन्दनीय एवं कुत्सित कार्य तभी रोका जा सकेगा, जब भारतीय भाषाओं के बीच हिन्दी को सेतु बनाया जायेगा। सुधार का हर आन्दोलन घर से ही शुरू किया जाना चाहिये तभी हिन्दी का विकास हो पायेगा।

संगणक *(COMPUTER)*

नि.(हि. अ.) शान्ति स्वरूप
ग्रुप केन्द्र खटखटी

आदिकाल और आधुनिक काल की यदि तुलना करें तो देखेगें कि आधुनिक काल में हर कार्य बड़ी तीव्र गति से हो रहा है। गति की यह तीव्रता विज्ञान के कारण है। हर नया आविष्कार पूर्व के नए आविष्कार से भी नया लगता है जिसकी तुलना में पूर्व का आविष्कार महत्वहीन हो जाता हैं क्या कोई यंत्र मस्तिष्क वाला हो सकता है? ऐसा कभी सोचा भी नहीं गया था, परंतु आज सत्य है यंत्रों में भी बुद्धि होती है, वे सुन बोल सकते है। विचार कर उत्तर भी दे सकते हैं। इसी प्रकार की एक मशीन, एक यंत्र है जिसे कंप्यूटर (Computer) कहते हैं।

कंप्यूटर एक इलैक्ट्रॉनिक उपकरण है, जो कुछ ही सेकेण्ड में समस्या का शत्-प्रतिशत् सही परिणाम देकर समाधान प्रस्तुत कर सकने में समर्थ है। इसमें जैसी सूचनाए दी जाएगी वैसे भी अप्रेक्षित परिणाम/समाधान प्राप्त हो जाएंगे। मोटे तौर पर कंप्यूटर (Computer)को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है

Commonly, Operated, Machine, Particularly Used for Trade, Education & Re search.

कप्यूंटर का इतिहास :-

मानव विकास की कथा से यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि शुरू में मानव अन्य बातों के साथ-साथ गिनती भी नहीं जानता था। धीरे-धीरे अपने विकास क्रम में वह अन्य बातों के साथ गिनती करना सीखा। संगणक का जन्म वास्तव मे तभी से माना जाना चाहिए जबसे मानव ने गिनती आरंभ की। शुरू-शुरू में लकीरें खीच कर या कंकड़ों को इकट्ठा कर गिनने का प्रचलन था। नौ तक कंकड़ होने पर उसे सरकाकर दहाई की ओर इनके स्थान पर एक कंकड़ रख देना, पुनः इकाई के स्थान पर फिर नौ तक गिनना, फिर सरकाकर पुनः वही कम सौ तक के लिए अपनाना पुरानी पद्धति रही।

3500 वर्ष ईसा पूर्व टाइग्रिस धाटी में कंकड़ों के स्थान पर मनकों की समांतर पट्टियों का प्रयोग हुआ था जिसे “एवाकस” कहा जाता है। इसके द्वारा जोड, बाकी गुणा व भाग किए जाते थे। वर्तमान संगणक **(Computer)** के मूल में जो सिद्धान्त कार्य करता है, यह उसका बीज रूप था। 1642 में **Blaze Pascal** ने मात्र अट्ठारह वर्ष की आयु में यांत्रिक संगणक का आविष्कार कर संगणक के इतिहास में अपना नाम लिखवा लिया। इस गणना मशीन का नाम पास्कलाइम रखा गया था।

1694 में Goltesried Leibnitz ने पास्कलइम की तरह ही एक यंत्र बनाया था जिसमें लम्बी संख्याओं की सही सही गणना करने की अतिरिक्त व्यवस्था थी। 1801 में जोसेफ ने पंच कार्ड सिस्टम की खोज कर लूम पर बुनाई काम में धागों को चलाने की नियंत्रण पद्धति प्रस्तुत की। 1833 में वास्तव में कंप्यूटर का रूप प्रस्तुत करने वाला वर्ष था। चार्ल्स बाबेज को यह श्रेय जाता है इसलिए आधुनिक संगठन के पिता कहे जाते हैं। इनके द्वारा बनाया गया यंत्र - **Nth order of equa tion the Nth defferened are equal** के सिद्धान्त पर बना था। इसे **Analytical engene** भी कहा जाता है। **1889-90** में **Dr. Herman** ने संसेस मशीन द्वारा अमेरिकी जनगणना का हिसाब किताब तुरंत पूर्ण कर दिखाया। बाद में अन्य कम्पनियों के साथ मिलकर **IBM** बनाया प्रथम इलेक्ट्रानिक संगणक **ENIAC Electronic Numerical Integrater and Calculater 1946** में बना जिसका वजन 30 टन था। शुरू में संगणक का प्रयोग गणना के लिए किया जाता था व्यापारिक क्षेत्र में इसकी उपयोगिता देखकर **"Urivac" Universal Automatic Computer** बनाया गया।

1946 में सिलिकान ट्रांजिस्टर ने इसकी पीढ़ी को पुष्ट किया, **1964** में **Integrated Cercuit** का उपयोग कर इसका कार्य बढ़ता गया। इस यंत्र से जुड़े अन्य सहायक उपकरण के निर्माण में भी कांति आई और संगणक अत्यंत विकसित रूप में आया। अब आकार में छोटा होकर प्रत्येक घर में प्रवेश कर गया।

संगणक की बनावट, सिद्धांत और कार्य प्रणाली

आमतौर पर संगणक के तीन अंग होते है:-

1. केन्द्रीय संसाधन एकांश

(CPU)

जो कार्य मानव शरीर में मस्तिष्क का होता हे वही (CPU) का कार्य है। इसके तीन अंग होते है। :-

(क) नियंत्रण एकक (ख) स्मृति एकक (ग) गणितीय व तार्किक एकक इसे (ALU) भी कहते है।

2. इनपुट डिवाइसेज *:-*

सुचनाएँ भरने वाले अंगो को इनपुट डिवाइस कहते हैं जो आजकल फ्लापी डिस्क के रूप में देखे जा सकते हैं। इनमें की बोर्ड, फ्लापी डिस्केट, माउस/लाइटपेन, ओसीआर आदि हैं, ये संगणक की आँख, नाक, कान है।

3. आउट पुट डिवाइसेज *:-*

इससे परिणाम प्राप्त होते है। टी.वी. के पर्दे की तरह होता है यह संगणक के हाथ पैर है। इसके अंतर्गत वी.डी.यू., ग्राफ प्लाटर, टेलिटाइपराइटर, माइक्रो फिल्म प्रिंटर सीओएम आते है।

संगणक के प्रकार

प्रकार्य क्षमता तथा आकार के आधार पर संगणको के निम्न प्रकार के होते है :-

1. **डिजिटल संगणक**
2. **एनालाग संगणक**
3. **माइक्रो संगणक**
4. **मिनी संगणक**
5. **मेन फेम संगणक**
6. **माइक्रो प्रोसेसर**
7. **पीसी ट्यूटर संगणक**
8. **बीबीसी संगणक**
9. **सिद्धार्थ संगणक**
10. **हिंदी रोम संगणक**

संगणक क्या, क्या कर सकता है:-

1. **अपराध रोक सकता है। उगलियों के निशान पल भर में देश के कोने कोने में पहुँचा सकता है।**
2. **यातायात नियंत्रित कर सकता है।**
3. **अंतराष्ट्रीय विभाग यात्राओं के सभी प्रकार के आरक्षण, सीट, भोजन का चयन होटल कमरों की बुकिंग, रेट आदि की सुविधा उपलब्ध कराता है।**
4. **बैंको के बंद होने के बाद भी इसके द्वारा नियंत्रित मशीनों की सहायता से पैसा जमा व निकालने की सुविधा।**
5. **कानून व व्यवस्था की देखभाल करने की क्षमता।**
6. **जासूसी कर सकने की विशेषता।**
7. **हिसाब किताब, कर्मचारियों के वेतन, भत्तों, ऋणों की गणना, उत्पादन के आंकडों और उनका संग्रह करना।**
8. **भविष्यवाणी/जन्मकुडंली तैयार करना।**
9. **किसी भी समय किसी स्थान के मौसम की जानकारी।**
10. **शतरंज के खेल के साथ साथ अन्य प्रकार के खेल खेले जा सकते है।**
11. **अंग्रेजी में बात कर सकता है। भाषाई कौशलों में लाभप्रद। कई भाषाओं का अनुवाद उपलब्ध कराना।**
12. **सूचना व प्रसार का माध्यम, श्यामपट्ट का कार्य।**

13. **शिक्षण कार्य में अध्येयता सामग्री उपलब्ध कराने का साधन।**

14. **परीक्षाएं/प्रतियोगिताओं के आयोजन मूल्यांकन तथा परिणामों को तुरंत सही सही तैयार करना।**

15. **डिजाइनिंग, चित्रकारी, एनीमेशन, आदि करना।**

16. **देवनागरी लिपि में भाषा साहित्य सिखाने का प्रावधान।**

17. **बिलिंग, सूचियां आंकडे आदि सेकेण्डों में तैयार करना।**

18. **कंप्यूटर पर परमाणु परीक्षण किये जा सकते हैं।**

इन सबके अलावा यदि संगणक के क्षेत्र में इसी गति से विकास होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जबकि संगणक ऐसे भी कार्य कर सकेगा जिसकी कल्पना आज हम नहीं कर पाते हैं। भारत इसमें पीछे नहीं रहा है। 1984 में नई कंप्यूटर नीति के तहत वह संसार के अन्य देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहा है। हाल ही में हमारे **CDOC** पुणे के वैज्ञानिकों ने परम 10 हजार सुपर कंप्युटर बनाकर विश्व की लाइन में आ गया है। साफ्टवेयर में सबसे आगे है। आज घर-घर में संगणक देखने को मिलते हैं। अनुसंधान की चरम सीमाओं की पहुँच की स्पर्धा में संगणक के बिना कोई देश पंगु कहलाया जायेगा। भारत इस दौड़ में धावक व खिलाडी की तरह पूर्ण वेशभूषा के साथ मैदान में आ चुका है, दौड़ में भाग ले चुका है तथा दौड़ भी आरंभ कर दी है। आशा है इसमें वह कुछ न कुछ प्राप्त करके ही रहेगा।

दिनांक *2.5.2002* को महालेखाकार, मणिपुर कार्यालय, में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्द्धवार्षिक बैठक केन्द्रीय कार्यालयों के विभागाध्यक्ष/ कार्यालय अध्यक्षों ने भाग लिया। बैठक में ग्रुप केन्द्र, केरिपु बल, इम्फाल को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति इम्फाल की वर्ष *2001-20021* के लिए रंनिग शील्ड प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। ग्रुप केन्द्र की ओर से श्री सुनिल मोहन, कमाण्डेंट ने रंनिग ट्राफी व प्रमाण पत्र श्री महालिंगम, महालेखाकार के कर कमलों से प्राप्त किया।

राजभाषा के विकास के लिए साहित्य और मातृभाषा का विकास जरूरी

नि. *(मं)* हंसराज ओझा 'प्रभात'
ग्रु.के.,जमशेदपुर

यह कटु सत्य है कि मानव सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी है। हर मानव के मन में विभिन्न प्रकार की शक्तियों का भंडार है। फिर भी जब वही मानव किसी अन्य से कुछ मांगता है, ठगी या चोरी करता है, बेईमानी अथवा दूसरों को डरा-धमका कर उसका सबकुछ छीन लेता है तब वह अपनी उत्कृष्ट आत्मा की हत्या करता है, यह भी कटु सत्य ही है। ठीक इसी प्रकार जब हम मनुष्य हर प्रकार से सक्षम होते हुए हिन्दुस्तान में जन्म लेकर परतंत्र होकर गुलामी की भाषा में अपने विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं तो हमसे बढ़कर देशद्रोही कोई अन्य नहीं हो सकता वह भी निश्चित सत्य है।

आज जब हम समाज में होने वाली विभिन्न क्रिया-कलापों की ओर अपनी दृष्टि दौड़ाते हैं और इन पर मनन करते हैं तो स्पष्ट दिखाई देता है कि हमारे समुन्नत जागृत समाज में आज कुछ ऐसे हिन्दी साहित्यकारों की भरमार हो गई है जो अपनी त्रुटियों के ऊपर ध्यान नहीं देकर केवल दूसरे की आलोचना करने में आनन्द का अनुभव करते हैं। आप जिधर दृष्टि घुमाइये चारों ओर केवल उन्हीं लोगों का समूह दृष्टि-गोचर होगा जो अपने क्रिया कलाप को भूलकर दूसरे के कर्मों की आलोचना करते हैं। ऐसे लोग अपनी अकर्मण्यता को छिपाने के लिए, अपनी खुद की आलोचना नहीं करते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि ऐसे ज्ञानी पुरूष जिनके केवल कर्मों के निष्पादन से समाज एवं प्रान्त-देश का सर्वागीण विकास हो सकता था, वह वंचित रह जाता है, उनसे होने वाले सामाजिक कल्याण से अगर एक साहित्यकार स्वयं अपने साहित्य की आलोचना कर उसे परिमार्जित कर नया-नया स्वरूप प्रदान करेगा तो इसमें कोई दो राय नहीं कि साहित्य में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि न हो।

हम भारतवासी हैं। यह कहा जाता है कि किसी देश का उत्थान हम हिन्दुस्तान में रहने वाले कितने प्रतिशत ऐसे भारतीय हैं जिनका मनोबल हिन्दी साहित्य के प्रयोग के प्रति जागरूक एवं दृढ़ है। आज आजादी की स्वर्णजयंती मनाने वाले देश में इसकी भाषा स्वयं मूकदर्शक बनकर रह गई है, क्योंकि 50 वर्षों की स्वतंत्रता के बाद भी हममें विदेशी भाषा के प्रति हो लगाव है उसमें कमी नहीं आई है, बल्कि इसके प्रयोग में पहले की अपेक्षा अधिक विस्तार ही हुआ है। आज किसी भी नेता, राजनेता, सांसद, विधायक से लेकर बड़े-बड़े अधिकारियों एवं धनवानों के उपर आप दृष्टिपात कर देखें तो पाएंगे कि एक ओर हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी के प्रति अपने आप को निष्ठावान बताने वाले ये नेतागण, अधिकारीगण अपने पुत्र/पुत्रियों को विलायती स्कूलों में पढ़ा कर गौरवान्वित होते है और हिन्दी भाषी स्कूलों में अपनी संतान को भेजने में इनकी प्रतिष्ठा को आँच लगती है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मेरे इस विचार से अंग्रेजी भाषा का विरोध होता है या मैं विदेशी भाषा का विरोधी हूँ। किसी भाषा का न लिखना उसका विरोध नहीं है, बल्कि अपने दैनिक जीवन में उसका प्रयोग करना अपनी मातृभाषा के प्रयोग के साथ छलावा होता है। हिन्दी का विकास अंग्रेजी के विरोध से नहीं बल्कि हिन्दी के विकास से होगा। हमें चाहिए कि हमें ईमानदारी से तटस्थ होकर इसकी आवश्यकता को समझें और हिन्दी के प्रयोग मे लिए मनोनुकूल स्थिति पैदा करके इसके विकास के लिए अपने मनोबल को सुदृढ़ करें। जिस तरह किसी व्यक्ति विशेष की पूजा करने से उसके गुणों की पूजा करना श्रेयस्कर होता है,

ठीक उसी प्रकार अंग्रेजी हिन्दी भाषा के भेदभाव को मिटाकर हमें चाहिए कि अपने देश की भाषा, राजभाषा हिन्दी जिसके प्रयोग के लिए संविधान में नियम बनाये गये हैं, उसका विकास किया जाय, उसके प्रयोग के लिए संविधान में नियम बनाये गये हैं, उसका विकास किया जाय, उसके प्रयोग के प्रति अपनी निष्ठा के मूर्त रूप प्रदान किया जाय। आज कहने के लिए हर मानव हिन्दी भाषा–भाषी हिन्दी की हिमायत करता है परन्तु वह इसके प्रति कृत संकल्प है, ऐसा नहीं दीखता अन्यथा आधी शताब्दी से अधिक समय से आजाद देश की अपनी राजभाषा अपने प्रयोग के लिए तरस खाए यह एक बिडम्बना ही तो है।

देश के संसद में राष्ट्रभाषा/राजभाषा विभाग का गठन किया गया है। इस विभाग का मंत्रालय से यदि सही आकलन करके देश की राजभाषा के प्रयोग का प्रतिशत निकालने को कहा जाय तो उत्तर वही मिलेगा ढाक के तीन पात। क्योंकि केवल सरकारी कार्यालयों में लगे कुछ नाम पट्टिकाओं आदि को द्विभाषीय लिख कर टांग देने से राजभाषा का सही अर्थ में प्रयोग सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। हमें चाहिए कि देश का न केवल हर कर्मचारी बल्कि हर नागरिक अपने इस पुनीत कर्तव्य को समझे कि सब कुछ होते हुए वह भारतीय है और एक भारतीय के लिए परमावश्यक है कि वह अपनी राष्ट्रभाषा को जागृत जीवित रखें। इसके लिए यह परमावश्यक है कि हम अपनी मातृभाषा एवं अपने साहित्य का समुचित प्रयोग अपने काम काज में करें। इसके विकास के प्रति कृत संकल्प होकर कार्य करें फिर राजभाषा का उत्तरोत्तर विकास होने में कोई बाधक नहीं बन सकता, यह भी कटु सत्य है कि आज देश का हर नागरिक अपने को बिहारी/बंगाली/मद्रासी आदि कहना छोड़कर अन्य देशवासियों के जैसा भारतीय अथवा हिन्दुस्तानी समझें और कहे तो इससे अपने आप भरतीयता की झलक मिलेगी और हर व्यक्ति अपने देश की भाषा के प्रयोग के प्रति जागरूक रहेगा तो विदेशी भाषा का कतई प्रयोग नहीं होगा। हमारी राजभाषा का प्रयोग अबाध गति से होता रहेगा।

अंत में मैं यह कहुँगा कि अंग्रेजी भाषा का विरोध करना हमारी मूर्खता होगी।

हमें किसी भाषा का विरोधी न बनकर अपनी और अपने देश की भाषा के प्रयोग के प्रति जागरूक होकर आगे बढ़ना होगा। अपनी मातृभाषा एवं अपने साहित्य के विकास के प्रति अपना मनोबल सुदढ़ करना होगा तभी सच्चे अर्थों में हम अपने देश की भाषा को सही मार्ग पर ला सकेंगें और इसके विकास में सहायक हो सकेंगे।



"सी. आर. पी. एफ. के वीर सिपाही"

सी. आर. पी. एफ. के वीर सिपाही
दिल खोल के कदम बढ़ाते हैं।
ये कभी पीछे नहीं हटते,
जब कदम आगे बढ़ाते हैं।
आन-बान और शान को लेकर,
जी-जान की बाजी लड़ते हैं।
वीर बहादुरी के लिए वे,
स्वयं इतिहास रचा करते हैं।
सी. आर. पी. एफ. की महिला सिपाही (कमलेश) ने,
ऐसी ही बहादुरी दिखाई है।
स्वंय शहीद होकर उसने,
संसद की शान बढ़ाई है।
शत्-शत् नमन् करतें हैं उन्हें,
जिन्होंने अपने प्राणों की बलि चढ़ाई है।

सि० (दफ्त.) धेनश कुमार,
ग्रुप केन्द, जालन्धर,

राष्ट्रभाषा “राजरानी हिन्दी”

स.उ.नि.(म) योगेन्द्र प्रसाद 102 बटा. द्रुकाब

भारत एक विशाल देश है जिसमें अनेक विविधताओं के होते हुए भी अद्भुत एकता पाई जाती है। किसी देश में प्रजातंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उस देश का राजकाज उसकी जनता की भाषा में हो। इसी बात को ध्यान में रखकर ही हमारे संविधान में 18 प्रांतीय भाषाओं को मान्यता दी गई है तथा देश का राजकाज चलाने के साथ–साथ केन्द्र व राज्यों के बीच सम्पर्क बनाए रखने की भूमिका निभाने का दायित्व हिंदी को सौंपकर 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। इसी उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

यह सर्वविदित है कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) में हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। भारत के नागरिक होने के कारण भारतीय संविधान के तहत लिए गए सभी संकल्पों का पूरा–पूरा पालन करना हमारा सांविधिक दायित्व है। संविधान के 17वें भाग में दिए गए उपबन्धों के अनुसार संविधान लागू होने के 15 वर्षों की अवधि में कार्यालयीन कामकाज करने की दृष्टि से हिंदी को अंग्रेजी का स्थान ले लेना था। किन्तु वर्षों से अंग्रेजी में कामकाज करने की हमारी आदत हमसे अब तक नहीं छूटी है एवं हमारी मानसिक पराधीनता समाप्त नहीं हुई है। कार्यालय में कामकाज करने वाले अनेक कार्मिक पहले से ही हिंदी जानते हैं, उन्हें न केवल हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान होता है, बल्कि कई लोगों को उसमें दक्षता भी प्राप्त रहती है तथा अहिंदी भाषी कार्मिकों को हिंदी शिक्षण योजना के द्वारा हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान भी दिया जाता है, फिर भी वे हिंदी में काम करने के लिए पहल नहीं कर पाते, हिंदी में काम करने से कतराते हैं। कुछ लोग तो वरिष्ठ अधिकारियों के आदेश की प्रतीक्षा में बैठे रहते हैं। इसके पीछे कौन सी मानसिक ग्रंथि है ? कौन सा वह मनोवैज्ञानिक गतिरोध है जो हमें इस दिशा में पहल करने से रोक रहा है ? वह है अभ्यास। लेकिन जब तक कोई पानी में नहीं उतरता है उसे तैरना भी तो नहीं आता। कामकाजी हिंदी की नदी में तैरने के लिए अभ्यास से अच्छा खासा हुनर मालूम हो सकता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि “हिंदी में इस देश की मिट्टी की सुगंध विद्यमान है और भारतवर्ष का प्रत्येक नागरिक अपने निजी राज्य की सुगंध से सुरभित हिंदी का स्वच्छंद प्रयोग कर सकता है।

हिंदी साधारण जनता की भाषा है। जनता के लिए ही उसका जन्म हुआ था और जब तक अपने को जनता के काम की चीज बनाए रहेगी, जनचित के आत्मबल का

संचार करती रहेगी तब तक उसे किसी से डर नहीं है। वह अपने आपकी भीतरी शक्ति के बल पर बड़ी हुई है। लोक सेवा के महान व्रत के कारण बड़ी हुई है। और यदि अपनी मूल शक्ति के श्रोत को भूल नहीं गई तो निःसंदेह अधिकाधिक शक्तिशाली होती जाएगी। उसका कोई कितना भी विरोध करे वह शक्तिशाली ही रहेगी। यह विरोधों और संधर्षों के बीच पली है। उसे जन्म समय ही मार डालने की कोशिश की गई थी, पर वह मरी नहीं क्योंकि उसकी जीवनी शक्ति का अक्षय श्रोत जनहित है। वह किसी राजशक्ति की अंगुली पकड़कर यात्रा तय करने वाली भाषा नहीं है, अपने भीतरी शक्ति से महत्वपूर्ण आसन अधिकार करने वाली अद्वितीय भाषा है।

शायद ही संसार की कोई ऐसी भाषा हो जिसको उन्नति में पग–पग पर इतनी बाधा पहुँचाई गई हो, फिर भी जो इस प्रकार अपार शक्ति संचित कर सकी हो। आज वह सैकड़ों "प्लेटफार्मों" से करोड़ों विद्यालयों और दर्जनों प्रेसों से नित्य मुखरित होने वाली परमशक्तिशालिनी हिंदी भाषा है। उसकी जड़ जनता के हृदय में है वह करोड़ों नर–नारियों की आशा और आकांक्षा, क्षुधा और पिपासा, धर्म और विज्ञान की भाषा है। भारत के हृदय की आत्मा है।

हिंदी भारत की भाषा है। जो लोग दक्षिणी राज्यों में रहते हैं वे भी भारत के ही हैं। इन राज्यों में कुछ लोगों द्वारा हिंदी का प्रतिरोध क्यों ? हिंदी के स्थान पर अंग्रेजी के प्रति स्थापना की वकालत करना देश भक्ति के विरूद्ध है, कोई भी विदेशी भाषा भारत की राष्ट्र भाषा नहीं हो सकती और न ही होनी चाहिए। अंग्रेजी को यहाँ रखना जरूर चाहिए, इसका अध्ययन भी किया जाना चाहिए। क्योंकि यह विश्व की अत्यंत समृद्ध भाषाओं में से एक है और भारतीयों के लिए बाहरी दुनिया के लिए एक खिड़की के समान है।

भारत एक सर्व सत्तासंपन्न गणराज्य है। यहाँ का संविधान बहुमत का सम्मान और अल्पमत की सुरक्षा का उत्तरदायित्व ग्रहण करता है। अतः बहुमत और अल्पमत को अपनी सीमाओं का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए हम समस्त देशवासी संविधान के प्रति निष्ठा व्यक्त कर चुके हैं और करते आ रहे हैं। इसी के साथ ही राष्ट्रभाषा जिसे भारतीय संविधान स्वीकृत कर चुका है उसकी उपेक्षा भी पिछले 52 वर्षों से जनता नहीं जननायक करते आ रहे हैं। इसका मुख्य कारण है कि हमारे जननायक संकुचित क्षेत्रियता की सीमा से न तो मुक्त हैं और न ही क्षेत्रिय जनरूचि को राष्ट्रीय जनरूचि तक पहुँचाने में समर्थ हैं। भाषाई आधार पर राज्यों का पुर्नगठन एक बड़ी भूल भी थी जिसकी हमें काफी कीमत चुकानी पड़ी है। हिंदी संसार की परमशक्तिशाली भाषाओं में से एक है और वह अपना स्थान लेकर ही रहेगी।

वाशिंगटन, 29 मई 2002 : एजेंसी। विश्व में बोली जाने वाली 10 मुख्य भाषाओं में हिंदी दूसरे और बंगाली पांचवे स्थान पर है। वर्ल्ड एलमानके एण्ड बुक ऑफ फैक्टस् मार्डन लैंग्वेज एशोसिएशन ऑफ अमरीका और अमेरिकन कांउसिल ऑन द टीचिंग ऑफ फॉरेन लैंग्वेज के अनुसार :– संसार भर में छत्तीस करोड़ साठ लाख लोग हिंदी

और बीस करोड़ सत्तर लाख लोग बंगाली बोलते हैं। इस संस्थाओं के आंकड़ों के अनुसार सत्तासी करोड़ चालीस लाख लोगों द्वारा बोली जाने वाली चीनी भाषा पहले नम्बर पर है जब कि अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या चौंतीस करोड़ दस लाख है, और इसका विश्व में तीसरा स्थान है। स्पेनिश चौथे, अरबी छठे, पुर्तगाली सातवें, रूसी, आठवें, जापानी नौवें और जर्मन भाषा बोलने वाले दसवें स्थान पर हैं। फिर भी कुछ लोग कहते हैं कि अंग्रेजी ही सबसे बढ़ियां भाषा है। मैं यहाँ पर कहना चाहुँगा कि यदि अंग्रेजी बहुत बढ़िया भाषा है तो अंग्रेज उससे भी बढ़िया हैं, क्यों न उन्हें ही हिन्दुस्तान में पुन: बुला लिया जाए ? अपनी भाषा से अच्छी कोई भाषा हो ही नहीं सकती क्योंकि जिस भाषा को हम ग्रहण/अपनाते हैं वह भाषा अपनी संस्कृति और रस्मों रिवाज का भी असर डालती है।

इस देश की महादेशीयता का अनुभव करते हुए विश्व कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर ने गाया था – "महामावेर सागर तीरे" भारत महामानव समुद्र है। समुद्र सब कुछ आत्मसात करता है। गन्दगी उसे छू नहीं सकती है। कवि संतोषानन्द ने कितना सही कहा है– "हिन्दी हिंद सागर है, हिंदी कंचन जंधा है, खेत–खेत को सींच रही यह जन गण की गंगा।" भाषा के क्षेत्र में हिंदी सचमुच महासागर है। अमीर खुसरो (सन 1255–1324) ने कहा है कि – "हिंदी हिन्दुस्तान की तूती है।" इस प्रकार से हिंदी न तो वर्ग विशेष की धरोहर है और न सत्ता विशेष की संपदा बल्कि यह तो युग–युग से भारतीय जन–चेतना की जीवित सहज वाणी है।

स्वाधीनता के बाद हिंदी के विकास का एक नया क्षितिज उभरा है। विदेशों में भारत की मान्यता प्राप्त राजभाषा के रूप में हिंदी का आदर बढ़ा है। फिजी, मारिशस, सूरीनाम, त्रिनिनाद (वेस्टइंडीज) इन चारों देशों में 52 प्रतिशत हिंदी भाषी भारतीय हैं और हिंदी की पत्र–पत्रिकाएं भी निकलती है। इसके अतिरिक्त भारत के बाहर लगभग सौ विश्वविद्यालयों में किसी न किसी रूप में हिंदी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। कई विश्व विद्यालयों में हिंदी का उच्च–स्तरीय शोध कार्य भी हो रहा है। विदेशों से हिंदी सीखने के लिए विद्यार्थी भारत आ रहे हैं। यदि हम चाहते हैं कि हिंदी की वर्तमान स्थिति में परिवर्तन हो और इसका उपयोग उस रूप में हो जैसा कि संविधान में अपेक्षा की गई है, सो हमें इसके लिए सार्थक प्रयत्न करने होंगे क्योंकि रूस, चीन, जापान, जर्मनी, तुर्की की पहचान उसकी भाषा से ही है तथा आज वे देश विकास की चरम सीमा पर अपनी भाषा के बल पर ही पहुँचे हैं। विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी दूसरे स्थान पर है तथा यह तकरीबन 50 देशों में बोली, समझी जाती है। भारतवर्ष में करीब 90 प्रतिशत लोग इसी भाषा को बोलते और समझते हैं तथा इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारे देश हिन्दुस्तान की पहचान केवल हिंदी से ही बन सकती है। इस देश में यदि अंग्रेजी को बढ़ावा दिया गया तो हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं के प्रतिभावान है उनकी हत्या करने के समान होगा।

नब्बे साल के संघर्ष के बाद एक आधी रात को भारत स्वतंत्र हुआ था, किन्तु हिंदी

को अब भी ऐसी आधी रात का इंतजार करना पड़ रहा है। विचारणीय यह है कि हिंदी की संस्कृत सबल जननी है और प्रंतीय भाषाएं उसकी सुधड़ बहनें है, जिसमें विपुल सम्पदा हैं, जो शतदल कमल जैसी संस्कृति को बाहक हैं और जिसे "गोरे अंग्रेज नहीं हटा पाए, उस हिंदी को भला हम काले कैसे हटा पाएंगे। हिंदी को इतनी ही सीमा में आबद्ध समझाना उसकी वास्तविक शक्ति को गलत करना है। हिंदी विराट जनसंख्या के कारण बड़ी नहीं है। कोई भाषा महज इसलिए बड़ी है कि "करोड़ों जनता की हृदय और मस्तिष्क की भूख मिटाने का वह इस देश में सबसे जबर्दस्त साधन है। वह इसलिए बड़ी है कि भारतवर्ष की हजारों वर्ष की अपरिमेय चिंताराशि को ठीक–ठीक सुरक्षित रख सकने का मजबूत पात्र है। वह इसलिए बड़ी है कि करोड़ों की तादाद में अकारण कुचली हुई गूंगी जनता तक आशा और उत्साह का संदेश इस जीवंत और समर्थ भाषा द्वारा दिया जा सकता है। वह इसलिए बड़ी है कि उसके आँचल की छाया में ऐसे हजारों महापुरूषों के पनपने की संभावना है जो न केवल इस देश को बल्कि समूचे संसार को विनाश के कगार से बचाने की साधना करेंगे।

राष्ट्रभाषा के मार्ग में मूल बाधा यह है कि दक्षिण भारतीय लोगों को हिंदी स्वीकार्य नहीं हैं। देश का बहुमत जिसे स्वीकार करता है अल्पमत को उसकी अवमानना इसलिए शोभा नहीं देता क्योंकि उन्हें लोकतंत्र में विश्वास है। अंग्रेजी जो भारत के माथे पर कलंक जैसी चिपकी है, उससे हमें मुक्त होना है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा है कि–

"करहूँ विलम्ब न भ्रात अब उठहूँ
मिटावहूँ सूल ।
निज भाषा उन्नति करहूँ, प्रथम जो
सब को मूल ।।

अर्थात् यदि सचमुच हम देश की उन्नति चाहते हैं तो सर्वप्रथम अपनी भाषा की उन्नति करनी चाहिए क्योंकि यही देश को उत्थान का मूल मंत्र है। अन्त में मैं इतना कहना चाहुँगा कि हिंदी के पक्ष–विपक्ष में अनेक तर्क दिए जाते हैं, उन्हें मैं यहाँ दुहराना नहीं चाहूँगा। मैं केवल इतना कहना चाहूँगा कि अगर भाषा अशक्त है तो उसे सशक्त बनाइए। मगर राष्ट्रवाणी के रूप में किसी विदेशी भाषा की वकालत करना आत्मधात है। यह ध्रुव सत्य है। समय की यही पुकार है कि हम अपनी भाषा, और अपने व्यवहार को शीध्र बढ़ाएं।

दार्शनिक सुविचार

1. आशय स्वयं अपनी प्रतिपूर्ति का मार्ग खेजता है।
2. यदि आप प्रसन्न रहना चाहते है तो, दूसरों को प्रसन्नता दें।
3. किसी भी वस्तु व व्यक्ति से लगाव ही भय और असुरक्षा को जन्म देता है।

4. अनेश्वय व अज्ञात के बिना जीवन, केवल पुरानी यादों की पुनरावृत्ति के अतिरिक्त कुछ नहीं है।
5. जीवन की प्रत्येक समस्या में सुअवसर लिया है ।

स.उ.नि (म) दुर्ग पाल
प्रशा. 2 (क०) महानिदेशालय,

ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल, जालंधर में हिन्दी कक्षाओं का आयोजन



अपर पुलिस. उप महानिरीक्षक बलवंत सिंह, ग्रुप केन्द्र परिसर में हिंदी कक्षाओं का शुभारम्भ करते हुए

ग्रुप केन्द्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, सरायखास, जालंधर में भर्ती किए गए 172 बंगला व उड़िया भाषी नव–आरक्षियों को हिंदी का ज्ञान नहीं होने पर इन नवारक्षियों को हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी का प्रशिक्षण दिलवाने के लिए अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री बलवंत सिंह ने सर्वकार्यभारी अधिकारी, हिंदी शिक्षण योजना व संयुक्त आयकर आयुक्त रेन्ज–1, जालंधर से सम्पर्क किया। उनकी प्रेरणा व मार्गदर्शन में राजभाषा विभाग से ग्रुप केन्द्र परिसर जालंधर में अंशकालिक हिन्दी भाषा प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ अंशकलिक प्रशिक्षकों के रूप में आयकर

विभाग जालंधर के हिंदी अनुवादक सतीश कुमार अरोड़ा और ग्रुप केन्द्र–जालंधर के हिंदी अनुवादक बालकृष्ण टंडन को नियुक्त कर किया गया । अंशकालिक हिंदी भाषा प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन श्रीमती प्रीति गर्ग, सर्वकार्यभारी अधिकारी, हिंदी शिक्षण योजना व संयुक्त आयकर, आयुक्त जालंधर ने किया ।

उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष भी 2 जुलाई से 16 नवम्बर, 2001 तक के.रि.पु. बल, जालंधर परिसर में हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत "प्रवीण पाठ्यकम" की कक्षाएं चलाई गई थी जिनमें 69 अहिन्दी भाषी नवारक्षियों को प्रशिक्षित किया गया था । प्रशिक्षण की समाप्ति पर सभी 69 प्रशिक्षणार्थी हिंदी शिक्षण योजना, नई दिल्ली की प्रवीण परीक्षा में सम्मिलित हुए थे तथा सभी उत्तीर्ण घोषित हुए । अतः यह ग्रुप की एक उपलब्धि है ।

संपर्क और सरकारी काम–काज की भाषा हिंदी

उ. नि. *(मं.)* अमरनाथ सिंह महानिदेशालय

14सितम्बर सन् 1949 के दिन भारतीय संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था । भारत में अनेक भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती है परन्तु भारतीय जनमानस के लिए हिन्दी बोलना, समझना जितना आसान है उतना कोई अन्य भाषा नहीं है । अतः यही मूल कारण है कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय देश के कोने–कोने में लोगों से संपर्क करने के लिए हिन्दी ही संपर्क सूत्र का काम किया । हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों ने हिन्दी के माध्यम से पूरे देश में एकता का सूत्रपात किया था । इसलिए राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करके हमने इसके प्रति सही सम्मान प्रदान किया है । विविध भाषा संपन्न भारत देश के किसी सामान्य नागरिक को देश के किसी कोने में हिन्दी के सहारे विचार-विनिमय करने में कठिनाई नहीं महसूस होती है। इस प्रकार का समृद्धशाली शब्दकोश और सरलता अन्य किसी भाषा में देखने को नहीं मिलता है। यह बात अब पूरी तौर पर स्वीकार की जाने लगी है। हिन्दी ही भारत जैसे विशाल देश के लिए संपर्क भाषा राजभाषा और सरकारी काम-काज की भाषा के लिए उपयुक्त है। यह भी सत्य साबित हो चुका है कि एक अहिन्दी भाषी जितनी जल्दी हिन्दी सीखकर अपनी काम-काज की भाषा बना सकता है उतनी जल्दी किसी अन्य दूसरी प्रादेशिक भाषाओं को नहीं सीख सकता है। यदि एक अहिंदी भाषी सामान्य रूप टूटी-फूटी हिन्दी भाषा नियमित रुप से प्रयोग करता रहे तो वह अच्छी से अच्छी हिन्दी प्रयोग करने में सक्षम हो सकता है। इस प्रसंग में एक प्रचलित कहावत इस प्रकार से है:–

करत-करत अभ्यास के
जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर
पड़त निसान।

सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि हिन्दी भारत की संपर्क भाषा, राजभाषा और सरकारी काम-काज की भाषा बन चुकी है। यह हमारे लिए गर्व की बात है। अभी आश्यकता इस बात की है कि हम दिनों-दिन इसके प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना है जिससे कि यह और समृद्धि की राह पर अग्रसर हो सके।

हिन्दी हिन्द की है जुबान

हिन्दी हिन्द की है जुबान।
यही राष्ट्र की मुख्य पहचान।

मोहनजोदड़ो हड़प्पा सिन्धु घाटी
चली आ रही आर्यों की परिपाटी
संस्कृत की यह है सहपाठी
मिलते खुदाई के अवशेषों से, सभ्यता चढ़ी परवान।

सारनाथ एवं एलोरा की गुफाएँ
स्वंय में रही कुछ रहस्य छिपायें
अशोक स्तम्भ मध्य चक्र दर्शाएं
सत्यमेव जयते कहते ही, खिल उठे मुस्कान।

जो भी हो मन के उतार चढ़ाव
व्यक्त करें अन्त के भाव
इक दूजे से जड़े लगाव
प्रान्तीय द्वेष ईष्या कम हो, किया ये नेताजी व्याख्याना।

हिन्दी से यह हिन्द कहलाया
भरत से भारत नाम रखवाया
इसे बोल गोरों को भगाया

“नन्द जी” हिन्दी ग्रहण करो तब हो राष्ट्र उत्थान

हव०/चा० नन्द किशोर
84 बटा० केरिपु बल

राजभाषा की महिमा

कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी,
फैली हुई है राजभाषा हमारी,
इधर आसाम से लेकर गुजरात,
जमाई है राजभाषा ने धाक,
हमारी संस्कृति और सभ्यता अनादि काल से है जिंदी,
क्योकि हमारी राजभाषा है हिन्दी
हिन्दी से है हमारा गहरा नाता,
इसलिए हम पर गर्व करती भारत माता,
चाहे हम किसी भी धर्म के अनुयायी है
आखिर में भाई-भाई हैं
चाहे हम हैं कन्नड़, मलयाली या राजस्थानी,
आखिर में हम है हिन्दुस्तानी,
यही तो हमारी पहचान है,
ऊँचा रहे तिरंगा प्यारा इसी में हमारी शान है।
आज संम्पूर्ण देश की एक ही राजभाषा है,
इसके ही कारण देश एकता में बंधा है और बंधा रहेगा
यही हमारी आशा है।

स.उ.नि./मं. धर्मसिंह मीणा,
ग्रुप केन्द्र, गांधी नगर,

राजभाषा बनाम मानसिकता

नि.(हे.अ.) शिवकुमार खण्डेलवाल
ग्रुप केन्द्र, नीमच

संविधान निर्मात्री समिति द्वारा हिंदी को राजभाषा और देवनागरी लिपि को स्वीकृत किया था, तभी से वास्तव में हिंदी के राजभाषा पदसिद्ध किए जाने की उपादेयता का संकट शुरू हो गया था। सन् 1949 का दुर्भाग्यपूर्ण दिवस 14 सितम्बर जब (राजभाषा शीर्षक) अन्तर्गत अनुच्छेद 343 से 351 तक के प्रावधान संविधान में शामिल किए गए। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् हमनें (स्व) शब्द का कहां और कितना अपमान किया यह तो विभिन्न क्षेत्रों में विचार विश्लेषण का विषय है, लेकिन सबसे सत्य रूप सामने यह उपस्थित हुआ कि हमने (स्वभाषा) सम्मान की अभिलाषा की पूर्ण बलि दे दी। आज भी हम एक अग्रेंजी की जिजीविषा में जी रहे हैं। देशभाषा की सर्वोच्च सत्ता का समर्थक राजनीतिज्ञ सत्ता शीर्ष तक पहुँचने के बाद आज भी हमारी राजभाषा उपेक्षित और परिहास के भावों का सामना करने के लिए किंकर्तव्यविमूठ है। इसका कारण हमारी अंग्रेजी मानसिकता, भाषावर ईमानदार वर्चस्व और प्रभुता का अभाव है। इससे भी ऊपर है हमारे संविधान में अंतनिर्हित राजभाषा विद्यमान।

आज से 63 वर्ष पूर्व 14 सितम्बर के दिन संविधान के निर्माताओं ने हिंदी को राजभाषा घोषित करते हुए उसका राज्यभिषेक किया था और अनुच्छेद 343 बताता है कि यह राज्यभिषेक 15 वर्ष पश्चात काल से अर्थात 1965 से लागू होगा। लेकिन दुर्भाग्य है कि 31 वर्ष के कालखण्ड में भी हमारी स्वभाषा, हमारी देश भाषा की जो स्थिति है वह कहीं से भी राज्यभिषेक के मान की मनीषा क्रियान्वयन से सर्वथा असफल देखी जा सकती है। राष्ट्र भाषा हिंदी आज भी राजभाषा का मुकुट पहिने राजदरबार में रानी की हैसियत को प्राप्त करने में सर्वथा असफल है।

संविधान में निहित है कि, हिंदी भाषा की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार कर उसका विकास करना सरकार का कर्तव्य है ताकि वह भारत में सामाजिक संस्कृति के समस्त शब्दों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके। उसकी मौलिकता में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और अनुसूची में शामिल अन्य भारतीय भाषाओं के रूप शैली और पदावली का आत्मसात करते हुए, जहां तक आवश्यक तथा वांछनीय हो, वहां तक उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण कर उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य होगा। अनुच्छेद 351 का प्रावधान आज राजभाषा पर कीचड़ उछालने का संसाधन बन गया है और आश्चर्य है। और आष्चर्य है कि ऐसी हरकत भी वही लोग करते हैं जिनकी दाल-रोटी का अधिकांश हिस्सा इसी भाषा से चलता है।

हिन्दी के उत्थान के लिए संविधान ने प्रत्येक राज्य पर यह जिम्मा सौंपा है कि वह राजभाषा आयोग का गठन करेगा और उसके विकास के लिए क्रियाशील होकर सुझावों का प्रेषण और फिर अनुपालन करेगा, पर लगता है कि राजभाषा की

संवैधानिक स्थिति भी उसके उत्थान में अवरोध बन जाती है। यह सार्थक है कि हिंदी उत्थान के नाम पर किए जाने वाले सरकारी प्रयास हिंदी की प्रतिष्ठा वृद्धि में तो सहायक नहीं बन सके, किन्तु उनके कारण हिंदी का भविष्य अपनाना, भयानक त्रासदी की ओर संकेत करता है।

लालबहादुर शास्त्री ने कहा था कि हम दुनिया में तभी इज्जत हासिल कर सकते हैं जब आंतरिक रूप से हम मजबूत हों, इसके लिए हमें राष्ट्रीय एकता चाहिए। साम्प्रदायिक और प्रांतीय भाषीय विवाद देश को कमजोर बनाते हैं। लेकिन क्या होता है हमारे देश में। सत्ता पर नियंत्रण करने के लिए क्षेत्रीय भाषाई विवाद को हवा दी जाती है। इतना ही नहीं संविधान के स्पष्ट उपबंधों के बावजूद हिंदी विरोधी आन्दोलनकारियों को प्रांतीय सरकार द्वारा पेंशन दी जाती है। हिन्दी के विकास उत्थान और उसके वास्तविक पद संस्थापन के लिए हिंदी भाषी लोगों को अपनी मानसिकता में परिवर्तन लाने की आवश्यकता को भी स्वीकारना होगा। अहिंदी भाषी लोगों को हिंदी की ओर प्रवृत्त करना होगा और उनकी हिंदी के उच्चारण दोषों को उपहास का नहीं अपितु सुधारकारी प्रोत्साहन की मानसिकता से देखना होगा। हम किसी का उपहास करके अपने सम्मान की इच्छा को संजोएगें तो यह कभी संभव नहीं होगा। सरकारी स्तर पर भी हिंदी भाषी क्षेत्रों में अन्य भारतीय भाषाओं के उत्थान संरक्षण-संवर्धन के लिए प्रयास भाषाई सद्भाव के लिए आवश्यक हैं।



ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम के द्वितीय कमान अधिकारी श्री विजय कुमार हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री एम. एल. गुप्ता से शील्ड प्राप्त करते हुए।

भाषा का सबसे अच्छा विकास और उसका प्रचार स्वतः स्फूर्त प्रेरणा से ही होता है। यह स्वतः स्फूर्त प्रेरणा कभी भावनाओं के आवेग से मिलती हैं, तो कभी राष्ट्रीयता

के भाव से मिलती है। जब कोई काम खुद आगे बढ़कर किया जाता है तो उससे केवल सफलता ही नहीं मिलती बल्कि बहुत बड़ा आत्मसंतोष मिलता है। राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार का काम इसी तरह का एक काम है। अतः हर एक को इसे राष्ट्रीय कर्तव्य समझकर सामने आना चाहिए तथा अपने-अपने स्तर पर जितना कुछ भी हो सकता है, योगदान करना चाहिए।

आज का प्रयास सुखद कदम हो सकता है, इसी मूल भावना से हमारा नैतिक कर्तव्य व उत्तरदायित्व है कि भारत मां के सम्माननीय नागरिक कहलाने हेतु भारत की बिन्दी हिन्दी को बिन्दु न बनने दें और भरपूर प्रयत्न करें कि शासकीय स्तर पर जो लिखें, बोलें, हस्ताक्षरित करें अधिकाधिक सीमा तक हिन्दी में करें। एक बिन्दु की आवश्यकता है फिर रेखाएं और वृत्त स्वयमेव उभरेगें। आज की स्थितियों में हमें मानकर चलना चाहिए कि राष्ट्रीय अस्मिता के प्रश्न नागरिकों के हैं जो इसी स्तर पर सुलझेगें।

सपना

तोड़ दी हिन्दी की कमर, शब्दों को मोड़ दिया।
मेरे भारत वासियों, क्यों हिन्दी लिखना छेड़ दिया।
मुंह से भी हिन्दी का अब, प्रयोग कहाँ होता है।
आजकल तो आँख का, आंसू भी इंगलिश देता है।
माता-जी को माँम करके, भाषा ने पिघला दिया।
थैक्यूं उसको कह दिया, जिसने प्यार से सहला दिया।
ना बोलने में ना लिखने में, हिन्दी का प्रयोग है।
टोटल कर दिया उसे, जो शुद्ध हिन्दी में योग है।
हिन्दी को खिचड़ी बनाकर डाला, कागजों के पेट में।
'पधारों' की जगह क्यों लिख दिया, 'वेल्कम' सभी गेट में।
बाबू जी को डैड कहें, चाची को कहें आंटी।
इस घुसपैठ की भाषा ने, हिन्दी को दे दी झण्डी।
नमस्कार छोड़ करके, करने लगे हैं हाय।
अलविदा को भूल गये हम, इंगलिश में करे बाय।
हिन्दी को चौराहे पर, अब लिख दिया है नारों में।
टूटी-फूटी मिलती है हिंदी, शहर की दीवारों में।

बस पोस्टरों में हिन्दी का यहाँ गुणगान है।
निरस बना रहे उसे, जो हिन्दी शब्द रसों की खान है।
सपना है हिन्दी भाषा का, मेरे सिर पर मुकुट रहे।
साकार करे उन सपनों को, जो कदम-कदम पर टूट रहे।
अमृत रस मेरे शब्दों में मेरी मात्राओं में ज्ञान है।
अपना कर देखो मुझे, मेरे वर्ण-वर्ण में जान है।
परचम फहरा दो मेरे शब्दों का, पहुँचा दो मुझे शिखर पर।
पताका बन लहराऊँगी विश्व में, राज करेगी सभी जिगर पर।

स. उ. नि.(मं.) दिनेश चन्द्रा,
ग्रुप केन्द्र अजमेर

राष्ट्रभाषा के विषय में महापुरुषों के विचार

1. "मातृभाषा का अनादर, माँ के अनादर के बराबर है। जो मातृभाषा का अपमान करता है वे देश-भक्त कहलाने लायक नहीं।"

-महात्मा गाँधी

2 "हिन्दी के विरोध का कोई भी आन्दोलन राष्ट्र की प्रगति में बाधक है।"

-सुभाष चन्द्र बोस

3. "राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वसामान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं है। मेरे विचार में हिन्दी ही ऐसी भाषा है।"

-लोकमान्य तिलक

4. "अगर आज हिन्दी राष्ट्रभाषा मान ली गई तो वह इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत विशेष की भाषा है, बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता, व्यापकता और क्षमता के कारण सारे देश की भाषा है।"

-सुभाष चन्द्र बोस

5. "हिन्दी जानने वाला आदमी सम्पूर्ण भारत में यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिन्दी बोलने और समझने वाले व्यक्ति मिल सकते हैं। हिन्दी सीखने का कार्य एक ऐसा त्याग है जिसे दक्षिण भारत के निवासियों को राष्ट्रीय एकता के हित में अवश्य करना चाहिए।"

-श्रीमती एनी बेसेंट

6. "भाषा और साहित्य की जागृति राष्ट्रीय उन्नति के मार्ग की पहली मंजिल है।"

-पुरूषोत्तमदास टंडन

7. “किसी दूसरी भाषा को जानना सम्मान की बात है, लेकिन दूसरी भाषा को अपनी राष्ट्रभाषा के बराबर दर्जा देना शर्म की बात है।”

-महादेवी वर्मा

8. “हिन्दी हिमालय से लेकर कन्या कुमारी तक व्यवहार में आनेवाली भाषा है।”

-राहुल सांस्कृत्यायन

9. “चूंकि भारतीय एक होकर समन्वित संस्कृति करना चाहते हैं। इसलिए समस्त भारतीयों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे हिन्दी को अपनी भाषा समझ कर अपनाएं।”

-डा. भीमराव अम्बेडकर

10. “देश की भाषाओं के बीच हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में कार्य करना है। इसे इसलिए मान्यता नहीं मिली है कि यह सबसे अधिक विकसित भाषा है य वरना इसलिए क्योंकि इसे अहिन्दी भाषी लोगों ने अंगीकार किया है।”

-इन्दिरा गाँधी

संकलन स.उ.नि. (मं.) सरला गुप्ता
ग्रु.के. पिंजौर



डा. वाई. लक्ष्मी प्रसाद उपाध्यक्ष, संसदीय भाषा समिति से राष्ट्रपति के आदेशों का सकंलन ग्रहण करते आर.ए.एफ. एवं पश्चिमी सेक्टर के पुलिस महानिरीक्षक श्री जी.एम. श्रीवास्तव



ग्रुप केन्द्र आवड़ी के हिंदी काम-काज का जायजा लेते हुए संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति के सदस्यगण

रजि० नं० 4767/87



मैनचेस्टर (यू.के.) में आयोजित सत्रहवीं कॉमन वैल्थ खेलों में पदक जीतने वाले केरिपु बल खिलाड़ियों के साथ बल के महानिदेशक डा. विजय मिश्र एवं दाहिने ओर महानिदेशक (मुख्यालय) श्री हिमांशु कुमार

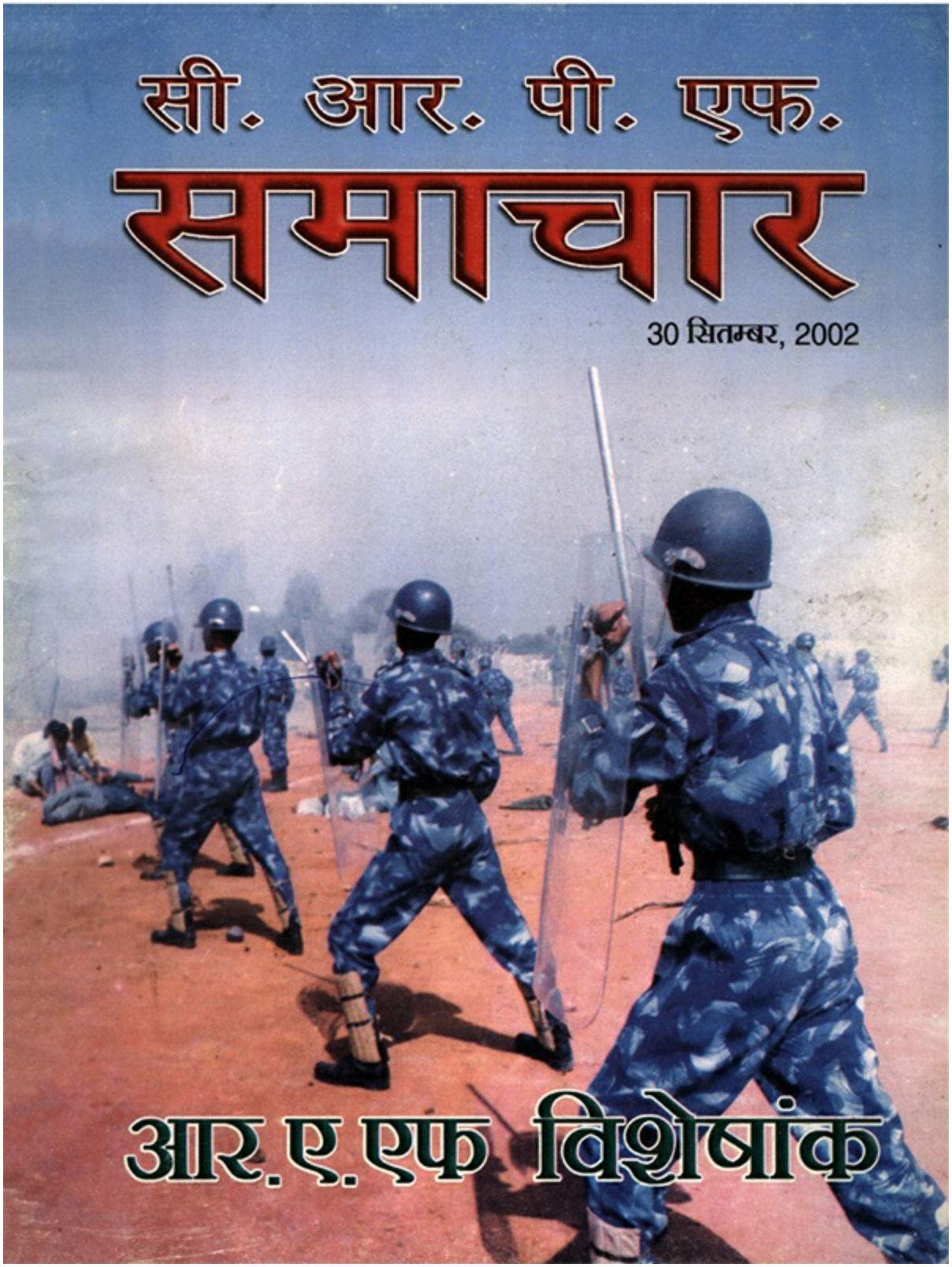
कॉमन वैल्थ खेलों में पदक जीतकर आने वाले केरिपु बल के खिलाड़ियों का हवाई अड्डे पर स्वागत करते बल के अधिकारी व जवान



सी. आर. पी. एफ.

समाचार

30 सितम्बर, 2002



आर.ए.एफ विशेषांक



आर०ए०एफ द्वारा आयोजित सद्भावना सेमिनार का उद्घाटन करते हुए पूर्व विदेश सचिव श्री जे०एन० दीक्षित



कोसोवो में तैनात सयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के अधिकारी बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र से चर्चा करते हुए



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-15 अंक-6

30 सितम्बर, 2002
8 आश्विन, शक 1924

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स
लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003
की ओर से

डी.जी. महापात्र
कम्पोजिंग एवं प्रिंटिग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
नई दिल्ली-110072



इस अंक में

- महानिदेशक की ओर से
- द्रुत कार्य बल की निष्पक्षता एवं उपलब्धियों का गौरवमय इतिहास
- साम्प्रदायिक सदभाव और द्रुत कार्य बल
- द्रुत कार्य बल-एक नजर
- एक स्मरणीय मार्मिक वृतान्त
- गुजरात में आर.ए.एफ. का मानवीय पटल
- गुजरात नियुक्ति एक अनोखा अनुभव
- गुजरात तैनाती की एक झलक
- आर.ए.एफ. में उच्च संघात प्रशिक्षण
- नागरिकों के दिलों पर आर.ए.एफ. की नहरी छाप
- कोसोवो में रेपिड एक्शन फोर्स
- उत्पीड़ितों की मसीहा द्रुत कार्य बल
- प्राचीन युद्ध जैसी स्थिति-विलयन/निष्क्रमण से निपटने में द्रुत कार्य बल सक्षम

• सुरक्षा के साथ-साथ आर.ए.एफ. सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय सद्भावना दिवस पर आर.ए.एफ. द्वारा सेमीनार तथा प्रदर्शनी का आयोजन

• अल्प संख्यक समुदाय तथा आर.ए.एफ.

• पुरी रथ यात्रा में आर.ए.एफ.

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

–संपादक

महानिदेशक की ओर से



द्रुत कार्य बल *7* अक्टूबर *2002* को अपना *10* वाँ वार्षिकोत्सव मनाने जा रहा है। सेवा-काल का प्रथम दशक किसी भी बल या संस्थान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है । इसी अवधि में बल की कार्य प्रणाली, परिपाटी एवं परंपराओं की नींव डाली जाती है। कार्य क्षेत्रों में प्राप्त अनुभव के आधार पर कार्य पद्धतियों एवं प्रशिक्षण के विषयों का निरूपण किया जाता है और राष्ट्र, जन-साधारण, प्रचार-प्रसार माध्यमों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं एवं सूचनाओं के आधार पर इनकी उपादेयता का पुनः आकलन किया जाता है ।

यह हमारे लिए गर्व एवं प्रसन्नता का विषय है कि जिस उद्देश्य से द्रुत कार्य बल/सी.आर.पी.एफ. का गठन किया गया था, उस उद्देश्य की सम्पूर्ति में यह संगठन पूर्णत: सफल रहा।

इस बल ने देश के हर वर्ग एवं नागरिक को सुरक्षा प्रदान की है एवं उनमें विश्वास पैदा किया है। देश हमारी हर क्षेत्र में कठिन परीक्षा ले रहा है लेकिन हम हर चुनौती का सामना करते हुए परीक्षा की घड़ी में सफल हुए हैं। भारत की एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखने में बल ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

बल ने अपने आस्तित्व में आने के *10* वर्ष की अवधि में साम्प्रदायिक दंगों की रोकथाम में विशेष भूमिका निभाई है । बल ने केवल साम्प्रदायिक उपद्रव ही नहीं बल्कि अन्य सामाजिक कार्यों एवं प्राकृतिक आपदाओं के समय भी बचाव एवं राहत कार्यों में अनूठा योगदान दिया है । अक्टूबर *99* में उड़ीसा में आए विनाशकारी महाचक्रवात एवं जनवरी *2001* में गुजरात में आये भूकम्प के समय पीड़ित जनसमुदाय को जगह-जगह जाकर बचाव एवं राहत पहुँचाई है। हाल ही में फरवरी *2002* में गोधरा में साबरमती एक्सप्रेस ट्रेन में आग लगाने की घटना के बाद गुजरात में फैले भीषण साम्प्रदायिक उन्माद के समय बल ने सराहनीय कार्य करते हुए वृद्धों, महिलाओं तथा बच्चों की मदद की है तथा निराश्रित लोगों को राहत सामग्री, दवाईयाँ वितरित कर मानवता की समर्पण भाव से सेवा की है बल के महत्वपूर्ण योगदान की प्रशंसा न केवल गुजरात राज्य वरन सारे देश ने की और आज यह बल जनता के प्रेम और सम्मान का पात्र बन गया है। बल ने जनमित्र के रूप में अपनी छवि बनाई है। मेरे गुजरात भ्रमण के समय अहमदाबाद के बहुत से व्यक्ति-विभिन्न वर्गों एवं समुदायों के, मुझसे मिले और उन्होंने अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की । उनके अनुसार यदि द्रुत कार्य बल/सी.आर.पी.एफ. के लोगों ने समय पर उनकी रक्षा न की होती तो उन्हें भीषण जन-धन की हानि उठानी पड़ती। यह हम सब के लिए एक अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है।

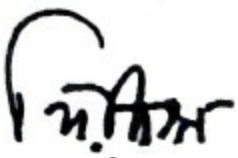
इस बल ने केवल देश में ही ख्याति अर्जित नहीं की है बल्कि विदेशों में भी देश का नाम ऊँचा किया है। वर्तमान में इसकी दो टुकड़ियाँ संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत कोसोवो में सफलता पूर्वक अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही हैं।

मानवाधिकार के क्षेत्र में भी द्रुत कार्य बल का कीर्तिमान विशेष प्रशंसनीय है । इसका मुख्य श्रेय इसकी आचार संहिता, प्रशिक्षण, नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्र भक्ति के भाव को जाता है जो द्रुत कार्य बल के अधिकारियों एवं जवानों के मन में सम्मिलित होने के दिन से ही भरा जाता है।

यद्यपि बल ने महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं और देश की जनता का विश्वास जीता है फिर भी हमें उपलब्धियों पर संतुष्ट होकर बैठना नहीं है। हमें आने वाले दिनों में और भी अधिक गंभीर चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना है और सदैव सावधान रहना है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी ही गंभीर और उत्तेजित करने वाली क्यों न हों फिर भी मानवाधिकारों के परिप्रेक्ष्य में अपने कर्तव्य का निर्वहन नैतिकता बनाये हुए करना है ।

बल की *10* वीं वर्षगांठ के अवसर पर मैं बल के समस्त अधिकारियों, जवानों एवं परिजनों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ तथा उनके उज्जवल और उन्नत भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

सी.आर.पी.एफ.सदा अजय । भारत माता की जय ।



(डा० त्रिनाथ मिश्र) महानिदेशक

द्रुत कार्य बल की निष्पक्षता एवं उपलब्धियों का गौरवमय इतिहास

जी०एम० श्रीवास्तव, पुलिस महानिरीक्षक, द्रुकाब

देश की आतंरिक सुरक्षा व्यवस्था की समस्या बढ़ने के साथ-साथ 1990 के दशक में साम्प्रदायिक दंगों की समस्या अधिक जटिल होती जा रही थी और देश में आए दिन कहीं न कहीं साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठते थे। यद्यपि के०रि०पु०बल को इस तरह दंगों के समय तैनात किया जाता था फिर भी साम्प्रदायिक दंगें जैसे संवेदनशील स्थिति से निपटने के लिए देश में ऐसा कोई विशेष प्रशिक्षण प्राप्त बल नहीं था जो साम्प्रदायिक दंगों के दौरान विशेष तौर पर स्थिति को नियंत्रित कर सके। इसलिए के०रि०पु०बल से बौद्धिक एवं शारीरिक कुशलता के मापदण्ड के अनुसार कार्मिकों का चयन करते हुए 7 अक्टूबर 1992 को द्रुत कार्य बल का गठन किया गया था। इसका उद्देश्य साम्प्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थिति से निपटना था।

बल की परीक्षा के रूप में सर्वमान्य अक्टूबर 1992 में बिहार के सीतामढ़ी जिले में हुए साम्प्रदायिक दंगों के समय द्रुकाब की पहली तैनाती हुई और इसके बाद दिसम्बर 1992 में अयोध्या में साम्प्रदायिक तनाव के समय इस बल को तैनात किया गया जो वास्तव में इसके परीक्षा की घड़ी थी। इसकी प्रथम तैनाती के समय से बल द्वारा निभाई गई निष्पक्ष, साफ सुथरी भूमिका और दंगों के समय शिकार ग्रस्त लोगों को उपलब्ध कराई गई चिकित्सा एवं मानव सहायता ने जनता का मन मोह लिया और मीडियों ने जोर-शोर से इसकी प्रशंसा की। इसके बाद इस बल की ख्याति दिनों दिन बढ़ती गई और भारत के नागरिकों के मन में इस नीली डांगरी धारी बल के प्रति विश्वास जम गया जिसे आज तक कोई खंडित नहीं कर पाया।



गुजरात के दंगा ग्रस्त छेत्रों का दौरा करने के पश्चात् आर.ए.ए.एफ. कर्मियों के साथ चर्चा करते रक्षा मंत्री श्री फर्नांडिस



गुजरात के दंगा क्षेत्रों में तैनात द्रु.का.ब. की महिला कर्मियों से चर्चा करते बल के महानिरीक्षक श्री जी.एम. श्रीवास्तव

द्रुत कार्य बल के गौरव कार्यों से बल का इतिहास भरा पड़ा है जिसमें न केवल साम्प्रदायिक दंगें वरन् विधि-व्यवस्था और प्राकृतिक आपदा के समय किए गए बचाव और राहत कार्यों में इसने उत्कृष्ट भूमिका निभाई है । इसका उदाहरण अक्टूबर-1999 में उड़ीसा में आए महा विनाशकारी चक्रवात हैं, जहाँ बल के जवानों ने जगह-जगह जाकर पीड़ित जनसमुदाय को राहत पहुँचाई और चिकित्सा सुविधा

उपलब्ध कराई। जवानों ने अनेक गॉवों में जाकर प्रातोंदेन इस्तेमाल आने वाला खाने का सामान जैसे आटा, चावल, दूध और चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई। बल के जवानों ने तूफान में मरे 266 मानव शवों का दाह संस्कार किया एवं चिकित्सा दल द्वारा 4095 पीड़ित रोगियों को दवा और उपचार दिया।

बचाव एवं राहत के उल्लेखनीय कार्यों में 26 जनवरी 2001 को गुजरात के चार शहरों में आए विनाशकारी भूकंप ने गुजरात में मौत और विनाश का जो तांडव फैलाया, उस समय बल के जवानों ने पीड़ितों को राहत पहुँचाई और बचाव कार्य किए। बल ने अपनी अद्भुत क्षमता का परिचय देते हुए इस त्रासदी पूर्ण स्थिति में लोगों की निष्पक्षता से सेवा की।

द्रुत कार्य बल, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का सर्वोत्कृष्ट अभिन्न अंग है यह बड़ी मुस्तैदी और व्यवहार कुशलता के साथ विभिन्न प्रकार की ड्यूटियों का निष्पादन अद्वितीय समर्पण एवं कर्तव्यनिष्ठ भावना के साथ करता है। साम्प्रदायिक एवं जातीय दंगों से निपटने के लिए इसकी धर्मनिरपेक्ष तथा निष्पक्ष भूमिका चहुँदिशा में सराही गई है। इसका एक उदाहरण 27 फरवरी 2002 को गोधरा में साबरमती एक्सप्रेस की बोगियों को जलाने के बाद गुजरात में फैले व्यापक साम्प्रदायिक उन्माद के समय बल द्वारा किए गए सराहनीय कार्य हैं। तनावपूर्ण स्थिति में बल ने स्थिति पर नियंत्रण पाने में स्थानीय प्रशासन और राज्य सरकार को महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिसकी प्रशंसा न केवल राज्य प्राधिकारियों द्वारा की गई वरन् गृह मंत्रालय ने भी इस बल की भूमिका की सराहना की है।

लंबे समय तक गुजरात में होने वाले साम्प्रदायिक दंगों एवं तनाव के वातावरण में इस बल ने मेडिकल कैम्प चलाकर बीमारों को उचित दवाईयाँ एवं इलाज उपलब्ध कराया है और विभिन्न संस्थानों से प्राप्त राहत खाद्य सामग्री का उचित वितरण जरूरतमंद लोगों के बीच किया है। इस तरह इस बल ने लोगों के घायल मन पर राहत एवं प्रेम का मरहम लगाया है। द्रुत कार्य बल के कर्मचारियों द्वारा की गई निस्वार्थ सेवाओं ने उन्हें निःसंदेह ने केवल गुजरात में बल्कि सारे देश की जनता के प्रेम और आदर का पात्र बनाया है।

साम्प्रदायिक दंगों में दुकाब की भूमिका सामान्य पुलिस से एकदम अलग है। पुलिस जहाँ केवल भीड़ नियंत्रण एवं उन्हें तितर-बितर करने की कार्रवाई करती है वहीं इस बल के जवानों को विशिष्ट प्रकार का उच्चस्तरीय प्रशिक्षण देकर निपुण बनाया जाता है। समाज की संवेदनशील समस्याओं और चुनौतियों का सामना करने के लिए इस अत्याधुनिक अप्राण घातक शस्त्रों से सुसज्जित किया गया है। यह बल साम्प्रदायिक दंगों से उत्पन्न तनाव और गड़बड़ी वाले इलाकों में न केवल शांति स्थापित करता है, अपितु इन इलाकों में बड़े पैमाने पर हुई तोड़-फोड़ एवं ध्वस्त का पुनःनिर्माण करने और अस्तव्यस्त जीवन को सामान्य बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यहीं नहीं दंगों में घायल हुए व्यक्तियों को अस्पताल पहुँचाने, वृद्धों, बच्चों और महिलाओं की सहायता भी करता है और भयभीत लोगों के मन में विश्वास

पैदा कर सुखद मानवीय कार्यों की अनुभूति कराता है।

यद्यपि द्रुत कार्य बल का मुख्य कार्य साम्प्रदायिक दंगों से निपटना है फिर भी राष्ट्र की प्रभुसत्ता एवं अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखने में इस बल ने सदैव अग्रणी भूमिका निभाई है। और हर चुनौती का सफलतापूर्वक सामना किया है। यह चुनौतियाँ चाहें प्राकृतिक आपदाओं से निपटने की हों अथवा मानवीय भूल से होने वाली रेल दुर्घटनाएं हों या अलागाववादी सोच से भ्रमित मानव मस्तिष्क से उपजी आतंकवादी घटनाएं हों।

द्रुत कार्य बल ने न केवल देश में वरन् विदेश में भी नाम कमाया है सर्वप्रथम बल की एक कम्पनी की तैनाती 1995 में हैती में की गई। इसमें द्रुकाब के 240 चुने हुए सदस्यों के 14 दस्तों ने 15 मई 2000 को राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हुए विशेष यू०एन० मिशन के तहत कोसोवो के लिए प्रस्थान किया था। संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षा दस्ते के रूप में मिला यह एतिहासिक क्षण अपार हर्ष एवं गर्व का विषय है जहाँ बल ने अपनी विशिष्ट कार्यशैली से यू०एन० अधिकारियों को प्रभावित कर अंतर्राष्ट्रीय कसौटी पर खरा उतरा है और कोसोवो में शांति सुरक्षा बनाये रखने में पूरा योगदान दिया है। इससे विश्व पटल पर भारत की उज्जवल छवि में निखार आया है। बल की अनुभवी कार्यशैली, व्यवहार कुशलता, एवं दक्षता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुरोध पर द्रुकाबल दस्ते की अदला-बदली नियमित रूप से हो रही है।



भावनाओं के अनुरुप सेवा के आदर्श को पूरा करते बल अधिकारी व जवान स्कूली बच्चों को लेखन सामग्री बांटते हुए



सामाजिक कार्य "पल्स पोलियों अभियान में तल्लीन बल के अधिकारी व जवान

मानवाधिकार किसी भी जनतांत्रिक जीवन शैली के अभिन्न अंग है। समाज की आवश्यकता के अनुसार ही इन्हें लागू किया जाता है। किसी भी सभ्य समाज के लिए मानवता की सुरक्षा एवं आदर तथा मानवाधिकारों के शालीन एवं शिष्ट आचरण उसके विधि क एवं सामाजिक व्यवस्था का मूल सार तत्व है। मानवाधिकार के क्षेत्र में द्रुत कार्य बल का कीर्तिमान विशेष प्रशंसनीय है। इसका मुख्य श्रेय इसके प्रशिक्षण, आचार संहिता, नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्र भक्ति की भावना को जाता है जो द्रुत कार्य बल के अधिकारियों और जवानों के मन में द्रुकाब में सम्मिलित होने के दिन से ही भरा जाता है।

विशेषता प्राप्त बल की अनगिनत उपलब्धियों का प्रमुख कारण इसकी गठन प्रक्रिया है। बल में देश के हर प्रांत, हर भाषा एवं हर धर्म के व्यक्तियों को शामिल किया जाता है और उन्हें विशेष प्रकार का प्रशिक्षण देकर साम्प्रदायिक एवं संवेदनशील स्थिति में कारगर तौर पर निपटने हेतु महारत विकसित की जाती है। इसके सम्मिश्रित चरित्र एवं धर्म निरपेक्षता में इस बल को जनता का मित्र बनाया है। आम नागरिकों में बल ने आदर और प्रेम की छवि अर्जित की है। नीली डांगरी धारी इस बल को जन मित्र नाम से पुकारते हैं। अपने त्रुटिहीन कर्तव्य निष्पादन के द्वारा इसने चिरस्थायी छाप छोडी है।

द्रुत कार्य बल की भूमिका की एक अन्य विशेषता इसका उज्जवल चरित्र होना है। पिछले 10 वर्षों में चरित्र हनन की ऐसी कोई भी घटना बल द्वारा नहीं की गई जिसमें जनता ने उंगली उठाई हो। साम्प्रदायिक दंगों, प्राकृतिक आपदाओं, रेल दुर्घटनाओं एवं अन्य अवसरों पर हुए दंगों में लोगों की बिखरी अपार सम्पत्ति के बीच ड्यूटी करते हुए इस बल के जवानों का मन कभी भी विचलित नहीं हुआ है। इसमें सम्पत्ति की

रक्षा करते हुए दूसरों को भी चोरी जैसी हीनता पूर्ण कार्य करने से रोका है। यही कारण है कि इसने लोगों का विश्वास जीता है। इसी विश्वास के साथ बल विभिन्न स्थानों पर समाजोपयोगी कार्य भी आयोजित करता है और अनेक गतिविधियाँ चलाकर बल के प्रति लोगों की आस्था बढ़ाता है। द्रुत कार्य बल का इतिहास गरिमामय एवं भविष्य सुनहरा है। यह बल अपने प्रशंसनीय बलिदान की भावनाओं से ओत-प्रोत होकर अपनी कार्य कुशलता की नई ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

साम्प्रदायिक सद्भाव और द्रुत कार्य बल

हरीश चन्द्र सूद, उप महानिरीक्षक. आर.ए.एफ.

भारत विविधता में एकता का देश है जिसमें विभिन्न जाति, सम्प्रदाय, पंथ मतावलंबी एवं धर्मों के लोग हैं। आर्यों के समय से और इसके बाद ग्रीक, हूण, तुर्की, मंगोल, मुगल, ब्रिटिश, पुर्तगाली और फ्रेंच के सफल हमलों के बावजूद भी इसकी विविधता आश्चर्यजनक रूप से वैविध्यपूर्ण बनी रही। इसमें एक दूसरे से भिन्न 4635 बेजोड़ सम्प्रदाय हैं और 24 लिपियों में लिखी जाने वाली 325 भाषाएं हैं। भारत की बाहुल्य समाज व्यवस्था अनादिकाल से चली आ रही है। इसके भूतकाल को देखने से ज्ञात होता है कि साम्प्रदायिक सदभाव और सहिष्णुता भारतीय परम्परा के अभिन्न अंग रहे हैं।

ऋग्वेद के अनुसार "सत्य एक ही है जिसकी विभिन्न प्रकार से व्याख्या हो सकती है। अथर्वेद में हम पाते हैं – "इस पृथ्वी ने एक शांति गृह की तरह विभिन्न सम्प्रदायों और भाषा के लोगों को अपने में समाहित कर रहा है।" इससे हम सब लाभांवित हो सकते हैं। और पृथ्वी माता-अपने बदों को एक साथ भाईचारे से रहने की क्षमता प्रदान करती है। ऋग्वेद में प्रतिध्वनित होता है सभी मानव प्राणी राम ही जाति के हैं, भगवत् गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं "कि ईश्वर एक है और हम अलग-अलग तरीकों का अनुसरण करते हुए उसी के पास पहुँचते हैं।"

जैसा कि सभी जानते हैं कि सन् 1857 के विद्रोह में हिंदू और मुसलमान कंधे से कंधा मिलाकर लड़े थे। हिंदू और मुस्लिम का भेदभाव धर्म के नाम पर कभी नहीं हुआ और 1860 के दौरान देश हित में हिंदू और मुस्लिम के बारे में प्रेस द्वारा कुछ भी नहीं कहा गया था। उत्तरी भारत के समाचार पत्रों में उस समय केवल "भारतीय" शब्द पर अधिक जोर दिया जाता था। 18वीं सदी तक लोगों में यह भावना थी कि भारत में विभिन्न धर्मों पर आधारित समाज है और अपने स्वयं के विशेष हितों पर लोगों में विश्वास बनाए हुए हैं कि ये अलग-अलग साम्प्रदायिक हित धीरे-धीरे समाहित होते जाएंगे और राष्ट्र के समग्र विकास में सद्भाव रूप में प्रकट होकर भारत को एक

राष्ट्र का स्वरूप प्रदान करेंगे। सभी साम्प्रदायों की आर्थिक और संकट की स्थिति एक सी बनी रही। 19 वीं सदी के अंतिम चतुर्थांश में मुश्किल से साम्प्रदायिकता थी।



मेरठ के सुन्दर पुथा गाँववासियों का मुफ्त इलाज करते *100* बटा. द्रुत कार्य बल के अधिकारी व जवान



अयोध्या में किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार *100* बटा. द्रुत कार्य बल के मुश्तैद जवान

स्वामी विवेकानंद से बेहतर किसी ने भी भारत के बारे में व्यापक दृष्टिकोण नहीं रखा। जब वे 11 सितम्बर 1893 को शिकागों में विश्व संसद को संबोधित कर रहे थे

उन्होंने कहा "अमेरिका की बहनों और भाइयों मुझे गर्व है कि मैं ऐसे धर्म देश का हूँ जिसने विश्व को सहिष्णुता और ब्रहम की स्वीकार्यता का पाठ पढ़ाया है। हम केवल सार्वभौम सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते बल्कि सभी धर्मों को साथ स्वीकार करते हैं। मुझे ऐसे देशवासी होने का गर्व है जिसने इस पृथ्वी के समस्त राष्ट्रों, सभी धर्मों के शरणागतों और उत्पीड़ितों को शरण दी है। मुझे आपसे कहते हुए गर्व होता है कि हम सीना तानकर विशुद्ध रूप से इजरायल के भाग्नावेष पर यहाँ एकत्रित हुए है जो दक्षिण भारत में आए और हमारे साथ वर्षों पूर्व आश्रय पाया जिसमें उनके पवित्र मंदिरों को रोमन आततायियों द्वारा तोड़ा गया था। मुझे ऐसे धर्मालंबी होने का गर्व है जिसने शरण दी और अब भी पारसी राष्ट्रों के बचे खुचों का पोषण कर रहा है।

इसी प्रकार सम्राट अशोक ने अपने शाही फरमान में सद्भाव का एक संदेश दिया–"सभी सम्प्रदाय एक अथवा दूसरे कारणों से श्रद्धा के पात्र हैं। इस तरह के कार्य करके मनुष्य स्वयं अपने पंथ की प्रशंसा करता है और इसी के साथ दूसरे लोगों के पंथो की भी सेवा करता हैं।

यह केवल बादशाह अकबर था जिसने धर्म की नयी नीति बनाकर अपना नया सम्प्रदाय चलाया कि "सत्यता पर किसी धर्म अथवा पंथ का कोई एकाधिकार नहीं हैं धार्मिक सद्भावना को बढ़ाने में भक्ति आंदोलन के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता जिसमें संत कबीर, जिसने अपने आपको राम और अल्लाह का बेटा बताया कहा कि "हिंदू मंदिरों में, और मुसलमान मस्जिदों का आश्रय लेते हैं लेकिन कबीर ऐसे स्थान पर जाता है जहाँ दोनों को यह जाना जाता है कि यदि आप कहेंगे कि मैं हिंदू हूँ तो यह सही नहीं है और न ही मैं मुसलमान हूँ। मेरा शरीर पाँच तत्वों से बना है जिसमें कोई अदृश्य खेल रहा है। मक्का वास्तक में काशी हो सकती है और राम रहीम हो सकता है।

हिंदुओं के गुरू और मुसलमानों के पीर गुरुनानक ने कहा–

बाबा नानक शाह फकीर

हिंदू का गुरू, मुस्लिम का पीर

इसी प्रकार बाबा फरीद का संदेश अभी भी प्रतिध्वनित होता है–

लकड़ी के आसपास क्यों चक्कर लगाता है। ओ फरीद अपने पाँव के नीचे पेड़ काँटे को कुचल दो अटूट शक्ति पर विश्वास रखों। उसे लकड़ी के अंदर क्यों ढूंढ रहे हो।

हमारें देश का सबसे बड़ा संघटित बल कला और संस्कृति की दुनियाँ है और इसमें हम संगीत, नाटक, सिनेमा, टी.वी. आदि शामिल कर सकते हैं। हमसे पहले बड़े काम करने वाले कुछ लोग और गायक अलग-अलग सम्प्रदायों के रहे हैं जिन्होंने अपने कार्यों से दूसरे सम्प्रदायों पर अपना प्रभाव डाला अथवा भक्तिगीत गाए जो सदियों तक चले। संयोगवश यहाँ ऐसे मंदिर है जिसमें वे न केवल हिंदू वरन् मुसलमान और ईसाई भी जाते हैं। स्वामी अयप्पा (विष्णु और शिव का संयुक्त शक्ति

मांदेर जाने वाले तीथयात्री अपनी मांदेर की चढ़ाइ शुरू करने से पहले वहाँ नजदीक वावर में एक मुस्लिम लेफ्टीनेंट के पूजा स्थल पर पूजा करते हैं। नवम्बर-जनवरी उत्सव के अवसर पर दक्षिणी राज्यों से हजारों यात्री इस मंदिर में आते हैं।

इसी तरह सैकड़ों हिंदू तमिलनाडु के वेलन्कन्नी चर्च और तिरूवंतपुरम में भीमपल्ली मस्जिद में पूजा करते हैं। इस तरह के विचित्र प्रचलन की रिपोर्ट देश के अन्य स्थानों से भी मिलती हैं।

श्री राम कृष्ण जो विश्व के कई धर्मों पर बोल सकते थे, ने कहा मुझे हिंदू, इस्लाम, ईसाई सभी धर्मों की व्यवहारिकता मालूम है और मैंने पाया कि सबका भगवान एक ही है जो विभिन्न पंथों से होकर उसकी ओर कदम बढ़ा रहे हैं। जहाँ-कहीं मैने देखा कि लोग धर्म के नाम पर, हिंदू के नाम पर, मोहम्मद के नाम पर लड़ रहे हैं लेकिन उन्हें यह भी नहीं मालूम कि जिसे वह कृष्ण कहकर पुकारते हैं उसे शिंव भी कहते हैं और मूल शक्ति को धारण किए हुए हैं। ईशु और अल्लाह और इसी तरह राम भी सैंकडों नामों से हैं। श्री रामकृष्ण एक सरल उदाहरण हैं जिसे बच्चा भी समझ कर अपने साथ घर ले जा सकता है कि "एक झील के कई घाट होते हैं। एक स्थान से हिंदू पानी लेते हैं और उसे जल कहते हैं और दूसरे घाट से एक मुसलमान चमड़े के बेंग में पानी लेते हैं और उसे पानी कहता है। तीसरा ईसाई इसे "वाटर" नाम से पुकारता है। क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि यह जल नहीं है। इसका सार यह है कि एक ही वस्तु अलग-अलग नामों से है और प्रत्येक उसी वस्तु को देख रहा है–इसलिए प्रत्येक को उसके पंथ का अनुसरण करने दो"।



समाज सेवा स्वरुप रक्त दान करते *103* बटा. आर.ए.एफ. के जवान



उड़ीसा में आए महाचक्रवात के दौरान पीड़ितों को वस्त्र बांटते *99* बटालियन आर.ए.एफ. के जवान

भारत में बाहुल्य समाज में सद्भाव का पत्थर एक कोने में पड़ा है और सभी धर्मों के मतावलंबी उसी अखण्ड सत्य का पाठ पढ़ाते हैं। "गौतम बुद्ध ने कहा-धृणा को प्रेम से जीतों"

ईशु कहते हैं -"उस पड़ोसी से प्रेम करों"। जीवन का उच्चतम कानून प्रेम है और संत कबीर के अनुसार न तो कोई हिंदू है और न कोई मुसलमान, बल्कि मनुष्य उस शक्ति का पुतला मात्र है। विश्व का सबसे पुराने धर्मग्रंथ ऋगवेद मानवता के लिए यह संदेश देता है-एक साथ चलो, सामंजस्यपूर्ण बोलो, आपके हृदय को इकरार करने दो, अपने मस्तिष्क को संगठित रखो जो हम सभी को खुश रखेगा। हम सभी व्यक्ति एक ही परिवार से आए हैं। मेल मिलाप जीवन की मूल कुंजी है।

हालांकि हाल ही में कुछ घटनाओं ने हमारे देश के उज्जवल नाम को कंलकित किया है, फिर भी विभिन्न एजेंसियों और आम जनता द्वारा अदा की गई भूमिका से अच्छा नाम भी हुआ है। यहाँ यह लिखते हुए गर्व होता है कि द्रुत कार्य बल जो केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का ही एक प्रशासनिक हिस्सा है, परीक्षा की घड़ी में खड़ा था। इसकी मुख्य भूमिका साम्प्रदायिक दंगों अथवा दंगों जैसी स्थिति से निपटना है। बल ने कई जनोपयोगी कार्य करते हुए चिकित्सा कैम्प, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम आदि का आयोजन किया है। एक बार दंगों की स्थिति नियंत्रित होने पर द्रुकाब के व्यक्ति तत्काल राहत का कार्य शुरू कर देते हैं और दंगों के शिकार ग्रस्तों को प्रथमोपचार देते हुए उन्हें अस्पताल पहुँचाते हैं। यह इस बल का मानवीय चेहरा है जो हृदय को छू लेता है बल के व्यक्ति राज्य पुलिस के सैधांतिक निर्देशों से भली भाँति परिचित होते हैं।

उन्हें उनकी ड्यूटी के सभी पहलुओं के बारे में पूर्ण प्रशिक्षित किया जाता है ताकि

वे जाति और सम्प्रदाय की संकीर्ण भावना से ऊपर उठ सकें। उनके आचरण में निष्पक्ष व्यवहार की भावना कूट-कूट कर भरी जाती हैं। बल की कम से कम आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इसे विशेष उपकरण अधिक मात्रा में दिए जाते हैं। पिछले दशक में देश में साम्प्रदायिक दंगों की घटनाएं कुछ ही घटी। द्रुकाब बटालियनों के मुख्यालय उन स्थानों पर बनाये गये हैं जो साम्प्रदायिक रूप से संवेदनशील हैं। द्रुकाब का उद्देश्य तत्काल उपलब्धि पाना है। द्रुकाब ने न केवल देश के हर वर्ग से लोगों का विश्वास पाया है वरन् कोसोवो में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन में अपने लिए सम्मान पाया है।

अपने गठन के दस वर्ष की अल्प अवधि में अपने संवेदनशील नीति और वर्ष 1992 में इसके गठन के तत्काल बाद द्रुकाब को बिहार के सीतामढ़ी में साम्प्रदायिक दंगों से निपटने के लिए बुलाया था और इसने स्थिति पर प्रभावपूर्ण नियंत्रण करके अपनी सम्मानजनक स्थिति स्थापित की।

सितम्बर 1994 में सूरत में मौत का प्लेग फैला था। इस अजीब परिस्थिति में द्रुकाब के व्यक्ति निःसहाय शिकारग्रस्त व्यक्तियों की भोजन, दवा देने में आगे आए और प्रभावितों की मदद की।

वर्ष 1997 द्रुकाब के लिए बहुत व्यस्तता का वर्ष रहा। फरवरी 1997 बचाव और राहत कार्य के लिए ले जाया गया। इसी वर्ष जुलाई में गंगटोक (सिक्किम) में हुए वृहद भूस्खलन के समय लोगों की और सम्पत्ति की रक्षा की।

नवम्बर 97 में वस्त्रद्योग शहर कोयंबतुर में हुए साम्प्रदायिक दंगों और इसके बाद फरवरी 1998 में वहाँ हुए अंखलाबद्ध बम्ब विस्फोटों के बाद द्रुकाब ने निर्णायक भूमिका अदा की थी। यद्यपि यहाँ पर आतंक विरोधी कार्रवाईयों से निपटने के लिए सुसज्जित नहीं था फिर भी द्रुकाब ने लोगों के बीच सुरक्षा की सशक्त भावना को स्थापित किया।

जून में 1998 गुजरात को कांडला बंदरगाह पर घोर संकटपूर्ण तूफान के समय द्रुकाब वहाँ तत्काल रोकथाम के लिए गयी थी।

अक्टूबर 1999 में उड़ीसा में आए भीषण चक्रवात में अनगिनत लोगों की मृत्यु और विध्वंस का यह बल साक्षी है।

जहा इसन वृहद संचलन कार्रवाई करक भारी मात्रा में हथियार और बम्ब बरामद किए। निःसहायों की मदद की और प्रभावित जनसमूहों में खाद्य सामग्री का वितरण किया।

द्रुत कार्य बल के प्रति लोगों की श्रद्धा एवं विश्वास के कारण गणेश चतुर्थी, दशहरा, दीपावली, रामनवमी, मोहर्रम और इदुल-फितर जैसे धार्मिक आयोजनों के समय और देश के बड़े संवेदनशील और अति संवदेशील नगरों में दैनिक क्रिया-कलापों में द्रुकाब कम्पनियों की मांग दिनों-दिन बढ़ती जा रही है।

द्रुत कार्य बल - एक नजर

डी०जी० महापात्र
जन सम्पर्क अधिकारी
के०रि०पु० बल

रूढ़िवादी संगठनों के बढ़ते हुए प्रभाव तथा उनके द्वारा फैलाई जा रही साम्प्रदायिक हिंसा को देखते हुए साम्प्रदायिक दंगों को पूर्ण रूप से रोकने के लिए सरकार को एक फोर्स बनाना आवश्यक हो गया था। इसी उददेश्य के लिए भारत सरकार ने एक फोर्स गठित करने का निर्णय लिया। इस तरह 7 अक्तूबर 1992 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 5 बटालियनों को द्रुत कार्य बल बटालियनों में परिवर्तित कर इस बल की स्थापना की। बाद में इस बल में पाँच और बटालियनें शामिल कर दी गई।

द्रुत कार्य बल की भूमिका :-द्रुत कार्य बल मुख्य रूप से निम्नाकित भूमिकाएं निभाता है, 1. बल का मुख्य कार्य साम्प्रदायिक दंगों या दंगों जैसी स्थिति से निपटना है। 2. बहरहाल सरकार इस बल का उपयोग भारी आपातकालीन स्थिति, तथा घोर प्राकृतिक एवं मानवकृत आपदाओं के दौरान जनता की सहायता के लिये भी करती है तथा 3. बल जनता के कल्याण के लिये सामाजिक कार्य, चिकित्सा शिविर लगाना सांस्कृतिक क्रिया कलाप प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम खेलकूद प्रतियोगिता तथा अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन करता है। बल के सामाजिक कार्यों से समाज को तो फायदा होता है साथ ही बल इन कार्यों से अपनी अच्छी छवि बनाने में मदद मिलती है। इस बल ने विभिन्न अभियानों के तहत रक्त दान, पल्स पोलियो जैसे कार्यक्रम आयोजित करने में भी अहम भूमिका निभाई है।

आर०ए०एफ० का लक्ष्य मानवता की भावनाओं के अनुरुप सेवा करना है। यह कम से कम बल का प्रयोग कर स्थिति पर काबू पा लेती है। इसका लक्ष्य दंगाइयों को बिना किसी प्रकार के हताहत किये भगाना है। जैसे की यह बल वार स्थिति पर काबू पा लेता है तभी तुरंत मानवीय सहायता शुरू कर देता है तथा घायलों को चिकित्सा सहायता प्रदान कर अस्पताल भेजनें की व्यवस्था करता है।

आर०ए०एफ० अपने शैशव काल से जनता की सेवा में कार्यरत है। 1993 में दिल्ली में आयी बाढ़, 1994 के दौरान सूरत में फैली प्लेग, 1995 में पंजाब तथा हिमांचल प्रदेश में आई भयंकर बाढ़, 1999 में उडीसा में आये विध्वंसकारी चक्रवात, 2001 में गुजरात में आए विनाशकारी भूकम्प तथा गुजरात राज्य में ही इस वर्ष फैली साम्प्रदायिक हिंसा के दौरान आर.ए.एफ. ने मानवीय सहायता, सुरक्षा, बचाव एव राहत प्रदान कर एक अनुकरणीय कार्य कर आम लोगों के दिलों मे प्यार मोहब्बत का पैगाम दिया है।

संगठन :-बल को उपयुक्त नेतृत्व प्रदान करने के लिये एक पुलिस महानिरीक्षक तैनात है जो महानिदेशक केरिपुबल के मार्गदर्शन तथा दिशा निर्देशानुसार सीधे कार्य करतें हैं। बल में एक रेन्ज पुलिस उप महानिरीक्षक तथा 10 कमाण्डेन्ट तैनात हैं जो दसों बटालियनों का नेतृत्व करतें हैं। बल के सेक्टर पुलिस महानिरीक्षक कार्मिकों को उचित प्रशिक्षण दिलानें तथा बल को छोटी सी सूचना पर तैनाती के लिए तैयार रखने के लिये जिम्मेदार हैं। पुलिस महानिरीक्षक की सहायता के लिए सेक्टर मुख्यालय में एक अपर पुलिस उप महानिरीक्षक तथा एक कमाण्डेंन्ट तैनात हैं।

आर०ए०एफ० बटालियन :- केरिपुबल बटालियन की अपेक्षा आर.ए.एफ. बटालियन की संगठनात्मक संरचना बिल्कुल अलग है। बल में कार्यरत सबसे छोटी यूनिट दंगा नियंत्रक टीम है जो दंगा नियत्रंक, फायर तथा आश्रु गैस जैसे यंत्रों से सुसज्जित होती है। टीम का नेतृत्व एक निरीक्षक द्वारा किया जाता है। चार टीमों का एक प्लाटून होता है जिसका नेतृत्व सहायक कमाण्डेन्ट द्वारा किया जाता है। एक कम्पनी में दो प्लाटून होते है जिसका नेतृत्व उप कमाण्डेन्ट द्वारा किया जाता है। सभी रैंको को मिलाकर आर.ए.एफ. की एक बटालियन की नफरी 1306 की होती है।

आर.ए.एफ. कम्पनी :-संवेदनशील ड्यूटियों के लिए प्रभावी एवं नजदीक परिवेक्षण बहुत जरूरी है इसलिए इसमें पर्याप्त सुपरवाईजरी स्टाफ पदस्थ किया है। आर.ए.एफ. कम्पनी का नेतृत्व एक उप कमांण्डेट करता है। कम्पनी में तीन सहायक कमाण्डेन्ट, आठ निरीक्षक, 16 उप निरीक्षक, 40 हवलदार तथा 128 सिपाही एवं धोबी, रसोईया, जलवाहक तथा नाई सहित 17 अनुचरों को मिलाकर कम्पनी में कुल 222 कार्मिक होते है। एक कम्पनी में दों प्लाटून होती हैं तथा एक प्लाटून में सभी रैंक के 97 कार्मिक होते हैं। एक प्लाटून में सभी रैंक के 24 कार्मिकों वाली चार टीमें होती हैं।



समाज सेवा के रुप में महिलाओं एवं बच्चों को चिकित्सा जाँच करती *100* वीं बटा. को चिकित्सा अधिकारी



आर.ए.एफ. का मानवीय पहलू जख्मी एवं घायलों की सेवा

कम से कम बल का प्रयोग करना :-आर.ए.एफ. ने दंगा तथा दंगा जैसी स्थिति पर विभिन्न तरह के आठ चरणों में कम से कम बल का प्रयोग कर स्थिति पर काबू पाने के सिद्धान्त को अपनाया है। 1. वार्तालाप एवं अपील का अनुसरण करके। 2. बैनरों तथा लाउडस्पीकरों द्वारा बल प्रयोग की घोषणा करके। 3. रंगीन पानी फेंक कर। 4. आश्रु गैस का उपयोग करके। 5. रबड बेटन व गोलियों का उपयोग करके। 6. लाठी चार्ज करके। 7. रबड़ की गोलियों तथा प्लास्टिक प्लेटों का उपयोग करके और 8. वास्तविक गोलियों का उपयोग करके।

विशेष उपकरण :-इस बल को दंगों तथा दंगों जैसी स्थिति से निपटनें के लिए आधुनिकतम स्वचालित उपकरण मुहैया कराये गये हैं। इनमें शॉक वेटन, रबड ट्रान्चौन, रबड की गोलियां, प्लास्टिक प्लेटस आदि शामिल है जो प्रभावी तो है लेकिन प्राण घातक नहीं है।

अलग यूनिफार्म (वर्दी) :-अपनी अलग पहचान बनाने के लिए आर.ए.एफ. में जवानों को अलग तरह की वर्दी मुहैया करायी गई है। आपरेशन डयूटियों के दौरान आर.ए.एफ. के जवान नीली हल्की सफेद (चितकबरी) डांगरी पहनते हैं।

विशेष आश्रु गैस :-बल को सामान्य दंगा नियंत्रक उपकरणों के साथ साथ विशेष प्रकार के आश्रु गैस स्टेन ग्रेनेड जैसे गोली बारूद से भी सुसज्जित किया गया है।

स्टेन ग्रेनेड जोर से धमाके के साथ तेज रोशनी फेंककर भीड को भौचक्का कर बिना नुकसान पहुंचाए तितर-बितर करने में सहायता प्रदान करता है।

डाई ग्रेनेड से निकलने वाले रंग से मुख्य रूप से दंगा अभियानों में भाग लेने वाले

लोगों की वास्तविक रुप से पहचान करने में सहायता मिलती है।

वाहन :-आर.ए.एफ. का लक्ष्य कम से कम समय में स्थिति पर काबू कर यथा स्थिति बहाल करना है। अतः इस उददेश्य के लिए आर.ए.एफ. बटालियनों को सरकार द्वारा पर्याप्त वाहन मुहैया कराये गये हैं ताकि ये बिना समय गवाए दंगा ग्रस्त क्षेत्रों में शीघ्र पहुंच कर कारवाई कर सकें। टीम, प्लाटून तथा कम्पनी स्तर पर वाहनों को स्वयं अपने स्तर पर संचलन हेतु उपलब्ध रखने की बात को ध्यान में रखकर वाहनों की व्यवस्था की गई है। उपद्रवी भीड को अधिक प्रभावी रूप से नियंत्रित करने के लिए अत्याधुनिक दंगा नियंत्रक वाहन वज्र उपलब्ध कराया गया है। वाहन के ऊपर आश्रु गैस, रबड़ की गोलियां एक एक कर तथा अन्धाधुन्ध चारों ओर से चलाने के लिए बहु नलियों वाला लांचर लगाया गया है। बचाव एवं राहत कार्यों के लिए वज्र में प्रथम उपचार बाक्स तथा स्ट्रेचर आदि की भी व्यवस्था है। रात्रि अभियानों में रोशनी प्रदान करने के लिए जनरेटर तथा आपात कालीन लाईट लगाई जाती है। इसकी अभेद संरचना उपद्रवी भीड तथा विरोधी हमलों को प्रभावी रूप से रोकने में सक्षम है।

अल्प संख्यकों का प्रतिनिधित्व :-पिछडें वर्ग तथा अल्प संख्यक समुदायों सहित समाज के सभी जाति, वर्ग एवं धर्म के लोगों को पर्याप्त रूप से शामिल कर बल को बहुआयामी स्वरूप दिया गया है। संतुलित धर्म निरपेक्ष संरचना आर.ए.एफ. को दंगों के दौरान शान्ति बहाल करने में स्वयं उत्पीडितों की नजर में शान्ति दूत के रूप में उभर कर आयी है।

जिम्मेदारी का स्थान तथा क्षेत्र :-आर.ए.एफ. बटालियनों की स्थिति साम्प्रदायिक संवेदनशील क्षेत्रों को ध्यान में रखकर निर्धारित की गई है। 400 किलोमीटर की परिधि में आने वाले संवेदन शील/अति संवेदन शील क्षेत्रों को उनकी मुख्य जिम्मेदारी क्षेत्र माना गया है। इस प्रकार से जम्मू-कश्मीर तथा पूर्वोत्तर राज्यों को छोड़कर आर.ए.एफ. की सभी बटालियनें राज्यों के सभी संवेदनशील जिलों को कवर करती हैं। बटालियनों के मुख्यालय सिंकदराबाद, अहमदाबाद, इलाहाबाद, नवी मुम्बई, दिल्ली, अलीगढ़, कोयम्बटूर, जमशेदपुर, भोपाल तथा मेरठ में स्थापित किये गये हैं।

प्रशिक्षण :-प्रशिक्षण आर.ए.एफ. की नियमित प्रक्रिया है। आर.ए.एफ. में आने के बाद प्रत्येक अधीनस्थ अधिकारी/अन्य रेंकों के जवानों को आर.ए.एफ. के कार्यों से खुद को परिचित करने के लिए प्रशिक्षण लेना होता है। इसके अतिरिक्त मानवाधिकार, फस्ट एड फायर फाईटिंग, बचाव एवं राहत कार्य, आपदाकालीन प्रबंधन, आश्रु गैस आदि जैसे विशेष कोर्सों को भी करवाया जाता है। एक वर्ष के दौरान लगभग देश के विभिन्न भागों में आर.ए.एफ. के 4,000 कार्मिकों को विभिन्न तरह के प्रशिक्षण दिये जाते हैं। अधिकारियों के लिए आयोजित विशेष कोर्स के रूप में समकालीन सामाजिक वास्तविकताओं पर पूर्वाभिमुखीकरण कोर्स का प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसमें ख्याति प्राप्त पुलिस अधिकारी तथा शिक्षाशास्त्री अपनें मत तथा विचार इस कोर्स में भाग लेने वालों के सामने रखते हैं।

आर.ए.एफ. के सभी रैंक के कार्मिकों को विभिन्न धर्मों के सिद्धान्तों के बारे में

विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाती है ताकि वे अपेक्षित विवाद से बच सके। इन्हें अन्तर समुदाय से गलत फहमियों तथा पूर्वधारणाओं के बारे में भी बताया जाता है। आर.ए.एफ. की सफलता से उत्साहित होकर अनेक राज्य सरकारों ने भी के.रि.पु. बल, महानिदेशालय से अपने सुरक्षा बलों के जवानों को आर.ए.एफ. की तरह प्रशिक्षित करने का अनुरोध किया है। अभी तक आर.ए.एफ. ने पश्चिमी बंगाल, कर्नाटक, गोवा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा दिल्ली राज्य के अर्द्ध सैनिक बलों के कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया है।



झारखण्ड के मुख्य मंत्री श्री बाबू लाल मराण्डी का आर.ए.एफ. परेड कमाण्डरों से परिचय कराते बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र



वृक्षारोपण के लिए स्कूली बच्चों को उत्साहित करते आर.ए.एफ. के जवान

आर.ए.एफ. कार्मिकों द्वारा चलाए जाने वाले विशेष कोर्स तथा विषय इस प्रकार से हैं – कनवर्शन ट्रेनिंग, मानवाधिकार, प्रथम उपचार, फायर फाईटिंग, बचाव एवं राहत कार्य, आपदा प्रबन्धन, आश्रु गैस आदि।

परिचितीकरण अभ्यास :-बल कार्मिकों को भू–भाग, स्थानीय नेतृत्व, जिम्मेदारी के क्षेत्र के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए परिचितीकरण अभ्यास कराया जाता है तथा इन स्थानों पर होने वाले दंगों व दंगा जैसी स्थिति से निपटने के लिए इन्हें सही आपात सूचनाएं उपलब्ध करायी जाती हैं। इसके अतिरिक्त इस अभ्यास का उददेश्य जिम्मेदारी के क्षेत्र में स्थित साम्प्रदायिक तथा क्षेत्रीय शरारती तत्वों के संबन्ध में आवश्यक सूचनाएं एकत्रित करना है। इस प्रकार के अभ्यासों का उददेश्य विभिन्न समुदायों/जातियों के लोगों के बीच अन्तर साम्प्रदायिक तथा अन्तर जातीय तनाव को कम करना है। इसके अलावा ऐसे अभ्यासों का उददेश्य बल को जनता के नजदीक सम्पर्क में लाना है ताकि बल कार्मिक व जनता एक दूसरे को अच्छी प्रकार से जान समझ सकें और दंगो के दौरान स्थानीय प्रशासन के ठप्प होने पर आर. ए.एफ. बिना किसी सहायता के प्रभावी रूप से निपट सकें। विभिन्न धार्मिक/जाति तथा समुदायों के बीच बढ़ती जातीय भावनाओं तथा सहन शीलता में आई कमी को देखते हुए आर.ए.एफ. की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है तथा इसकी मांग बढ़ गई है। अतः आर.ए.एफ. के जवानों के लिए भीड़ नियत्रंण, बचाव एवं राहत कार्य, तथा आपदा प्रबन्धन जैसे अधिक व्यवसायिक प्रशिक्षण की जरूरत है।

जीरो रेस्पोन्स टाईम :-आर.ए. एफ. को दंगाईयों तथा शरारती तत्वों पर नियंत्रण कर स्थिति को प्रभावी रूप से अत्यंत कम समय में काबू करने की जरूरत होती है। जीरो रेस्पोन्स टाईम में परिणाम हासिल करने के लिए एक समय सीमा निर्धारित की

गइ है।

यद्यपि आर.ए.एफ. अभी एक नयी फोर्स है फिर भी इसने देश तथा जनता की प्रशंसनीय सेवा की है। बल ने यह सिद्ध कर दिया है कि समाज सेवा ही इनका असली मकसद है। जैसे-जैसे समय बीतता जायेगा इस बल का महत्व/प्रभाव बढ़ेगा। आर.ए.एफ. की 123 कार्मिकों वाली टुकड़ी को 30 मार्च से 2 दिसम्बर 1995 तक सेना पुलिस के एक अंग के रूप में संयुक्त राष्ट्र शान्ति मिशन के तहत देश की सदहदों से पार हैती में पहली बार तैनात किया गया था। बल ने वहाँ बहुत अच्छा काम किया इसी लिए आर.ए.एफ. को पुनः संयुक्त राष्ट्र मिशन के तहत 240 कार्मिकों वाले दो विशेष पुलिस दस्तों को मई 2000 में कोसोवो जाने का अवसर मिला। आर.ए.एफ. वहाँ अच्छा कार्य कर रही है।

बल एक छोटे से समय में बहुत लम्बा सफर तय कर जनता तथा सरकार की अपेक्षाओं में खरा उतरा है।

एक स्मरणीय मार्मिक वृतान्त

एच.आर० बंगा
कमाण्डेन्ट 100 द्रुकाब बटा.

“बम घरों पर गिरे या सरहद पर
रूह ए तामीर जख्म खाती है
मात अपने जलें कि औरों के
जीस्त फाकों में तिलमिलाती है।”

फरवरी के आखिरी दिनों के अहमदाबाद में आसमान धुएं के बादलों से ढ़क गया। हैवानियत के इस बादल में, जलते हुए घरों का धुआ तो था, पर पानी की बूँद नहीं, सड़को पर हमारी बजा पकड़ रही थी। नीचे काँच के बोतलो की टूटने की आवाज आ रही थी, पर ये शायद इन्सानी चीखों की आवाज से कम थी।

ये वही सड़क थी जिस पर हम कल तक घूमने निकला करते थे। आज वहाँ दहशत और दरिन्दगी के सिवा कुछ नहीं। कफ्यू ग्रस्त दरियापुर इलाके मे हमारी ‘डी’ कंपनी के नीली डागरी पहनें हुए महिला कार्मिकों को देखकर, एक मुस्लिम महिला ने धीरे से अपने पास बुलाया। उसका पति घर पर नहीं लौटा था, दो छोटे-2 बच्चे दूध के लिए बिलख रहे थे। हाथ में पैसे पकड़े हुए उसने नमी भरे आंखो से, दूध के लिए हमारी महिला कार्मिकों से अनुग्रह किया। रोते हुए बच्चे, किसी भी पत्थर दिल इन्सान

के हृदय को झकझोरने के लिए काफी थे। बच्चे, जिन्हें शायद इस बात का इल्म ही नहीं था कि हम इंसान नहीं बल्कि हिन्दू या मुसलमान है।

शांति सभा आयोजित कर रही मल्लिका सारा भाई, मेघा पाटेकर पर हमला हुआ और ये सब घटित हुआ साबरमती में। गांधीजी की साबरमती। विश्वास नहीं होता कि क्या ये वही गुजरात है, जहाँ से जन्म लेकर एक अहिंसा के पुजारी ने अहिंसा और सच्चाई का हथियार हाथ में लेकर इस हिन्दुस्तान को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करा दिया था। क्या ये वही साबरमती है जहाँ से निकले अहिंसा के प्रकाश ने पूरे देश को जगमगा दिया था। फिर ये विक्षिप्त मानसिकता क्यों ? साल भर पहले ही अहमदाबाद ने एक खतरनाक भूकम्प सहा था, जिसके दौरान 100 बटालियन द्रुत कार्य बल ने यहाँ पहुँच कर न केवल राहत व बचाव कार्य किया बल्कि प्राकृतिक आपदा से पीड़ित मानवता की सेवा भी की थी। इस विपदा के दौरान हिन्दू और मुसलमानों ने एकजुट होकर इस प्राकृतिक विपदा का सामना किया था। गुजरात जो कि भूकंप से पूरी तरह उबरा भी नही था कि एक और विपदा, दंगों के रूप में आ खड़ी हुई। जो उस वक्त एकजुट थे, वो ही अब एक दूसरे के खून के प्यासे बन गये। इसे मानसिक विक्षिप्तता नहीं कहें तो फिर क्या? हैवानियत के इस तांडव से प्रेस रिपोर्टर भी अछूते नहीं रहे। सूरत में 'संदेश' के रिपोर्टर राजू चीनीवाला को जिदां जलाने की कोशिश की गई। पर सही वक्त पर पहुँचकर 100 बटालियन आर०ए०एफ० के 'बी' कंपनी के जवानों ने अपने जान पर खेल कर उसे बचा लिया एवं गंभीर रूप से घायल अवस्था में उसे अस्पताल में दाखिल कराया।



असहायों की सेवा में आर.ए.एफ.



महानिरीक्षक श्री जी एम. श्रीवास्तव अहमदाबाद में स्थानीय लोगों से चर्चा करते हुए

जब हमारी 'डी' कंपनी की प्लाटून कालूपुर से गुजर रही थी तो कुछ लोगों ने हमें मदद के लिए पुकारा तमाम जलते हुए घरों में एक घर ऐसा भी था जिसमें एक अपाहिज महिला दहकती आग की लपटों के बीच मौत से जूझ रही थी और उसे आग के बीच कोई जाकर बचाने की कोशिश नहीं कर रहा था। पर महिला कार्मिकों ने जान की परवाह किए बिना, अंदर घुसकर अपाहिज महिला को सुरक्षित बाहर निकाला। स्थानीय प्रशासन और मीडिया ने इस बल की महिलाओं की प्रशंसा की पर प्रशंसा से अधिक हमें उस अपाहिज महिला और स्थानीय लोगों की दुआए रास आई।

दंगो के दौरान, भारी मात्रा में लूटपाट एवं आगजनी की घटनाएँ हुई दोनों मजहब के लोगों को निशाना बनाया जा रहा था। घायलों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही थी। इसमें काफी मात्रा में स्त्री-बच्चे भी शामिल थे। घायलों के उपचार, उनके जख्मों पर मरहम लगाने के लिए आर०ए०एफ० की मेडिकल टीम ने जगह-जगह मेडिकल कैम्प लगाए। पर शायद मरहम की जरूरत उनके शरीर से ज्यादा उनके दिलों को थी, जिन्होंने इस दंगो के दौरान अपनी जान से भी प्यारे लोगों को गँवा दिया था।

आर०ए०एफ० ने गोधरा, वड़ोदरा, अहमदाबाद एवं सूरत में मेडिकल कैम्पों/ प्राथमिक उपचार कैम्पों का सफल आयोजन किया।

रिलीफ कैम्पों में स्कूल जाते बच्चों के लिए हमारी आर०ए०एफ० बटालियन ने मुफ्त पुस्तके वितरित की। यूँ तो सूरत, बड़ोदरा और गोधरा से हमारी कंपनियाँ

वस्त्राल में अपने ठिकाने पर आ चुकी पर उन ढेर सारी मार्मिक यादों के साथ, जो अब तक भी हमारे बीच चर्चा का विषय हैं। साढ़े पाँच महिने की तैनाती कोई छोटी अवधि नहीं थी। आर०ए०एफ० इतिहास में वर्तमान समय तक की सबसे लंबी अवधि की तैनाती रही। इस दौरान काफी नजदीक गए थे हम जनता के।

"ऐसा तो कुछ नहीं था कि हम उनके दिल में घर कर गए"।
"पर यूँ नीली डांगरी को भूलना भी आसान ना होगा, ऐसा कुछ कर गए"।

ढ़ेर सारा प्यार देकर और ढेर सारा प्यार दुआए लेकर हम वापस लौटे।

"ईश्वर अल्लाह तेरो नाम सबको सम्मत्ति दे भगवान"।

गाँधी जी की इन पंक्तियों की जरूरत आज सबसे ज्यादा महसूस की जा रही है। पर शायद गाँधीजी के पदचिन्हों पर चलने वाला अब कोई बचा नहीं है। हिंसा की अहिंसा पर एक गहरी चोट को हमने देखा है। अपने बदन पर इस चोट के वार को सहकर अहिंसा को साहस देने की कोशिश की है इस बल के जवानों ने। जिस में हम कामयाब भी हुए लेकिन बहुत तर्जबे लेकर। हमने अपनें जान हथेली पर रखकर, दंगाईयों से मुकाबला किया और विपदा में फंसे लोगों को बचाया। पर क्या सिर्फ इससे सब कुछ ठीक हो जाना है ? जरूरत है एक मूलभूत परिवर्तन की। इंसानी सोच में। जरूरी है इसके लिए इंसान आगे आए हिन्दू या मुसलमान नहीं। तभी होगी असली जीत। भगवान की जीत। गांधीजी के आदर्शों की जीत।

"इस लिए ए शरीफ
इंसानों
जंग टलती रहे तो बेहतर है आप और हम, सभी के आंगन में शमां जलती रहें तो बेहतर है।

गुजरात में आर०ए०एफ० का मानवीय पटल

"खून अपना हो या पराया हो मस्त ए आदाम का खून है आखिर जंग मगरिब में हो के मशरिक में अमन ए आलाम का खून है आखिर"

अयोध्या में दिनांक 22 और 24 फरवरी को पूर्ण आहुति यज्ञ का आयोजन किया गया था। इस कार्य हेतु पूरे भारत से भारी संख्या में कार सेवक अयोध्या में एकत्रित हुए। गुजरात राज्य से ही बहुत से कार सेवक वहां पर पहुंचे। पूजन कार्य की समाप्ति के बाद कार सेवकों का एक जत्था साबरमती एक्सप्रेस से लौट रहा था। गोधरा रेलवे स्टेशन पर यह गाड़ी दिनांक 27 फरवरी को जब सुबह पहुंची तो वहाँ पर उपस्थित अराजक तत्वों की भीड़ ने साबरमती एक्सप्रेस की दो बोगियों में आग लगा दी और पथराव किया। इस हिंसक वारदात में 58 लोगों की जलने से मृत्यु हो गई और अन्य

बहुत जख्मी हो गये। मरने वाले ज्यादातर लोग हिन्दू रामसेवक थे जो अयोध्या से शिलान्यास करके अपने परिवारों के साथ वापस आ रहे थे।

इस घटना के बाद पूरे गुजरात में भारी तनाव की स्थिति पैदा हो गई। अहमदाबाद में तैनात आर.ए.एफ. की चारों सर्विस कम्पनियों, को उक्त घटना की सूचना मिलने के बाद तुरन्त तैयार कर दिया गया और परिचालन विभाग नई दिल्ली के आदेश प्राप्ति के पश्चात् ए/100 को गोधरा, बी/100 को सूरत, सी/100 को बड़ोदरा व डी/100 को अहमदाबाद को तुंरत युनिट गाड़ियों द्वारा भेज दिया। चारों कम्पनियाँ बगैर एक मिनट की देरी के तुरंत इन शहरों के लिए रवाना हो गई तथा 27 तारीख को ही चारों अपने-अपने गन्तव्य स्थान पर रिकार्ड समय में तैनात हो गई। आर०ए०एफ० के पहुँचते ही वहां के प्रशासन का मनोबल ऊँचा हो गया और आर०ए०एफ० को अति संवेदनशील जगहों पर तैनात कर दिया।



महिला आन्दोलनकारियों को नियंत्रित करती हुई द्रु.का.ब. की महिला कर्मी

डी/100 को अहमदाबाद के दायेापुर, कालुपूर, शाहपूर तथा पुराने आबादी वाले जगहो पर तुरन्त तैनात किया गया क्योंकि यह भय था कि यह हिंसा साम्प्रदायिक दंगे का रूप न लें एवं अहमदाबाद के अन्य भागों में एस०आर०पी० की कम्पनियों को तैनात किया गया।

दिनांक 28 फरवरी को विश्व हिन्दू परिषद ने गुजरात बंद का आहवान् किया। सभी दुकानें तथा सरकारी अनुष्ठान बंद रहे। करीब दस बजे से लोग सड़कों पर आ गए। कुछ ही समय में भीड़ उत्तेजित हो गई तथा बड़े पैमाने पर आगजनी लूटपाट की घटनाएं प्रारम्भ हो गई। मुस्लिम समुदाय के लोगों तथा उनकी सम्पत्ति को निशाना बनाया गया। देखते ही देखते लाखों करोड़ो की सम्पत्ति आग की भेट हो गई। बहुत से लोग जख्मी हालात में अस्पतालों में भर्ती होने आरंभ हो गए। शहर की बिगड़ती हुई हालात पर काबू पाने और बल की कमी होने की वजह से यूनिट मुख्यालय में कमाण्डेंट के नेतृत्व में एक तदर्थ टीम बनाई गई। इसी दौरान खबर मिली की बापूनगर इलाके में टेलीफोन एक्सचेंज में आग लगा दी गयी है । कमाण्डैंट 100 बटा. तुंरत प्रभाव टीम के साथ घटना स्थल पर पहुँचें जहाँ पर एक्सचेंज के दो गार्डो को उपद्रवियों ने तेल छिड़क कर जिन्दा आग को भेट कर दिया था। उनकी चीखे अब कम हो गई थी और वह जलते हुए अपनी मौत का इन्तजार कर रहे थे । ठीक उसी समय 100 आर०ए०एफ० की टीम वहां पहुँची। स्थिति को देखते हुए बल के जवानों ने फुर्ती से कार्रवाई कर दोनों गार्डों की लगी आग को कम्बल तथा पानी डालकर बुझा दिया। यूनिट के डाक्टर श्री यालगी टीम के साथ ही थे, ने तुरंत फर्स्ट एड दिया और उनको तुरन्त अस्पताल पहुँचाया। यहाँ पर एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई लेकिन दूसरा व्यक्ति को मौत के मुख से निकाल लिया गया। करीब एक सप्ताह उपरान्त बटा. कमांडैंट अस्पताल में उससे मिले तो उसकी जीभ और आँखे आर०ए०एफ० का धन्यवाद करते नहीं थक रही थी। इसके पश्चात् शहर के बापूनगर, अमराईवाही, माघवनगर, रखियाल, बटवा, सोनी की चाल, रहमतनगर आदि स्थानों पर जाकर दंगाईयों को तितर-बितर किया एवं शान्ति बहाली की। जब तदर्थ टीम वापस लौट रही थी तो तकरीबन 10000 लोगों का मजमा सी०डी०एम० चार रास्ते के पास खानवाही इलाके पर आक्रमण कर रहा था और कई घरों को आग लगा दी गई थी। कमांडैंट के नेतृत्व में आर०ए०एफ० की टुकड़ी ने तुरन्त कार्रवाई कर मजमे को तितर-बितर कर दिया और पूरे गाँव के लोगों की जान बचाई तथा घरों में लगी आग को बुझाया। इसी गाँव के कुछ लोग महानिदेशक के दौरे के दौरान उनसे मिले तथा आर०ए०एफ० का आभार प्रकट करते हुए उन्होंने इन शब्दों में बल का धन्यवाद किया, “मान्यवर अगर आज हम जिन्दा है तो इस बल की बदौलत, इस बल तथा आप का कोटि-कोटि धन्यवाद” जैसा कि पूर्व में बताया गया कि आर०ए०एफ० की तीन कम्पनियां अहमदाबाद शहर से बाहर चली गई थी जिससे शहर में दंगा रोकने हेतु मात्र एक ही कम्पनी तैनात थी और दंगा इतने भारी पैमाने पर हो रहा था कि स्थिति को नियंत्रण में करना मुश्किल हो गया था। जहाँ पर आर०ए०एफ० की कम्पनियाँ तैनात होती थी वहाँ पर दंगा शान्त हो जाता था। अहमदाबाद में जिस जगह

आर०ए०एफ० तैनात रहो वहॉ पर कोइ आप्रेय घटना नहीं होने पाइ । इन दगों के दौरान आर०ए०एफ० के जवानों ने कम से कम बल प्रयोग करते हुए कई ऐसी परिस्थितियों को नियंत्रित किया जो कि यदि यह घटित हो जाती तो दंगा और भड़क जाता और जिसका असर पूरे देश पर पड़ता। इन दगों के दौरान इस वाहिनी की कम्पनियों ने मात्र दगों पर ही नियंत्रण नहीं किया बल्कि ऐसे मानवीय कार्य किये जो की एक मिसाल बन गये हैं। वाहिनी द्वारा किए गए मानवता पूर्ण कार्य का ब्यौरा निम्नानुसार है :-

कुल 171 स्थानों पर दंगा भड़कने से पूर्व आर०ए०एफ० के जवानों के पहुँचने से दंगा नही भड़क पाया, स्थानीय पुलिस की मदद से कुल 665 दंगाइयों को गिरफ्तार किया, कुल 285 स्थानीय लोगों को बचाव एवं राहत, कुल 8867 दंगा पीड़ित लोगों को यूनिट मेडिकल आफिसर की सहायता से अलग-अलग स्थानों पर चिकित्सा शिविर लगाकर मुफ्त दवाईया वितरित की, बी/100 बटालियन जो सूरत शहर में तैनात थी, के जवानों ने मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया तथा कंपनी के 40 जवानों ने स्वेच्छा से रक्त दान भी किया, 605 खाने के पैकेट दंगा पीड़ित लोगों को वितरित किए, यूनिट कमाण्डेट व अन्य अधिकारियों द्वारा राहत शिविरों में जाकर दंगों से पीड़ित स्थानीय स्कूलों के बच्चों को नोट बुक व पढ़ने हेतु स्टेशनरी वितरित की, दंगों के दौरान माह फरवरी में एस०बी०आई० के कर्मचारियों को सुरक्षा प्रदान कर बैंक खुलवाया, कैम्प के निकटवर्ती गांव मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र थे वहाँ दंगाइयों द्वारा उन पर हमला करने से वहाँ की जनता कैम्प मे आ गयी जिसे यूनिट द्वारा सुरक्षा प्रदान की गई, डी/100 बटालियन की महिला टीम द्वारा एक अपाहिज औरत को जलते हुए घर से बचाया।

“न दौलत छोड़ गए न कोई महल छोड़ गए,

पर उसी डरी कौम के अन्दर धैर्य और बल छोड़ गए,

इसी दौरान हमने अपनी शांति गंवाई है तो क्या उनके लिए सुख और शांति के पल छोड़ गए”।

-एच.आर.बंगा



पुलिस महानिरीक्षक श्री जी एम. श्रीवास्तव, बल के अधिकारियों एवं स्थानीय लोगों से बातचीत करते हुए

गुजरात नियुक्ति एक अनोखा अनुभव

अनिल मिंज, उप०कमा०
102 बटा., द्रुत कार्य बल,

सन् 1992 में बाबरी मस्जिद ढ़हाए जाने के बाद उस रक्तरंजित दौर के ठीक एक दशक बाद वैसी ही नाजुक दौर की एक और आशंका देश के जनमानस पर घिर आयी। यह सन् 2002 के दूसरे महिने की 27 तारीख को गोधरा रेलवे स्टेशन के पास साबरमती एक्सप्रेस में एक भयंकर अग्निकांड घटित हुआ। इस दावानल में देखते ही देखते अयोध्या से लौट रहे 58 कार सेवक कोच के अन्दर ही जल कर स्वाहा हो गए। स्तब्ध कर देने वाली इस दर्दनाक घटना की परिणति अहमदाबाद तथा बाद में गुजरात के करीब दो दर्जन शहरों में जुनूनी साम्प्रदायिक दंगों के रूप में हुई।

जैसा कि विदित था इस जुनूनी पागलपन पर काबू पाने के लिए सेना तथा अर्द्धसैनिक बलों को गुजरात भेजा गया। हालाँकि शुरूआती हफ्तों में ही इन दंगों पर

काबू पा लिया गया परन्तु छिटपुट हिंसा जारी रही। राज्य के सामाजिक ताने-बाने को घोर क्षति पहुँची और दो समुदायों के बीच खाई और गहरी हो गई। राज्य में अमन-चैन की बहाली तथा कानून व्यवस्था को कायम रखने के लिए दृढ़ प्रयास की आवश्यकता हुई।

मुम्बई में 27 फरवरी से 2 अप्रैल की नियुक्ति के तुरन्त बाद मेरी कम्पनी को गुजरात के सूरत शहर जाने का आदेश प्राप्त हुआ। हम 6 अप्रैल को सूरत पहुचें और तीन महीने से अधिक समय तक वहीं नियुक्त रहें। इस दौरान पूरे सूरत शहर में हमारी चहल कदमी रोजाना की हिस्सा थी। सूरत के लोगों के बीच यह जुमला लोकप्रिय हो चला था कि मुम्बई की द्रुत कार्य बल अब सूरत में ही रहेगी। हमने वहां की स्थानीय जनता के बीच काफी इज्जत हासिल की। लोग हमें शांति तथा अमन-चैन के रक्षक के रूप में देखते थे, जो किसी भी धर्म और जाति से परे था। यह हम सब के लिए भी बड़े गर्व की बात थी कि गोधरा घटना के बाद यूं तो अहमदाबाद सहित गुजरात के कई छोटे बड़े शहरों में हिंसा होती रही पर सूरत इन सबों से अछूता रहा। सूरत शहर वैसे भी आर्थिक, सामाजिक और भौगोलिक दृष्टि से बहुत ही संवेदनशील है। यहां सिंथेटिक कपड़ा उत्पादन तथा हीरे की कटाई छटांई और पालिश उद्योंगो में रोजाना करोड़ों का कारोबार चलता है। इन उद्योगों में मुख्यतः बिहार और उड़ीसा राज्य के 20 लाख मजदूर लगे हुए हैं। पुराने सूरत शहर का रिहायशी इलाका भी अत्याधिक संवेदशील है। इस क्षेत्र में हिन्दुओं और मुस्लिमों के तीन-चार तल्लों के मकान बिल्कुल आमने-सामने हैं। इन मकानों के साथ-साथ कई छोटे-छोटे मन्दिर और मस्जिद बने हुए हैं। आमने-सामने के मकानों के बीच की दूरी आठ से दस फुट की है और यह क्षेत्र अंधेरा संकरा गलियारों का स्वरूप ले लेता है। इन गालियों में किसी भी व्यक्ति को मार कर भाग जाना बिल्कुल आसान था।

साथ ही आमने-सामने के दो मकानों के बीच पत्थरबाजी भी बिल्कुल आसान थी। हमेशा बना रहता था कि इन क्षेत्रों में कोई अनहोनी न हो जाए क्योंकि वहां की एक चिनगारी साम्प्रदायिक दंगों रुपी भीषण आग का रूप ले सकती थी। उड़ीसा तथा बिहार से आये हुए लाखों मजदूर भी परेशानी के सबब थे। वर्तमान परिस्थितियों में यह आबादी धार्मिक रूप से कट्टर और काफी आक्रामक थी। उनमें से एक बड़ा तबका बहती गंगा में हाथ धोने के लिए भी तैयार बैठा था।



गुजरात के भावनगर में जब्त किये गये सिंग्नल बम्ब की जाँच करते बल के अधिकारी



मफ्तनगर से बरामद टीन बम्बों की जाँच करते बल कार्मिक

परन्तु हमारे लिए बड़े सौभाग्य और सुकून की बात यह थी कि सूरत साम्प्रदायिक हिंसा से बचा लिया गया। इसके दो मुख्य कारण प्रथम-आर्थिक परिस्थितियां और द्वितीय हमारा स्थानीय प्रशासन के साथ अथक और सकारात्मक प्रयास था। सूरत के मध्य और उच्च वर्ग को भली-भांति पता था कि शहर की सामान्य परिस्थितियों में कोई भी रूकावट वहां के उद्योंगों को करोड़ो का नुकसान दे सकती है। रोजाना देश भर के कपड़ा व्यापारियों का आना जाना शहर में लगा रहता है। हजारों ट्रक माल रोज सूरत शहर से बाहर भेजें जाते हैं। इस बात के भय में फैले हजारों कपड़ा मीलों की खडाहट तथा करोड़ों का कारोबार ठप भारी नुकसान होगा, व्यापारी वर्ग ने शांति का मार्ग अपनाने में ही अपनी भलाई समझी और उन्होंने अपने मात-हतों तथा मजदूरों को कोई भी ऐसा काम करने से हतोत्साहित किया जो कि उनके व्यापार या कारोबार को नुकसान पहुँचाए। दूसरी और स्थानीय प्रशासन और पुलिस ने भी अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं रखी। शांति कमेटी बना कर उनकी बैठके जल्दी-जल्दी बुलाई गई। इन शांति कमेटियों में सभी समुदायों की भागीदारी थी और आपसी देश तथा गलतफहमियां आमने-सामने दूर कर ली जाती थी। इसका फायदा हुआ कि अफवाह नहीं उड़ पायी और दो समुदायों में आपसी विश्वास कायम रहा। सबसे अच्छी बात यह देखी गई कि मामलों को सुलझाने में किसी भी प्रकार का भेद-भाव नहीं बरता गया। बहुत ही तेज कार्रवाई की गई। मजमों को तितर-बितर करने में कोई कोताही नहीं बरती गई और सीधे-सीधे जोरदार लाठी चार्ज कर असमाजिक तत्वों को उनके घरों तक खदेड़ा गया। यह तरीका बहुत ही कारगर साबित हुआ और लोगों में यह डर बैठ गया कि यदि तुम सड़क पर भीड़ इक्कठी करोगे तो द्रुत कार्य बल वहां तुरन्त पहुंच जाएगी और तुम्हें उनकी खतरनाक लाठी का वार झेलना पड़ेगा। इस डर

ने लोगों को बाहर निकलने से रोका इस प्रकार सूरत में तकरीबन तीन महीने की हमारी नियुक्ति शांतिपूर्ण निकली और शहर के किसी भी हिस्से में कोई अनहोनी नहीं हुई।

ऐसे ही समय में 12 जुलाई को सारे गुजरात में रथयात्रा का पर्व सम्पन्न होना था। इस रथ यात्रा को सुरक्षित सम्पन्न कराना सरकार की एक बड़ी जिम्मेदारी थी साथ ही लोगों में सुरक्षा का भाव पैदा कर यह साबित भी करना था कि गुजरात अंधकार भरे दौर से बाहर निकल चुका है। हमें रथ यात्रा बन्दोबस्त के लिए भावनगर नियुक्त किया गया। 8 जुलाई भावनगर पहुंचने पर वहां के पुलिस अधीक्षक ने हमारा गर्म जोशी के साथ स्वागत किया। शहर में भी यह बात तेजी से फैल गई कि चट्टा-बट्टा फोर्स आ गई है। बाद में पता चला कि लोगों ने हमारी डांगरी के कारण हमें उस नाम से नवाजा था। भावनगर पुलिस अधीक्षक ने शहर के बदनाम इलाकों की छानबीन का प्लान बना रखा था। और इसके लिए भुज से स्वयं दस्ता तथा बम्ब स्क्वायड मंगा रखे थे। अगले दो दिनों में रूआपूरी थानान्तर्गत मफ्तनगर क्षेत्र से सामूहिक कार्डन और सर्च के दौरान 42 देशी टीन बम्ब, 34 ऐसिड बम्ब सैकड़ों की संख्या में खाली सोडा बोतल और धारदार हथियार बरामद हुए। हमारे लिए सबसे आश्चर्यजनक प्राप्ति विदेशों में बने हुए राकेट, सिगनल, पैरा और स्मोक बम्ब थे। ये विस्फोटक हमारे लिए बिल्कुल नए थे। हमें मालूम नहीं था कि इन्हें कैसे चलाया जाता है या इन्हें बरबाद कैसे किया जाए। बाद में पता चला कि ये सभी बम्ब नाविकों द्वारा समुद्री जहाजों में सिगनल देने के मकसद से उपयोग में लाए जाते है। जो भावनगर के पास अलंग में एशिया के सबसे बड़े शीप ब्रेकिंग यॉर्ड के कडंम समुद्री जहाजों से प्राप्त किए थे। वैसे तो ये बम्ब खतरनाक नही थे पर भीड़ भरे क्षेत्रों में छोड़े जाने पर नुकसान पहुंचा सकते थे और अफरा-तफरी का माहौल पैदा कर सकते थे। पुलिस ने सुरक्षा के मध्य नजर इन बम्बों को जब्त करना शुरू किया। स्थानीय अखबारों में धड़पकड़ रंगीन चित्रों के साथ प्रकाशित होने लगी। लोगों ने बम्बों को बाहर फैकना शुरू कर दिया क्योंकि यह डर पैदा हो गया कि कुत्ते बम्ब को सूंध कर निकाल लेगें और पकड़े जाने पर डन्डें खाने पड़ेगें और जेल जाना पड़ेगा। स्थयात्रा के ठीक पहले यह धरपकड़ फायदे मंद रही क्योंकि असमाजिक तत्व भूमिगत हो गए।

भावनगर शहर में 12 जुलाई को सुभाष नगर भागवानेश्वर महादेव मन्दिर से सुबह 6.30 बजे से श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा निकल कर अपने निर्धारित रास्ते से गुजरते हुए रात को 9 बजे भागवानेश्वर मन्दिर में ही धर्म सभा के बाद विसर्जित होना था। सन् 1995 में रथयात्रा के दौरान एक अतिसंवेदनशील विस्तार तारगेट के वार्टन लाइब्रेरी चौक के रास्ते जातीय हिंसा हुई थी जिसमें पुलिस को फायरिंग भी करनी पड़ी थी। उसके बाद पिछले साल एक रथयात्रा शांतिपूर्ण सम्पन्न हुई। परन्तु इस वर्ष के तनाव पूर्ण और भय भरे माहौल में रथयात्रा शांतिपूर्ण सम्पन्न करा ले जाना एक टेढ़ी खीर नजर आ रही थी। पुलिस महानिरीक्षक जूनागढ़ रेंज रथयात्रा बन्दोबस्त के मुखिया थे और 12 तारीख से पहले हमने शहर में दो फ्लैग मार्च और रथयात्रा बन्दोबस्त के रिहर्सल किए। रथयात्रा मार्ग कुल 18 कि०मी० का था पर उसमें से कुल डेढ़ कि०मी०

का मार्ग ही अत्याधिक संवेदनशील क्षेत्र से होकर गुजरता था। "यू" आकार का यह मार्ग गोगा गेट से शुरू हो कर खारगेट, खारा कुआं, मामा कोठा, अरविंद मेहता चौक से रूआपूरी चौक होता हुआ हलुरिया चौक में समाप्त होता है। इस संकरे रास्ते के दोनों और हिन्दु और मुसलमानों की ढेर सारी दुकानें थी और उन दुकानों के उपर बोहरा जाति के लोगों का निवास स्थान था। इस डेढ़ कि०मी० रास्ते की जिम्मेदारी हमें सौपी गई इस विश्वास के साथ कि आर.ए.एफ. ही इस रास्ते को सुरक्षित रख सकती है।



आर.ए.एफ. द्वारा भावनगर में जब्त किये गये विदेशी स्मोक बम्ब



भावनगर में रथ यात्रा बन्दोबस्त में *102* बटा. आर.ए.एफ. के जवान

12 जुलाई को रथयात्रा अपने निर्धारित स्थान और समय से शुरू हुई और करीब शाम 5 बजे गोगा गेट में प्रवेश कर गई सबसे पहले पांच हाथी चल रहे थे, उनके पीछे पांच घोड़े, उनके पीछे महोत्सव समिति के प्रमुख का जीप और उसके साथ-साथ विभिन्न धार्मिक संगठनों के 2000 के करीब युवा चल रहे थे। इन सब के पीछे 60-65 ट्रक थे जिनमें स्त्री-पुरुष और बच्चे बैठे थे। उनके पीछे भगवान श्री जगन्नाथ जी का ट्रक में बना हुआ रथ और सबसे अन्त में प्रसाद वितरण करने वाले तीन ट्रक थे। हमारा सबसे अधिक ध्यान समिति प्रमुख की जीप के साथ-साथ चल रहें 2000 युवाओं पर था जो कि मदहोश हो कर नाच रहे थे और धार्मिक नारे लगा रहे थे। उस मार्ग पर आ कर यात्रा बार-बार रूक जाती थी हमनें उन्हें आगे धकेलना शुरू किया और एक घंटे के अन्दर ही रथ हमारे क्षेत्र से बाहर निकल गई। रथयात्रा अन्त में अपने निर्धारित समय में ही भगवानेश्वर महादेव मन्दिर में सुरक्षित सम्पन्न हो गई।

इस प्रकार गुजरात के दो शहरों में हमारी नियुक्तियां सफल रही। हमने अपने कार्यों को सही अंजाम दिया और अपनी शांति रक्षक की प्रतिष्ठा को कायम रखा। इस दौरान हमने दंगों के मनोविज्ञान के संबंध में अनुभव किया कि दंगाई निजी जोखिम के अहसास से परे नहीं होता। वह भीड़ का हिस्सा बनता है और तभी आगे बढ़ता है जब उसे पता हो कि इसमें उसे खुद कोई जोखिम नहीं होगा। यही साम्प्रदायिक दंगें की सबसे कमजोर कड़ी है जिस पर प्रहार करके हादसे टाले जा सकते हैं। सबक यह है कि दंगो को सिर्फ एहतियाती कार्रवाई से रोका जा सकता है जिसके लिए उत्साही और अपक्षपाती इच्छाशक्ति की आवश्यकता है।

वतन की पहरेदारी का पहला सफल दशक





दंगा ग्रस्त क्षेत्रों में पेट्रोलिंग करते आर.ए.एफ. के जवान

द्रुत कार्य बल “समाज सेवा ही मकसद”





वृद्धों/बच्चों को दवाईयां बांटते एवं जख्मियों की सहायता करते बल कार्मिक

द्रुत कार्य बल “श्रद्धा एवं भक्ति का अनूठा संगम”



पुरी रथ यात्रा के दौरान सुरक्षा के लिए तैनात बल के जवान



निरपेक्षता की मिशाल “आर.ए.एफ. जवान सद्भावना रैली में”

द्रुत कार्य बल का आदर्श मानवता की भावनाओं के अनुरुप सेवा





उड़ीसा में आए महा चक्रवात के दौरान मानवीय सेवा में जुटे बल के अधिकारी व जवान

गुजरात तैनाती की एक झलक

राजेश्वर सिंह, सहा०कमा०
102 बटा., द्रुत कार्य बल,

बीकम्पनी 102 बटालियन द्रुत कार्य बल 4 अप्रैल 2002 को वाहिनी मुख्यालय तलोवा नवी मुम्बई से अपनी ही गाड़ियों द्वारा (बाई रोड़) अहमदाबाद के लिए प्रस्थान किया और उसे 5 अप्रैल को लगभग 1800 बजे अहमदाबाद पहुंच कर कानून और व्यवस्था तथा क्षेत्र में व्याप्त तनाव व भय के माहौल को सामान्य बनाने के लिए ड्यूटी पर लगाया गया।

प्रारम्भ में इस कम्पनी को जागृति हाईस्कूल सरखेज में रहकर मोबाईल/पैदल पेट्रोलिंग/सर्चिगं आदि की डयूटियां अहमदाबाद के ग्रामीण क्षेत्र में श्री कुलदीप शर्मा भा.पु. सेवा महानिरीक्षक, गुजरात पुलिस के निर्देशन में मोहम्मदाबाद, कपड़वज, आनन्द, खेड़ा तथा वीरमगाम आदि क्षेत्र में करने का दायित्व सौपा गया। पूरे क्षेत्र में काफी तनाव तथा भय का माहौल था। लोग बाहर निकलने से भी डरते थे, परन्तु हमारी कम्पनी की उपस्थिति में लोग काफी राहत महसूस करते थे। और बाहर निकलकर बातचीत करना चाहते थे। लोग इतने प्रभावित थे कि हम लोग जब वहां से दूसरी जगह पर ड्यूटी करने के लिए जाने लगे तो वो कहते थे कि अभी तक आप लोगों के उपर काफी भरोसा था परन्तु आप लोग जा रहे हैं तो अब हमारा क्या होगा और काफी मायूस हो जाते थे।

8 मई, 2002 को खबर मिली कि ताज मोहम्मद खान, बहद शरीफ खान पठान, मोहिन खान बहद अब्दुल खान पठान के मकान में बारूद है। पुलिस इंस्पेक्टर सरखेज तथा कुछ अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में हमारी कम्पनी के जवानों ने घर की तलाशी ली। तलासी के दौरान देशी बम्ब बनाने वाला रसायन प्लास्टिक के जरीकनों में पाया गया जिसे बाद में पुलिस स्टेशन सरखेज में जमा करवा दिया गया।

उसी दिन लगभग 1000 बजे पुलिस स्टेशन से मात्र आधा कि०मी० की दूरी पर स्थित आई.टी.आई. संस्थान में कार्यरत एक प्रशिक्षक को जो उसी रास्ते से जा रहा था रोककर कुछ लोगों ने पहले उसके ऊपर (चेहरे पर) तेजाब फैका बाद में तेल छिड़कर जिंदा जला दिया इसकी खबर जनता में लगते ही स्थिति काफी भयावह हो गयी। खासकर जिस साम्प्रदाय का व्यक्ति (मुस्लिम) जलाया गया था। उन सम्प्रदाय के सभी लोग घरों से बाहर निकल पड़े तथा सभी के हाथों में तलवारे, बर्छियां, लोहे के राड़ तथा लाठियां थी स्थिति बेकाबू हो गयी थी। परन्तु उसी समय पुलिस स्टेशन द्वारा हमारी कम्पनी को तुरन्त ड्यूटी पर बुलाया गया। कम्पनी आनन-फानन में मौके पर पहुंच कर तुरन्त स्थिति को नियंत्रण में कर लिया। स्थानीय प्रशासन इस कार्रवाई को

देखकर दंग रह गया। तथा गुजरात पुलिस के महानिरीक्षक श्री कुलदीप शर्मा भा.पु.से. ने कम्पनी के इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।



अहमदाबाद के दंगा ग्रस्त क्षेत्र में विकलांग महिला को बचाती हुई आर.ए.एफ. की महिला कर्मी



दंगा ग्रस्त क्षेत्र बापू नगर में जले हुए व्यक्ति को चिकित्सा सहायता देते बल के अधिकारी व जवान

अहमदाबाद शहर के अति संवेदनशील इलाके जुहापुर क्षेत्र की जिम्मेदारी जुलाई के प्रथम सप्ताह में 100 बटालियन को दी गई। एक दिन अचानक दो समुदायों

(हिन्दू-मुस्लिम) में काफी पत्थर बाजी तथा सामने पुलिस चौकी के उपर ठीक रहने वालों ने वाले मुस्लिम समुदाय के लोग पत्थर तथा बम आदि फैकनें लगे। पुलिस चौकी पर तैनात ए.एस.आई. एस.आर.पी. को चोटें आ गयी। लोग काफी घबड़ा गये काफी दुकानों में आग लगा दी गई। यह सब कार्रवाई हाईवे के उपर हो रही थी। गाड़ियों को रोक कर लोगों ने उनकी जाति पूछकर पिटाई शुरू कर दी तथा पत्थर मारकर गाड़ियों के शीशे तोड़ना आदि शुरू कर दिया। स्थिति काफी भयानक व बेकाबू हो गयी थी। तभी हमारी कम्पनी को वहां पहुंचने का आदेश मिला। कम्पनी तुरन्त मौके पर पहुंची तथा स्थिति को संभाला और क्षेत्र में तुरन्त कर्फ्यू लगाने की सिफारिश की तथा स्थिति धीरे-धीरे सामान्य हुई।

माह जुलाई में बी/102 कम्पनी को पुलिस कमिश्नर अहमदाबाद शहर के निर्देशन में क्षेत्र में मोबाईल/पैदल पेट्रोलिंग, सर्चिंग तथा रथयात्रा आदि से सम्बन्धित ड्यूटी सौपी गई। इस दौरान किसी भी प्रकार की कोई अप्रिय घटना नही घटित हई।

माह अगस्त में इस कम्पनी ने पुलिस कमिश्नर अहमदाबाद शहर के निर्देशानुसार मोबाईल/पैदल पैट्रोलिंग, सचिंग आदि की डयूटियां शहरी क्षेत्रों में सफलतापूर्वक सम्पन्न की। 12 अगस्त को भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा जुहापुरा क्षेत्र के जावेद पार्क स्थित विधवा आश्रम में कार्यक्रम के दौरान सफलता पूर्वक कानून और व्यवस्था बनाये रखने की ड्यूटी सम्पन्न की। 15 अगस्त 2002 स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान भी इस कम्पनी ने कानून और व्यवस्था बनाये रखने की ड्यूटी को अंजाम दिया। कम्पनी दिनांक 16 अगस्त, 2002 को रिलीज होकर दिनांक 16 अगस्त, 2002 को बजे बटालियन मुख्यालय तलोवा नवीं मुम्बई में सकुशल वापिस लौट आई।

आर.ए.एफ. में उच्च संघात प्रशिक्षण

आर. के. शर्मा
कमांडेन्ट - 104 द्रु.का.बल

एक दशक पहले दंगों तथा दंगों जैसी स्थिति से निपटने के लिए एक विशेष बल की आवश्यकता के फलस्वरूप केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक विशेष शाखा आर.ए.एफ. का जन्म हुआ 17 अक्टूबर 1992 से ही आर.ए.एफ. अपने आदर्श (मोटो) मानवता की भावनाओं के अनुरूप सेवा करने का अनुसरण कर रही है। पिछले कई वर्षों से आर.ए.एफ.ने साम्प्रदायिक दंगों से प्रभावी रूप से निपटनें तथा विभिन्न प्रकार के बचाव एवं राहत कार्य अभियानों को अंजाम देने में काफी प्रशंसा प्राप्त की है। आर.ए.एफ. के जवानों की मात्र नीली डांगरी दिखाई पड़ने से ही

उत्पीड़ितों के दिलों में आत्मविश्वास तथा भरोसा आ जाता है। जाति तथा धर्म से ऊपर उठकर यह निरपेक्ष बल है।

आर.ए.एफ. बटालियन की संरचना के.रि.पु.बल बटालियन की सरंचना से काफी भिन्न है। आर.ए.एफ. बटा. का नेतृत्व कमाण्डेन्ट द्वारा किया जाता है। एक बटालियन में चार कम्पनी तथा एक कम्पनी में दो प्लाटून होते हैं। कम्पनी का नेतृत्व उप कमाण्डेन्ट द्वारा तथा प्लाटून का नेतृत्व सहायक कमाण्डेन्ट द्वारा किया जाता है। प्रत्येक प्लाटून में दंगा नियंत्रक, फायर तथा आश्रु गैस इत्यादि के तीन घटक होते हैं। इन टीमों का नेतृत्व निरीक्षक द्वारा किया जाता है।

चूँकि आर.ए.एफ. दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निपटने वाला एक विशेष बल है इसलिये इसे विशेष अस्त्र-शस्त्र तथा विशेष आश्रु गैस मुनीशन से सुसज्जित किया गया है। आर.ए.एफ. के जवानों को व्यावसायिक रूप से सुदृढ़ तथा चुस्त-दुरूस्त रखने के लिये उन्हें निम्न प्रकार का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।



यू.ए.सी का प्रशिक्षण लेते आर.ए.एफ. के जवान

कनवर्सन ट्रेनिंग

चूँकि आर.ए.एफ. का गठन दंगों तथा दंगों जैसी स्थिति से निपटने के लिये किया गया था तथा इसके कार्य करने का सिद्धान्त कम से कम बल का प्रयोग करना है इसलिये यह आवश्यक है कि आर.ए.एफ. में आए



डेमों देते हुए आर.ए.एफ. के जवान

नये कार्मिकों को बल की भूमिका तथा क्रिया-कलापों के बारे में परिचित कराया जाए। अतः इसके लिए उन्हें 12 सप्ताह की कनवर्सन ट्रेनिंग दी जाती है जिसके दौरान उन्हें आर.ए.एफ. की भूमिका तथा क्रिया-कलापों, मानवाधिकारों, बचाव एवं राहत कार्य अभियानों, फस्ट एड, यू.ए.सी. आदि के बारे में पढ़ाया जाता है। इसके अलावा इन्हें विभिन्न प्रकार के विशेष आश्रु गैस गोला बारूद तथा विशेष अस्त्र शस्त्रों को चलाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

तीन दिवसीय मानवाधिकार कैप्सूल कोर्स

आर.ए.एफ. का मोटो (आदर्श) मानवता की भावनाओं के अनुरूप सेवा करना है। इसलिए आर.आर.एफ. कार्मिकों को मानवाधिकार के प्रयुक्त सिद्धान्तों तथा देश के विभिन्न धर्मों एवं उनके अनुष्ठानों, क्रिया-कलापों तथा मानवाधिकार उल्लघंन को रोकने के लिये उन्हें उसके महत्व तथा तात्पर्य को समझना बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है।

दो सप्ताह का आश्रु गैस कोर्स

आर.ए.एफ. को विशेष आश्रु गैस, गोला बारूद तथा अन्य शॉक बेटन, प्लास्टिक प्लेटस, रबड की गोलियां आदि जैसे अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित किया है। आर.ए.एफ. को एक बहुत ही प्रभावी मल्टी बैरल लाँचर वाहन वज्र भी मुहैया कराया गया है। अतः कार्मिकों को व्यवसायिक रूप से चुस्त-दुरूस्त तथा कुशल बनाने के लिए आश्रु गैस का दो सप्ताह का रिफ्रेसर कोर्स कराया जाता है जिसमें उन्हें इस

प्रकार के विशेष यंत्रों (हाथेयारों) तथा गोली-बारूद को चलाना सिखाया जाता है।

एक सप्ताह का फस्ट एड कोर्स

चूँकि आर.ए.एफ. की सेवाओं का उपयोग दंगों तथा बचाव एवं राहत कार्य अभियानों में किया जाता है इसलिए आर.ए.एफ. के जवानों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि जरूरत के वक्त सहायता प्रदान करने के लिए उन्हे फस्ट ऐड कोर्स की जानकारी हो। एक सप्ताह के इस कोर्स के दौरान उन्हें चोटों, जलने से हुए घावों को साफ करके मरहम पटटी बाँधने तथा वेन्डेज, एन्टीसेप्टिक, डिसइनफेक्शन, कृत्रिम श्वांस तथा स्टेरलाईजेशन् शॉट जैसी बातों के संबन्ध में पढाया जाता है।

सेक्टर स्तर पर चार सप्ताह का फायर फाईटिंग तथा बचाव एवं राहत कोर्स

आर.ए.एफ. को आग, बाढ, दंगों भूकम्प आदि जैसी प्राकृतिक तथा मानवकृत आपदाओं के दौरान बचाव एवं राहत कार्य हेतु भी तैनात किया जाता है। अतः इस प्रकार की आपदाओं से निपटने के लिए बल अपने कार्मिकों को सक्षम बनाने हेतु उन्हें चार सप्ताह का फायर फाईटिगं, बचाव एवं राहत, फस्ट ऐड जैसे कोर्सो का प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्हें विभिन्न प्रकार की आपदाओं के दौरान बचाव एवं राहत कार्य अभियान किस प्रकार से चलाया जाये, के संबन्ध में भी जानकारी दी जाती है। उन्हें विभिन्न प्रकार के फायर स्टेशन, फायर फाईटिंग यंत्रों, आग बुझानें तथा उनके उपयोग के बारे में भी जानकारी दी जाती है।

6 सप्ताह का गहन प्रशिक्षण

जब सभी चारों कम्पनियाँ कहीं तैनात नहीं होती है तथा अपने मुख्यालय में उपस्थित होती है तब दो कम्पनियों को बारी-बारी से 6 सप्ताह का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। यह जवानों को शारीरिक तथा मानसिक रूप से सुदृढ बनाने की एक प्रकार की रिफ्रेसर ट्रेनिंग ही है। इस दौरान उन्हें शारीरिक, क्रिया विधिनुसार हथियार ट्रेनिंग, बचाव एवं राहत कार्य, फायर फाईटिंग, दंगा नियंत्रण आदि की ट्रेनिंग दी जाती है। जवानों को विस्फोटकों तथा आई.ई.डी., फस्ट ऐड, फील्ड क्राफ्ट, अश्रु गैस, सिग्नल आदि के बारे में भी जानकारी दी जाती है।

परिचितीकरण का अभ्यास

आर.ए.एफ. की प्रत्येक यूनिट के लिए एक जिम्मेदारी क्षेत्र निर्धारित किया गया जहाँ जरूरत पड़ने पर उसे तैनात किया जाता है। यह क्षेत्र कई जिलों या दो राज्यों में सीमा में हो सकते हैं। अतः आर.ए.एफ. के जवानों को संबधित भू-भाग, रास्ते, साम्प्रदायिक तनाव के क्षेत्र तथा अन्य कानून व्यवस्था की समस्याओं, कोई साम्प्रदायिक दंगों का पुराना इतिहास, जनसाख्यकीं तथा विभिन्न अन्य प्रकार की

सूचनाओं के लिए पारिचेतीकरण अभ्यास कराया जाता है। आर.ए.एफ. बटालियान यह अभ्यास अपनी जिम्मेदारी के क्षेत्र में ही करती है तथा उपरोक्त कारकों के आधार पर ही क्षेत्र में दंगा नियंत्रण की योजना बनाई जाती है।



कर्नवसन प्रशिक्षण के दौरान यू.ए.सी. का अभ्यास करती आर.ए.एफ. की महिला कर्मी

परिचितीकरण अभ्यास के पूरा होने के बाद पहले से ही पहचानें गये संवेदन शील क्षेत्रों को शहर के नक्शे पर बर्ड पैमाने पर दर्शा दिये जाते हैं। सडकों, रूटों, गलियों की रूपरेखा बनाई जाती है तथा अभ्यास के अन्य महत्वपूर्ण चिन्हों को टेन्ट आकार में इन नक्शों के अनुसार दर्शाया जाता है। इस अभ्यास के दौरान अधिकारीगण तथा अधीनस्थ अधिकारीगण सिविल प्रशासन के अधिकारियों, उस जगह के प्रमुख व्यक्तियों तथा स्थानीय लोगों से चर्चा करते हैं। वे फ्लैग मार्च तथा स्थानीय लोगों के कल्याण हेतु कुछ सामाजिक कार्यक्रम भी आयोजित करते हैं। इससे आर.ए.एफ. की साख स्थानीय लोगों की नजर में निष्पक्ष बल के रूप में उभरने में मदद मिलती है।

एम.टी. ड्राईवरों के लिए रिफ्रेसर ट्रेनिंग

यूनिटों का आवागमन तथा तीव्रता से घटना स्थल पर पहुँचनें के लिए आर.ए.एफ. बटालियन के पास एक बड़ा मोटर परिवहन बेड़ा है। अतः इन गाडियों को चलाने के लिए कुशल चालकों की जरूरत होती है। दुर्घटनाओं को कम करने तथा चालकों की क्षमता में सुधार लाने के लिए उन्हें चार सप्ताह की रिफ्रेसर ट्रेनिंग दी जाती है, जिसमें

108 बटालियन आर.ए.एफ., मेरठ में दो सप्ताह का पहाड़ी क्षेत्र का ड्राइविंग भी शामिल है। इस कोर्स में भाग लेने वाले चालकों को करो मत करो, सुरक्षित ड्राईविंग के सिद्धान्त, ट्रैफिक नियमों आदि के बारे में पढाया जाता है।

नागरिकों के दिलों पर द्रुत कार्य बल की गहरी छाप

उप कमा. के० सुधाकरन,
105 बटा. द्रुत कार्य बल



बस दुर्घटना के बाद बचाव एवं राहत कार्य में जुटे आर.ए.एफ. के जवान

नाम के अनुरुप ही कार्य करने की क्षमता सिर्फ द्रुत कार्य बल में ही है। जिसे 105 बटालियन द्रुत कार्य बल ने साबित कर दिया है। प्राकृतिक आपदाओं से निपटने, सड़क एवं बाँध निर्माण कार्य करने, रक्तदान, साम्प्रदायिक हिंसा से निपटने अतिविशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा, चुनाव के दौरान कानून एवं व्यवस्था की जिम्मेदारी और प्रौढ़ शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण कार्य कर बटालियन ने प्रदेश की जनता, राजनेता एवं उच्च अधिकारियों की भूरि-भूरि प्रशंसा प्राप्त की है।

उपलब्धियाँ :-

डी/105 बटा० द्रुत कार्य बल, एम.एस.पी. (मालाबार स्पेशल पुलिस के अंतर्गत कल्पाकामवेरी पुलिस स्टेशन, जिला-मालापुरम, केरल, राष्ट्रीय राजमार्ग-17 त्रिचुर, कालीकट रोड़ पर तैनात है। दिनांक 11 मार्च, 2001 को लगभग 1400 बजे राष्ट्रीय राजमार्ग-17 पर क्लारी कैम्प से लगभग एक कि०मी० की दूरी पर कालीकट की ओर ग्राम: पुकीपरम्ब में एक प्राइवेट बस एवं कार में जबरदस्त टक्कर हो गयी। दुर्घटना की सूचना प्राप्त होते ही निरीक्षक टी.एम. मोहनन की कमाण्ड में 60 जवान तुरंत चार गाड़ियों में सवार होकर आग बुझाने के सभी साजो-सामान तथा दुर्घटना से निपटने के सभी सामानों से लैस होकर घटना स्थल पर पहुचें। चूँकि वाहनों की टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि टकराई हुए वाहनों में तुरंत आग लग गयी जिससे वाहन धू-धू करके जलने लगे। 105 बटा० द्रुत कार्य बल के जवानों ने जलती हुई बस में से फँसे हुये लोगों को निकाला। कुछ समय के बाद केरल प्रदेश की फायर बिग्रेड पहुँची, जिसे 105 बटा० द्रुत कार्य बल के जवानों ने भरपूर सहयोग दिया। जख्मी यात्रियों को नजदीकी मेडिकल कॉलेज कालिकट में भर्ती करवाया तथा बरामद 36 शवों को निकाल कर पोस्ट मार्टम के लिये अस्पताल पहुँचाया। इस प्रभावशाली व द्रुत कार्य को देखते हुये स्थानीय जनता, प्रशासन एवं स्वंय केरल प्रदेश के परिवहन मंत्री श्री सी.के. नानू ने 105 वीं बटा० द्रुत कार्य बल, की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा उनकी उपस्थिति में सम्मान समारोह के दौरान केरल प्रदेश की ओर से इस कार्य के लिये ट्राफी भी प्रदान की जिसे चेम्बर ऑफ कार्मस ने दिया। इसके अतिरिक्त जिलाधीस मलापुरम व स्थानीय पंचायत ने भी 105 बटा० द्रुत कार्य बल को स्मृति चिन्ह भेट कर अपना आभार व्यक्त किया।

2. डी/105 बटालियन के कैम्प से लगभग 40 कि०मी० दूर कडालुन्डी, जिला-कालीकट, केरल में दिनांक 22 जून, 2001 को लगभग 1700 बजे एक बड़ी रेल दुर्घटना हुई जिसमें ट्रेन की पीछे की तरफ से तीन बोगी नदी में गिर गयी और दो बोगी पुल से लटकी हुई थी। पुलिस अधीक्षक मलपुरम द्वारा मिली उक्त सूचना के प्राप्त होते ही निरीक्षक खलील अहमद की कमाण्ड में डी/105 बटा० द्रुत कार्य बल के जवान तुरन्त घटना स्थल पर अपने वाहन एवं बचाव-राहत सामाग्री के साथ पहुँचे। अग्निशमन दस्ता, स्थानीय पुलिस, चिकित्सा दल तथा रेलवे बचाव दल के साथ उचित ताल-मेल बनाकर इस बचाव कार्य में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। 105 बटा० द्रुत कार्य बल ने अपनी गाड़ियों का इस्तेमाल करके मृत एवं घायल व्यक्तियों को नजदीकी अस्पताल में पहुँचाया। तेज वर्षा एवं घना अंधेरा होने के बावजूद भी 105 बटा० द्रुत कार्य बल के जवान कार्य में जुटे रहे तथा दिनांक 23 जून, 2001 को 1820 बजे तक कुल 250 घायलों को नजदीकी अस्पताल में पहुँचाया और 48 शव भी बरामद किये।

3. दिनांक 10 नवम्बर, 2001 को लगभग 2045 बजे वाहिनी मुख्यालय पल्लीपुरम, केरल, से 70 कि०मी० दूर अंबूरी ग्राम, जिला-त्रिवेन्द्रम में एक बड़ी भूस्खलन की घटना घटी जिसकी सूचना केरल प्रदेश के पुलिस महानिदेशक से प्राप्त होते ही वाहिनी के कमाण्डेंट श्री ए०एम० मुहम्मद की कमाण्ड में 51 जवान बचाव तथा राहत उपकरण के साथ वाहिनी मुख्यालय से दुर्घटना स्थल पर पहुँचे। स्थानीय पुलिस तथा

जनता की मदद से घायल व्यक्तियों को उपचार के लिये नजदीकी अस्पतालों में पहुँचाया तथा फँसे हुये व्यक्तियों को बाहर निकाला। इस बचाव एवं राहत कार्य में कुल 30 शव भी बरामद हुये।

4. फरवरी-2001 के दौरान डी/105 बटालियन के जवानों ने अडक्कमारा से मुट्टुकयम् तक 1750 मीटर तक रास्ता बनाने में सिविल एवं स्थानीय जनता की मदद की तथा एक रोड बनाकर गाँव वालों को सुपुर्द की। सिविल प्राधिकारी एवं पंचायत वार्ड के मेम्बर ने इस कार्य के लिये द्रुत कार्य बल की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

5. नव वर्ष-2002 के अवसर पर कालीकट जिला में एक हिन्दू द्वारा एक मुस्लिम लड़की को छेड़ने की घटना ने साम्प्रदायिक दंगा का रूप ले लिया जिसमें 5 व्यक्तियों की जाने गयी (2 हिन्दू एवं 3 मुस्लिम) दिनांक 3 जनवरी, 2002 को डी/105 बटा० द्रुत कार्य बल को साम्प्रदायिक दंगा पर नियंत्रण के लिये तैनात किया गया तब आम जन-जीवन बहाल हुआ। इस दौरान कंपनी ने स्थानीय पुलिस की मदद से लगातार रेड, सर्च व पेट्रोलिंग की तथा भारी मात्रा में धारदार हथियार बरामद किये।

6. दिनांक 6 दिसम्बर, 2000 को तकरीबन 0500 बजे कोयम्बटूर स्थित सिन्दुरी होटल में आग लगने की सूचना सी/105 बटा० द्रुत कार्य बल को मिली, सूचना प्राप्त होते ही उप निरी० रहमातुल्ला खान के कमाण्ड में एक टीम घटना स्थल पर पहुँची तथा अग्नि शमन दस्ते के साथ मिलकर आग पर काबू पाया जिसकी प्रशंसा स्थानीय प्रशासन एवं राज्य सरकार द्वारा की गई।

7. इस बटालियन की सभी कंपनियों ने अपने-अपने इलाकों में उत्थान के लिए एक-एक गाँव को गोद लिया है। जिसके तहत समय-समय पर प्रौढ़ शिक्षा, स्वच्छता अभियान, खेल कूद का आयोजन करती रहती हैं। गाँव वाले इन सभी कार्यक्रमों में बढ-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं।



कडलुण्डी ट्रेन दुर्घटना के बाद वी.आई.पी. सुरक्षा में आर.ए.एफ. जवान

कोसोवो में रेपिड एक्शन फोर्स

निरीक्षक/सम्पादक, रनवीर सिंह
जन सम्पर्क शाखा



कोसोवो में तैनाती के दौरान द्रुत कार्य बल कार्मिकों द्वारा अर्जित किये गये पदक एवं प्रशंसा-पत्र

कोसोवों यगोस्लाविया संघीय गणतंत्र का एक स्वायत प्रांत है। कोसोवों काफी लम्बे समय से ऐतिहासिक विवादों का स्रोत रहा है तथा भिन्न-भिन्न समय पर इसे अलग-अलग संवैधानिक दर्जा प्राप्त होता रहा है। 1000 के दशक में कोसोवो में यहाँ बसने वाले सर्बों और अल्वेनियाओं के बीच भीषण जातीय संघर्ष का गवाह रहा है। हांलाकि मुख्य संघर्ष जून 1999 के सर्बों और नाटो के बीच हुए एक समझौते के बाद खत्म हो गया था। फिर भी यह समझौता शान्ति रक्षक बलों को कार्य करने की अनुमति देने तथा संयुक्त राष्ट्र मिशन की मानवतावादी सहायता को क्षेत्र में लाने देने से संबंधित था। इस समझौते के बावजूद भी हिंसा की छुट-पुट वारदाते लगातार होती रहीं। कभी कभी तो ये वारदातें कुछ गम्भीर रूप ले लेती थीं और पूरे बालकन प्रदेश मे जातियां प्रतिद्वदितां गम्भीर रूप से भड़क उठी, क्षेत्र की लडखड़ाती अर्थ व्यवस्था और आधार भूत ढ़ाचे के दुबारा सामान्य परिस्थियों में लौटने के आसार लगातार लुप्त होते चले गये।

अतः 10 जून 1999 को सुरक्षा परिषद ने सयुक्त राष्ट्र में सक्रेटरी जनरल को यह अधिकार दिया कि वह कोसोवो में एक अंतरिम अन्तर्राष्ट्रीय नागरिक प्रशासन की स्थापना करे, ताकि युद्ध से बुरी तरह तहस नहस हो चुके इस शहर के लोग स्वायत्तता से लाभ उठा सके। सुरक्षा परिषद ने **1244** वां प्रस्ताव अपनाकर यहां अपना कार्य जब शुरू किया तब यूगोस्लोविया संघीय गणतंत्र ने यहां से अपनी फौजे हटा ली तथा इसके परिणाम स्वरूप नाटो ने भी अपने हवाई हमले बंद कर दिये। दो दिन बाद महासचिव कोफी अन्नान ने सुरक्षा परिषद के साथ एक आपरेशनल कान्सेप्ट रखा जो यूनाईटेड नेशन इनटरिम एडमिनिस्ट्रेशन मिशन इन कोसोवो

(यू.एन.एम.आई.के.) के नाम से जाना जाता है।

भारत सरकार ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की विशेष शाखा रेपिड एक्शन फोर्स की दो कम्पनियों को कोसोवो में शांति मिशन कार्यों के लिए तैनात करने के आदेश दिये। रेपिड एक्शन फोर्स को सौपें गये मुख्य कार्य इस प्रकार थे-संयुक्त राष्ट्र नागरिक पुलिस तथा संयुक्त राष्ट्र सीमा पुलिस को अपने कार्यों में मदद देने के साथ-साथ उनको सुरक्षा प्रदान करना, संयुक्त राष्ट्र अतंराष्ट्रीय पुलिस को सहयोग एवं बैकअप देना, के.एफ.ओ.आर. के साथ समन्वय रखते हुए कानून व्यवस्था के खतरों से निपटना, कोसोवो पुलिस को भीड़ नियंत्रण तथा हिंसक आन्दोलनों के दौरान स्थित पर काबू पाने में मदद देना, संयुक्त राष्ट्र अधिकृत मानवता वादी एजेसियों की मदद करना तथा आई सी. टी. वाई. की गतिर्विधियों से सहयोग देना शामिल था।

मई, 2000 में आर.ए.एफ. की 240 सदस्यों वाली दो कम्पनियों को कोसोवो भेजा गया। ये कम्पनियां संयुक्त राष्ट्र के दिशा निर्देशों के मुताबिक सभी उपकरणों से सुसज्जित थी। मिशन एरिया में पहुँचने के बाद भारतीय स्पेशल पुलिस यूनिटों को जनकोविक सीमा पर सीमा पुलिस तथा यू.एन.एम.आई.के. के कस्टम के साथ स्पेशल आपरेशन के लिए तैनात किया गया, ओब्लिक में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए लगाया गया, लीपजान तथा स्टीमटजले में वाहनों की जांच तथा स्पेशल आपरेशन के लिए तैनात किया गया, कुछ जोखिम वाले कैदियों को अस्पताल तथा न्यायालय ले जाने की ड्यूटी पर लगाया गया, प्रीस्तीना अस्पताल, ग्रीक अस्पताल, ग्रेसानिका और रसियन अस्पताल तथा कोसोवो पोल्जे में कैदियों की सुरक्षा के लिए तैनात किया गया, जेवकन, में रोमलेटर फैक्टरी की सुरक्षा के लिए तैनात किया गया, दार्दनिया के स्टेशन चार इलाके में स्पेशल आपरेशन के लिए लगाया गया, लिपजान तथा ओब्लिक में के.एफ.ओ.आर. के साथ संयुक्त आपरेशन के लिए तैयार किया गया, हवाई अड्डों पर भीड़ नियत्रण के लिए तैनात किया गया, उत्तरी मित्रोविका में दंगा विरोधी ड्यूटी के लिए तैनात किया गया, प्रीस्तीना शहर में भीड़ नियंत्रण के लिए तैनात किया तथा चुनाव के दौरान रैलियों और चुनाव के समय भीड़ नियंत्रण और व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात किया गया, कोसोवो में तैनात दो आर.ए.एफ. कम्पनियों की कुछ प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार रही। सितम्बर 2000 के ओब्लिक में गस्त के दौरान एक संदिग्ध व्यक्ति को एक **7.62** केलीवर पिस्तौल, दो मैगजीन तथा चार राऊंड के साथ गिरफ्तार किया, 2 सितम्बर 2000 को ओब्लिक में एक संदिग्ध व्यक्ति को विभिन्न प्रकार के 14 राऊंड के साथ पकड़ा, 6 सितम्बर 2000 को स्टेशन एरिया में वी.सी.पी. ड्यूटी के दौरान एक संदिग्ध व्यक्ति को एक जस्तावा, 357 मेगनम रिवाल्वर, नौ जीवित राऊंड तथा एक 9 एम एम राऊंड पिस्तौल, पी.ए.के.एम. मैग्जीन और 3 राउन्ड के साथ गिरफ्तार किया, 17 मई, 2000 को प्रीस्तीना में एक देजाक सोयविक नामक व्यक्ति से दो लाख युगोस्लावियन डिनार बरामद किए गये। 3 जून, 2000 को लाप्लजे सिलो गांव के निवासी से एक एन 48 राइफल, के 350 राऊंड तथा ऐम्युनिशन बरामद किये गये। 16 जन, 2000 को ओब्लिक शहर में दो ए.के. 47 राइफलें और दूसरे हथियार बरामद किए गये, 5

जुलाइ, 2001 को एक अमरीकी बिनचेस्टर सिंगल वैरल शार्ट गन, एम टाकेस ओवर, अन्डर शार्ट गन, 18 एम एम सी/डब्ल्यू, एक सी जस्तावा, वाई यू वोल्ट एक्शन राइफल, 8×57 एम.एम. तथा 8×57 एम.एम. के नौ राऊड एम्यूनिशन बरामद किये।

सयुंक्त राष्ट्र अधिकारियों द्वारा डेकन मार्च तथा अन्य खेलों को आयोजित करने के बारे में दिये गये दिशा निर्देशों के मुताबिक भारतीय पुलिस यूनिट ने 9 खेल प्रतिस्पर्धाए आयोजित की तथा यू.एन.आई.के. के खेल विभाग के द्वारा आयोजित सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर निम्न उपलब्धियां प्राप्त की - 18 जून, 2000 को मित्रोविका में आयोजित 25 किलोमीटर डेकन मार्च में भाग लेकर कम्बात ड्रेस श्रेणी में 255 प्रतियोगियों के बीच पहले तीन स्थान हासिल किए, 9 जुलाई, 2000 को प्रीस्तीना में आयोजित माइल रन में पहला और तीसरा स्थान प्राप्त किया, 15 जुलाई, 2000 को मित्रोविका में आयोजित 100 कि.मी. डेथ मार्च में भाग लेकर 107 प्रतियोगियों के बीच पहले तीन स्थान हासिल किये, 9 अगस्त, 2000 को इण्डियन ओपिन क्रास कंनट्री चैम्पियनशिप में 32 टीमों में से दूसरा स्थान प्राप्त किया, 11 से 13 अगस्त, 2000 में हुए इण्डियन ओपन टेनिस मुकाबले में तीन खिताब जीते, 9 अक्टूबर, 2000 को हुई इण्डियन ओपन वालीबाल चैम्पियनशिप प्रतियोगिता जीती, 5 नवम्बर, 2000 को हुई 25 कि.मी. डेकन मार्च प्रतियोगिता में 418 प्रतियोगियों के बीच पहला व तीसरा स्थान हासिल किया, 13 नवम्बर 2000 को हुई इण्डियन ओपन बास्केट बाल चैम्पियनशिप में दूसरा स्थान प्राप्त किया, 25 मार्च, 2000 को मित्राविका में हुई 100 कि.मी. डेकन मार्च प्रतियोगिता में 400 प्रतियोगियों के बीच 11 घंटे का समय लेकर पहला स्थान प्राप्त किया 10 दिसम्बर, 2000 को इण्डियन इनडयूरेश मैराथन चैम्पियनशिप में दूसरा स्थान प्राप्त किया, 7 जनवरी, 2001 को एस.पी.यू. इण्डिया और यू.के.सी. एस.एस. बटालियन 4 - 1 के बीच हुई, इन्डोब्रिटिश इनडयूरेश चैम्पियनशिप की पांचों प्रतियोगिता जीत ली, 11 फरवरी, 2001 को टेनिस क्लब आफ प्रीस्तीना द्वारा आयोजित प्रीस्तीना टेनिस चैम्पियनशिप जीत ली, 16 से 18 मार्च 2001 तक हुई स्प्रिंग इन्टरनेशनल टेनिस प्रतियोगिता के तीन खिताब जीते, प्लामेन्टीना ओब्लिक में इण्डियन ओपन क्रास कन्ट्री टेनिस, बालीबाल, बास्केटबाल, मैराथन, इन्डोब्रिटिश एस.पी.यू. स्प्रेग इन्टरनेशनल टेनिस चैम्पीयनशिप का आयोजन किया तथा प्रतियोगिता में भाग लेने वाली टीमों को खेल सामग्री वितरित की, कोसोवों पोल्जे में माइहिल ग्रामीनो स्कूल में वालीबाल कोर्ट का निर्माण किया तथा खेल सामग्री भेट की, कोसोवों के पोल्जो के माइहिलो ग्रामीनो स्कूल के बच्चों के लिए ट्रेक फील्ड प्रतियोगिताओं का आयोजन किया तथा बच्चों को ट्राफी एवं मेडल बांटे। प्रीस्तीना क्षेत्रों के गरीब रोमा परिवारों को चिकित्सा सुविधाए उपलब्ध कराई।



कोसोवो मिशन से लौटे द्रु.का.बल के कार्मिक



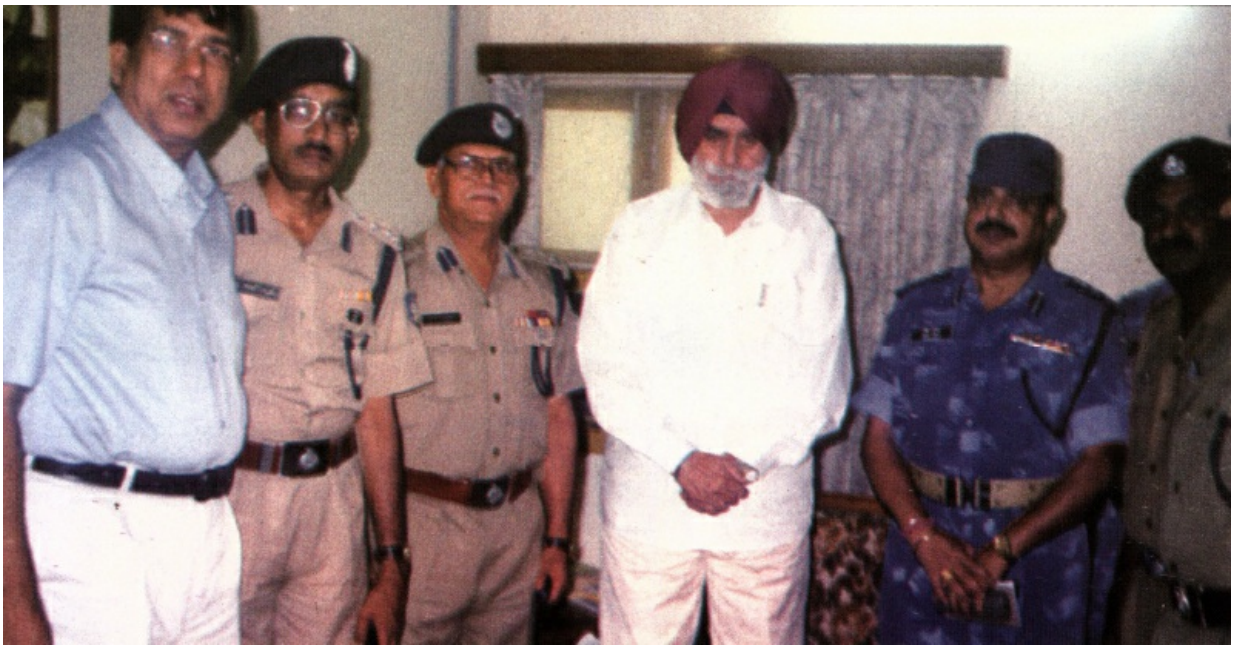
यूएन. ऑफिसर भारतीय विशेष पुलिस यूनिट कार्मिकों के साजो-सामान की जाँच करते हुए।

संयुक्त राष्ट्र के साथ मेमोरेन्डम आफ अन्डरस्टेडिंग के मुताबिक भारतीय टुकड़ी हर छ: महीने के बाद दो चरणों में बदली जाती है। दो तिहाई क्षमता की पहली बदली दिसम्बर, 2000 में हुई थी बाकी बदली फरवरी, 2001 मे की गई। आगे भी टुकड़िया इसी क्रम में कोसोवों में भेजी जाती रहेंगी। अपने अस्तित्व के 10 सालों में रेपिड

एक्शन फोर्स ने देश की सीमाओं के बाहर भी शांति के संदेश को पहुचाया है। 1995 में आर.ए.एफ. के 123 सदस्यों वाला एक दल संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत हैती में चुनाव प्रक्रिया को शांति पूर्वक सम्पन्न करवाने के लिए भेजा गया तथा इस दल ने अपनी कार्य कुशलता एवं व्यावसायिक दक्षता के लिए सभी की भरपूर प्रशंसा अर्जित की।

उत्पीड़ितों की मसीहा द्रुत कार्य बल

द्वि.क.अ., शाम चन्द
101 बटा. द्रु.का.बल



गुजरात के मुख्यमंत्री के सुरक्षा सलाहाकार श्री के.पी.एस. गिल, आर.ए.एफ. के अधिकारियों के साथ कानून व्यवस्था सम्बंधी स्थिति का जायजा लेते हुए

26 फरवरी 2002 को गुजरात के गोधरा रेलवे स्टेशन के पास साबरमती एक्सप्रेस के दो डब्बों में कुछ असामाजिक तत्वों ने आग लगा दी तथा उसमें सफर कर रहे यात्रियों के नरसंहार के कारण गुजरात के कई प्रान्तों में दो समुदायों के बीच आपसी तनाव के साथ–साथ भीषण दंगे हुए जिसमें कई हजार लोग मारे गये, हजारों मकानों, दुकानों एवं करोड़ों रुपये की सम्पत्ति को तोड़ा गया व जला दिया गया । इन दंगों की वजह से गुजरात की स्थिति नियन्त्रण से बाहर हो गई । इन परिस्थितियों से निपटने तथा शान्ति व्यवस्था कायम करने के लिए केन्द्र सरकार ने गुजरात में के०रि०पु०बल/

द्रुत कार्य बल को कई कम्पानेयां तैनात, जिसमें 107 बटालियन आर०ए०एफ० को दो कम्पनियां बी/107 तथा डी/107 को तैनात किया गया। तैनाती के बाद इन दोनों कम्पनियों ने गुजरात की बिगड़ी तथा तनावग्रस्त स्थिति पर काबू किया तथा वहां शान्ति व्यवस्था बनाने में सफल रही। इसके अलावा इन्होंने कई सराहनीय कार्य कर उपलब्धियां हासिल की जो निम्न प्रकार से है :–

12 अप्रैल, 02 को बी/107 के श्री जी०पी० उनियाल कम्पनी कमाण्डर के नेतृत्व में पुलिस स्टेशन कागड़ापीठ के अन्तर्गत 07:00 बजे दंगा पीड़ित राहत कैम्प में श्री देवगोड़ा (पूर्व प्रधानमंत्री) के आगमन हेतु बन्दोबस्त ड्यूटी में थी, तभी दानी लिगड़ा (अहमदाबाद) में दो समुदायों के बीच तनाव हो गया। सूचना मिलते ही कम्पनी तत्काल प्रभावित क्षेत्र में पहुंची तो वहां पाया कि दोनों समुदायों ने आपस में लड़ाई–झगड़ा और पत्थर बाजी हुई थी। कम्पनी के जवानों ने उस मजमे को तितर–बितर किया तथा दोनों समुदायों के लोगों को सोहार्द बनाए रखने की अपील की तथा वहां शान्ति व्यवस्था कायम की। लेकिन 1745 बजे पुनः सूचना मिली कि दानी लिगड़ा में दंगा पुनः शुरू हो गया है। बी/107 कम्पनी तुरन्त दंगा प्रभावित क्षेत्र में पहुंची तथा देखा कि दोनों समुदायों के लोगों के बीच पत्थर बाजी हो रही है। एक दूसरे पर पेट्रोल बम, क्रूड बम आदि फैंके जा रहे थे। उस समय स्थिति काफी बिगड़ी थी और निंजी फायरिंग में दो सिविल लड़कों को गोली लगी थी। घायल लड़कों को कम्पनी ने तुरन्त अस्पताल इलाज हेतु पहुंचाया। कम्पनी कमाण्डर श्री जी०पी० उनियाल के नेतृत्व में कम्पनी के जवानों ने टीयर स्मोक मूनिशन का इस्तेमाल कर दंगाइयों पर लाठी चार्ज कर तितर–बितर कर बिगड़ती हुई स्थिति को काबू में कर एक बहुत बड़ी घटना होने से रोक लिया गया।

19 अप्रैल, 02 बजे 13:30 बजे मरिया बीबी चोक, गोमतीपुर में 400–500 की संख्या में दंगाई एकत्र हुए उनकी तादाद बढ़ती जा रही थी तथा उनका आक्रोश भी विपरीत समुदाय के प्रति बढ़ता जा रहा था। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए श्री हरपाल सिंह उप०कमा० की देखरेख में डी/107 कम्पनी प्रभावित स्थान पर पहुंची और कम्पनी के जवानों की प्रभावशाली कार्रवाई तथा प्रदर्शन को देख कर मजमा तितर–बितर होने लगा। संदेह के आधार पर वहां दो व्यक्तियों की तलासी ली गई तथा उनके पास से कील, कांच के टुकड़े तथा दो छोटे क्रूड बम पकड़े गए।

19 अप्रैल, 02 को 1000 बजे डी/107 के मोबाईल क्षेत्र पेट्रोलिंग के दौरान निरीक्षक रतिराम के नेतृत्व में हरिभाई गोदाम चौक पर रोड के किनारे पड़ी हुई लावारिस बेग से 4 क्रूड बम पकड़े, सिविल पुलिस ने उन्हें नष्ट कर दिया।

29 अप्रेल, 02 को डी/107 के कम्पनी कमाण्डर श्री रामराज सहायक कमा० तथा श्री हेमराज कमाण्डेन्ट 107 की देख–रेख में मोबाईल पेट्रोलिंग के दौरान पंचवटी रोड क्षेत्र में 88 पेट्रोल बम एक कूड बम, 15–मशाल तथा 4 किलो विस्फोटक बरामद सिविल पुलिस के सुपुर्द किया। इससे एक बड़ी घटना होने से रोक ली गई।

13 मई, 02 को अहमदाबाद के अति संवेदनशील इलाकों गोमतीपुर में 107

बटालियन की दोनों कम्पनियां बी/107 एवं डी/107 को जिम्मेदारी क्षेत्र सौंप गया। दिनांक 13 मई, 02 को इस इलाके में शान्ति व्यवस्था बनाए रखने तथा दोनों समुदायों में सौहार्द्रता कायम करने के लिए डी/107 मोबाईल पैट्रोलिंग कर रही थी उसी समय सिलवर चौकी (गोमतीपुर) के सामने चौक पर एक ऑटोरिक्शा तथा आया उसमें से 5–6 व्यक्ति उतरे। कम्पनी के जवानों को उन पर संदेह हुआ और जवान उनकी तरफ पूछताछ के लिए बढ़ने लगे। उन्होंने आर०ए०एफ० के वाहनों को देखते ही भागना शुरू कर दिया। जब तक जवानों ने 2 व्यक्तियों को पकड लिया और उनकी तथा आटोरिक्शा की तलाशी ली तो उनके पास 2 तलवार, एवं लाठी जब्त की। गिरफ्तार व्यक्तियों से पूछने पर पता चला कि वे दोनों उमवाड़ी क्षेत्र के रहने वाले थे, उनका मकसद दोनों समुदायों के बीच दंगा कराना था। उन व्यक्तियों को गिरफ्तार कर थाना प्रभारी गोमतीपुर के सुपुर्द कर दिया। आर०ए०एफ० की इस कामयावी से स्थानीय पुलिस प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी बहुत प्रभावित हुए। आर०ए०एफ० के जवानों की सूझबूझ तथा कठिन परिश्रम के कारण दोनों समुदायों के बीच एक बड़े दंगा होने को रोक दिया गया।



दंगा ग्रस्त क्षेत्र में विभिन्न समुदाय के प्रमुख लोगों से चर्चा करते हुए बल के अधिकारी



मानवीय सहायता के तौर पर बच्चों की चिकित्सा जांच करते बल के चिकित्सा अधिकारी

25 मई, 02 को प्रतिदिन की तरह डी/107 गोमतीपुर क्षेत्र में मोबाईल पेट्रोलिंग कर रही थी। 0815 बजे कम्पनी परमानन्द चाली से गुजर रही थी तो कुछ जवानों को वहां पर जले हुए मकानों पर संदेह हुआ तथा उनकी तलाशी ली गई जिसमें एक बोरी और एक कागज की पेटी मिली। जिसे खोलने पर उसमें 33 क्रूड मिले जिन्हें थाना प्रभारी गोमतीपुर को सुपुर्द कर दिया। आर०ए०एफ० की इस सफलता को पुलिस प्रशासन ने बहुत सराहा। गोमतीपुर क्षेत्र में मोबाईल पेट्रोलिंग के दौरान लगभग 15:00 बजे अचानक एक धमाके की आवाज आई इस धमाके के बारे में जानकारी प्राप्त की तो पता चला कि यह आवाज सिलवर लाईन मिल कम्पनी (सिलवर पुलिस चौकी) के नजदीक से आई थी। डी/107 कम्पनी के जवानों ने तुरन्त उस मिल के चारों तरफ घेराबन्दी कर ली। उस समय वहां पर 107 बटालियन के कमांडेट श्री हेमराज भी उपस्थित थे। और उनकी देखरेख में मिल की छानबीन/सरचिंग शुरू की। तलाशी के दौरान एक व्यक्ति भाग रहा था उसे जवानों ने पकड़ लिया तथा उसकी तलाशी ली तो उसके पास से एक क्रूड बम मिला जिले थाना प्रभारी गोमतीपुर के हवाले कर दिया।

26 मई, 2002, 30 मई, 2002 एवं 17 जुलाई, 2002 को बी/डी/107 द्वारा अहमदाबाद तथा आसपास के क्षेत्र में मोबाईल पेट्रोलिंग तथा ड्यूटी के साथ–साथ चिकित्सा सहायता शिवर लगाये। इन चिकित्सा सहायता शिविरों में 2000 पुरूष, महिला और बच्चों का मुफ्त इलाज किया गया तथा मुफ्त दवाईयां भी दी गई। इन शिविरों को लगाने का मुख्य लक्ष्य दोनों समुदायों के बीच प्रेम, सौहार्द तथा भाई–चारे को पुनः कायम कर उनके दिमाग से दंगों के कारण आई दुर्भावना, आपसी दूरियां

तथा आपसी मनमुटाव को दूर करना था। बटालियन की बी/डी 107 बटा० द्वारा किये गये उपरोक्त कार्य एवं जवानों की लगन, चुस्ती, देशप्रेम से किये गये कार्य के कारण दोनों समुदायों के बीच अब आपसी दूरियां कम हो गई हैं। स्थानीय नागरिकों, स्थानीय प्रशासन एवं सरकार द्वारा बल के इन प्रयासों को सराहा गया।

प्राचीन युद्ध जैसी स्थिति–विलयन/निष्क्रमण से निपटने में द्रुत कार्य बल सक्षम

रणबीर सिंह
कमाण्डेन्ट 106 बटा० द्रु.का.बल



आर.ए.एफ. द्वारा उपयोग में लाये जा रहे आधुनिक उपकरणों का निरीक्षण करते बल के महानिदेशक

यथा नाम तथा गुण झारखण्ड नाम से पठार और जंगल का एक हिस्सा अर्थ ध्वनित होता है। लगभग 79,714 वर्ग किलोमीटर, 1991 की जनगणना के अनुसार 2,18,43,911 जन संख्या और लगभग 30 विभिन्न जन–जातियों वाला यह अलग राज्य जिन क्षेत्रों को शामिल करके बनाया गया है उनमें से अधिकतर इस अर्थ को साकार करते हैं। लगभग 1973 से ही यहाँ अनेक जन–प्रतिनिधि एक स्वयात्त राष्ट्रीय चेतना

एवं क्रांति के संवाहक रहे हैं और उन्हें ऐतिहासिक व्यक्तित्व होने का दर्जा भी प्राप्त है। विदेशी आक्रान्ताओं और शासकों के खिलाफ कई विद्रोह और आन्दोलन इसी जमीन से शुरू हुए। अलग राज्य की एक चिरपुरातन मांग कई कठिन पहाड़ों और रास्तों से गुजरती हुई अंततः नई शताब्दी के मुहानें पर सफलीभूत हुई। असीमित खनिज संपदा, असीम संभावनाओं से भरे पड़े कलकारखानों के जाल, नदियाँ, पहाड़, वनसंपदा, लाखों एकड़ कृषियोग्य उपजाऊ भूमि, अनेक मनोहारी एवं सुखद पर्यटन स्थल और इन सबसे बढ़कर यहाँ की मेहनतकश, ईमानदार, संघर्ष शील जनता, वह सब कुछ इस क्षेत्र में है जिससे समृद्धि और खुशहाली आती है। यहाँ की जनता विकसित क्षेत्रों की जनता के समान आधुनिक संसाधनों और स्तर को हासिल कर सकती है। अतः इस राज्य में कई सपनें, कई आकांक्षाए और कई हसरतें लम्बे समय से प्रतिबिम्वित होती आई है।

अभी तक पौराणिक विचारधारा, रीति–रिवाज, संसाधनों और स्तर से रहती आई अधिकांश जनता में लगता है अलग राज्य की गरिमा ने राज्य के अनेकानेक संसाधनों और समृद्धि पर स्वाधिकार की चेतना उत्पन्न कर दी और यह इस रूप में व्यक्त होने लगी कि उनके राज्य के संसाधनों का विकास और उन्नति रूपी जो हिस्सा है, उससे उन्हें कुछ एक उन लोगों ने वंचित कर दिया है जो अपने नापाक इरादों के साथ इस राज्य के तमाम मूल निवासियों को गुमराह करके अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। उक्त भावना उत्तेजित, अभिभूत हो प्रज्वलित होने लगी।

डोमिसाईल–वाद लगता है उक्त चेतना, उत्पन्न भावनाओं और उनके तमाम अनुभवों के परिणामस्वरूप है, जो कि एक भंयकर सामाजिक अंसतोष और के रूप में प्रकट हुआ है जिसमें कि वे लोग जो विकास और उन्नति की प्रक्रिया में पीछे छूट गये हैं वे बाहरी लोगों को (अर्थात उनको जो 1932 की सूची में झारखण्ड के बासिंदें नहीं हैं) बाहर निकाल कर तमाम सरकारी नौकरियों में अपने आरक्षण की आशा लगाये हैं।

“दीख” उनके कथनानुसार कोई अन्य नहीं अपितु वही लोग हैं जो अपने पूर्व निवास स्थान को छोड़कर झारखण्ड में अपनी कला और चतुराई का इस्तेमाल करके यहाँ के निवासी बनकर सुख और समृद्धि के महलों मे रहना चाहते हैं। अतः शहरी और देहाती जनप्रतिनिधियों ने दीखुओ जो कि सरकार और प्रशासन के क्रियाकलापों में उच्च पदों पर बैठकर सर्वेसर्वा हो गये हैं, उनको बाहर निकालकर सरकारी पदों पर अपने आरक्षण की प्रबल मांग की। जिसनें कि लगभग संपूर्ण झारखण्ड को डोंमिसाईल–वाद के पक्ष और प्रतिपक्ष के गुटों के बीच विशेषतया जुलाई 2002 में भंयकर असंतोष और युद्ध के मैदान में परिवर्तित कर दिया। साधारणतया आम कानून व्यवस्था की समस्याओं से निपटने के अभ्यस्त प्रशासन के लिए अत्यन्त उत्तेजित डोमिसाईल–वाद पक्ष जो कि सर्वथा पुरातन युद्ध सामग्री तीर, धनुष, भालें, बरछे, दॉव, तलवार तथा तत्सम्बन्धित जानलेवा हथियारों से लैस और संभवतया उतने ही उत्तेजित और तैयार प्रतिपक्ष के बीच लगभग विस्फोटक स्थिति से निपटना एक

चुनौतीपूर्ण समस्या हो गई। पुनः चुनौती और भी गंभीर हो गई जब डोंमेसाइल इसू पक्ष को यह आभास होने लगा कि प्रशासन में कुछ ऐसे भी लोग हैं जो कि किसी न किसी रूप में विवादस्पद डोमिसाईल मुद्दें में भी शामिल हैं।



भीड़ नियंत्रण में आश्रु गैस के प्रयोग का अभ्यास करते आर.ए.एफ. जवान



पल्स पोलियों ड्राप पिलाते आर.ए.एफ. कर्मी

दिनांक 24 जुलाई, 2002 को डोमिसाईल–वाद समर्थक लगभग प्राचीन युद्ध सामग्री और जानलेवा हथियारों के साथ झारखण्ड की राजधानी राँची की गलियों में

उतरकर तोड़फोड़ और विद्धशंक कारेवाइ करने लगे। गंभीर नुकसान की आंशका में प्रतिपक्ष भी पूरी तैयारी के साथ समर्थक पक्ष का सामना करने के लिए गलियों में उतरने लगा। उपलब्ध यद्ध सामग्री से सुसज्जित, अति प्रेरित और उत्तेजित लगभग युद्ध स्थल पर आमने–सामनें पक्ष–विपक्ष आरोपों और प्रत्यारोपों की रणभेरियों और चीखते–चिल्लाते नारों एवं शखनाद के साथ मानों एक प्राचीन युद्ध कौशल में जूझने लगे। प्रशासन ने घटनास्थल पर 106 बटा. द्रुत कार्य बल की कंपनियों को जिन्हें पहले ही राँची बुला लिया गया था, तैनात कर दिया। आम कानून और व्यवस्था को बिगाड़नें के लिए प्रेरित हो, से निपटने से बिल्कुल भिन्न अजीबो–गरीब खतरनाक समस्या, जिसमें दो पक्ष एक दूसरे की जान लेने पर उतरे हों, ने एक भयंकर युद्ध समान स्थिति का रूप धारण कर लिया। लगभग सभी प्रत्यक्षदर्शियों के हाथ–पाँव फुला देने जैसी स्थिति में 106 द्रु०का०ब० ने बड़ी सूझबूझ और अत्यन्त सावधानी से स्थानीय प्रशासन और पुलिस के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आधुनिक उद्देश्य हेतु प्राचीन युद्ध स्थिति से निम्नलिखित तरतीब और कला से निपटने की कोशिश की :–

1. युद्धरत दलों की मानसिक स्थिति का शीघ्रतम अध्ययन और जायजा। 2. कारगर परन्तु निष्पक्ष बल प्रदर्शन 3. स्थिति पर कड़ी नजर और प्रतीक्षा 4. संभावित हद तक संयम। 5. स्थिति ग्रस्त निर्दोषियों के बचाव व राहत से जनता का द्रु०का०बल में भरोषा उत्पन्न करना और फिर उसका इस्तेमाल। 6. सुव्यवस्था पसन्द तत्वों की पहचान और फिर उन्हें समझाकर दंगारत लोगों को समझाने का प्रयत्न। 7. न्यूनतम बल प्रयोग। 8. असामाजिक तत्वों की पहचान और उनसे दृढ़तापूर्वक निपटना

उपर्युक्त तरतीब और कला, सूझ–बूझ और सावधानी के साथ संभ्वतया आधुनिक विकास और समृद्धि के लिए पुराचीन तौर–तरीकों से लड़े जाने वाली एक भयानक और दुष्परिणामकारी युद्ध स्थिति के विलयन और निष्क्रमण में 106 बटा. द्रु०का०बल किसी को भी बिना किसी नुकसान या आलोचना के सक्षम साबित हुई जिसकी कि राज्य प्रशासन और जनता ने भूरि–भूरि प्रशंसा की, फलस्वरूप द्रु०का०बल के साथ सम्पूर्ण के०रि०पु०बल की प्रतिष्ठा और गरिमा बढ़ी।

सुरक्षा के साथ–साथ आर.ए.एफ. सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय

कमांडेण्ट, वी.पी. सिंह, 108 बटालियन, द्रु०का०बल

108 वाहिनी आर०ए०एफ० का वाहिनी मुख्यालय दो कम्पनियों के साथ मेरठ शहर में और दो कम्पनियों मुरादाबाद शहर में जिले की शांति व्यवस्था एवं लोगों में अमन–चैन स्थापित करने के लिए अपने नाम के अनुरूप हमेसा तैयार है। गत वर्षों

की ही तरह इस वर्ष भी 108 वाहिनी आर०ए०एफ० ने अपनी जिम्मेदारी के इलाके एवं आस–पास के प्रमुख क्षेत्रों में जब कभी भी कानून व्यवस्था से सम्बन्धित कोई परेशानी सिविल प्रशासन को हुई है, आर०ए०एफ० के जवानों द्वारा उस क्षेत्र में अति शीघ्र पहुँच कर इलाके में शांति व्यवस्था बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है लिए समय–समय पर जिले के प्रमुख प्रशासनिक अधिकारियों एवं जनता प्रशंसा की है। मेरठ में मुरादाबाद जिला साम्प्रदायिकता के हिसाब से अति संवेदनशील है। अतः इन जिलों में 108 वहिनी आर०ए०एफ० द्वारा प्रत्येक घटना की सूचना एवं विश्लेषण वाहिनी स्तर पर किया जाता है और विभिन्न मौकों पर सिविल प्रशासनिक अधिकारियों से इलाके में शांति व्यवस्था निरंतर कायम रखने हेतु विचार विमर्श किया जाता है। वर्ष के दौरान जो भी महत्वपूर्ण त्यौहार हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय से संबंधित है इन मौके पर वहाँ द्व०का०बल ने वहाँ उपस्थित रहते हुए शांति व्यवस्था कायम रखने के लिए अहम भूमिका निभायी है और बल के जवान इलाके में प्रशंसा के



सद्भावना रैली में आर.ए.एफ. के जवान



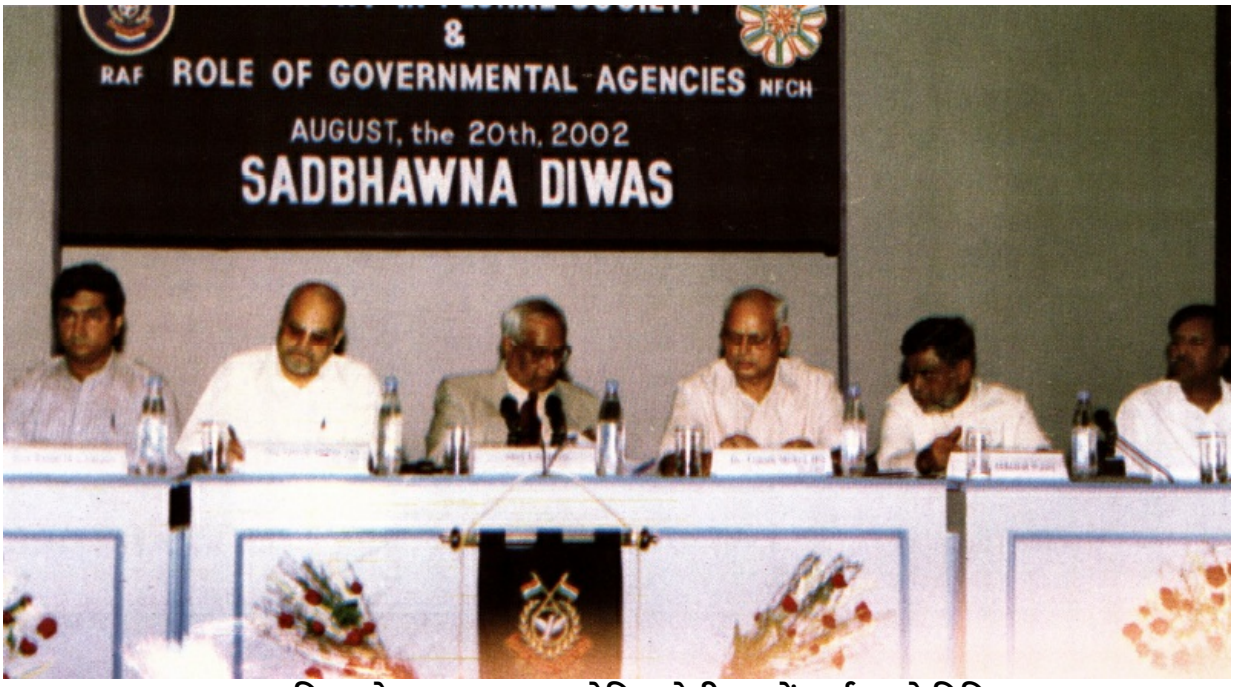
बरेली के संवेदनशील इलाकों में फ्लैग मार्च करते बल कार्मिक

पात्र बने हैं। मेरठ एवं मुरादाबाद जिलों के अतिरिक्त 108 द्रु०का०बल की कम्पनियों को इस वर्ष के दौरान आपसी जिम्मेदारी के क्षेत्र से बाहर पिलानी जिला बागपत, कानपुर, हरिद्वार, फैजाबाद, चंदौसी में भी कानून एवं शांति व्यवस्था कायम रखने हेतु विभिन्न अवसरों पर नियुक्त किया गया। इस दौरान भी बल के जवानों द्वारा जहाँ सौहार्द्रपूर्ण तरीके से ड्यूटी का निस्पादन किया गया वहीं आपसी भाईचारा बनाये रखने के लिए जन समुदाय को बल के जवानों ने उत्साहित किया।

108 बटालियन द्रु०का०बल वर्ष के दौरान जहाँ विभिन्न क्षेत्रों में कानून एवं शांति व्यवस्था हेतु नियुक्त रही वही दूसरी तरफ खाली समय का सदुपयोग करते हुए विभिन्न प्रकार के समाजिक कार्य के आयोजन और सभी वर्गों में प्रशंसा के पात्र बनें। पूरे वर्ष में कई मौकों पर पल्स पोलियों अभियान आयोजित कर 5259 बच्चों को पोलियों ड्राप दी गयी। इसके अतिरिक्त खेलकूद प्रतियोगिताओं में भी इस बल द्वारा गोद लिए हुए गाँव नाम "सुन्दरपुटटा" के साथ मैत्री क्रिकेट मैच खेला जिसमें अन्य गाँवों की टीमों ने भाग लिया। इस प्रकार की प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य यही था कि युवाओं को खेलकूद के लिए प्रोत्साहित किया जा सकें। इसी क्रम में ए/108 के जवानों ने जे.एन.यू. सरधना के छात्रों के साथ वालीबाल मैच खेला और दयावती मोदी एकडेमी के छात्रों के मनोबल को बढ़ाने के लिए जवानों साईकिल रैली में भाग लिया। इस कार्य के लिए उपलब्ध आवश्यक सामग्री भी बल द्वारा एकेडमी को उपलब्ध करायी गयी। जनसम्पर्क अभियान क्रम में बटालियन द्वारा गोद लिए गाँवों में समय–समय पर जवानों द्वारा जाकर लोगों को स्वास्थय के लिए जागरूक किया गया और बल के जवानों द्वारा सफाई अभियान भी चलाया गया। अन्य मानवीय कार्यों के

अन्तगेत बल के 20 जवानों ने पी.एल. हास्पिटल में दिनांक 1 अक्टूबर, 2001 को सम्पन्न हुए शिविर में रक्त दान किया इसके लिए अस्पताल के अधिकारियों, उपस्थित प्रशासनिक अधिकारियों एवं जन समुदाय ने बल के कार्य को सराहा।

सद्भावना दिवस पर आर०ए०एफ० द्वारा सेमीनार तथा प्रदर्शनी का आयोजन



सद्भावना दिवस के अवसर पर आयोजित सेमीनार में चर्चा करते विशिष्टगण

20 अगस्त 2002 भारत एक बहु समुदायक देश है जिसमें विभिन्न भाषायी, धर्म, जाति समुदाय के लोग रहते हैं। सदभावना दिवस के उपलक्ष में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की विशेष शाखा रेपिड एक्शन फोर्स द्वारा राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सौहार्द प्रतिष्ठान (एन०एफ०सी०एच०) के सहयोग से **मिश्रित समाज में आपसी सौहार्द तथा इसमें सरकारी निकायों की भूमिका** पर आयोजित सेमीनार की अध्यक्षता करते हुए भारत के पूर्व सचिव श्री जे०एन० दीक्षित ने कहा कि समाज के सर्वागीण विकास के लिए विभिन्न समुदायों के लोगों को अपने आपसी मत भेदों को भुलाकर सौहार्दता को बनाए रखना चाहिए। और इस कार्य में सरकारी निकाएं भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। के०रि०पु० बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र ने अपने प्रमुख भाषण में कहा कि अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की एक विशेषता है और हमें हर

कीमत पर बनाए रखना है।

अन्य प्रमुख हस्तियों में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री नसीम अहमद, जवाहर नेहरू विश्वविद्यालय के अन्तराष्ट्रीय अध्ययन विभाग के डा० कमल मित्रा अरोन चिनोय तथा जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के इस्लामिक अध्ययन के विभागाध्यक्ष श्री अखतारूल वासे ने भी सेमीनार को सम्बोंधित किया तथा लोगों से समाज में सौहार्द, सदभाव एवं सांम्प्रदायिक एकता बनाए रखने की अपील की।

पुलिस महानिरीक्षक आर०ए०एफ० श्री जी०एम० श्रीवास्तव ने सर्वप्रथम स्वागत भाषण दिया तथा के०रि०पु० बल के अपर महानिदेशक, श्री हिमान्शु कुमार द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव रखा गया। इस अवसर पर एक प्रर्दशनी का आयोजन किया गया। सेमीनार में नेशलन फाऊन्डेशन फार कम्यूनल हारमोनी के सचिव डा० एस०के० अग्निहोत्री भी उपस्थित थे।

अल्प संख्यक समुदाय तथा आर०ए०एफ०

100 बटालियन नियत्रंण कक्ष, दिनांक 01 मार्च, 2002, समय तकरीबन 1400 बजे, एकाएक नियत्रंण कक्ष में मौजूद टेलीफोन की घंटी बजी। नियत्रंण कक्ष प्रभारी निरीक्षक सी० पीता ने फोन उठाया। फोन में किसी असहाय, लाचार तथा आशा खो बैठी औरत की काँपती हुई आवाज, आग्रह कर रही थी – हम सभी तरफ से हताश हो चुके हैं, चारों तरफ मजमें ने घेर रखा है, हमारे लोगों पर हर तरह के हथियारों से हमला हो रहा है, कई घरों को आग लगा दी गयी है, स्थानीय थाना तथा पुलिस अधिकारियों को बार–बार फोन किए लेकिन सब व्यर्थ, किसी ने हमारी पुकार नही सुनी, आखिरी आशा आप पर है, कृपया हमें बचा लें। शीघ्र फोर्स भेज कर हमारी जान व माल को बचाएं। नियत्रंण कक्ष इंचार्ज भी यह बात सुनकर स्तब्ध रह गई तथा अपने कमाण्डेन्ट को इसके बारे में तुरंत जानकारी दी। आर०ए०एफ० की गाड़ियां तुरंत कमाण्डेन्ट की अगुवाई में निकल पड़ती। मौके पर पहुँच कर के भयानक तथा दर्दनाक और रोंगटे खड़े कर देने वाला दृश्य देख कर आर०ए०एफ० के जवान तुरंत हरकत में आए और उनकी आशा के बुझतें दीपक को दुबारा जलने की शक्ति प्रदान की। इसी दौरान एक लड़खड़ाती महिला आकर कमाण्डर के पाँव छूने की कोशिश करते हुए कहा कि – किन शब्दों में मैं आपका आभार प्रकट करूं आप हमारे लिए जीवनदान देने वाले फरिश्ता बन कर उतरे हैं। हम सभी की जिन्दगी को बचा कर आपने हम पर बहुत एहसान किया। अल्ला आपका भला करे।

ये एक ऐसा मन को छू लेने वाला एहसास था जिससे किसी भी बल के कमाण्डर

का सिर गौरव से ऊँचा हो जाएगा कि वह उस बल का नेतृत्व कर रहा हूँ जिस बल के लिए सभी लोगों में खास कर अल्पसंख्यक लोगों में इतना विश्वास है कि ये आएगें तो हम सुरक्षित होगें। दूसरी तरफ यह एक ऐसी घटना थी जो इंसानियत के दुश्मनों के चेहरों को बेनकाब करती थी।



आर.ए.एफ. का आभार व्यक्त करते हुए अल्पसंख्यक समुदाय के सदस्य

हाल ही के गुजरात में हुए दंगों में ऐसी बहुत सी स्थितियां सामने आई जिसमें आर०ए०एफ० के जवानों ने मौके पर पहुँच कर अल्पसंख्यकों के जान–माल की सुरक्षा की। इस बटालियन के जवानों ने करीब 285 लोगों को मृत्यु के मुख से जिन्दा बचाया , 171 जगहों पर स्थिति को बदतर होने से रोका तथा 35 जगहों पर आग को भयानक रूप धारण करने से पहले ही काबू कर लिया। आर०ए०एफ० के नियत्रंण कक्ष के फोन की घंटी 01 मार्च,02 से 10 मार्च, 02 तक लगातार बजती रही तथा ऐसे संदेश अल्पसंख्यक लोगों की तरफ से आते रहे और फोर्स के जवानों ने समय पर पहुँच कर लोगों के विश्वास को खोने नहीं दिया। आर०ए०एफ० का मुख्य कार्य दंगों या दंगों जैसी स्थिति से निपटने का है। जिसके लिए इसको पूर्णतः सक्षम बनाया गया है। हाल के गुजरात दंगें इसका जीता–जागता उदाहरण हैं।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय के 24 दिसम्बर, 91 एक आदेशानुसार के०रि०पु०बल के महानिदेशालय को साम्प्रदायिक हिंसा व उन परिस्थितियों पर काबू पाने हेतु 10 के०रि०पु०बल की बटालियनों को द्रुत कार्य बल के रूप में परिवर्तित करने की अनुमति मिली थी। इन बटालियनों को ट्रेनिंग के दौरान साम्प्रदायिक दंगों, जातीय हिंसा व उससे निपटने के बारे में विशेष सिखलाई दी गई। द्रुत कार्य बल की सभी 10

बटालियन देश के अति संवेदनशील जगहों पर जहाँ साम्प्रदायिक व जातीय हिंसा की घटनाएं ज्यादा घटित होती हैं, के आस–पास में तैनात किया गया है। मुख्यतः दो विभिन्न समुदायों हिन्दू और मुसलमानों के बीच होने वाले जातीय दंगों से निपटने के लिए इस बल का गठन किया गया। इस बल को खास प्रशिक्षण के साथ–साथ बढ़िया साजो–सामान तथा आधुनिक संसाधन व गाड़ियां दी गई है ताकि यह प्रभावी तरीके से किसी भी स्थिति को संभालने में सक्षम हो।

देश में 6 दिसम्बर 1992 में बाबरी मस्जिद गिराये जाने के कारण हिन्दू–मुस्लिम जातीय दंगा भड़का जिसनें साम्प्रदायिक हिंसा का रूप ले लिया। जिसके कारण देश के हजारों बेगुनाहों को अपनी जिन्दगी से हाथ धोना पड़ा। लेकिन आर०ए०एफ० ने समय पर कार्रवाई कर कई जगह स्थिति को संभाला। जिस बात को ध्यान में रखकर आर०ए०एफ० के जन्मदाताओं ने इसको बनाया था ये उनकी आशाओं पर खरी उतरी है। पुलिस का कार्य शान्ति एवं व्यवस्था कायम करना है। अतः हर अवस्था में उसे जनता के सम्पर्क में आना आवश्यक होता है। आज के युग में खासकर प्रजातांत्रिक देशों में जहाँ पुलिस जनता की सेवक होती है, जनता भी पुलिस से हमेशा यह अपेक्षा करती है कि वह जनता के साथ उचित व्यवहार करें, साथ ही शीघ्र निष्पक्ष न्याय दिलाएं लेकिन ऐसा हो नही रहा है।



अल्प संख्यक समुदाय के प्रमुखों से भरोसा दिलाते हुए सुरक्षा बल के अधिकारी

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि भारत को स्वतत्रंता बिना किसी सशस्त्र संघर्ष के प्राप्त हुई है। दुनिया के अन्य देशों को स्वतत्रंता प्राप्त करने के लिए बड़े–बड़े सशस्त्र संघर्ष करने पड़े है, यह भी सत्य है कि दो सौ वर्ष के अंग्रेजी राज्य में भारत की जनता की सामाजिक मानसिक तथा राजनैतिक विचार धाराओं को इतनी चालाकी से

प्रभावित किया था कि जनता में एकता तथा देश के लिए करनें व मन–मिटने की भावना पैदा हो गई थी। परन्तु स्वतंत्रता मिलने के बाद जब हमारे देश की बागडोर हमारे हाथ आई तो हमारी वैधिक तथा कार्य कुशलता की कमजोरियों के कारण समाज में अनैतिकता, अलगाव, खुदगर्जी, गुटबन्दी, जातिवाद जैसी भावनायें फिर से उभरने लगी। राजनैतिक कमजोरियों के कारण अनेक स्वार्थी पार्टियों का जन्म हो गया। अशान्ति और अव्यवस्था फैलने लगी और अराजकता प्रारम्भ हो गई। इन बातों से निबटनें के लिए जब सी०आर०पी०एफ० को बार–बार प्रयोग में लाया गया तो इस फोर्स के विरूद्ध इन गुटों, स्वार्थी राजनैतिक पार्टियों तथा जनता में विरोध की भावना उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक ही थी। साम्प्रदायिक इतिहास की पहली लिखित घटना जो 1730 में अहमदाबाद में घटी जिसमें हिन्दू तथा मुसलमान दोनों धर्म के नाम पर खून बहाते हुए दिखे। धीरे–धीरे यह गंदा खेल बढ़ता ही गया।



कर्फ्यू ग्रस्त एरिया में पेट्रोलिंग करते बल के जवान

आर०ए०एफ० में सभी जाति व धर्म के लोग तैनात हैं। चूँकि इस बल का मुख्य उद्देश्य ही जातीय दंगों को नहीं होने देना है और इन दंगों को नियत्रित करना ही इसका आशय है। इसी आशय को पूर्ण करने हेतु आर०ए०एफ० में हिन्दू बहुसंख्यक के अतिरिक्त मुसलमान, इसाई, सिख तथा अन्य अनुसूचित जाति व जन–जाति समुदाय के लोग तैनात किये गये हैं। आर०ए०एफ० ने अपनी कारगुजारी में किसी भी तरह से इसके बनाने वालों को मायूस नहीं किया है। जब–जब इसकी जरूरत पड़ी

इसने अपने रण कौशल से लोगों की जान व माल की पूर्ण सुरक्षा कर समाज को उन विघटनकारी ताकतों की साजिश का शिकार नही होने दिया। इस बल के जवानों तथा अधिकारियों ने अपना सुख, चैन तथा आराम की परवाह किए बगैर जनता की सेवा की तथा शान्ति के दुश्मनों को पकड़, कानून के हवालें किया है।

गुजरात के दंगों के दौरान अल्पसंख्यकों का आर०ए०एफ० के प्रति व्यवहार अति मैत्रीपूर्ण रहा जिसके फलस्वरूप ही कई अल्पसंख्यकों ने कहा कि आज हम जिन्दा हैं तो सिर्फ आर०ए०एफ० की वजह से। और कई जगह अल्पसंख्यकों ने सिविल प्रशासन से आग्रह किया कि हमारे इलाके में आर०ए०एफ० की तैनाती होनी चाहिए। इसका मुख्य कारण रहा आर०ए०एफ० की सिखलाई क्योंकि आर०ए०एफ० को जातीय दंगों से निपटने हेतु खास सिखलाई दी जाती है व आर०ए०एफ० तैनाती के दौरान मात्र बल के प्रयोग से हिंसा पर काबू नहीं पाती बल्कि वह उनके स्थानीय नेताओं से मिलकर उनको देशभक्ति एंव धर्म के प्रति जागरूक करती है। वह सभी लोगों की मान–मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए ड्यूटी करती है। मानवीय कार्य के रूप में मेडिकल कैम्प व दंगों से प्रभावित लोगों को खाने के पैकेट आदि वितरित करना तथा और कई प्रकार की सेवाए आर०ए०एफ० ने की हैं जिससे जनता में इसके प्रति विश्वास बढ़ा है।



बचाव एवं राहत कार्यों में गैर सरकारी संस्थाओं की सहायता करते बल के सदस्य

अल्पसंख्यकों का आर०ए०एफ० के प्रति भरोसा उसकी निष्पक्षता को दर्शाता है।

आर०ए०एफ० का मुख्य उद्देश्य केवल दंगों से निपटने के लिए ड्यूटी करना ही नही बल्कि समाज के अल्पसंख्यकों के मन में यह भावना पैदा करना है कि वे अल्पसंख्यक बाद में हैं सबसे पहले भारतीय हैं, । हर देश के अल्प संख्यकों में यह हीन भावना रहती है कि उनके अल्पसंख्यक होने के कारण उनके मौलिक अधिकारों का हनन किया जाएगा, किंतु आर०ए०एफ० ने उन सभी लोगों को इस मानसिकता से उबारने का पूर्ण प्रयास किया है । इसके अलावा आर०ए०एफ० प्राकृतिक विपदाओं के दौरान तन–मन से लोगों के बीच जाकर उनके दुख तकलीफ को सुनकर अपने स्तर पर समाप्त करने की कोशिश करती है । जिससे मात्र अल्पसंख्यकों का ही नहीं सभी स्थानीय लोगों को यह विश्वास होता है कि यह फोर्स मात्र बल प्रयोग ही नहीं करती बल्कि मानवीय कार्य भी करती है । आर०ए०एफ० की तैनाती जीरो रिस्पोन्स में होने के कारण कम से कम समय में तैनाती स्थल पर पहुँचने के कारण अल्पसंख्यकों के दिल में यह सोच है कि हमारे विपत्ति के समय आर०ए०एफ० तत्परता से हमारे पास पहुँचेगी और आर०ए०एफ० ने हमेशा कम से कम समय में घटना स्थल पर पहुँच कर उनके विश्वास को मजबूत किया है । और बल ने अपनी निष्पक्ष तैनाती से अल्पसंख्यकों के दिलों में ज्यादा से ज्यादा विश्वास बनाया है इसका मुख्य कारण आर०ए०एफ० द्वारा पूर्व में ही इलाके के भौगोलिक, राजनैतिक परिदृष्य के बारे में भली–भाँति जानकारी हासिल कर अपने परिचितीकरण अभ्यास के दौरान ले लेती है, इसलिए उनको उस इलाके के बारे में पूर्ण जानकारी भी रहती है । और वहाँ के स्थानीय लोगों के रहन–सहन, बोली–भाषा व कार्यव्यवहार के बारे में जानकारी रहती है । अतः यह कम से कम समय में वहाँ के हालात पर शीघ्र काबू पा लेती है । बल में महिला प्लाटून होनें के कारण ये पीड़ित महिलाओं की दुख तकलीफ को सुनती हैं जो प्रत्येक व्यक्ति को नहीं बता पाती है । आर०ए०एफ० की महिला कार्मिक उन लोगो के बीच जाकर उनकी तकलफ को सुनती हैं और अपने अधिकारिक स्तर पर समाधान करने का प्रयास करती हैं । इसीलिए अल्पसंख्यक पुरूष कार्मिकों के साथ–साथ महिला कर्मियों के भी कायल हुए हैं ।

अतः आर०ए०एफ० जनता के बीच एक सेतु का काम करती है एवं जनता को अपने कायों में शामिल या हिस्सा बांटने की भावना उत्पन्न करती है तथा अल्पसंख्यकों के बीच आपसी तालमेल का सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाती रहती है । आर०ए०एफ० ने थोड़े ही समय के कार्यकाल के दौरान ऐसा सब कुछ कर दिखाया है जिसके लिए इसकी स्थापना की गई थी । इस बल द्वारा किए गए सराहनीय कार्यों की वजह से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का नाम रोशन हुआ है । सामाजिक भलाई के कार्य जैसे मेडिकल कैम्प लगाना, बच्चों को पढ़ाई करवाना, गाँव की बेहतरी एवं अन्य कुछ एक ऐसे कार्य है जिनसे अल्पसंख्यक लोगों के मनों में इसके प्रति पूर्ण विश्वास व्यक्त हमेसा करती रहती है ।

आर०ए०एफ० का धर्म है इसकी वर्दी तथा कर्म है To uphold the rule of Law! सभी जवान तथा अधिकारी हर समय अपने फर्ज के प्रति वफादारी निभाने को तत्पर रहते हैं तथा बल का गौरव बढ़ाने में कोई मौका हाथ से नहीं जाने देते । हमें नाज है

इस बल पर, इसकी गौरवशाली परम्पराओं पर।

एच.आर. बंगा

पुरी रथ यात्रा में आर.ए.एफ.



पुरी रथ यात्रा के दौरान सुरक्षा के लिए तैनात आर.ए.एफ. जवान

विश्व प्रसिद्ध पुरी रथ यात्रा सम्पन्न कराने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की विशिष्ट शाखा द्रुत कार्य बल की दो कम्पनियां तैनात की गई। पूर्वी भारत के इस महत्वपूर्ण त्यौहार के सफलता पूर्वक आयोजन के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल/ आर.ए.एफ. को बहुत पहले से ही तैनात किया जाता रहा है। सामान्य रुप से बल के जवानों को भीड़ नियंत्रित करने के लिए तीनों रथों की बाहरी सुरक्षा में लगाया जाता है। राज्य के सिविल तथा पुलिस प्रशासन ने आर.ए.एफ. जवानों द्वारा ड्यूटी के दौरान बरती गई सहनशीलता सहिष्णुता तथा कर्तव्य निष्ठा के लिए हमेशा सराहा है।

द्रुत कार्य बल का गठन 7 अक्टूबर, 1992 में दंगों तथा दंगों जैसी स्थिति निपटने के लिए किया गया था। इस बल के जवान देश के सभी भागों में आयोजित होने वाले विभिन्न त्योहारों में शान्ति एवं सद्भाव बनाये रखने के लिए राज्य प्रशासन की मदद

करते हैं। खाली समय में बल के कार्मिक देश के विभिन्न भागों में अपने आदर्श मानवता की "भावनाओं के अनुरुप सेवा" के ध्येय को साकार करते हुए विभिन्न प्रकार के मानवीय तथा सामाजिक क्रिया कलापों का आयोजन करते हैं। बल के जवान चिकित्सा शिविर, प्रौढ शिक्षा, विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रम आयोजित करते हैं तथा जरुरत मंद लोगों को चिकित्सा शिक्षा तथा विद्यार्थियों को लेखन सामग्री आदि बांटते हैं।

हाल ही में बल द्वारा गुजरात के दंगा ग्रस्त क्षेत्रों में पीड़ितों को मुहैया करायी गयी मानवीय सहायता के लिए देश के सभी भागों में बड़े पैमाने पर सराहा गया। उड़ीसा में आए विनाशकारी चक्रवात तथा गुजरात में आए भयंकर भूकम्प के दौरान भी बल कार्मिकों द्वारा की गयी मानवीय सेवाओं ने दोनों राज्यों की जनता के दिलों पर गहरी छाप छोड़ी हैं।



आर०ए०एफ की महिला मार्चिंग टुकड़ी



आर०ए०एफ० का मानवीय स्वरुप

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

30 नवम्बर, 2002



46वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट/निशाने बाजी प्रतियोगिता के रायफल अभ्यास (प्रोन स्पेन ३०० गज) में स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाली के.रि.पु.बल की प्रथम हवलदार (महिला) कनक लता, महानिरीक्षक (स्पेशल सेक्टर) श्री पी.सी. जोसी से स्वर्ण पदक प्राप्त करते हुए



मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री जे.एस. वर्मा से मानवाधिकार पर आयोजित अन्तर सी.पी.ओ. वाद-विवाद प्रतियोगिता की चैम्पियनशिप ट्राफी प्राप्त करते बल के विजेता कार्मिक



*10*वी आर.ए.एफ. वर्षगांठ के अवसर पर प्रैस सम्मेलन को सम्बोधित करते बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-15 अंक-7

30 नवम्बर, 2002
9 अग्रहायण, शक, 1924

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस नई दिल्ली-110072

सम्पादक मण्डल
अध्यक्ष
हिमान्शु कुमार, अपर महानिदेशक

सदस्य
विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
आर.एस. नौटियाल, महानिरीक्षक (संभरण एवं निर्माण)
राजेन्द्र सिंह, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
पी.जे. शेट्टी, उप महानिरीक्षक (प्रशा.)
सी.वी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशि.)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
एम.एस. नेगी, कमान्डेंट (एम.टी.)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
राजीव राय, उप कमां. (परि.)

मांणे भूषण प्रसाद, हिंदी आंधकारी

इस अंक में

• द्रुत कार्य बल, सरकार तथा जनता की आकांक्षाओं पर खरा उतरा है

• हाट स्प्रिग्ज लद्दाख में पुलिस कर्मियों द्वारा शहीदों को श्रद्धाजंलि

• के.रि.पु. बल ने मानवाधिकार वाद-विवाद प्रतियोगिता की चैम्पियनशिप ट्राफी जीती

• के.रि.पु. बल के खिलाड़ी सम्मानित

• के.रि.पु. बल के साये में अमर नाथ यात्रा

• 2002-2003 के लिए के.रि.पु. बल शिक्षण निधि से छात्रवृत्ति

• उत्कृष्ठता की मिसाल सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल, रोहिणी

• के.रि.पु. बल स्कूल, जवाहर नगर हैदराबाद–मुनाफा रहित सेवा उन्मुख संस्थान

• भारतीय स्पेशल पुलिस यूनिट के अविस्मरणीय सुखद क्षण

• एड्स मानवजाति के लिए चुनौतीपूर्ण खतरा

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-संपादक

हमारा गौरव “सरदार पोस्ट”



रन ऑफ कच्छ *(*गुजरात*)* सरदार पोस्ट पर *9* अप्रैल *2002* को पराक्रम दिवस के अवसर पर शहीदों को श्रद्धाजंलि देते बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र

9अप्रैल, 1965 को पाकिस्तान सेना द्वारा “सरदार पोस्ट” (गुजरात-भारत-पाक सीमा) पर किये गये बिग्रेड स्तर के हमले को केरिपु बल की दो कंपनियों ने नाकाम कर दिया। बल के शूरवीर अधिकारी और जवान बड़ी बहादुरी से लड़े तथा दुश्मनों के नापाक इरादों को नेस्तनाबूद कर दिया और बल के लिए गौरव अर्जित किया। डॉ० त्रिनाथ मिश्र, महानिदेशक, केरिपु बल ने सरदार पोस्ट पर जाकर 9 अप्रैल, 2002 को बल के शूरवीर जवानों को श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। हमारे जवानों द्वारा किये गये सर्वोच्च बलिदानं का स्मरण किया। धरती, जिस पर हमारे जवानों ने दुश्मनों से लोहा लिया था, उसकी मिट्टी लाई गई और दिवगंत आत्माओं के सम्मान एवं स्मरण में उसे एक कलश में रखा गया है। उनका बलिदान हमें अपने राष्ट्र के प्रति हमारी

जिम्मेदारियों का सदा स्मरण दिलाता रहेगा। अतः प्रत्येक वर्ष 9 अप्रैल को बल के प्रत्येक कार्यालय में सरदार पोस्ट के युद्ध का स्मरण करने के लिए "पराक्रम दिवस" के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है।

द्रुत कार्य बल, सरकार तथा जनता की आकांक्षाओं पर खरा उतरा है

- डॉ. सी. रंगराजन

कानून लागू करने में मानवाधिकारों के सिद्धातों के अनुपालन में किसी भी प्रकार का कोई समझौता नहीं किया जा सकता। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की विशेष शाखा रेपिड एक्शन फोर्स (द्रुत कार्य बल) की 10वीं वर्ष गांठ के अवसर पर 7 अक्टूबर 2002 को 99वी बटालियन आर.ए.एफ. मुख्यालय, आन्ध्र प्रदेश के रंगारेड्डी जिले में आयोजित समारोह में आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल महामहिम डा. सी. रंगराजन ने कहा कि किसी भी समाज में पुलिस की भूमिका वहाँ की राजनैतिक संरचना पर निर्भर होती है जो इसे चलाती है। पुलिस निर्भीक होकर कार्य करे परंतु उसे कानूनी दायरे में रह कर कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि मानवता की भावनाओं के अनुरूप सेवा के सिद्धान्त को द्रुत कार्य बल ने अपना आदर्श (मोटो) माना है। जनता की भावनाओं के अनुरूप ऐसी सेवा की जाये जिसमें मानवाधिकारों का उल्लघंन न हो।

उन्होंने आगे कहा कि धर्म निरपेक्षता ही भारतीयता की रीढ़ है। विभिन्न साम्प्रदायों में आपसी सौहार्दयता भारतीय समाज की पुरानी विशेषता है। यह दुर्भाग्य है कि देश के कुछ भागों में कभी-कभी साम्प्रदायिक दंगे भड़के हैं परन्तु यह हम सब का कर्तव्य बनता है कि हम समाज में शांति तथा सद्भाव बनाये रखे। डा. सी. रंगराजन ने कहा आर.ए.एफ. को दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निपटने तथा निष्पक्ष रूप से स्थिति को संभालने का अनुभव है। उन्होंने, बल द्वारा निभाए जा रहे दायित्वों पर सन्तोष प्रकट किया तथा कहा कि यह सरकार तथा समाज की आकाक्षाओं पर खरा उतरा है।



आध्र प्रदेश के राज्यपाल डा० सी. रंगराजन, आर.ए.एफ. की *10*वी वर्ष गाँठ के अवसर पर *100*वी बटा. द्रुत कार्य बल के कमान्डेंट श्री एच.आर. बगा को सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी प्रदान करते हुए



बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र आर.ए.एफ. की *10*वी वर्ष गाँठ के अवसर पर मुख्य अतिथि आंध्र प्रदेश के राज्यपाल डा० सी. रंगराजन को स्मृति चिन्ह भेट करते हुए

आर.ए.एफ. की भूमिका की सराहना करते हुए राज्यपाल ने कहा कि आर.ए.एफ. द्वारा प्राकृतिक आपदाओं के समय असहायों तथा पीड़ितों की गई सहायता अभी भी

हमारे दिल में है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि बल आगे भी प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित जन मानस की सहायता पूरी निष्ठा भाव से करता रहेगा।

इस अवसर पर डा. रंगराजन ने एक भव्य परेड का निरीक्षण किया तथा सलामी ली। उन्होंने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तथा आर.ए.एफ. के 69 अधिकारियों एवं जवानों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक प्रदान किये। इस अवसर पर उन्होंने द्रुत कार्य बल मैनुअल हैंडबुक का विमोचन भी किया तथा आर.ए.एफ. की 100 बटालियन को सर्वश्रेष्ठ आपरेशनल तथा आलराउन्डर बटालियन की ट्राफी प्रदान की।

इस अवसर पर सर्व प्रथम केन्द्रीय रिजर्व पलिस बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि राज्यों में बिगड़ती हुई कानून एवं व्यवस्था की स्थिति को बनाए रखने के अलावा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश में विभिन्न भागों में फैल रहे आतंकवाद, अलगावबाद तथा उग्रवाद से निपटने में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। आर.ए.एफ. की भूमिका की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि बल ने अपनी 10 साल की अल्प अवधि में अल्प संख्यक समुदाय के दिलों में विश्वास की भावना पैदा कर इस सुरक्षा परिदृष्य में निष्पक्षता की छवि बनाई है।

डा. मिश्र ने कहा कि चाहे प्राकृतिक त्रासदी हो या मानवकृत विध्वंस, बल के बहादुर जवान राष्ट्र की सेवा में कुछ ही समय में घटना स्थल कम से कम समय में शांति, सद्भाव तथा अपनी जिम्मेदारी के क्षेत्र में सामान्य स्थिति बहाल कर देते हैं। उन्होंने आगे कहा कि बल ने देश की सरहदों के पार 1995 में हैती अभी कोसोवों में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत तैनात रहकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छवि बनाई है। बल कार्मिकों ने अपनी उच्च कोटि की व्यवसायिकता, कर्तव्य निष्ठा, उत्साह तथा देश भक्ति का प्रदर्शन कर आज देश के हर जन-मानस के दिलों में जगह बनाई है।

अंत में द्रुत कार्य बल के पुलिस महानिरीक्षक श्री जी.एस. श्रीवास्तव ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

हाट स्प्रिंग्ज लद्दाख में पुलिस कर्मियों द्वारा शहीदों को श्रद्धांजलि

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी पूरे देश के राज्यों की पुलिस एवं केन्द्रीय पुलिस संगठनों की 24 जवानों और अधिकारियों वाली एक प्रतिनिधि टुकड़ी ने हाट स्प्रिंग्ज लद्दाख में देश सेवा में 43 वर्ष पूर्व शहीद हुए अपने साथियों की स्मृति में श्रद्धा सुमन

आपेत किए। इस स्मारक का निर्माण 21 अक्टूबर, 1959 में चीनी सैनिकों का सामना करते हुए शहीद हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 10 जवानों की स्मृति में किया गया है।

हाट स्प्रिंग्ज अक्साई लद्दाख हिमालय का वीरान और दुर्गम क्षेत्र है। यह इलाका समुद्र तल से 15,000 से 16,000 तक फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहां घास का तिनका तक नहीं उगता और तापमान शून्य से 47 डिग्री नीचे तक चला जाता है। हाट स्प्रिंग्ज पहुंचने से पहले पुलिस पार्टी को पाँच दिनों तक लेह में रूकना पड़ता है ताकि स्वयं को वातावरण के अनुरूप ढाल सके। इस घटना से पहले यह प्रदेश अनसुना और अनदेखा था। लेकिन 21 अक्टूबर, 1959 में एक इतिहास की रचना हुई जब एक पहाड़ी के ऊपर पोजीशन में बैठी एक चीनी सैनिकों की टुकड़ी ने अपने से बहुत छोटी संख्या में गश्त पर निकली एक पुलिस टुकड़ी पर आधुनिक हथियारों से हमला कर दिया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 10 जवान घटनास्थल पर ही मारे गये।

उस समय तिब्बत के साथ लगती 2500 मील की शांत सीमा की चौकसी का दायित्व भारतीय पुलिस के पास था। दुर्भाग्यवश 1959 के मध्य में इस सीमा पर चीनी सैनिकों की गतिविधियां अचानक बढ़ गई। 21 अक्टूबर, 1959 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 21 जवानों की एक टुकड़ी हाट स्प्रिंग्ज पर गश्त पर तैनात थी कि अचानक चीनी सैनिकों की एक टुकड़ी ने स्वचालित हथियारों एवं मोर्टारों से इस टुकड़ी पर हमला कर दिया। पुलिस बल के सिपाही जब तक कि उनकी रायफलों में एक भी गोली बाकी रही, अपने से बड़ी और आधुनिक हथियारों से लैस चीनी सैनिकों की टुकड़ी का सामना करते रहे। इस मुठभेड़ में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 10 जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 11 को बंदी बना लिया गया।

पूरे देश सहित विश्व के अधिकांश देशों ने इन बहादुर जवानों की शहादत पर शोक व्यक्त किया। इन जवानों के मृत शरीर चीनी अधिकारियों ने 13 नवम्बर, 1959 में वापिस सौपें। अगले दिन हाट स्प्रिंग्ज में उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया। तभी से प्रति वर्ष 21 अक्टूबर को प्रत्येक जिले के पुलिस कर्मी अपने जिला मुख्यालय में एकत्र होकर अपने शहीद हुए साथियों को याद कर उन्हें श्रद्धाजंलि देते हैं।

पूरे देश के पुलिस कर्मियों के स्वैच्छिक योगदान के आधार पर भारत सरकार ने हाट स्प्रिंग्ज में इन बहादुर जवानों की याद में एक स्मारक का निर्माण किया। स्मारक का निर्माण 1962 में पूरा हुआ। तभी से पूरे देश के पुलिस कर्मियों की एक टुकड़ी अनेक दुर्गम मार्गों को पार करती हुई प्रति वर्ष हाट स्प्रिंग्ज जाकर इन शहीदों को श्रद्धाजलि अर्पित करती है। इस स्मारक पर खुदे शब्द - “**जब तुम यहां से जाओ तो देश वासियों को बताना कि उनके कल के लिए हमने अपना आज कुर्बान कर दिया**” लम्बें समय तक मस्तिष्क को झकझोरते रहते हैं।



शहीद दिवस के अवसर पर हाट स्प्रिंग्ज लद्दाख में शहीदों को श्रद्धांजलि देते पुलिस कर्मी

के.रि.पु. बल ने मानवाधिकार वाद-विवाद प्रतियोगिता की चैम्पियनशिप ट्राफी जीती



के.रि.पु. बल की विजेयता टीम को चैम्पियनशिप ट्राफी प्रदान करते मानवाधिकार के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री जे.एस. वर्मा

केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक पुलिस बलों को अपने कर्तव्य का निर्वाह करते समय मानवाधिकारों का सम्मान करते हुए कानून का पालन करना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक मानव को पूर्ण गरिमा एवम् सम्मान के साथ जीने का अधिकार है तथा उसके इस अधिकार की सुरक्षा की गारंटी संविधान में प्रदत्त है। 26 सितम्बर 2002 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय में मानवाधिकारों पर आयोजित एक राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद प्रतियोगिता के मौके पर बोलते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री जे.एस. वर्मा ने कहा कि लक्ष्य की तरह उसको प्राप्त करने के साधन भी पवित्र होने चाहिए। गलत उपायों से सही न्याय नहीं किया जा सकता। केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक पुलिस बलों के कार्मिकों को आम व्यक्ति द्वारा उनमें व्यक्त किये गये विश्वास की हर हालत में रक्षा करनी चाहिए।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के महानिदेशक श्री वाई.एन. श्रीवास्तव ने इस मौके पर बोलते हुए कहा कि इस तरह की वाद-विवाद प्रतियोगिताओं के आयोजन का उद्देश्य अर्द्ध सैनिक पुलिस बलों में नीचे स्तर तक मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करना है।

अंत में बल के अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि देश के आतंरिक सुरक्षा स्थितियों के मद्देनजर कार्य करते हुए केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक पुलिस बलों के कार्मिकों को यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि वे अपने ही देशवासियों के साथ बर्ताव कर रहे हैं। प्रत्येक बल का कार्मिक वर्दी में एक नागरिक ही है। अतः उसे नागरिकों के साथ व्यवहार करते समय बेहद सावधानी

बरतनी चाहिए। द्रुत कार्य बल के.पु. उप महानिरीक्षक श्री हरीश चन्द सूद ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

प्रतियोगिता में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, सीमा सुरक्षा बल, राष्ट्रीय सुरक्षा गार्द, असम राईफल्स, एस.एस.बी., आर.पी.एफ. आई.टी.बी.पी. तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 32 कार्मिकों ने भाग लिया। इस वाद-विवाद प्रतियोगिता के हिन्दी वर्ग का प्रथम स्थान के.रि.पु. बल के सिपाही डी.सी. देशवाल को मिला जबकि द्वितीय पुरस्कार सीमा सुरक्षा बल के सहायक कमाण्डेन्ट श्री पी.के. उपाध्याय तथा तीसरा पुरस्कार असम राईफल के हवलदार जी.बी. मिश्रा ने जीता। प्रतियोगिता के अंग्रेजी वर्ग में प्रथम पुरस्कार आर.पी.एफ. की सुश्री रूचिरा चटर्जी, ए.एस.सी., द्वितीय पुरस्कार, के.रि.पु. बल के सहायक उप निरीक्षक गणेश बाबू तथा तृतीय पुरस्कार संयुक्त रूप से के.रि.पु. बल की सुश्री कमल सैनी, सहायक कमाण्डेन्ट तथा राष्ट्रीय सुरक्षा गार्द के श्री डी.पी. उपाध्याय, उप कमाण्डेंट ने जीता। प्रतियोगिता की टीम चैम्पियनशिप ट्राफी प्रतियोगिता आयोजित करने वाली मेजवान टीम के.रि.पु. बल ने जीती। विजेताओं को पुरस्कार मानवाधिकार के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री जे.एस. वर्मा ने प्रदान किये।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने मनाई गाँधी जयन्ती

02अक्टूबर 2002 को गांधी जयन्ती के अवसर पर बल के महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र ने महानिदेशालय के स्टाफ कैम्प, राम कृष्णपुरम में मनोरंजन कक्ष का उद्घाटन कर बल के जवानों के कल्याण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपहार प्रदान किया। देश में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने, आतंकवाद एवं उग्रवाद का प्रतिकार करने की अपनी जिम्मेदारी के अतिरिक्त पर्यावरण संरक्षण के प्रति बल को सजग रहने के लिए कैम्प में वृक्षारोपण भी किया।

महात्मा गांधी जी अपने जीवनकाल में सदैव गरीब एवं कमजोर व्यक्तियों को समाज में ऊँचा उठाने के लिए कार्य करते रहे। डा० मिश्र ने बल के ग्रुप–डी कर्मचारियों को उपहार भेट कर, महात्मा गांधी को बल की ओर से सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर डा० मिश्र ने कहा



आर. के. पुरम स्टाफ कैम्प में मनोरंजन कक्ष का उद्घाटन करते बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र

कि बल कार्मिकों को अपनी निरपेक्ष छवि को बनाए रखते हुए समाज में सभी वर्गों की पक्षपात रहित सुरक्षा की जिम्मेदारी को निभाना चाहिए। डा० मिश्र ने आगे यह भी कहा कि समय के साथ-साथ बल के अधिकारियों एवं कार्मिकों को आपस में समन्वय स्थापित कर देशहित में कार्य करना चाहिए।

इस अवसर पर महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय) श्री विक्रम श्रीवास्तव ने कहा कि, 02 अक्टूबर, महात्मा गांधी के साथ-साथ दिवंगत प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की भी जयन्ती है। दोनों ही भारत के युग पुरूष थे दोनों ही नेताओं ने देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुफ्त कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आज देश-विदेश में जो हिंसा का तांडव-नृत्य हो रहा है वह अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी के कार्यों और सिद्धातों के एकदम विपरीत है। वे सदैव सत्य एवं अहिंसा तथा अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए सही मार्ग अपनाने की प्रेरणा देते रहे। आज उनकी शिक्षा और अधिक अपनाने की आवश्यकता है।



बल के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को उपहार प्रदान करते बल के महानिदेशक

सी.आर.पी.एफ. प्रिंटिंग प्रैस का आधुनिकीकरण



ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में नई प्रिंटिंग मशीन का उद्घाटन करते उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री पद्मन सिंह, तथा महानिरीक्षक (सम्भ. एवं निर्माण) श्री आर.एस. नौटियाल

नित नयी बदलती हुई तकनीकी तथा प्रिटिंग उद्योग में बढ़ते हुए आधुनिक उपकरणों के प्रयोग तथा बाजार में बढ़ती हुई प्रिटिंग प्रतियोगिता को ध्यान में रखकर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए भी यह आवश्यक हो गया था कि अपने कार्यालयों में प्रयोग आने वाले विभिन्न प्रकार के मैनुअलों, फार्मों, स्टेशनरी तथा सी.आर.पी.एफ. समाचार को आधुनिक रूप से छापने के लिए आधुनिक संसाधनों का प्रयोग करे ताकि हम बाहरी छपाई प्रतियोगिता का मुकाबला कर सकें। इस कार्य के लिए आधुनिक दो कलर वाली आफसेट प्रिटिंग मशीन की आवश्यकता थी। अतः सी.आर.पी.एफ. प्रैस की इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए महानिदेशालय की संभरण निदेशालय ने 32,77,280/- रूपये मूल्य की अन्य साजो-समान सहित एक आधुनिक दो कलर वाली आफसेट प्रिटिंग मशीन खरीदी ताकि बल की छपाई सम्बन्धी आवश्यकताओं को उत्कृष्ट गुणवत्ता के साथ शीघ्र पूरा किया जा सकें। अतः 12 सितम्बर 2002 को सी.आर.पी.एफ. प्रैस, झड़ौदा कलाँ में इस मशीन को स्थापित किया गया।

इस अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक (संभरण) श्री आर.एस. नौटियाल तथा पुलिस महानिरीक्षक, उत्तरी सेक्टर श्री पदमन सिंह ने ग्रुप केन्द्र, झड़ौदा कलाँ परिसर में स्थित सी.आर.पी.एफ. प्रैस में प्रिटिंग मशीन का उद्घाटन कर इस नयी मशीन का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर महानिदेशालय की संभरण शाखा, ग्रुप केन्द्र, झड़ौदा कलाँ तथा अन्य कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। मशीन का उद्घाटन करते हुए पुलिस महानिरीक्षक (संभरण) श्री नौटियाल ने कहा कि यह प्रिटिंग मशीन आधुनिक तकनीक पर आधारित है तथा इसकी रंनिग स्पीड 10,000 आई.एच.पी. है तथा यह 485 × 660 m.m. तथा 330 × 310 m.m. है। इस मशीन का स्टॉक रेन्ज 30 GSM से 350 GSM तथा अधिकतम प्रिटिंग एरिया 475×650 m.m. है। प्रैस में इस मशीन के लग जाने से प्रिटिंग कार्य की गुणवत्ता तो बढ़ेगी ही बल्कि कार्य में तेजी भी आयेगी और बहरहाल सी.आर.पी.एफ. की प्रिटिंग सम्बन्धी आवश्यकताएं पूरी हो जायेगी।

सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा द्वारा चयनित सहायक कमान्डेटों के दूसरे बैच के प्रशिक्षण का शुभारंभ



सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा द्वारा चयनित दूसरे बैच के प्रशिक्षु सहायक कमान्डेंट तथा आ०सु०अ० के अधिकारीगण

सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा द्वारा चयनित सहायक कमांडेण्टों के द्वितीय पाठ्यक्रम का शुभारंभ आन्तरिक सुरक्षा अकादमी (विस्तार), ग्रुप केन्द्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पिंजौर में आन्तरिक सुरक्षा अकादमी मांऊट आबू के महानिरीक्षक/प्राचार्य, श्री एस सी कुकरेजा ने किया गया। इस अवसर पर अपने उद्बबोधन में पुलिस महानिरीक्षक श्री कुकरेजा ने प्रशिक्षु अधिकारियों का स्वागत किया एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम से उनको अवगत कराया। उन्होंने सुचारू प्रशिक्षण प्रदान करने पर बल देते हुए कहा कि इसके द्वारा ही वे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रभावी एवं कुशल अधिकारी बन सकेंगे।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में कार्यरत अधीनस्थ अधिकारियों के सेवा उन्नयन करने अवसरों में वृद्धि करने के उद्देश्य से सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा की योजना वर्ष 2001 से शुरू की गई थी। जिसका पहला पाठ्यक्रम अप्रैल, 2002 में पूरा हुआ। प्रथम पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण अधिकारी विभिन्न बटालियनों में सहायक कमांडेण्ट के रूप में अपना योगदान दे रहे हैं।

इस अवसर पर चण्डीगढ़ एवं ग्रुप केन्द्र पिंजौर के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। श्री डी.एन.एस. बिष्ट, पुलिस उप महानिरीक्षक, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी ने

अपने स्वागत भाषण में प्रांशेक्षण कायेक्रम एवं प्रांशेक्षु आंधकारेयों के संबंध में विस्तृत विवरण दिया।

सिगनल रैंज ने कम्प्यूटर ज्ञान प्रतियोगिता की चैम्पियनशिप जीती

सूचना एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में तेजी से हो रही प्रगति के साथ कदम मिलाकर चलने हेतु यह महसूस किया गया कि बल के सदस्यों को कम्प्यूटरीकरण संबंधित कार्यों के कार्यान्वयन में सक्रिय रूप से भाग लेने हेतु प्रेरित करना चाहिए। अतः इस वर्ष द्वितीय अन्तर क्षेत्रीय कम्प्यूटर ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन सिगनल ग्रुप केन्द्र/ केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (संचार) राँची में 21 अगस्त 2002 से 23 अगस्त 2002 तक किया गया।

यह प्रतियोगिता अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मुकाबले की पद्धति पर आयोजित की गई तथा इस प्रतियोगिता में विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन राष्ट्रीय पुलिस ड्यूटी मुकाबला-कम्प्यूटर प्रतियोगिता से संबंधित नियमों तथा अनुदेशों के अनुसार किया गया।

इस प्रतियोगिता के दौरान 3 विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में 12 टीमों से 32 प्रतियोगियों ने भाग लिया। ओवर आल चैम्पीयनशिप सिगनल रैंज द्वारा 167 अंक अर्जित कर प्राप्त की जबकि पश्चिमोत्तर अंचल की टीम को 129 अंक प्राप्त करने पर उप विजेता घोषित किया गया। समापन समारोह में ब्रिगेडियर जे.एस. साहनी, उप महानिरीक्षक (संचार) द्वारा विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

पुरस्कार/पदक जीतने वाले कार्मिक इस प्रकार से है :–



विजेताओं को शील्ड प्रदान करते उप महानिरीक्षक (संचार) बिग्रे. जे. एस. साहनी

प्रतियागिता-1 (लिखित परीक्षा)

प्रतियागिता–1 (लिखित परीक्षा

स्वर्ण पदक	स.उ.नि. (टी)	पी. मनीकन्दन	सिगनल रेंज
रजत पदक	स.उ.नि. (टी)	नवनीत कुमार शर्मा	"
काँस्य पदक	स.उ.नि. (एम)	सचित जौन	दक्षिणी सेक्टर

प्रतियोगिता-2 (कार्यालय स्वचलन भाग-1)

प्रतियोगिता–2 (कार्यालय स्वचलन भाग–1)

स्वर्ण पदक	स.उ.नि. (मं)	उदयवीर सिंह	सिगनल रैंज
रजत पदक	स.उ.नि. (मं)	पी.सी. महाराणा	दक्षिणी सेक्टर
काँस्य पदक	सिपाही	राजेश शर्मा	एन.डब्लू.जेड.

प्रतियोगिता-3 (कार्यालय स्वचलन भाग-1)

प्रतियोगिता–3 (कार्यालय स्वचलन भाग–1)

स्वर्ण पदक	सिपाही	राजेश शर्मा	एन.डब्लू.जेड.
	स.उ.नि. (मं)	अनिल कुमार	"
रजत पदक	रा.उ.नि. (टी)	नवनीत कुमार शर्मा	रिगनल रैंज
	स.उ.नि. (टी)	राजेश कुमार	"
काँस्य पदक	स.उ.नि. (मं)	राजू कुमार	बिहार सेक्टर
	कुक	राजेश चन्द्र मिश्र	"

के.रि.पु. बल के खिलाड़ी सम्मानित

"आप देश और के.रि.पु. बल का गौरव है"। देश के लिए पदक जीतने वाले के.रि.पु. बल के खिलाड़ियों के सम्मान में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय, नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा कि वह दिन दूर नहीं जब बल के युवा पुरूष और महिला खिलाड़ी अंतराष्ट्रीय खेल जगत में और अधिक चमकेंगे।

उन्होनें कहा कि के.रि.पु. बल ने हमेशा खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारने के लिए उन्हें हर सम्भव सरक्षण और प्रोत्साहन दिया है। डा. मिश्र ने दो उत्कृष्ठ भारोत्तोलकों सिपाही महिला प्रसुमिता मंगराज तथा सुनैना आनंद को उप निरीक्षक की पदोन्नति की घोषणा की।

समारोह के प्रराम्भ में खेल एवं युवा कल्याण मंत्रालय के सचिव श्री एस.एस. शर्मा ने खिलाड़ियों को फूलों का हार पहनाकर स्वागत किया।

जुलाई-अगस्त 2002 में मानचेस्टर (यू.के.) में आयोजित कॉमनवैल्थ खेलों में के.रि.पु. बल के खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर आठ स्वर्ण, सात रजत, तथा चार कांस्य (कुल 19) पदक जीते। इस तरह भारतीय खिलाडियों द्वारा जीते गये पदकों में से एक चौथाई से भी अधिक पदक के.रि.पु. बल के खिलाड़ियों ने जीते। के.रि.पु. बल की भारोत्तोलक महिला खिलाड़ी एन. कुन्जारानी तथा सोनामचा चानू ने 48 किलोग्राम तथा 53 किलोग्राम की श्रेणी में तीन स्वर्ण पदक जीते जबकि 63 किलोग्राम वजन श्रेणी में प्रतिमा कुमारी ने दो स्वर्ण तथा एक रजत पदक जीते। 69 किलोग्राम की श्रेणी में नीलम लक्ष्मी ने तीन रजत पदक जीते। इसके अलावा भारोत्तोलक प्रसुमिता मंगराज ने 63 किलोग्राम की श्रेणी में 2 रजत तथा एक कांस्य पदक जीता जबकि 58 किलोग्राम वजन श्रेणी में सुनैना आनंद ने 3 कांस्य पदक जीते। इसके अतिरिक्त

के.रि.पु. बल के जुडाका अक्रम शाह ने भी देश के लिए एक रजत पदक जीता। इसी तरह अक्टूबर 2002 में बुसान (दक्षिण कोरिया) में सम्पन्न 14 वें एशियाई खेलों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की एथेलिट जिन्सी फिलिप तथा मरियमा कुरियाकोजे ने 4×400 मीटर की (महिला) रिले दौड़ में स्वर्ण पदक जीता है जबकि के.रि.पु. बल के एथेलिट पदमजीत सिंह ने 4×400 मीटर की (पुरूष) रिले दौड़ में रजत पदक जीता।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के श्री मनप्रीत सिंह तथा सुन्दर सिंह ने भी भारतीय कबड्डी टीम का प्रतिनिधित्व किया और उक्त एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता।



कामन वैल्थ खेलों में पदक जीतने वाले केरिपुबल के खिलाड़ियों के साथ बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र तथा अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार

जम्मू कश्मीर में शान्ति पूर्ण चुनाव कराने में के०रि०पु० बल की अहम भूमिका



स्वच्छ एवं निष्पक्ष मतदान कराने के लिए चुनाव डयूटी पर तैनात बल के जवान

16 सितम्बर, 24 सितम्बर, 01 अक्टूबर तथा 10 अक्टूबर, 2002 में चार चरणों में सम्पन्न हुए विधान सभा चुनावों में निष्पक्ष एवं निर्भय मतदान कराने के लिए के०रि०पु० बल की 160 कम्पनियां तैनात की गई।

विधान सभा चुनाव में निष्पक्ष मतदान सुनिश्चित कराने के लिए प्रथम चरण के मतदान के लिए जम्मू क्षेत्र में डोडा, कठुआ, पुंछ, राजौरी तथा ऊधमपुर में कुल 80 कम्पनियां तैनात की गई जबकि श्रीनगर क्षेत्र के बारामुला, कुपवाड़ा तथा श्रीनगर में भी 80 कम्पनियां तैनात की गई थी।

द्वितीय चरण में मतदान के लिए भी बल की 160 कम्पनियां, जम्मू में 44, डोडा में 4, कठुआ में 13, पुंछ में 4, राजौरी में 6 तथा ऊधमपुर में 6 कम्पनियां तैनात की गई जबकि बारामुला में 1, कुपवाड़ा में 11, श्रीनगर में 10 तथा बड़गाम में 58 कम्पनियां तैनात की गई। इसी तरह तीसरे चरण के मतदान के लिए जम्मू में 13, डोडा में 7, कठुआ में 38, पुंछ में 4, राजौरी में 6, ऊधमपुर में 12, श्रीनगर में 1, बारामुला में 1, कुपवाड़ा में 11, अनंतनाग में 36 तथा पुलवामा में 31 बल की कम्पनियां तैनात की गई। चौथे तथा अंतिम चरण के मतदान हेतु जम्मू में 24, डोडा में 102, कठुआ में 5, पुंछ में 4, राजौरी में 6, ऊधमपुर में 6, बारामुला में 1, श्रीनगर में 1 तथा कुपवाड़ा में 11 बल की कम्पनियां तैनात की गई।

बल की यह कम्पनियां आंतरिक कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए पहले से तैनात 237 कम्पनियों के अतिरिक्त स्वच्छ एवं निष्पक्ष मतदान कराने के लिए तैनात की गई थी।

इस तरह की विषम परिस्थितियों में के०रि०पु० बल ने बेदाग रिकार्ड बनाए रखा है, इसलिए चुनाव सम्पन्न कराने हेतु के०रि०पु० बल की तैनाती के लिए बड़ी संख्या में मांग की जाती रही है।

के.रि.पु. बल के साये में अमर नाथ यात्रा

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अमरनाथ यात्रा के संचालन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सुरक्षा इंतजामों में के.रि.पु. बल सक्रिय रूप से कार्यरत रहा तथा देश के कोने-कोने से आने वाले यात्रियों को हर संभव सहायता प्रदान की। अमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों की सुरक्षा व्यवस्था के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 42 से अधिक कम्पनियों को जम्मू और कश्मीर क्षेत्र में लगाया गया था।

जम्मू क्षेत्र में यात्रियों के ठहरने के 10 स्थानों पर के.रि.पु. बल की 14 कम्पनियों को सुरक्षा के लिए लगाया गया। यात्रियों के काफिले के शुरूआती स्थान एम.ए. स्टेडियम तथा जम्मू श्रीनगर राजमार्ग के संवेदनशील स्थानों पर भी के.रि.पु. बल के जवान तैनात किए गये। बल के ये जवान यात्रियों के काफिले को जम्मू से शैतानी नाला और पहलगाम तक अपने सरंक्षण में लेकर आते थे और वापसी के दौरान भी उन्हें अपनी सुरक्षा प्रदान करते थे। रामबाग में लगभग 200 वाहन करीब 3000 यात्रियों के साथ प्रतिदिन जम्मू के एम.ए. स्टेडियम से यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे।

कश्मीर जोन में इस वर्ष यात्रा की व्यवस्था और सुरक्षा के लिए बल की 28 कम्पनियों को तैनात किया गया, जिनमें एक महिला कम्पनी भी शामिल थी। बल के ये जवान जखूरा, बनताल, पवित्र गुफा, पंचतरणी, शेषनाग, पोशपत्थरी, जोजीपाल पिस्सूटोप, पहलगाम चंदनबाड़ी के यात्री कैम्पों में यात्रियों की सुरक्षा के लिए तैनात थे। बल की तीन कम्पनियों को शैतानी नाला से नूनवान कैम्प तक ले जाने और वापस लाने के लिए तैनात किया गया था।

के.रि.पु. बल ने यात्रा मार्ग के विभिन्न स्थानों पर अपने चिकित्सा शिविर स्थापित किये तथा इन शिविरों में बल के डाक्टर यात्रियों को जीवन रक्षक दवाईया उपलब्ध करा रहे थे।

इस यात्रा के दौरान के.रि.पु. बल के स्वान दस्ते और बम निरोधक दस्ते की सेवाएं भी ली। बल के जवान अनेक महत्वपूर्ण स्थानों की समय-समय पर जांच कर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करते थे।



पवित्र अमर नाथ गुफा के रास्ते में चन्दनबाड़ी में यात्रियों की सुरक्षा हेतु तैनात बल के जवान

नेहरू नगर, नई दिल्ली में पारगमन तथा हॉस्टल का निर्माण

नेहरू नगर, नई दिल्ली में अधीनस्थ अधिकारियों व अन्य सैनिकों के लिए पारगमन सुविधा तथा आवासीय हॉस्टल का निर्माण का कार्य प्रगति पर है। इस हॉस्टल में 32 आवासी इकाईयां हैं। प्रत्येक इकाई में दो कमरे व एक रसोई की व्यवस्था है। इससे हमारे अधीनस्थ अधिकारियों व अन्य सैनिकों को जो थोड़े समय के लिए किसी कार्यवश दिल्ली में आते हैं, रहने में काफी राहत मिलेगी। विभिन्न कर्त्तव्य निर्वहनों के लिए दिल्ली आने व जाने वाले अधीनस्थ अधिकारी इन अच्छे आवासों में ठहर सकेंगे। यह हॉस्टल सम्भवतः अप्रैल-2003 तक पूर्ण रूप से तैयार हो जायेंगे।



नेहरू नगर, नई दिल्ली में निर्माणाधीन केरिपुबल पारगमन तथा हॉस्टल भवन

शहीदों के लिए "रजत पुस्तक" (सिल्वर बुक)

बल के उन शहीदों को, जिन्होंने कर्त्तव्य निर्वहन के दौरान अपना जीवन न्यौछावर किया है, उन्हे उचित श्रद्धांजलि देने के लिए एक "रजत पुस्तक" में सभी शहीदों के रिकार्ड का अनुरक्षण किया जाएगा। इस पुस्तक में शहीदों के नाम लिखें जाएंगे। इसे

नौमच में सम्मानपूर्वक रखा जाएगा तथा बल स्तर के महत्वपूर्ण समारोहों के दौरान ही इसे बाहर निकाला जाएगा। बल कार्मिकों द्वारा दिए गये बलिदान का स्मरण हमारे दिलों-दिमाग में हमेशा ताजा-तरीन रहे तथा राष्ट्र के प्रति हमारी कर्त्तव्य-भावना को प्रेरित करने का कार्य करेगा। इस पुस्तक को अति विशिष्ट व्यक्ति के कर-कमलों से 28 दिसम्बर, 2002 को 63वें केरिपु बल दिवस की परेड के अवसर पर विमोचित किया जाएगा। इस रजत पुस्तक पर होने वाले व्यय को बल के सभी सदस्यों से प्रति व्यक्ति 1/- रूपये की दर से मामूली स्वैच्छिक अंशदान लेकर पूरा करने का प्रस्ताव है।

बल का विस्तार

देश के वर्तमान आंतरिक सुरक्षा परिदृश्य तथा केरिपु बल की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए गृह मंत्रालय ने निम्न प्रकार बल के विस्तार का अनुमोदन किया है :– **2000-2001 - 72 कंपनियां, 2001-2002 - 25 कंपनियां, 2002-2003 - 28 कंपनियां - 13 बटालियन, 2003-2004 - 22 बटालियन, 2004-2005 - 25 बटालियन - 07 ग्रुप केन्द्र,**

बल के विस्तार से कम्पनी स्तर से लेकर निदेशालय स्तर तक भिन्न-भिन्न कार्यालयों के कार्य में आनुपातिक वृद्धि होगी। तदुनसार, गृह मंत्रालय ने अतिरिक्त जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के लिए सहायक तथा पर्यवेक्षकीय स्टाफ के रूप में महानिदेशालय स्तर पर 15 अतिरिक्त पद, उ०म०नि० (4 उमनि कार्यालयों में प्रत्येक में 61 पद) स्तर पर 244 अतिरिक्त पद, ग्रुप केन्द्र (4 ग्रुप केन्द्रों में प्रत्येक में 17 पद) स्तर पर 68 अतिरिक्त पद तथा बटालियन (101 बटालियनों में प्रत्येक में 10 पद) स्तर पर 1010 अतिरिक्त पद स्वीकृत किए हैं। उपरोक्त स्वीकृति में चार उप महानिरीक्षक, चार कमान्डेंट तथा नौ प्रशासनिक अधिकारी के पद भी शामिल हैं। आगामी वर्षों में स्थापित होने वाली नवस्थापनाओं के लिए सहायक तथा पर्यवेक्षकीय स्टाफ की स्वीकृति के लिए प्रस्ताव भी गृह मंत्रालय को भेजा गया है तथा जिसे स्वीकार कर लिए जाने की संभावना है।

के.रि.पु. बल में पृथक परिवार आवास

अभी तक गृह मंत्रालय के नियमानुसार बल में सदस्यों के 14% के लिए आवासों का निर्माण किया जा रहा था। अभी गृह मंत्रालय ने यह सीमा बढ़ाकर 25% कर दी है। इसे पूरा करने के लिए लगभग 22000 आवासों का निर्माण होना है। अभी 7649 आवासों के निर्माण का कार्य चल रहा है। इसके अतिरिक्त चण्डीगढ़ (हलोमाजरा) टाईप (I) 14 टाईप (II) 316 कुल 330, भुवनेश्वर (ग्रुप केन्द्र) टाईप (I) 37 टाईप (II) 323 कुल 360, इलाहाबाद (ग्रुप केन्द्र) टाईप (I) 28 टाईप (II) 327 कुल 355, लखनऊ (ग्रुप केन्द्र) टाईप (I) 12 टाईप (II) 266 कुल 278, बंगलौर (ग्रुप केन्द्र) टाईप (I) 29 टाईप (II) 248 कुल 277, हैदराबाद (ग्रुप केन्द्र) टाईप (I) 35 टाईप (II) 267 कुल 302, कोयम्बतुर के०प्र०का-II) टाईप (I) 10 टाईप (II) 130 कुल 140, नागपुर (ग्रुप केन्द्र) टाईप (I) 22 टाईप (II) 157 कुल 179, जालन्धर (कैम्प स्थल) टाईप (I) 07 टाईप (II) 137 कुल 144, पुणे (ग्रुप केन्द्र) टाईप (I) 19 टाईप (II) 134 कुल 153 तथा अहमदाबाद (ग्रुप केन्द्र गांधीनगर) टाईप (I) 11 टाईप (II) 111 कुल 122, सब कुल मिलाकर 2640 विभिन्न प्रकार के पृथक आवास परिवारिक क्वार्टरों के निमार्ण के प्रस्ताव पर कार्रवाई की जा रही हैं।

उपर्यक्त स्थानों पर अतिरिक्त पारिवारिक क्वार्टरों के निर्माण से लम्बे समय से चली आ रही हमारी परिवारिक आवास की आवश्यकता काफी हद तक पूरी हो जाएगी।

वसंत कुंज, नई दिल्ली में अधिकारियों के लिए पारगमन तथा हॉस्टल का निर्माण

भारत सरकार ने केरिपु बल के अधिकारियों के पारगमन हॉस्टल के निर्माण के लिए बसंत कुंज, नई दिल्ली में 2 एकड़ भूमि अधिग्रहीत करने की स्वीकृति प्रदान कर दी है। भूमि को दिल्ली विकास प्राधिकरण से अधिग्रहीत कर लिया गया है तथा स्थल का सर्वेक्षण नक्शा तैयार कर लिया गया है। भवन के निर्माण के लिए योजना केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के प्राधिकारियों द्वारा बनाई जा रही है।

इस स्थल पर जो भवन बनेगा उसमें केरिपु बल के समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए सार्वजनिक हॉल का निर्माण होगा। इस हॉल को आवश्यकतानुसार विभिन्न सहारोहों के आयोजन के लिए प्रयोग में लाया जायेगा।

2002-2003 के लिए के.रि.पु.बल शिक्षण निधि से छात्रवृत्ति

शैक्षणिक वर्ष 2002-03 में के.रि.पु.बल शिक्षा निधि के सदस्यों से बच्चों को छात्रवृत्ति स्वीकृत करने के लिए निर्धारित प्रपत्र में आवेदन पत्र मागे गए हैं। निम्नलिखित सारणी अनुसार आवेदन प्रस्तुत किया जाये।

क) स्कूल स्तर की छात्रवृत्ति

रेंज पु.उ.म.नि. कार्यालयों को मामले प्रस्तुती करने के लिए 31.12.2002 निर्धारित की गई हैं।

रेंज पु.उ.म.नि. मेरिट सूची को अंतिम रूप दे कर महानिदेशालय को 31 जनवरी 2003 तक मांग प्रस्तुत करेगें।

ख) कालेज स्तर/तकनीकी श्रेणी तथा बल के मृतक कार्मिकों के बच्चों को छात्रवृत्ति (स्कूल / कालेज / तकनीकी स्तर) :- छात्रवृत्ति प्रदान करने के लिए आवेदन 31 दिसम्बर 2002 तक महानिदेशालय को भेजने होगें। उपर्युक्त निर्धारित समय के बाद भेजे गये आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे। सभी सेवारत कर्मचारियों के ध्यान में यह बात लाई जाती है कि छात्रवृत्ति चालू वर्ष अर्थात् 2002-03 में अध्ययनार्थ स्वीकृत की जाएगी। केरिपुबल शिक्षा निधि से छात्रवृत्ति की स्वीकृत्ति हेतु पहले से ही प्रचलित निर्धारित फार्म के साथ वर्ष 2001-02 की अंक तालिका संलग्न की जानी है। मेरिट सूची वर्ष 2001-02 में प्राप्ताकों के आधार पर बनाई जाएगी, परन्तु छात्रवृत्ति इस चालू वर्ष अध्ययनार्थ अर्थात् 2002-03 हेतु प्रदान की जाएगी। महानिदेशालय/संबंधित रेंज पुलिस उप महानिरीक्षकों को छात्रवृत्ति के मामले भेजते समय आवेदन-पत्र के साथ निम्नलिखित दस्तावेज संलग्न किए जाएं। यदि कोई अधूरा आवेदन पत्र/दस्तावेज प्राप्त होता है, तो उसे सीधे अस्वीकार कर दिया जाएगा :-

पिछले वर्ष की अंक तालिका, कार्यालय अध्यक्ष द्वारा विधिवत् हस्ताक्षरित शिक्षा निधि के नियमित सदस्य होने से संबंधित प्रमाण-पत्र, संबंधित स्कूल/कालेज से दसवीं/बारहवीं/ स्नातक परीक्षा पास करने के बाद अध्ययन जारी रखने से संबंधित वास्तविक प्रमाण-पत्र, तथा कोर्स की वास्तविक अवधि दर्शाते हुए संबंधित संस्थान (तकनीकी/गैर तकनीकी कोर्सों के मामले में) से इस आशय का प्रमाण-पत्र कि अभ्यार्थी वास्तव में विद्यार्थी है तथा भारत सरकार/ए.आई.सी.टी.ई./ यू.जी.सी. द्वारा संस्थान मान्यता प्राप्त है अथवा नहीं का उल्लेख किया जाना चाहिए।

सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहिणी ने मनाया वार्षिक उत्सव

शैक्षिक संस्थानों को अपनी गतिविधियां इस प्रकार संचालित करनी चाहिए जिससे कि देश के भविष्य, विद्यार्थियों की छिपी प्रतिभा उजागर हो सकें तथा उनको विकसित होने का मौका मिले। सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 30 सितम्बर 2002 को रोहिणी में बोलते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार ने स्कूल की उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुए विद्यार्थियों का आहवान किया कि वे आने वाले वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में अपने स्तर को ऊंचा उठाने के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी नाम रोशन करें।



स्कूल के शक्ति हाउस के छात्र-छात्राओं को ओवर आल चैम्पियनशिप की ट्राफी प्रदान करते बल के अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष श्री अशोक गांगुली ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल प्रतिष्ठा तथा उत्कृष्टता की मिशाल है। उसने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सारे प्रयोग सफलतापूर्वक पूरे किये हैं। उन्होंने कहा कि आज ऐसी शिक्षा की जरूरत है जो सृजनात्मक, सक्षम तथा सम्प्रेषणात्मक हो।

इससे पूर्व विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश ने स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। उप महानिरीक्षक तथा विद्यालय के प्रबन्धक श्री पी.जे. शेट्टी ने इस मौके पर अपने विचार प्रकट किये। विद्यार्थियों ने इस अवसर पर एक सांस्कृतिक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया।



वार्षिक दिवस के अवसर पर नृत्य करती स्कूल की छात्राएं

उत्कृष्ठता की मिशाल “सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल, रोहिणी”

सी०आर०पी०एफ० पब्लिक स्कूल, रोहिणी की गिनती दिल्ली के सर्वोत्तम विद्यालयों में होती है। यह एक गर्व की बात है। इस विद्यालय के माध्यम से सी०आर०पी०एफ० के उन कार्मिकों के बच्चों को जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है तथा वे दूर दराज क्षेत्रों में तैनात रहने के कारण अच्छे विद्यालय में पढ़ाने में असमर्थ है, को अपने बच्चों को एक बहुत अच्छे विद्यालय में पढ़ाने का सु-अवसर मिला है। विद्यालय के छात्रों का गत वर्ष का परीक्ष परिणाम निम्न प्रकार रहा है :-

दसवी कक्षा : इस वर्ष कुल 140 विद्यार्थी परीक्षा में बैठे जिनमें से 33 प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

परीक्षा में सर्वाधिक अंक : सौरभ सिन्हा ने 94.4 प्रतिशत तथा प्रवीण चौधरी ने 93.00 प्रतिशत।



सौरभ सिन्हा



प्रवीन चौधरी

27 छात्रों ने सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की जबकि 19 छात्रों ने 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए तथा 45 छात्रों ने 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए।

बारहवी कक्षा : इस वर्ष परीक्षा में 111 विद्यार्थी बैठे जिनमें से 54 विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की।



संदीप कुमार



राकेश यादव



वरूण मित्तल



प्रीति राणा

संदीप कुमार ने विज्ञान कम्प्यूटर वर्ग में 95.8% जबकि वाणिज्य वर्ग में वरूण मित्तल 87.4%, जीव विज्ञान वर्ग राकेश यादव 85.4%, तथा कला वर्ग में प्रीति राणा 83.2%, अंक अर्जित किए।

19 छात्रों ने सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की जबकि 12 ने 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए तथा 61 छात्र-छात्राओं ने 75 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित किए।

के०रि०पु०बल स्कूल, जवाहर नगर हैदराबाद-मुनाफा रहित सेवा उन्मुख संस्थान

विजय कुमार वर्मा
उप कमाण्डेन्ट

यह मानते हुए कि शिक्षा एक बहुत ही महत्वपूर्ण कल्याणकारी कार्य है जिसका लाभ अपने कार्मिकों तक पहुँचाना चाहिए। के०रि०पु०बल ने वर्ष 1986 में (सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 1960 के अर्न्तगत) के०रि०पु०बल कर्मचारी शिक्षण सोसायटी का गठन किया ताकि बल कर्मियों के बच्चों की शिक्षण जरूरतों को पूरा किया जा सके। जवाहर नगर हैदराबाद में स्थिति केरिपुबल स्कूल, के प्रमुख गौरवशाली संस्थानों में से एक है।

प्रबंधन (प्रबंध कौशल) - केरिपुबल के महानिदेशक इस संस्था के पदेन अध्यक्ष हैं और बल के वरिष्ठ अधिकारी इसके अन्य आफिस बीयरर्स हैं। निर्धारित मासिक फीस देने वाले के०रि०पु०बल के सभी कर्मी इस संस्था के सदस्य हैं।

दक्षिणी सेक्टर, के०रि०पु०बल के महानिरीक्षक इस स्कूल के अध्यक्ष, पुलिस उप महानिरीक्षक, के०रि०पु०बल, हैदराबाद मैनेजर और अपर पु० उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, रंगारेड्डी अपर मैनेजर हैं।

विद्यालय - के०रि०पु०बल जवाहर नगर सिकन्दराबाद स्कूल की स्थापना 1996-97 में 45 छात्रों से बाल विहार से तीसरी कक्षा तक हुई थी। वर्तमान में इस स्कूल में 468 की नफरी और यहाँ बाल विहार से दस तक की कक्षाएं हैं।

सात करोड़ रुपये की लागत से बने इस स्कूल प्रोजेक्ट में बुनियादी भवनों, गौण भवन, छात्र-छात्राओं के छात्रावास, इण्डोर/आऊटडोर मैदान आदि हैं। आगामी शिक्षा सत्र से इस विद्यालय को आन्ध्र प्रदेश राज्य के इंटरमीडियेट बोर्ड से जोड़ने का प्रस्ताव भी है।

इस स्कूल का उद्देश्य छात्रों के व्यक्तित्व में आवश्यक दक्षता, मनोवृत्ति व व्यवहारिक पद्धति पर आधारित गतिविधियों के माध्यम से व्यापक विकास करना है। यह स्कूल आत्म अनुशासन को बढ़ावा व नेतृत्व के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देता है। स्कूल प्रशासन यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि स्कूल के प्रत्येक छात्र का खुशहाल बचपन बीते और वह सीखने की प्रक्रिया का आनन्द उठाए और इसलिए यहाँ का पाठ्यक्रम शिशु आधारित है।



सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल जवाहर नगर ग्रुप केन्द्र के.रिपु.बल रंगारेडडी का भवन



युवा मामलों के आई.ए.एफ. कमिश्नर श्री एल.वी. सुब्रामणियम से पुरस्कार प्राप्त करते हुए सी.आर.पी.एफ. स्कूल, जवाहर नगर के विद्यार्थी

स्टाफ - उच्च अर्हता प्राप्त और समर्पित शिक्षक दल जिसका चयन के०रि०पु०बल के उच्चाधिकारियों के बोर्ड द्वारा निष्पक्ष स्पर्धा के माध्यम से किया जाता है और जिन्हें एन०सी०ई०आर०टी० के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित और

एन०सी०ई०आर०टी० में कैरियर गाईडेंस कोसेंज में प्रशिक्षित प्राचार्य श्री हमीद के श्रेष्ठ मार्गदर्शन में पदस्थ किया जाता है ताकि अच्छे प्रयास कर श्रेष्ठ शैक्षिक स्तर प्राप्त किया जा सकें।

प्रवेश - यद्यपि यह स्कूल मूलरूप से बल कर्मियों के बच्चों के लिए ही है फिर भी उचित विचार-विमर्श के बाद 60 प्रतिशत के०रि०पु०बल और 40 प्रतिशत सिविल बच्चों को प्रवेश की अनुमति है।

फिर भी यह विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश, सीटों की उपलब्धता पर निर्भर करता है। यह प्रवेश छात्रों के अंग्रेजी, हिन्दी, गणित और सामान्य ज्ञान के मानक टेस्ट में उनकी दक्षता के आधार पर दिया जाता है। टेस्ट किसी निर्धारित टेक्सट बुक पर आधारित न होकर सामान्य प्रकृति का होता है। किंडरगार्डन में वे ही बच्चें प्रवेश के पात्र होते हैं जिनकी प्रवेश वर्ष की पहली अप्रैल को आयु 04 वर्ष है। अन्य कक्षाओं में प्रवेश की आयु की गणना भी तदुनसार ही की जाती है। शैक्षिक सत्र में पंजीकरण के लिए प्रवेश की अंतिम तिथि उस वर्ष की 31 जुलाई निर्धारित है।

स्कूल पाठ्यक्रम - इस स्कूल का पाठ्यक्रम सी०बी०एस०ई०, नई दिल्ली की सिफारिशों पर आधारित है। इसमें निम्नलिखित विषय सम्मिलित हैं- अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, गणित, सामान्य विज्ञान व समाज शास्त्र। सभी कक्षाओं में एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा प्रकाशित 'ए' कोर्स की पुस्तकें ही लागू की जाती हैं।

मुल्याकंन - व्यापक प्रणाली अपनाते हुए नियत कार्य के टेस्ट, यूनिट टेस्ट व सत्रांत परीक्षा के माध्यम से लगातार मूल्याकंन किया जाता है। ये टेस्ट बच्चों के उनके शैक्षिक कार्य और स्कूल द्वारा आयोजित अन्य गतिविधियों में भाग लेते समय नियमित रहने के प्रति प्रेरित करते रहते हैं। पूरे शैक्षिक सत्र में किए गये मूल्याकंन की समेकित रिपोर्ट में प्राप्त अंकों के आधार पर ही कक्षोन्नति का निर्धारण किया जाता है। अगली कक्षोन्नति के लिए कम से कम 40% अंक होने चाहिए।

कॉ-करीकुलर गतिविधियाँ - बच्चों में अधिक रूचि और सीखने की जागरूकता पैदा करने के लिए आर्ट क्राफ्ट, नृत्य और संगीत, खेलकूद और ड्रामेटिक्स, कम्प्यूटर विज्ञान, गार्डिंग, स्काउट्स व गाईड्स, एन०सी०सी० आदि की सुविधाएं दी गई है। उक्त के अतिरिक्त टेबिल टेनिस, बैडमिंटन जैसे अन्य इंडोर गेम्स की भी शिक्षा दी जाती है। स्कूल परिसर में बास्केटबाल, वालीबाल, टेनिस, टेनिकोयर आदि के मैदान भी उपलब्ध हैं।



सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहिणी के विद्यार्थियों द्वारा लगाई प्रदर्शनी का अवलोकन करते बल के महानिदेशक

समय-समय पर पेटिंग, कवितापाठ, निबंध लेखन, वाद-विवाद, वाक तात्कालिक भाषण, रोल-प्ले, क्विज, संगीत आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। बच्चों में साहसिक उत्साह उत्पन्न करने के लिए पर्यटन और अमोद प्रमोद की व्यवस्थाएं भी की गई हैं जो शैक्षणिक व मनोरंजन दोनों प्रकार की होती हैं। स्कूल को चार प्रभाग में बाँटा गया है, जिनके नाम हैं - शिवाजी, टेरेसा, आजाद व रमन। यह विभाजन खेलकूद व अन्य गतिविधियों में स्वस्थ स्पर्धा व आपसी सहयोग पैदा करती हैं।

स्कूल व घर की खाई को पाटने के लिए स्कूल में अभिभावकों एवं शिक्षकों की नियमित बैठक कर घनिष्ठ सम्पर्क बनाए रखा जाता है। इसके अलावा अभिभावकों को व्यक्तिगत रूप से प्राप्तः 9 बजे तक प्रत्येक शुक्रवार को अध्यापक से मिलने की छूट प्रदान की गई है। प्रत्येक अभिभावक पीटीए का सदस्य है और उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे स्कूल व छात्रों के विकास में प्रोन्नति के लिए स्कूल प्राधिकारियों से सहयोग करे।

स्कूल अपनी ओर से छात्रों को वाहन सुविधा देता है। जो छात्र इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं उन्हें स्कूल द्वारा निर्धारित स्टाप से लाया और वहीं छोड़ा जाता हैं। विज्ञान की प्रत्येक संकाय के लिए स्कूल ने अलग से प्रयोगशाला की व्यवस्था कर रखी है। इसके अलावा पुस्तकालय, आर्ट, म्यूजिक, नृत्य, कम्प्यूटर, मेडिकल निरीक्षण,

आडियो विजुअल, शारीरिक व स्वस्थ शिक्षा, पुस्तकों, यूनेफाम आदि के लिए अलग से कमरों की व्यवस्था की गई है।

स्कूल डायरी में वे सभी सूचनाएं दी गई है जो स्कूल से संबधित हैं और जिसकी वर्ष के दौरान अभिभावकों, छात्रों व अध्यापकों को आवश्यकता पड़ती है। स्कूल डायरी में आवश्यक सूचना भरना अभिभावकों के लिए महत्वपूर्ण है। प्रत्येक छात्र को नियमों व विनियमों का पालन करना आवश्यक है।

छात्र/छात्राओं को निम्नानुसार निर्धारित स्कूल यूनीफार्म पहनना भी अनिवार्य है :-

छात्र (बालक) आधी बाजू की सफेद कमीज, भूरे रंग की टेरी काटन नेकर, काले जूते, दो धारी वाली जुराबें, स्कूल बेल्ट और स्कूल टाई।

छात्राएं (बालिकाए) आधी बाजू की सफेद कमीज, भूरे रंग की टेरीकॉटन ट्यूनिक, काले जूते, दो धारी वाली जुराबें, स्कूल बेल्ट स्कूल टाई तथा नीले रीबन का हेयर बैंड।

यदि अभिभावक अपने बच्चों की प्रगति जानने हेतु स्कूल प्रमुख या अध्यापक से चर्चा करना चाहते हैं तो उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे मिलने के समय का पालन करें। पालक किसी भी कार्य दिवस सुबह 10.30 से 11.30 बजे के बीच या मिलने का समय लेकर स्कूल प्रमुख से भेट कर सकते हैं। केवल शुक्रवार को सुबह 9 से 10 बजे के बीच ही अध्यापक पालकों से चर्चा करने के लिए उपलब्ध रहेगें। लम्बे समय तक अनुपस्थिति होने या स्कूल कार्य में असंतोषजनक प्रगति होने या अनुशासनहीनता होने पर प्राचार्य को यह अधिकार है कि वह छात्र का नाम स्कूल रोल से हटा दे।

स्कूल का कार्यालय सभी कार्य दिवसों पर सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से दोपहर 01 बजे तक और शाम 02 बजे से 05 बजे के बीच खुला रहेगा। सभी प्रकार की फीस 12 माह के लिए वसूली जाएगी जिसका अग्रिम भुगतान तिमाही/वार्षिक किया जाएगा। फीस, स्टेट बैंक आफ हैदराबाद के माध्यम से प्राप्त की जाती है।

होस्टल - 10 एकड़ की जमीन पर स्कूल से संलग्न एक होस्टल भी है जो जरूरतमंद छात्रों को आवास की सुविधा उपलब्ध कराता है। के०रि०पु०बल के होस्टल में अभिवृद्धि की गतिविधियां, उत्कृष्ट अध्ययन की आदत, विभिन्न खेलों में कोचिंग, पौष्टिक भोजन और इसे घर जैसा बनाने जैसी कुछ विशेषताएं हैं।

केरिपुबल स्कूल, जवाहर नगर के विद्यार्थियों की उपलब्धियां



बंगलौर में क्रिकेट कोचिंग कैम्प के दौरान श्री वेकटपति राजू से सर्व श्रेष्ठ आल राउन्डर की ट्राफी प्राप्त करते हुए मास्टर कनिष्क नायडू

हिंदू यंग वर्ल्ड अन्तर राज्य पेटिंग प्रतियोगिता में मास्टर पी० श्रवण कुमार, कक्षा-9 ने दूसरा स्थान प्राप्त कर रू० 1,000/- का पुरस्कार जीता। स्कूल के मास्टर निखिल चन्द्र, कक्षा-7 ने हिंदू यंग वर्ल्ड अन्तर राज्य पेंटिंग प्रतियोगिता में 4000 प्रतियोगियों में सांत्वना पुरस्कार जीतकर रू० 200/- का पुरस्कार जीता।

पहेली टीम ने सत्यम पब्लिक स्कूल में आयोजित द्वि-नगरों के 20 पब्लिक स्कूलों में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

कलाभारती बाल कला संस्थान, महाराष्ट्र द्वारा आयोजित सुलेख तथा पेटिंग प्रतियोगिता में मास्टर शशिधर रेड्डी, कक्षा-7 ने सुलेख प्रतियोगिता में कला ज्योति पुरस्कार जीता है तथा मास्टर पी० श्रवण कुमार, कक्षा-9 ने पेटिंग प्रतियोगिता में कला ज्योति पुरस्कार जीता है।

गाँधी ज्ञान मंदिर, कोटि द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में स्कूल के मास्टर रवि कुमार चौबे, कक्षा-7 ने 200 स्कूलों की हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा मास्टर मुकेश, कक्षा-7 ने हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त किया जबकि मास्टर आदर्श, कक्षा-6 ने "वर्तमान पीढ़ी में योगा" विषय पर अंग्रेजी में निबन्ध लेखन में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

लगभग 20 विद्यार्थियों ने सितम्बर, 2001 में पी.आई.एस. बशीर बाग में प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा आयोजित ध्वनि प्रदूषण विचार गोष्ठी में भाग लिया।

स्कूल के कक्षा-10 के छात्र पी० श्रवण कुमार एक उत्कृष्ट बहुमुखी विद्यार्थी है,

जिसके पास अनेकों पुरस्कार तथा उपलब्धियां हैं। उसने हिंदू यंग वर्ल्ड का नगद पुरस्कार प्राप्त किया है। रामोजी फिल्म सिटी का युवा कलाकार का विशेष पुरस्कार, जे.एन.टी.यू. का स्वर्ण पदक तथा विश्व पर्यावरण दिवस के संबन्ध में क्ले माडलिंग में उत्कृष्ट कार्य हेतु आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री चन्द्र बाबू नायडू से प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

स्कूल के छात्र पी० कनिष्क नायडू, कक्षा-7 ने बंगलौर में आयोजित क्रिकेट कैम्प में वेंकटपति राजू से सर्वोत्तम आल राऊडंर ट्राफी प्राप्त की है।

भारतीय स्पेशल पुलिस यूनिट के अविस्मरणीय सुखद क्षण

अनुपम शर्मा, उप कमान्डेंट
100 बटालियन, द्रुत कार्य बल

भारतीय स्पेशल पुलिस युनिट के 160 व्यक्तियों का तीसरा कंटीजैंट 29 अगस्त 2001 को कोसोवो के लिए रवाना हुआ। कंटीजेंट इन्दिरा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट पर 0330 बजे पहुँचा। कंटीजेंट के प्रत्येक सदस्य को उच्च अनुभूति हो रही थी। क्योंकि सभी संयुक्त राष्ट्र संघ मिशन के तहत पहली बार विदेश जा रहे थे तथा उनमें से अधिकांश प्रथम बार हवाई जहाज से यात्रा कर रहे थे। उनकी जिज्ञासा व उत्सुकता के प्रसन्नातिरेक से उनका आराम हराम हो गया था। यहीं से लेकर हमारे कंटीजेंट के कोसोवो में मिशन में रहने तक कुछ आनंदायी सुखद क्षण इस प्रकार है :-

जाँच के पश्चात् हम लोगों ने विश्राम कक्ष में कुछ समय इंतजार किया। इस अवधि में कुछ कार्मिक एयरपोर्ट की सौन्दर्य व चमक दमक देखने के लिए चले गये तथा कुछ प्यासे मिनरल वाटर लेने के लिए चले गये, क्योंकि उन्हें मुफ्त पानी के स्रोत का पता नहीं चला। जब उनसे मिनरल वाटर की एक बोतल की कीमत रू० 70/- मांगी गई तो वे गहन आश्चर्य में पड़ गए और उन्होंने मुझसे सस्ते दर में खरीदने के लिए कुछ करने के लिए कहा। इस तरह विशिष्ट परिस्थिति में हमारे जवानों के लिए यह पहला अनुभव था। उनमें से अधिकतर “पीसीओ” की ओर अपने घरों में फोन करने के लिए भागे तथा मैंने उन्हें एयरपोर्ट वर्णन का सीधा प्रसारण करते हुए सुना। उनमें से कुछ इस प्रकार है :-

अरे यार बहुत बड़ा एयरपोर्ट है, दिल्ली के आई.एस.बी.टी. और रेलवे स्टेशन से भी ज्यादा भीड़-भाड़ है तथा एयरपोर्ट के अंदर सिर्फ विदेश जाने वाले ही लोग जा

सकते है। चाय का कप 50/-रू० का है। पर क्या हुआ मैंने भी पी लिया। और तो और सादे पानी की बोतल 70/-रू० की है, रास्ते के लिए एक खरीद ही ली।

हमारे टुकड़ी के भोलेपन की एक और घटना है जो उनकी निष्ठा, समर्पण एवं भोलेपन को दर्शाता है। प्रत्येक कार्मिक अपना सामान स्वयं ट्राली में ले जा रहे थे। जवानों ने अधिकारियों को समान ले जाते हुए देखा तो उन्हें मानवीय अनुभूति हुई और उन्होंने कहा कि "साहब आप अपनी ट्राली हमें दे दो। यह हमें अच्छा नहीं लगता है कि आप हम लोगों की मौजूदगी में समान उठा रहे हैं। लोग भी क्या कहेंगे कि कितने अनुशासनहीन जवान हैं जो कि अपने अफसरों से समान उठवा रहे हैं। हमारी टुकड़ी की बात पर हम सभी अधिकारी कुछ हद तक उनकी भावना का आदर करते हुए विनम्रता से उनसे कहा कि यह उनके लिए बेइज्जती नहीं है तथा जब वे अधिकारियों से संतुष्ट नहीं हुए तो उन्हें बताया गया कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं का समान ले जाना अनिवार्य है तब कार्मिक संतुष्ट हुए।

उड़ान के दौरान एक जवान ने दूसरे से पूछा "अब हम कौन से देश से गुजर रहे है" दूसरा भी सच्चाई से अनभिज्ञ था तुरन्त वह उत्तर देने में हाजिर-जबाब था, उसने कहा "क्या तुम्हें विश्व के सभी देशों का ज्ञान है? जिस किसी ने यह बातचीत सुनी हंसे बिना नहीं रह सका।

उड़ान के दौरान जब खाना वितरित किया जा रहा था तो उस समय एक और हास्य घटना घटी। वितरित की गई खाद्य सामग्री तुलनात्मक दृष्टि से हमारे जवानों की साधारण खुराक से कम मात्रा में दी गई थी। खाना प्राप्त करने के पश्चात दो जवानों के बीच हुई बातचीत इस प्रकार से है :

ए :- उन्होंने इतना कम खाना क्यों दिया है?

बीः उन्होंने जो कुछ भी दिया उसे बिना किसी तर्क के चुपचाप खालों क्योंकि इसका एक ही कारण अच्छा है।

एः वह क्या कारण? मुझे बताएं?

बीः जैसा कि तुमने देखा होगा। कि हवाई जहाज में केवल 4 शौचालय हैं और हमारी नफरी 160 है। अधिक भोजन करने के बाद यदि हम सब शौच क्रिया के लिए जाने लगे तो शौचालय छोटा होने से उसकी जल्दी सफाई करनी पड़ेगी और तुम्हें मालुम है कि हवा में ऐसा करना संभव नहीं है। और इसके बाद "ए" नामक जवान कम भोजन देने के तर्कसंगत कारण से संतुष्ट हो गया।

कोसोवो में सेरबियन और अल्बेनियम के बीच उग्र तनाव है और उनके बीच अभी तक घृणा का वातावरण बना हुआ है। सेरबियन भाषा में डोबरो का अर्थ अच्छा होता है और अल्बेनियन में इसे मीर बोला जाता है। प्रेस्टीना की जनसंख्या में अल्बेनियनों का बहुमत है इसलिए यह स्वाभाविक है कि आरंभिक अवस्था में हमारी अधिकांश अन्योन्य क्रिया अल्बेनियन के साथ होती है। जब हमने पहली सेरबियन वी०आई०पी० की सुरक्षा ड्यूटी की तो जवान उनके आदर में उन्हें मीर कहकर सम्मान देते हैं इससे

वी०आइ०पी० बहुत नाराज होकर गुस्सा करते है और सुरक्षा दस्ते के प्रभारी को शिकायत की जिसे बाद में जवान का आशय उन्हें समझाते हुए मामले को शांत किया। इसके बाद सभी को अनुदेश दिए गए कि अंग्रेजी के अलावा स्थानीय भाषा न बोले। प्रिस्टिना में सभी को डाईनिंग हाल में खाना पड़ता है और कटलरी को उपयोग करना पड़ता है। प्रिस्टिना का दौरा करते समय जब पुलिस महानिरीक्षक, द्रुत कार्य बल लंच टाइम में डाइनिंग हाल में गए उस समय सभी जवान केवल चम्मचों का उपयोग करते हुए स्वयं के तरीके से खाना खा रहे थे। पु०म०नि० ने जब उनसे पूछा कि क्या वे चाकू और काँटे का उपयोग करना जानते है तो सभी ने सकारात्मक उत्तर दिया। पु०म०नि० को प्रभावित करने के लिए उन सभी ने चम्मचों को छोड़ दिया और छूरी-काँटे से खाना शुरू कर दिया। जब पु०म०नि० ने एक जवान से पूछा कि वह चाकू से दाल और चावल कैसे खा रहा था तब जवान ने इसका प्रदर्शन करने का निष्फल प्रयास किया। उस समय एक काँटे से केला खा रहा था। इसके बाद सभी को चम्मच और काँटे का उपयोग करना सिखलाया गया और जब कंटीजेंट लौटकर भारत आया उस समय अधिकांश जवानों को कटलरी का उपयोग करना मालूम था।

कोसोवो में अंतर्राष्ट्रीय पुलिस अधिकारियों द्वारा भारतीय विशेष पुलिस यूनिट को भीड़ नियंत्रण में विशेषज्ञता प्राप्त रूप में जाना जाता है। इसलिए इस तरह की ड्यूटी के लिए सभी क्षेत्रों में तैनात किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय अधिकारियों का भारतीय विशेष पुलिस यूनिट पर प्रभावपूर्ण और कार्य निपुणता का विश्वास होने के कई कारण है लेकिन भारतीयों पर विश्वास का केवल एक ही प्रमुख कारण यह है कि इसे भीड़ नियंत्रण के लिए सर्प का उपयोग करने के रूप में किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीयजनों के बीच यह कहा जाता है कि हम भीड़ भगाने के लिए गैर विषैले सर्पो का उपयोग करते हैं और किसी में भी यह जानने का साहस नहीं किये सर्प विषैले हैं अथवा नहीं, यही कारण है कि हम भीड़ पर नियंत्रण कर सकते हैं और बिना बल प्रयोग के ही भीड़ को तितर-बितर कर देते है, फिर भी किसी को कोई हानि नहीं होती। भीड़ भी यह कहती है कि उग्र मत बनों वरना भारतीय पुलिस दस्ते सांप छोड़ देंगे। पुलिस आयुक्त सहित कई वरिष्ठ पुलिस अधिकारी एवम् संचलन के निदेशक तक हमें छुपाये हुए उन गैर विषैले सर्पो को दिखाने का आग्रह करते हैं जिनका हम अपनी ड्यूटी के समय उपयोग करते हैं। कंटीजेंट में किसी को भी मालूम नहीं कि किसने इस तरह की अफवाह फैलाई, लेकिन यह किसी तरह से हानिकारक नहीं है और राज्य मिशन अवधि में प्रभावपूर्ण करने के लिए प्रभावपूर्ण है।

ऐसी कहावत है कि जब सम्प्रेषण के सारे साधन विफल हो जाते हैं तो शारीरिक इशारों की भाषा सर्वोत्तम तरीका रह जाता है और भारतीय विशेष पुलिस यूनिट को इसका बहुत अच्छा अनुभव है। जोर्डन का एक अधिकारी (जो केवल अरेबिक ही जानता है) और भारतीय अधिकारी आपस में लंबे समय तक बात करते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि दोनों को एक दूसरे की समझ में कुछ नहीं आता। यह केवल एक ही उदाहरण नहीं है बल्कि कोंटीजेंट के अधिकांश व्यक्तियों पर ऐसा लागू होता है। इसके पीछे कारण यह है कि कुछ राष्ट्रों के कुछ अधिकारियों को अंग्रेजी नहीं

आती। इसलिए ऐसी स्थिति में शारीरिक संकेत की भाषा की आवश्यकता होती है। अंतर्राष्ट्रीय और स्थानीय स्टाफ हमारे जवानों द्वारा बोली जाने वाली अंग्रेजी भाषा भली भांति समझते हैं। एक सामान्य बातचीत का उदाहरण इस प्रकार है :-

ए : आप कैसे हैं?

बी : हाँ अच्छा हूँ और आप।

ए : इतना बुरा नहीं।

बी : आप कल मेरे घर नहीं आए?

ए : मैं यहाँ आ गया आपके यहाँ नहीं।

बी : आप भारत कब जाएंगे?

ए : मालूम नहीं बहुत बाद में।

मैं समझता हूँ इसे समझाना कोई बड़ी बात नहीं है विशेषकर जब आप शारीरिक इशारों को भी उपयोग कर रहे हों। यद्यपि यह महत्वपूर्ण घटनाएं नहीं है फिर भी हमारी स्मृति को सुखद स्पर्श देती हैं और कोसोवो में एक-साथ मिलकर काम कर रहे साथियों के साथ बात करते समय निश्चल आनंद देते हैं।

एड्स मानवजाति के लिए चुनौतीपूर्ण खतरा

डा० संजू सिंह, चि०अ०
ग्रुप केन्द्र-दो, केरिपुबल, अजमेर

पूरे विश्व में 8,000 से अधिक लोग प्रतिदिन एड्स के कारण मरते हैं। प्रत्येक घंटे में लगभग 600 लोग इससे संक्रमित होते हैं। प्रत्येक मिनट में एक बच्चा वाएरस की वजह से मर जाता है। विश्व एड्स दिवस के अवसर पर 01 दिसम्बर को जारी किए गये आंकड़े बताते हैं कि इस समय विश्व में 40 मिलयन से अधिक लोग इस वाएरस से पीड़ित हैं। इनमें से अधिकांश लोग सब सहारा अफ्रीका के हैं, लेकिन एशिया भी पीछे नहीं है क्योंकि एड्स की पकड़ पृथ्वी के चारों ओर फैलती जा रही है।

एच.आई.वी./एड्स के एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एक भारतीय प्रतिनिधि ने यह डींग मारी थी कि उनका देश इस बीमारी से अपेक्षाकृत बेहतर सुरक्षित है, क्योंकि भारतीय लोग नैतिक होते हैं, जो अपने पति/पत्नी के प्रति वफादार होते हैं। हालांकि उन पर विश्वास करना प्रलोभक हो सकता है किन्तु तथ्य तथा आंकड़े कुछ और ही बताते हैं। नवीनतम आंकड़ों तथा सांख्यकी के अनुसार इसकी नैतिक प्रकृति तथा भावनात्मक वफादारी के बावजूद भारत में अनुमानतः 4 मिलियन लोग इससे

प्रभावित हैं तथा एच.आइ.वी./एड्स फैलने में वृद्धि हो रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि आत्मतृष्टि तथा आत्म भ्रान्ति के अलावा ऐसी और कोई चीज नहीं है जिससे यह बीमारी और फैलेगी तथा यह दोनों ही हममें कूट-कूट कर भरी है। अन्य राष्ट्र इस मामले में अधिक व्यावहारिक है। इसलिए खतरे पर ध्यान देने का उनका रिकार्ड बेहतर है।

इस बीमारी से लड़ते हुए-जिसे एक्वायर्ड इम्युनों डेफीसियेन्सी सिंड्रोम का नाम दिया गया है या एड्स वास्तव में समय के विरूद्ध दौड़ रही है। यह विश्व या अफ्रीका या अकेले भारत के लिए ही नहीं है, बल्कि के०रि०पु०बल के लिए भी है, क्योंकि पलायनवादी कार्य इस विशेष बीमारी से लड़ने में किसी भी प्रकार सहायता नहीं करेगा।

इससे पहले कि एच.आई.वी./एड्स का संकट हमारे बल जो मुख्यतः पहले इससे अछूता था, के लिए खतरा बने, हमें विभिन्न उपायों से इसकी रोकथाम करनी होगी। जो व्यक्ति के०रि०पु०बल में भर्ती होने के लिए इच्छुक हैं, वे अपना शीघ्र एड्स परीक्षण करवा ले। यदि बाद में उनमें इसके वायरस पाए गये तो डाक्टरी तौर पर उन्हें अनुपयुक्त घोषित किया जाएगा और सेवा से निष्कासित कर दिया जाएगा। इस संदेश को केरिपुबल के सभी कार्मिकों को स्पष्ट रूप से बता दिया जाए, क्योंकि पूरे देश में एच.आई.वी. के मामलों की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

भर्ती के समय विस्तृत चिकित्सा परीक्षण के दौरान अन्य रक्त परीक्षण तथ्य विवरण चिकित्सात्मक अन्वेषणों के साथ मानव अधिकारों के उल्लघंन के बारे में अधिक सोचे बिना सही एड्स परीक्षण करना चाहिए। क्योंकि के०रि०पु०बल में एक व्यक्ति को राष्ट्र की रक्षा और सेवा करने के लिए भर्ती किया जाता है और यदि उस व्यक्ति को असैली कार्य सौंपने के लिए अक्षम पाया गया है तो ऐसा कोई कारण नहीं है, उसे बल में लिया जाए। हमें निश्चय ही अपने पूरे बल को इस महामारी के लिए खुला छोड़कर नहीं रखना है जिससे कि दूसरे स्वस्थ व्यक्तियों को इससे संक्रमित होने का अवसर हो।

संक्रमित बल कार्मिक या जिनमें इसके वायरस पाए जाते हैं उन्हें उच्च अनावरण रोग रोधन करवाना चाहिए। यह वह अवस्था है जहाँ दवाईयाँ अपना काम करना बंद कर देती हैं और संक्रमित व्यक्तियों से निजी निवारक उपाय करने के लिए कहा जाना चाहिए। यदि गर्भवती महिलाएं अपने पतियों द्वारा संक्रमित पाई जाती हैं तो उन्हें लिमोब्लेडिन दिया जाए जिससे पैदा होने वाले बच्चे में संक्रमण के अवसर कम हो जाते हैं।



रक्तदान जीवनदान, रक्तदान करती बल की महिला कर्मी

अन्य निवारक उपाय जैसे सभी स्तरों पर कैडर कोर्स पाठ्य चर्चा में विशिष्ट स्वास्थय शिक्षा कार्यक्रम को केवल सुरक्षित रखने के लिए ही नहीं शामिल करना चाहिए बल्कि उनकी रक्षा करने के लिए जो इस बीमारी की गिरफ्त में हैं । इससे एच.आई.वी./एड्स के प्रति जागरूकता बढ़ेगी तथा एड्स की स्थिर स्थिति पर पहुँचने में सहायता मिलेगी, क्योंकि इस बीमारी से लड़ने के लिए एक व्यक्ति को इसकी जानकारी होना तथा इसकी वास्तविकता के बारे में जानने की आवश्यकता है।

एड्स फैलने पर कुछ निवारक/नियंत्रक उपाय जिनका बल के प्रत्येक व्यक्ति को सख्ती से अनुसरण करना चाहिए, निम्न प्रकार है :-

सुरक्षित यौन संबन्ध :-एक व्यक्ति को विभिन्न महिलाओं से यौन संबंध नहीं रखना चाहिए और यांत्रिक चीजों (अर्थात निरोध तथा डायाफ्रेग्रेम्स) का संभोग के दौरान प्रयोग करना चाहिए। केवल प्रयोज्य सिरिंजे तथा सुईयां प्रयोग करनी चाहिए, क्योंकि दूषित सिरिंज या सूई त्वचा में लगाने वाले अन्य किसी यंत्र के जरिए संक्रमित होने का खतरा रहता है।

सरक्षित गर्भावस्था :- एच.आई.वी. पीडित महिलाओं को गर्भ धारण नहीं करना चाहिए।

रक्त संचारण :- अस्पताल/प्रयोगशाला से एच.आई.वी वायरस के परीक्षण के लिए अजनबी व्यक्ति से रक्त स्वीकार नहीं करना चाहिए। इस बात का ध्यान रखा जाए कि रक्त संचारक तथा उक्त उत्पादक इस बीमारी को फैलाने में मुख्य भूमिका

है। यद्यपि इस बात का कोइ प्रमाण नहीं है कि एच.आइ.वी. मच्छरों या अन्य किसी कीड़े, मकोड़े, घरेलु वस्तुएं सहित संक्रमित व्यक्तियों से अनियत सामाजिक संपर्क या भोजन या जल के द्वारा फैलता है।

इन उपायों से एड्स की रोकथाम तथा नियंत्रण का मार्ग प्रशस्त होगा और इस प्रकार इस घातक वायरस से केरिपुबल को बचाकर सुरक्षित तथा प्रतिरोधित रखा जा सकता है। निवारण हमेशा उत्तम इलाज है क्योंकि एड्स का कोई इलाज नहीं है।

सच का फल

(कहानी)

उप निरीक्षक (मं.) वी. भरतन
ग्रु०के० हैदराबाद

रामगढ़ रियासत के एक छोटे गांव में धीरू नाम का एक व्यक्ति रहता था वह चोरी किया करता था। धीरू अपनी बूढ़ी दादी के साथ में रहता था। धीरू की दादी उसको बहुत समझाती थी कि चोरी करना पाप है परन्तु वह अपनी दादी का कहना नहीं मानता था। कुछ दिनों के बाद उस गांव में एक बूढ़ा साधू आया वह बहुत विद्वान तथा सदाचारी था, वह प्रतिदिन गांव के मन्दिर में उपदेश देता तथा गांव के लोगों को ज्ञान की अच्छी-अच्छी बाते बताता। कुछ ही दिनों में उसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गयी। दूर-दूर से लोग उसके पास ज्ञान व अच्छी-अच्छी बातें सीखने आते थे। धीरू की दादी भी धीरू को साधू के पास जाने को कहती परन्तु वह कुछ न कुछ बहाना कर देता। एक दिन जैसे-तैसे धीरू की दादी उसको अपने साथ लेकर साधू के पास गयी, साधू ने उसको बहुत सी अच्छी-अच्छी बातें बतायी लेकिन वह एक भी बात मानने को तैयार न हुआ, साधू के काफी समझाने पर धीरू ने कहा कि महाराज, धर्मगुरू होने के कारण मैं आपका सम्मान करता हूँ और इसलिए आपकी कोई एक बात मान सकता हूँ, तब साधू ने कहा कि बेटा चोरी करना बहुत खराब काम है इसको छोड़ दो, इस पर धीरू ने कहा कि महाराज चोरी करके मैं अपनी व अपनी बूढ़ी दादी का पालन-पोषण करता हूँ इसलिए चोरी करना मैं नहीं छोड़ सकता, तब साधू ने कहा तो फिर मेरी ये बात मानों कि कभी भी झूठ मत बोलना, इस बात पर धीरू ने साधू को वचन दिया कि अब सदैव वह सच ही बोलेगा। कुछ ही दिन के बाद धीरू को पता चला कि रामगढ़ की रियासत के राजा ने अपने मुकुट में लगवाने के लिये 13 हीरे मंगाये हैं जो राजा के महल में राजा के खजाने में रखे हैं, धीरू ने सोचा कि यदि वह उन हीरों को चुरा लेगा तो उसे बहुत दिनों तक चोरी नहीं करनी पड़ेगी। इसलिए वह

भेष बदल कर रात को राजा के महल में गया, महल के पहरेदारों के पूछने पर उसने कहा मैं चोर हूँ और चोरी करने आया हूँ इस पर पहरेदारों ने सोचा कि चोर स्वयं को चोर नहीं कह सकता और वह इस तरह हमारे सामने नहीं आ सकता, हो न हो यह राजा ही हो सकता है क्योंकि राजा अक्सर अपने महल की सुरक्षा इत्यादि को चैक करने के लिये रात को भेष बदलकर निकलता था, अतः इसी भ्रम के चलते धीरू सभी पहरेदारों से बचता हुआ महल के खजाने तक पहुंच गया। संयोग से उसी समय राजा भी भेष बदलकर खज़ाने में बैठा खज़ाने की जांच कर रहा था, राजा ने उससे पूछा तुम कोन हो, कहां रहते हो और इतनी रात गये यहां क्यों आये हो, चूँकि धीरू साधू को सच बोलने को वचन दे चुका था। इसलिए उसने सच बात ही बतायी, अपना नाम व पता बताते हुए उसने कहा कि मैं चोर हूँ मुझें पता चला है कि राजा ने अपने मुकुट में लगाने के लिये 13 हीरे मंगाये हैं, मैं उन हीरों को चुराने आया हूँ। यह बात सुनकर राजा को बहुत आश्चर्य हुआ और उसने बहुत समझदारी व होशयारी से कहा मैं भी चोर हूँ यह कहकर उसने खज़ाने में रखी हीरों की ओर इशारा करते हुए कहा कि शायद उसमें हीरे हो सकते हैं, धीरू ने थैली उठाकर देखी तो उसमें पूरे 13 हीरे रखे हुए थे परन्तु धीरू ने उसमें से केवल 5 हीरे ही लिये, राजा ने उससे कहा कि तुमने सारे हीरे क्यों नहीं लिये धीरू ने कहा कि मेरा काम 5 हीरों से चल जायेगा तब चोर रूपी राजा ने चतुराई से कहा कि तो 5 हीरे मैं ले लेता हूँ और तीन हीरे बेचारे राजा के लिये छोड़ देते हैं। सुबह होते ही राजा के पहरेदारों से सूचना मिली कि खज़ाने में चोरी हो गयी है इस पर राजा ने अपने एक मंत्री को बुलाया और कहा कि खबर मिली है कि खज़ाने में चोरी हो गयी है तुम जाओं और चैकं करों कि हीरे तो चोरी नहीं हुए हैं। मंत्री ने खज़ाने में जाकर हीरों की थैली जो खुली पड़ी थी को उठाकर देखा तो उसमें केवल तीन हीरे निकले, तब मंत्री ने सोचा कि राजा को तो यह मालूम है। खज़ाने में चोरी हो गयी है। इसलिए इन 3 हीरों को मैं स्वयं ले लेता हूँ और राजा को बताऊंगा कि महाराज हीरों की थैली खाली पड़ी हुई है। मंत्री ने ऐसा ही किया। मंत्री से यह बात सुनकर राजा ने आदेश दिया कि तुरन्त हमारा दरबार लगाओं और सभी पदाधिकारियों व महल के अन्य लोगों को बुलाओं। भरे दरबार में राजा ने कहा कि हीरों की चोरी के बारे में चोर को मैं जानता हूँ, राजा ने धीरू का नाम पता बताते हुए आदेश दिया कि उसको पकड़कर लाओं। दरबारी धीरू को पकड़कर राजा के सामने ले आये, चूँकि धीरू तो सच बोलने का प्रण कर चुका था इसलिए उसने राजा के पूछने पर हीरों के बारे में बता दिया और 5 हीरे निकालकर पेश कर दिये और कहा कि महाराजा मेरे साथ में एक चोर और था 5 हीरे उसने लिये हैं, तब राजा ने कहा कि वह मैं हूँ और 5 हीरे अपनी जेब से निकालकर सामने रखलिये। इसके बाद राजा ने कहा क्योंकि हमने 5-5 हीरे लेकर तीन हीरे थैली में ही छोड़ दिये थे और मंत्री को चोरी की जांच करने भेजा था। इसलिए वह 3 हीरे मंत्री ने उठाये है, मंत्री से हीरे लेते हुए राजा ने कहा बड़े दुख की बात है कि तुमने इतने बड़े पद पर रहते हुए ऐसा झूठ बोला और हमारा विश्वास तोड़ा है। राजा बहुत नाराज हुआ और उसने मंत्री को पद से हटाते हुए कहा कि इतने ऊंचे पद पर ईमानदार व सच बोलने

वाले व्यक्ति को जरूरत है और उसने धीरू को अपना मंत्री बना लिया। इस प्रकार धीरू व उसकी दादी राजा के महल में आराम से रहने लगें। इस कहानी से हमे शिक्षा मिलती है कि सच बोलने का कितना अच्दा फल मिलता है। इसलिए साथियों हमें आज ही से प्रण करना चाहिये कि सदैव सच बोलेगें।

पत्रिका सी.आर.पी.एफ. समाचार के स्वामित्व एवं प्रकाशन से सम्बन्धित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आफ न्यूजपेपर्स सैंट्रल रूलस् के फार्म IV के नियम 8 के अधीन)

1.	प्रकाशन का स्थान	–	नई दिल्ली
2.	प्रकाशन की अवधि	–	वर्ष में आठ बार
3.	प्रिंटर का नाम	–	डी.जी. महापात्र
4.	नागरिकता	–	भारतीय
5.	पता	–	ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड़, नई दिल्ली–110 003
6.	प्रकाशन का नाम, नागरिकता और पता	–	डी.जी. महापात्र, भारतीय , ब्लाक–1, सी.जी.ओ.काम्पलैक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली–110 003
7.	संपादक का नाम, पता और नागरिकता	–	डी.जी. महापात्र, भारतीय , ब्लाक–1, सी.जी.ओ.काम्पलैक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली–110 003
8.	उन लोगों के नाम व पते जो अखबार के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हों ।	–	महानिदेशक, के.रि.पु.बल, ब्लाक–1 सी.जी.ओ. काम्पलेक्स लोधी रोड़, नई दिल्ली–110 003

मैं डी.जी. महापात्र एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्णसत्य है ।
30 नवम्बर, 2002.

ह.
डी.जी. महापात्र
प्रकाशक के हस्ताक्षर



के.रि.पु.बल की मेला/प्रदर्शनी का उद्घाटन करती हुई सी.आर.पी.एफ. वाइब्ज वेलफेयर एसोसिएशन की अध्यक्षा श्रीमती चित्रा मिश्र,

रजि. संख्या-4767/87



"राष्ट्र की गौरव शाली सेवा के सफल 10 वर्ष"

द्रुत कार्य बल की 10 वीं वर्षगांठ के अवसर पर सी.आर.पी.एफ.
कलर प्रजेन्ट करते बल के कार्मिक

सी. आर. पी. एफ.
समाचार

31 दिसम्बर, 2002



हवलदार डी० संतोष कुमार को शौर्य
चक्र प्रदान करते हुए राष्ट्रपति डा० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

63वीं वर्षगांठ पर विशेष



गुड़गाँव में केरिपुबल अकादमी की आधारशिला रखते हुए उप प्रधान मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी



सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के *34*वें बैच की दीक्षांत परेड के मौके पर अपर महानिदेशक श्री हिमांशु कुमार बिष्ट को सोर्ड ऑफ ऑनर प्रदान करते हुए।



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड–15 अंक–8

31 दिसम्बर, 2002
10 पौष, शक, 1924

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादकीय सहयोग
अनिल गुप्ता

संपादक
रणबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
नई दिल्ली–110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल
अध्यक्ष
हिमान्शु कुमार, अपर महानिदेशक

सदस्य
विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
आर.एस. नौटियाल, महानिरीक्षक (संभरण एवं निर्माण)
राजेन्द्र सिंह, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)

पॉ.ज. शट्टा, उप महानेरीक्षक (प्रशा.)
सी.वी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशि.)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
एम.एस. नेगी, कमान्डेंट (एम.टी.)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
राजीव राय, उप कमां. (परि.)
मणि भूषण प्रसाद, हिंदी अधिकारी

इस अंक में

• महानिदेशक की ओर से

• CRPF : The Sentinel of Peace

• A Force under siege

• Salute to a Ten Year Old

• CRPF Symbol of Loyalty, Service and Sacrifice

• RAF–A new Dimension in Policing

• Preparing CRPF for new Millennium

• Acheivements of the CRPF in North–East

• The Presidents Colours & the Insignia

• Attack on Akhardham

• Human Rights and CRPF

• Special Duty Group

• Remna Run

• Naxalite Movement in A.P. and CRPF

• I am the Sentinel of the Nation (Poem)

• कोसोवो और हैती में भारतीय एस.पी.यू. के अनुभव

• रघुनाथ मंदिर बल के पराक्रम और शौर्य का एक और साक्षी

• द्रुत कार्य बल–एक सच्चा जनमित्र

• बल का कल्याण कार्यक्रम

- के.रि.पु.बल में खेल

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

महानिदेशक की ओर से



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल इस समय एक संक्रमण काल से गुजर रहा है। संक्रमण काल अतीत के गौरव और भविष्य की चुनौतियों के बीच का। के.रि.पु.बल अपनी विकास यात्रा के बीच आज एक ऐसे मुकाम पर आकर खड़ा है, जहाँ से वह भविष्य की ओर एक ऊँची छलांग लगाने को तैयार है। 1939 में एक बटालियन से खड़ा हुआ यह पुलिस बल शनैः–शनैः विकास की कई सीढियाँ लांघता हुआ 141 बटालियनों के विशाल परिवार तक आ पहुँचा है और आज एक साथ 13 नई बटालियनों और सात नये ग्रुप केन्द्रों के गठन के साथ विकास की एक ऊँची अभूत पूर्व छलांग लगाने जा रहा है। भर्ती की यह विशाल प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है और शीघ्र ही नए साथी हमारे बल में दाखिल हो जाएँगे।

संख्या की परिवृद्धि के साथ ही साथ दायित्वों एवं कार्य क्षेत्रों की भी अभिवृद्धि हुई है। दायित्वों का निर्वाह के.रि.पु.बल हमेशा से ही पूर्ण कुशलता और व्यवसायिक दक्षता से करता रहा है। इतने व्यापक पैमाने पर कार्मिकों को प्रशिक्षित करने, उन्हें आधुनिक साजो सामान से सज्जित करने में भी बल ने पूर्ण तत्परता का परिचय दिया। पहले जम्मू कशमीर फिर गुजरात के चुनावों के दौरान हमारे जवानों की भारी तैनाती, हमारी निष्पक्षता और कार्यकुशलता के प्रति देश के विश्वास का प्रतीक है और इस विश्वास की रक्षा हमारे जवानों ने हमेशा अपने प्राणों पर खेल कर की है, चाहे दूर पश्चिम में गोधरा कांड के बाद भडके दंगे हों, या फिर उत्तर पूर्व के इलाकों में विद्रोही गतिविधियाँ, देश के शीर्ष जम्मू कशमीर में चुनावी प्रक्रिया को ध्वस्त करने की दुश्मन की चाल हो या फिर रेल दुर्घटनाओं या प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त देश के कुछ

हिस्से हों, देशवासियों ने हर जगह के.रि.पु.बल के जवानों को मुस्तैदी के साथ अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुए देखा है।

इस मौके पर बल में शामिल हुए नये जवानों का आह्वान करना चाहूँगा कि वह बल की गौरवशाली परंपराओं का निर्वाह करें । हम उन्हें आधुनिकतम प्रशिक्षण की सुविधाएँ मुहैया कराने के प्रसास में जुटे हैं। वे भी अपने दायित्व को समझें और एक संदेश सभी देशवासियों को दें कि देश हमारी निगरानी में है, वे आश्वस्त रहें. उनकी सुरक्षा हमें अपने प्राणों से भी प्यारी है। यह बात हमें अलग से साबित करने की जरूरत नहीं है, यह हम हमेशा से साबित करते रहे हैं, चाहे वो हाट स्प्रिंग्ज हो, गुजरात की सरदार पोस्ट हो, असम हो, पंजाब हो, जम्मू कशमीर हो, या फिर गत वर्ष संसद भवन पर हुआ हमला ही क्यों न हो। इस तथ्य का साक्षी इस वर्ष हमे मिला सर्वोच्च नागरिक सम्मान अशोक चक्र और शौर्य चक्र भी हैं। जो अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि हैं । 'आपरेशन' कार्यों में निपुणता की वृद्धि के लिए बल ने कई नए प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किए हैं जिनका लाभ मिला है और भविष्य में और अधिक मिलने की आशा है।

सांप्रदायिक दंगों से निबटने के लिए गठित बल की विशेष शाखा रेपिड एक्शन फोर्स ने कोसोवो जैसे देशों में संयुक्त राष्ट्र मिशन के तहत कार्य कर देश के साथ–साथ विदेशों में भी अपने नाम का परचम फहराया है। यही आलम हमारी महिलाओं का भी है, जहाँ एक ओर उन्होंने शत्रुओं से मुकाबलों में अपने प्राणों तक की बाजी लगायी है वहीं खेलों की अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में देश के नाम को रोशन किया है। हमारे इन खिलाड़ियों ने हमें देश को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी देने वाली संस्थाओं की अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया है। हमें अपने इन अंतर्राष्ट्रीय सितारों पर गर्व है। कर्त्तव्य पथ पर अंतिम सांस तक डटे रहने की परंपरा हमें विरासत में मिली है। शहीदों की गाथा इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज होती है । यह एक प्रयास हमने भी किया है, अपने शहीद हुए साथियों की स्मृति को एक रजत पुस्तिका में सुरक्षित रखने का हमारा यह प्रयास आने वाली पीढ़ी के लिए हमेशा प्रेरणा स्रोत बना रहेगा, ऐसा हमें विश्वास है। इस वर्ष सी.आर.पी.एफ. के इतिहास का भी सम्पादन किया गया है। इसका अध्ययन बल के सभी सदस्यों को इसके गौरवशाली अतीत से परिचित कराएगा एवं भविष्य में इसकी परंपराओं के समुचित निर्वाह तथा गौरव–अर्जन के लिए अनुप्राणित करेगा।

बल की 63 वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक पूरी नयी पीढ़ी को आगे लाते हुए मैं बल के सभी कार्मिकों से अपेक्षा करता हूँ कि वे इस पीढ़ी का मार्गदर्शन करेंगे, बल की परंपराओं के अनुरूप इस पीढ़ी को ढालेंगे। इस अवसर पर बल के सभी कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सी.आर.पी.एफ. सदा अजय, भारत माता की जय।

नई दिल्ली

(डा० त्रिनाथ मिश्र),
महानिदेशक, के.रि.पु.बल

C.R.P.F-A VERSATILE FORCE

- V.G. Kanetkar, Former DG, CRPF



Shri V.G. Kanetkar was our first Chief. He steered the Force from Aug 28, 1963 to Sep 15, 1969. He contributed a lot to the Force and meticulously maintained its high traditions. He mustered and nurtured the Force from the scratch and the rank and file worked as a well-knit team like members of one family under his able command.

In the letter reproduced below he remembers fondly his long association nearly four decades ago and sincerely hopes that the new year (2003) will bring to the Force more successes and fewer casualties.

- Chief Editor

My dear CRPF

Another year has come and gone with you scoring successes and suffering casualties as in the past. The former were in the fields of organisation, fearless and efficient discharge of duties allotted to you, providing relief and succour where necessary to the civilian population, maintenance of internal discipline and high morale and finally sports. The latter i.e. casualties were the result of the conscience and valour you displayed while facing fanatical armed militants or while moving through areas made dangerous with mines by so called revolutionaries or running into ambushes by insurgents.

You are thus fulfilling in full measure the expectations of our first Central Home Minister namely Sardar Vallabhbhai Patel who so wisely decided in 1948 to continue the old Crown Representative Police under a new name by which you are now so well known everywhere in the country and even outside it in certain countries. That you are in constant demand all over our country at the first sign of serious trouble is of course a tribute to you but it also bears out the apprehension of the above great politician that our new republic was likely to experience internal turmoil from time to time for one reason or another and therefore needed a well trained central police agency to back up the state police to deal with it.

I sincerely hope that the new year will bring more successes and fewer casualities.

Dated 2nd Dec, 2002

8, Abhiman Apts.

5th Lane, Prabhat Road,

Pune-411004 Tel. : 5434705

Yours sincerely.

V.G. Kanetkar

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE : THE SENTINEL OF PEACE

- D.G. MOHAPATRA PRO, CRPF



Paying Homage at Hot Springs (Ladakh)

On the 27th July 1939, Neemuch, a small and sleepy town in Mandsaur district of Madhya Pradesh woke up to its new found importance. The prevailing political ferment, the Prajamandal agitations in the Princely States and the growing desire of the Crown Representative to help them preserve law and order had paved the way for the creation of the Crown Representative's Police with Neemuch as its headquarters.

The Force was organised and trained on military lines and made self-contained in all respects. The Force was not meant to replace or supplement the civil police, but was to undertake duties usually performed by the Army when acting in aid to civil power. Its very name, the Crown Representative's Police, indicated its distinct identity and elite character.

THE EARLY CAMPAIGNS

The one battalion force under the first Commandant Major J.F. Peart performed wonderfully. In 1940-41, it helped the states of Charkhari and Indore in Central India to maintain law and order. It also guarded German

and Italian detenues in Deoli.

What really brought the Crown Representative's Police into focus was its handling of the Hur menace which had struck terror in some parts of India in the early 40's. The CRP detachment acted swiftly and boldly. By July 1943, the situation was under control and normalcy was restored.



Dr. Trinath Mishra, D.G, C.R.P.F. paying homage to the martyrs memorial at Sardar Post

Between 1943 and 1946, CRP detachments were sent to the States of Balasinore in Baroda Agency and Kishangarh. These detachments accounted for a large number of dacoits and they captured heaps of arms and ammunition.

During 1946-47, the Force was deployed in the states of Rewa, Pataudi, Dujana, Datia, Charkhri, Kothi (Nowgong), Loharu, Ratlam, Ajmer, Deoli, Rampur, Rajkot, Junagadh, Chamba and Virahi. Everywhere the Force acted with its characteristic competence and its very presence exuded the assurance of peace and stability.

INDEPENDENCE & AFTER

In the wake of independence, the small States of Manawadar, Bantwa, Sardargarh, Mangrol of Kathiawar and the bigger State of Junagarh had the potential of turning into islands of foreign power inside the Indian territory.

The CRP detachments posted in these States struck to their guns with exemplary devotion and this also facilitated the smooth integration into the Indian Union.

THE SAGACITY OF SARDAR PATEL

The disbandment of the CRP would have been a reality as it was construed then as a relic of British imperialism and symbol of colonial exploitation but for the sagacious Sardar Patel, who stepped in as the Guardian Angel in the nick of time. The Sardar saw in this tiny organisation the nucleus of what was in future to be the nation's bulwark against the forces of disorder, anarchy and lawlessness. Setting all doubts at rest, it was decided to retain the CRP.

The CRP Bill, on receiving the assent of the Governor General on 28th December, 1949, became the "Central

Reserve Police Force Act, 1949". The Act made CRPF an "Armed Force" of the Union, the second oldest paramilitary force in this country, next only to the Assam Rifles. The CRPF came to be the model on which other paramilitary forces were subsequently raised. The CRPF was presented with "Colours" on March 19, 1950 by the Deputy Prime Minister and Home Minister Sardar Patel on behalf of the President of India.

ON THE BORDERS

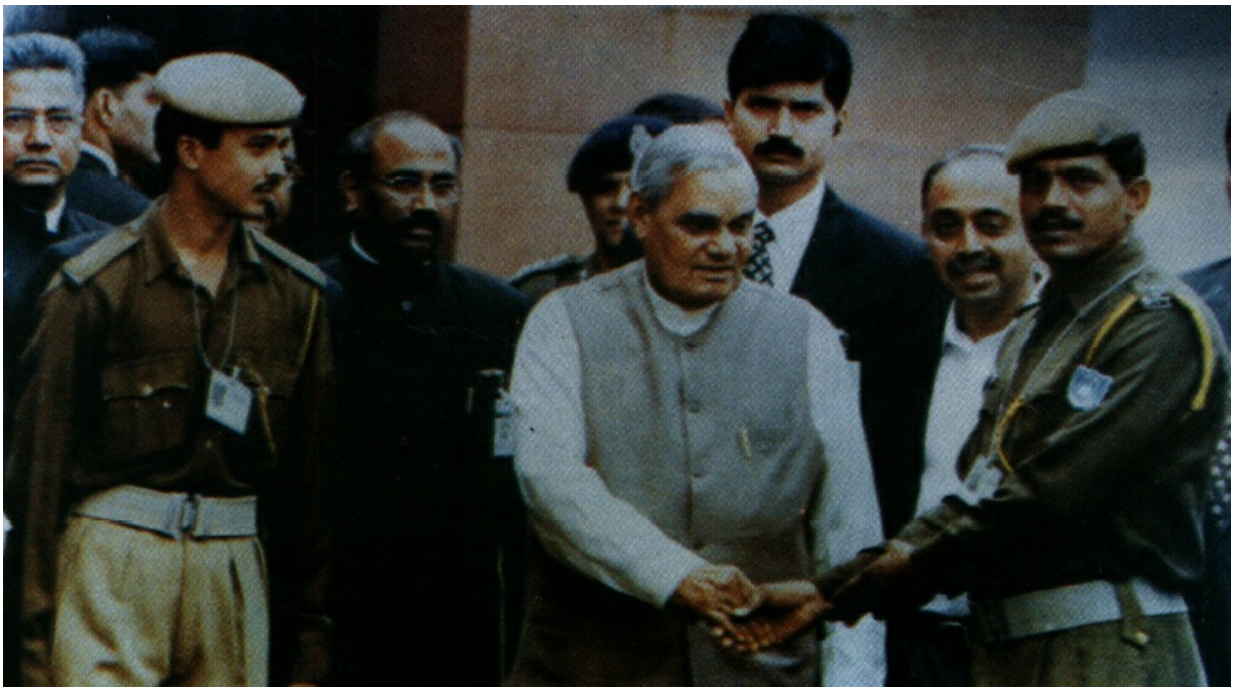
At the time of independence and for many years there after, till the ITBP and BSF came into being, the CRPF also carried the responsibility of policing the borders. Whether it was the Hot Springs in 1959, the NEFA in 1962 or the Pak aggression at the cease fire line in Jammu and Kashmir or in the deserts of Gujarat and Rajasthan in 1965, the initial brunt was generally borne by the CRPF. At Hot Springs (Ladhakh) it was the CRPF which bore the brunt of the first onslaught of Chinese on Oct 21, 1959 where a small CRPF patrol was ambushed and over-whelmingly outnumbered by the Chinese. In the ensuing skirmish, as many as 10 CRPF men laid down their lives for the motherland. Their martyrdom on Oct 21 is observed throughout the country as the Police Commemoration Day.

Soon after Independence, the CRPF was deployed to guard borders at Barmer, Gadra Road, Jaisalmer, Jodhpur and Kutch. These units, often all by themselves and sometimes along with the State police or the Army,

patrolled the frontiers on camels, jeeps and even on foot. They foiled all Pakistani attempts to establish contact with the States of Junagadh, Mangrol and Hyderabad, then known as the “Kutch Corridor”.

HAND IN HAND WITH ARMY

The Chinese aggression of 1962 was a severe test of the true mettle of the Force. The 9th Battalion then operating in the dizzy heights of NEFA, had a close ecounter with the Chinese invaders and fought a rear guard action during the retreat of the Indian troops. When the Chinese finally withdrew from Kameng and Siang Divisions, the CRPF was the first to be moved forward to restore civil authority in the region. The Force was also extensively deployed in other parts of NEFA to maintain law and order.



Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee congratulating CRPF men who repulsed the Fidayeen attack on Parliament on 13 December, 2001



CRPF contingent in Republic Day Parade in Delhi

In March 1965, the CRPF established two posts named ‘Sardar’ and ‘Tak’ in the Greater Rann of Kutch near Kanjarkot on the Indo-Pak border. On 9th April 1965, the Sardar Post, where only four CRPF companies were located, was attacked by a full fledged brigade of the Pak Army. The CRPF withstood the attack valiantly for over 12 hours and succeeded in pushing back the enemy. In this fierce encounter the CRPF lost only 5 men as against 34 of the Pak Army. The glory of the moment was acclaimed by one and all in the Parliament on 12 April T965 when the Home Minister made a statement on the incident.

Five Battalions of the CRPF took part in the Indo-Pak War in 1971. Two of them were deployed in the Western Sector and the other three in the Eastern Sector. These Battalions, though equipped and trained only for internal security duties, fought alongside the Indian Army against the regular Pakistani Army.

CHALLENGES AND RESPONSE

The terrorist violence in Punjab was the biggest challenge for the CRPF. The Force lost many precious lives here. New weapons were acquired, mobility was augmented and tactics were reoriented. But at last the state started limping back to normalcy and by the early 90s the terrorists were on the run.

Pakistan has never reconciled to the accession of Jammu and Kashmir to India. Ever since, they have tried to destabilise this part of the country using every tactics including sabotage and low intensity war. By the year 1989, a full-fledged armed secessionist movement had taken root in the valley. It was indeed a testing time for the security forces, Punjab being still turmoil. With their persistent efforts, the security forces jointly rose up to meet the challenge and ultimately proved their supremacy with the holding of Parliamentary elections in 1996 and 1998 and Assembly elections in 1996. A major share of the credit for holding free and fair elections unmarred by violence goes to the CRPF, which was the nodal agency for conducting the elections. During the last 1 5 years starting from 1988, 951 terrorists have been killed in 3192 encounters with jawans of CRPF.

Due to revival of insurgency in the North Eastern part of the country, the deployment of CRPF has increased substantially. During last 14 years 366 insurgents have been killed in this part of the country in 788 encounters with Force. In the lieu of duty, many of brave soldiers have laid down their lives.

MILITANTS BID TO ATTACK PARLIAMENT FOILED

The brave Jawans of the Force had a day of testing their mettle when a suicidal attack was done on Parliament House by militants on December 13, 2001. In exchange of fire between the CRPF and militants that continued for about 30 mts, all the five militants were eliminated. In the skirmish one Mahila Constable while showing exemplary courage and presence of mind sacrificed her life at the call of duty. The both houses of Parliament including the Prime Minister and Home Minister have applauded the role of CRPF Jawans in the operation. The Mahila Constable Kamlesh Kumari was posthumously presented the highest civilian award ‘Ashok Chakra’ by the President of India. Besides four others were also awarded the ‘Shaurya Chakra’ for liquidating three militants on the spot.

EXPANSION AND CONSOLIDATION

From a singel Battalion in 1939, the Force has now grown to 141 Battalions, 30 Group Centres, 8 Training Institutions and 3 Base Hospitals and one 100 bedded Composite Hospital, one Central Weapon Store and 7 Arms Workshops. Steps are under way to raise 13 more battalions during 2002. The MHA has sanctioned to establish 7 more Group Centres.

MAHILA BATTALIONS

CRPF is the only paramilitary Force in the country which has two Mahila Bns. The first Mahila Bn (88 Bn) was raised in Delhi on Feb 6, 1986. The unit won laurels for its work in Meerut riots and later in Srilanka. At present Mahila personnel of this unit are deployed on active duty in Imphal (Manipur) and Delhi. Personnel of second Mahila Bn (135 Bn) which was raised in 1996 in Gandhinagar are deployed in Srinagar (J&K), Ayodhya (UP), Guwahaty (Assam) and Gandhinagar (Gujarat) for law and order duties.

THE RAPID ACTION FORCE

Since the advent of Independence, the country has suffered endless series of tragedies on account of communal and ethnic clashes. The Army, the Paramilitary forces and the Police, all have been found not adequately equipped in some measure or the other in dealing with this menace. A need was felt for a special task force of hand picked men especially trained and equipped, which could react without loss of time. The RAF was created in 1992 to meet this requirement. 10 duty Battalions of the CRPF were converted into RAF by bringing about requisite changes in their structure, training, equipment and mobility. RAF is a ’zero response time’ force.

On the ground, the RAF in its full glory is a resplendent force. The battalions have been headquartered tactically in communally sensitive areas like Hyderabad, Ahmedabad, Allahabad, Mumbai, Delhi, Aligarh, Thiruvananthapuram, Jamshedpur, Bhopal and Meerut. In peace time, they train themselves and make mass contacts. They also involve themselves in humanitarian activities to inspire confidence in the people.



HC Santosh Kumar being honoured with Himotkarsh national integration gallantry award in recognition of his gallant action displayed during fidayeen attack on Parliament



Dr. Trinath Mishra distributing fruits to patients at G.C. Jallandhar Hospital

PEACE KEEPERS

A contingent of nearly 100 CRPF men remained in Cambodia contributed significantly to restoration of peace which eventually led to installation of an elected government there. In March 1995, a 123 strong contingent of RAF was sent to Haiti as part of the UN Mission to assist in the Haitian election process. The RAF contingent won praise from all quarters for its professionalism and steadfastness to duty.

Now specially selected, trained and well equipped 240 personnel strong two companies of RAF as a part of the Indian Contingent on UN Mission are deployed in the strife-torn KOSOVO from May 2000. This Special Police Unit provides protection and security to UN Officials, assists the local police in controlling crowd during violent demonstrations and civil unrest and renders necessary assistance to the humanitarian agencies. Looking at the successful ops conducted by RAF, the UN authorities now have asked for deployment of atleast 50 mahila personnel in the turbulent state.

SPORTS

Sports and games form an integral part of CRPF life. The day begins with physical exercises in the morning and ends with an hour or so of sports in the evening. It is a matter of pride that the CRPF sports persons have performed very well in various sports and games, both at the national and international levels and have earned laurels for the force and the country. G.S. Randhawa, Hari Chand, Khazan Singh, R.S. Bal, N. Kunjurani Devi and N. Laxmi are also Arjuna Awardees.

SECULAR & HUMANE FORCE

Right from its inception, the CRPF had a mixed composition which gave it a totally secular outlook and in due course an all India character. The CRPF today stands as a role model in the country for national integration. Even a small CRPF company represents a mini-India with people from all corners of the country living and working together in perfect harmony. Its reputation of impartiality and objectivity is unparalleled. One of the main reasons for the increasing demands on the Force is the confidence generally reposed in it by all communities and ethnic groups in the country.

The secular outlook, impartiality and objectivity in role performance have inculcated in the Force a natural respect for human dignity and rights. The credentials of the Force on the Human Rights front have been admirable. The Force keeps peace, fights insurgency and terrorism, quells communal disturbances and ensures free and fair polls as a service to the people with loyalty to the Nation.

A FORCE UNDER SIEGE

- T.G.L. IYER Former DG, CRPF



CRPF Jawans keeping vigil at a polling station during J&K Assembly Election

Police do not prevent crime nor do they prevent violence. It is a social problem. Experts generally say that factors which contribute towards violence are unemployment, loosening of morals, lack of National discipline and character, drift towards a permissive society, reversion to atavism, a passive community and poor governance. There are no indicators to measure social degeneration In values but certainly more and more interference by the Police in the affairs of the people are sure signs of social decay and decadence. With more and more crime, less and less Police control, there is a definite slide from mere turbulance to a possible upheaval or revolution.

In a democracy, a Police state is a misfit. But we find consistent increase in Police strength, creation of more and more security specialists, increase and upgradation in the power of the Police and so on. The Police are increasingly on the retreat trail. The result is that, everywhere, it becomes a fire-fighting operation without going deep into the social maladies and rectifying them.

The popular perception in our country appears to be that the Police are not only ineffective but impotent, largely due to unhealthy political

interference, lack of leadership, corruption, inadequate accountability and virtual absence of effective public grievances redressal. Even the judiciary who were held in high esteem almost like demigods have lost their glow, glamour and impartiality with the result that the citizen has nowhere to go to get justice which is the central pillar of a healthy community life.



CRPF officer administering pulse polio drop to a child as a part of civic action programme

Indrajit Gupta, Union Home Minister in 1997 in his letter addressed to the Chief Minister, Lt. Governors and Administrators of Union Territories said in his letter dated April 3, 1997 : “Quite often it is the Police including the para-military force which have stood between lawlessness verging on anarchy and functioning of our democracy. Besides, it is the Police and Centr’al Paramilitary organisations whose personnel are laying down their lives in the continuing battle against secessionist and terrorist forces in various parts of our contry. It is, therefore, of great National importance that we rise above any narrow and partisan considerations to insulate the Police from the growing tendency of partisan or political interference in the

discharge of its lawful functions of prevention and control of crime including maintenance of public order. Unless this task is taken up by all of us, we may soon find ourselves to be incapable of maintaining our democratic institutions to which we are all committed."

It is in this background that the CRPF role has to be examined. The mounting casualities in the CRPF (refer to the list and names read out in the commemoration parade every year on 21st October) are not due to inefficiency, ineffective training, lack of leadership or performance deficiency. It is because CRPF are 'crisis Managers' in a violent vitiated atmosphere with absolutely no control to stop the violence except resistance by force. And when force is used to defend themselves and the Government, several questions are raised whether or not it was justified, correct and timely ?

The CRPF being crisis managers are deployed in sensitive areas round the clock, round the year, which means that they are always under Psychological pressure. There is very little rotation of role through interchange with non-stress areas and duties, with the result that the mounting pressure breaks the spirit of the soldier. He resigns to his fate to become 'cannon fodder' as possibilities of his survival are limited.

Moreover, the pattern of violence which the CRPF has to face is changing day by day. Apart from the suicide squads, more sophisticated weapons held by violent groups and inhuman atavistic beastly tendencies demonstrated by degraded humans, CRPF gets battered in every encounter and confrontaion and a general resignation for survival dominates their thinking and psyche. This mode of thinking has an adverse effect on their efficiency and performance. Then what is the remedy to upgrade the morale, courage, efficiency and role of the CRPF Soldier ?

Remedy lies mainly in better governance, insulation of the Police and para-military from political interference, allowing them what they can do best i.e. prevention of crime and maintenance of public order. This is a tall order as it is not in the hands of the Police but the political parties, social activists, NGOs and other agencies who can bring some purity, probity, transparency and tested values into public life. Secondly, there is a need to suitably modify the training programmes of the CRPF Jawan to toughen his mental make-up to face the escalating violence which has become a regular feature allover the World. Thirdly, the CRPF Jawan has to be given some

respite and rest to recoup his dissipating energy. This can be achieved by creating and assigning soft duties, more family life and an assured future for his children.

Fourthly, the common man and woman has to be educated and weaned away from dependence on the Police. More of self-dependence and creating a new set of institutions to do non-Police duties would free the Police to perform their legitimate duties of rendering service to the citizen. Can this be done? Yes, but it will take a long time to convince the citizen to shift his dependence from the Police either to himself or some alternative agency. In short, in a democracy, there should be public accountability as well, to combine with the Police-public responsibility to face challenges like crime, violence and so on.

Lastly, how does the CRPF raise its image, quality of performance and discharge its role and responsibility? It is interlinked with Good Governance, better civil policing, introducing community policing (like KOBAN system in Japan) and purifying public life through COP i.e. community-oriented-programmes to raise values and standards. In fact, nothing is definite and final in policing as the contours go on changing as the culture and civilisation marches on !



CRPF Jawans doing Naka duty at CTC-III, CRPF Nanded

बल के सितारे देश के गौरव

13 दिसम्बर, 2001 को संसद पर हुए आतंकवादी हमले को विफल करने वाले के.रि.पु.बल के वीर जवानों को राष्ट्रपति द्वारा अशोक चक्र और शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया।



*88 (*महिला*)* बटालियन की सिपाही कमलेश कुमारी *(*इनसेट*)* को मरणोपरांत सर्वोच्च नागरिक सम्मान अशोक चक्र से सम्मानित किया गया। सम्मान उनके पति श्री अवधेश कुमार ने स्वीकार किया।



हवलदार *(*अब उप निरीक्षक*)* वाईबी थापा, राष्ट्रपति से शौर्य चक्र ग्रहण करते हुए।



सिपाही (अब हवलदार) सुश्वविन्दर सिंह राष्ट्रपति से शौर्य चक्र महण करते हुए।



सिपाही (अब हवलदारा) श्यामबीर सिंह राष्ट्रपति से शौर्य चक्र ग्रहण करते हुए।



सम्मानित बल के कार्मिक राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा उप प्रधानमंत्री के साथ।



सम्मान समारोह में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों के साथ बल के महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र।

SALUTE TO A TEN YEAR OLD

- A.V. Liddle Ex D.G, C.R.P.F.



Dr. C. Rangrajan, Governor of Andhra Pradesh inspecting 10th RAF Anniversary Parade

As a small boy during the pre-independence days I did a lot of travelling with my family. My father was in railways and therefore entitled to his usual quota of family passes annually. Every year come summer, as soon as the schools closed, we moved out to see the length and breadth of the country. In those days, drinking water at wayside stations in North and Central India was served in earthen pitchers. They were kept on two wooden trolleys pushed to and fro by coolies who called out “Hindu Pani” and “Muslim Pani” respectively, as they passed infront of the compartments. Mercifully, when the country became independent, it was decided to serve one “Hindustani Pani” rather than two following different religions’.

Unfortunately, the ground situation has under-gone a rapid change over the last few years. Politicians (of nearly all hues and colours) have been exploiting religion, culture, language and region to divide the masses, primarily to encash these differences into votes and not unsuccessfully. Even the fanatics in the garb of religious leaders (not with standing the clear message of universal compassion, brotherhood and tolerance towards others in all religions) have, generally, helped in stoking the fire of communalism. We have in the past, witnessed both in Punjab and Jammu & Kashmir, an

effort to justify even naked terrorism in the name of religion. The efforts of the externally supported terrorists in fomenting communalism and promoting disharmony, hostility and adversity among different community by targeting specific communal groups and even their places of worship, have also unfortunately started bearing fruit. Secularism in the country, in large areas, particularly in the North and West is nothing more than an extremely fragile and brittle entity at present. This painful truth has been brought out decisively in the ghastly Godhra incident in February 2002 and the large scale retaliatory violence which followed and continued unabated for months in various parts of Gujarat.



RAF men patrolling in curfew bound Ahmedabad

The virus of communalism has spread fast as a cancer, syphoning off the strength of our unity as a nation. In the states where this virus has been more visible, even the economy is fast becoming stagnant because relations between the two major communities are no longer cordial and smooth. In fact they are becoming increasingly tense, based on mutual suspicion and

distrust. Even the State Police force which are meant to handle communal disturbances have also not remained immune to these external influences and are looked upon with suspicion by one or the other community. As a result their usefulness for handling communal trouble is fast evaporating.

The Govt, has no doubt taken some steps to deal with the situation, but the results have been somewhat mixed. Institutions, like the Minorities Commission, have to, in one way or the other, at some stage, fix responsibility for untoward incidents and therefore themselves become the targets of criticism from the party blamed. Financial Institutions setup to help the minorities improve their lot have proved only a drop in the ocean- the size of the cake being too small to be shared cheerfully.

One step which was taken by the Govt, of India was to set up the Rapid Action Force in October, 1992. It was carved out of the Central Reserve Police Force, which has had a blemishless record of dealing with communal situations ever since independence. The R.A.F. is now 10 years old. A decade in the life of a force is a very short period, but even during this time the force has performed extremely creditable. Soon after raising, the battalions were moved into the most communally sensitive areas of the country and deployed there. It is entirely to the credit of their commanders that the jawans quickly established themselves as friends of the people, irrespective of the community which they were serving. During peace time they moved around holding medical camps, doing Shramdaan side by side with the people and helping the locals in other ways. They also utilized this time to familiarize themselves with the local area and its peculiar problems and triggers for a communal situation. It is to the credit of their leadership that they have remained insulated from local influences and have therefore been successful in winning over the hearts of one and all. It is precisely for this reason that in most places of their deployment communal riots have been avoided all together. The sensitive area around Meerut remaining peaceful despite several occasions to trigger off communal riots in various parts of the country, is an excellent example.

For the R.A.F. the communal violence in Gujarat has been a trial by fire. Even though looking to the size and population of the area involved their numbers were grossly inadequate, they performed their duty impartially, courageously, zealously and tirelessly for the entire period. My close acquaintances and friends from both communities all over Gujarat, who

have the knowledge of the incidents, many of which were not even reported in the media, are full of praise for the R.A.F. as the “Good Samaritan”. Numerous incidents are mentioned by different people from their neighbourhoods.

The day after the Godhra incident people belonging to the Minority Community of Vastral came to the RAF headquarters to take shelter as they were feeling insecure. They were immediately taken care of. Large number of arson and looting cases were reported from Bapunagar, Daryapur, Solapur, Ishempur and Sotaliite areas of Ahmedabad city on the same day. One Telephone exchanage was set on fire, as also two persons belonging to Minority community, by the mob. On arrival of the RAF contingent the mob dispersed and the two persons partially burnt were removed to hospital to save their life. In the same week about forty persons including women and children who were hiding in a corn field to escape the wrath of the majority commuri :in a village in Godhra were rescued.

In the first week of April a small party from the RAF carried out an extensive search and recovered acid bombs from an area near the bus stand in Godhra. The next day rioting took place at Lumawoda near Godhra. Here some ladies of the majority community along with their children were trapped in a Madarasa and their life was in danger. The RAF managed to rescue them promptly. On 21 April, 2002 persons from both communities-clashed with each other in Gomtipur area of Ahmedabad with stones, petrol bombs, soda water bottles and acid bulbs. Some houses were also set on fire. The RAF played the main role in controlling the violence. Two days later violence erupted In Shahibagh and Juhapura area involving incidence of stabbing and setting on fire a truck. The RAF was instrumental in bringing situation under control and recovering a huge quantity of crude bombs, swords petrol and kerosene. They also arrested 15 rioters.

Early in May violence broke out in Leemowara town in Godhra in which a house belonging to a person from the majority community was set on fire. After the RAF reached the spot a combing operation was carried out with the civil police in which 65 persons were arrested and a large quantity of bombs, swords and knives were recovered from them.

To sum up “SHABAASH RAF-WE ARE PROUD OF YOU! KEEP IT UP”.



RAF men presenting demo on rescue and relief

CRPF SYMBOL OF LOYALTY-SERVICE AND SACRIFICE

- D.R. Kaarthikeyan, Former Spl. D.G., C.R.P.F.

CRPF is a unique force. It has the combination of the best qualities and traits of the Armed Forces, Civil Police and Civil Voluntary Service Organisations.

That is how a force that started with a strength of just one thousand personnel in 1939, has now grown into a mighty force with a strength of more than two hundred thousand officers-Men and Women.

It's a versatile force-A Force for all situations and all tasks.

It has fought wars standing shoulder to shoulder with the Indian Army.

CRPF has proved its mettle in theatres of war with t Pakistan and China and also in Srilanka during IPKF Operations.

It has effectively fought terrorism and insurgency along with the Army and the BSF in J&K, Punjab and the North East.

It has been supporting the state police forces in dealing with the Naxalite Menace in Andhra Pradesh and other States in Dhandakaranya region.

It has always effectively assisted the State Police forces in controlling and containing communal riots in various parts of the country.

It has always readily come to the rescue of Civil Administration in various parts of the country in providing rescue and relief operations during natural calamities like Earth-Quake, Cyclone and Flood.

It is the most adaptable Para Military Force and hence is in great demand from every State.

The force has an Enviable Human Rights record.

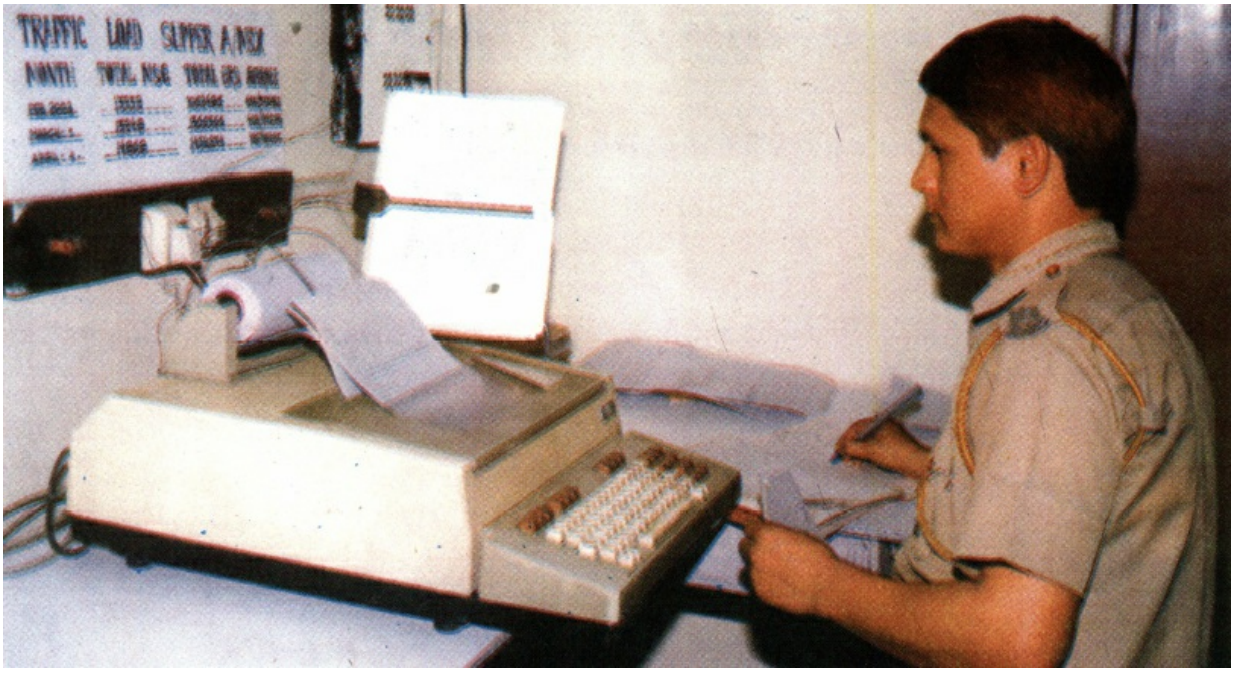
Despite its heavy and continuous deployment in various theatres of operations all over the country and in U.N. Peace Keeping Operations outside the country, it has produced outstanding athletes and sports persons in various events at national and international levels.



Patrolling in boat some where in North-East



CRPF men-keeping vigil



Modernisation in communication is on a fast track

The CRPF has made tremendous contribution to the environment. Hundreds of thousands of trees planted and raised by the force have enhanced the quality of environment wherever the force units are located.

Though the Force is constantly on the move due to heavy demand from various states and union territories and the personnel are away from their families most of the year, the standard of discipline and morale is very high.

CRPF Personnel have brought glory to the country during the overseas peace keeping assignments with the UN, due to their competence,

dedication, professionalism and high standard of discipline and conduct.

The glory that has been achieved by the CRPF in sixty-three years of its existence is also due to the tremendous supreme sacrifice made by the force year after year.

Though Hundreds are killed in the line of duty year after year, the morale of the force is very high due to its glorious traditions, training and leadership.

The mahila component as well as its Rapid Action Force wing have made this force unique amongst the Para Military forces in the world.

No other Force on this planet can claim to have the versatility, the flexibility and adaptability of CRPF facing any and every situation at any aJtitude, in any terrain and any climate.

Because of its apolitical and secular credentials, its prompt and effective response, firm but humane handling of even the most challenging situations and its concern for Human Rights, CRPF is the most sought after force in the country.

This multi-dimensional force has proved to be a force for all situations, a model force and an asset to the nation.

This peace-keeper of the nation that has always lived upto it's motto of "Service and Loyalty" should be rightly called the INTERNAL SECURITY FORCE OF THE NATION.

The Force Personnel's splendid performance in countering the terrorist attack on the Indian Parliament on 13th Dec. 2001, is only one recent example of it's valour, professionalism and sacrifice.

I shall always cherish my association with this Unique and Dependable Force.

R.A.F - A NEW DIMENSION IN POLICING

- M.N. Sabharwal, Ex-D.G. C.R.P.F



RAF men in rescue and relief action during earth quake in Gujarat

Having been raised in 1992, Rapid Action Force (R.A.F.) is the latest and the most colourful of the 'law and order' specific, elite police force of the country. Although naturally formed within the overall C.R.P.F. formations, because of broad commonality and similarity of objectives, this striking force manned by the specially chosen C.R.P.F. personnel, has acquired a distinctive sub-culture and professionalism of its own, within a decade of its raising. R.A.F. also, like the rest of C.R.P.F., shares with added focus, speed and operational ability, the law and order and connected national level challenges in the assistance of the States and its police forces (law and order being a State subject under the Indian Constitution).

Right from its inception, the ten Battalions of R.A.F. stationed at the communally/regionally sensitive locations, have been a trend-setter in more ways than one. And in its glorious and awe-inspiring uniform and equipments, the force has more than proved its mettle on various occasions and assignments. Stationing of 10 Battalions at the fixed locations within the country, so as to be readily available and accessible to the States, for specific emergent duties, was a wise and thought-out decision, taking into account, the broad federal structure of our Constitution.

This proclaimer and harbinger of ‘zero response time’ in its movement for attending to the call of duty, (be it in the communal/ethnic riots or the national or natural calamities like Earth Quakes, Flood, cyclones, Famines and the like), it has served a very useful and effective purpose. And as a versatile force, its contribution even in the elections, organized within India as also on occasions abroad, under the U.N. peacekeeping operations, has been well acknowledged and accepted.

The wide spectrum of representation of all castes/ communities as also regions, in the selection of personnel of RAF, imparts to this force, the very basic structure and strength of a mini-India. The adequate availability of strong medical unit and the component of ‘Mahila Force’, in each of the Battalions, makes it quite a self-reliant and responding force, so as to cater to various needs in the call of duties. The added technical and engineering equipment components add to its fine-tuned requirements. The organization of the Riot Control Teams’, the smallest unit of R.A.F., is comprehensively effective on ground.

The assignment of each of the battalions with an area of responsibility, makes it quite empowered in its local area knowledge and enables its deployment at short notice. The fact that these R.A.F. battalions do familiarization exercises from time to time, along with the local and District administrations in the area of their responsibilities, provides them good knowledge and acceptability in times of need and deed. the intelligence component and quotient of RAF is truly versatile in its depth and dimension of approach to the problems and helps in tackling emergent situations. The provision of civic-action programmes of the R.A.F., also help and brings them closer to the people.



Union Defence Minister Shri George Fernandes interacting with RAF personnel



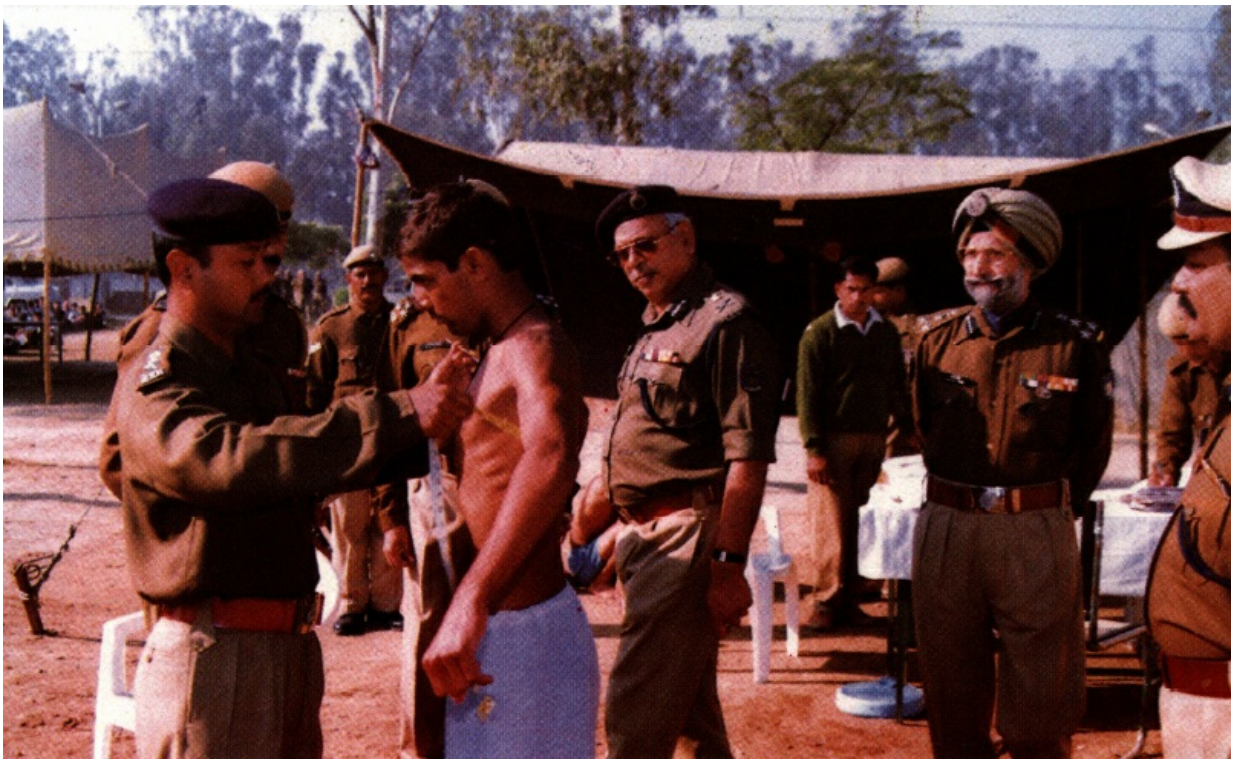
Medical relief camp organised by 99 Bn, RAF at Rangareddy (A. P.)

So versatile, professional and strikingly acceptable and effective has been RAF that, it was only logical to be called upon to be deployed under the U.N., in its International peacekeeping operations. In its very first assignment at Haiti in 1995, which included holding of elections, the force excelled and its performance, was an acclaimed success. Five years later in 2000, I also had the privilege of flagging-off the R.A.F. contingents, for assignments in Kosovo, from the C.G.O. Complex at New Delhi. This difficult role and the challenging expectations under U.N. peace keeping, was finalized only after long and precise preparations and deliberations at various levels. I am happy to know that the performance of RAF has been widely acclaimed there also, both from the point of policing and peacekeeping, as also during the organization of elections. The fact that the U.N. peace-keeping, from these contingents of India, in the otherwise ethnically/ communally divided and devastated areas, is to be further continued, is a clear recognition of professionalism acquired and also displayed in the new horizons.

Right from its inception, RAF has been a catalyst and also a role-model for many State Police forces in the country and its recognition in international policing, establishes the fact that the force has come of age. The fact that the training, equipment and other allround excellence and projection, inspired many states to organize and assign similar role, to their own units within the Police forces, has established R.A.F.'s primacy and credentials. All in all, it is a matter of satisfaction that the objectives and the charter of duties of the RAF, have been and are, being fully achieved with due dignity and pride. It is only, logical to hope and wish that this strength and excellence of RAF, as a versatile peace-keeping force, will further consolidate and continue to grow in future.

PREPARING CRPF TOR NEW MILLENNIUM

- P.N. Ramakrishnan, IGP, Southern Sector



Dr. Trinath Mishra, DG, CRPF inspecting recruitment drive in GC Jallandhar

Our country is passing through a very difficult phase. On one hand, there is insurgency in North East, terrorism in J&K and Naxal menace in AP, Orissa, MP, Chhatisgarh, Maharashtra, Bihar, WB, and on the other there are innumerable problems such as illiteracy, poverty, unemployment, corruption, divisive tendency of society in the name of religion, caste, language and region etc. These are disturbing the peace in the country and posing threat to the unity and integrity of India. There is imminent threat from across the border also. In present security scenario, every nation is under the threat of terrorism and the whole world seems to be at the brink of disaster.

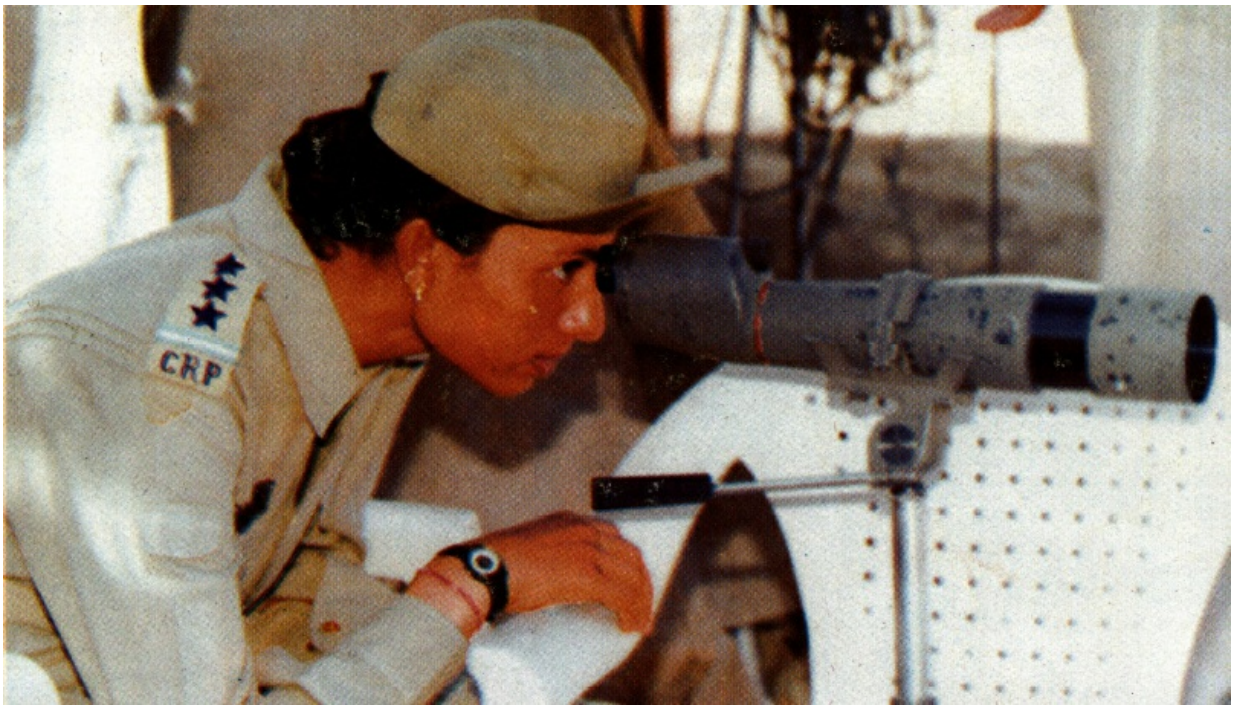
CHALLENGES OF THE FUTURE

If India is to remain as a sovereign, socialist, secular democratic republic, it has to fight against social, economic, political evils on one hand and battle against insurgency, terrorism and low intensity war imposed upon us by our neighbouring country on the other hand. CRPF, as a tool in the hands of Central Government to maintain peace in the country, has to shoulder a

greater responsibility in this fight. The future is full of challenges and the coming years will witness many changes on the national and international scene and these changes are bound to disturb the peace of our country. Only a well trained and prepared work force can meet these challenges.

PRESENT ROLE OF CRPF

In its present role, the CRPF is being used to maintain law and order and restore peace when the state machinery fails to contain violence during communal clashes, student agitations, agrarian unrest, industrial strikes etc and also being used to fight against extremists, insurgents and terrorists. CRPF has been playing a pivotal role in peaceful conduct of elections in the country. It is also being utilized during natural and man made disasters to assist civil administration in rescue and rehabilitation work. Such a wide spectrum of diversified role put lot of pressure on CRPF. In such situation the force requires high level of preparedness and professionalism to meet the future challenges.



Ready to strike with new weapons in a new style under modern training

IS CRPF READY TO MEET THE CHALLENGES ?

This is a very difficult question. On face value, the CRPF is playing its role very effectively because the force is in heavy demand from the user

States and there is no adverse comment on its performance from the people and the media. As CRPF is being requisitioned by State when own police forces fail, it is necessary that CRPF has to be at least a notch better equipped and prepared to give aid to States. For this there is an urgent and imperative need to prepare the Force logistically and through training to meet future challenges of the millennium.

An introspection and SWOT (Strengths, Weaknesses, Opportunities and Threats) analysis shows that though the force has so far been doing its role effectively and efficiently and has acquitted itself creditably, yet it requires high level of preparedness at all levels to match itself to the needs of changing times and to meet the future challenges. If it lags behind in this endeavour, the concept of Government of India, coming to the aid of State govt to deal with internal security problems, will be defeated.

SOME STEPS TOWARDS PREPARATION

"Every one has the will to win but very few have the will to prepare to win".

- Vince Lombardi

Preparation is the most important factor to achieve success in any field. There is need to adopt a holistic approach to prepare CRPF for new millennium. The whole preparation may consist of the following steps :-

I. ORGANISATIONAL STRUCTURE

Need for organizational reforms - A complete review of the organizational structure is required. Vast expansion of the force during past decade has created many unseen shortcomings in the organisation. A SWOT analysis shows that many problems such as large number of vacancies, deficiency of stores and equipment, insufficient funds etc are due to unplanned and adhoc expansion of the Force. A few may not agree but the fact remains that the quality of officers and other ranks has been diluted because of ill-planned increase in quantity (expansion). There is need for restructuring the organisation with a different perspective. The deployment of the Force should be looking at National perspective and not merely as additional manpower on hire to States. There is a need to scientifically locate bases and camps for prompt reactions and responses for local problems also, if necessary. In a democracy, internal problems are generally

due to mishandling or bad handling of social, political and economic issues.

II. MAN POWER PLANNING

Proper man power planning is required at all levels. Actual requirement of personnel in each rank needs to be worked out. A large number of personnel are presently employed on nonproductive functions. Employment of personnel, on various administrative jobs, temporary attachment, Dak duty, Security aids to entitled or non-entitled category should also be reviewed. Employees must be withdrawn from all non-essential functions and should be properly utilized. The senior off icers of the Force should be dynamic and must come forward to start proper utilization of human and material resources. Top has become too heavy and the legs are weak, so the organisation may begin crumbling under its own weight. Therefore, modern techniques of job-enlargement, job-enrichment and job-specification may be used in man power planning. Recruitment and promotion policies also need to be changed to match the demand and supply curve of man power.

III. ORGANISATIONAL CULTURE

Though it is very difficult to bring in changes in the culture of any organisation, but when different cultures all over the globe are mingling and the society as a whole is changing. It is the need of the hour that our organisation must peep into its culture. Unknowingly and unfortunately the CRPF has developed a culture over the years where everyone talks of pay, perks, promotion, welfare etc only but hardly speaks of duty, responsibility and accountability. Officer class of the Force has grown into a comfort-loving upper class and the lower ranks have become complacent. This culture is retarding the process of development, diluting the quality of leadership and generating indiscipline among the ranks. Hence, the culture of comfort, complacency, procrastination and distrust should be changed and the organisation should develop the culture of honesty, integrity, sincerety, hard .work and mutual trust. This can be brought through concerted effort’s and imparting education and training to employees focussing on attitudinal and behavioural changes.

IV. DEPLOYMENT POLICY

Deployment policy of CRPF also need to be reviewed. Many State

Governments are not complying with the provisions contained in the S.O.P. issued by MHA, GOI, for the utilization of CRPF. Once the CRPF is given to a State, the State Governments utilize the Force according to their will. CRPF field commanders have no say in the deployment plan. Prolonged and continued deployment of CRPF units in the States is diluting its reserve status and adversely affecting its health and professional efficiency. CRPF should be kept as MHA Reserve and be deployed by the order of MHA either on requisition from the State or when Central Govt feels that CRPF should be deployed in the State. Moreover, whenever CRPF is deployed, its operational command should be in the hands of CRPF commander. CRPF should be deployed for specific tasks. CRPF is an Armed police of the Union and it should remain so. Its status as a task Force and as a "Striking Reserve Force" should not be diluted.



Recruits during training



Rock climbing also a part of training

V. OPERATIONAL PREPAREDNESS

The data of operational achievements of CRPF has so far not been very impressive. Proper strategies need to be evolved and adopted to prepare the Force to face the challenges in new millennium.

To enhance the operational efficiency of the Force, the field commanders should focus on the following :-

(1) Intelligence collection

- Threat perception and threat assessment
- Know the enemy
- Know the terrain (area of operation)

(2) Coordination with civil administration

(3) Effective command and control during operation

(4) Conducting operation -planning, equipping, briefing, executing, directing and coordinating, controlling, debriefing.

(5) Creation of special Task groups (Quick Reaction Teams)

(6) Specialized Training- Weapon handling combat-shooting skills simulated exercises on CI Ops, handling of special equipment-NVD, Wireless sets etc, Map Reading, First Aid, Disaster Management, Human Rights etc.

VI. MODERNISING CRPF

(a) Weapons & Equipment

The present day extremists, insurgents and terrorists are using new technology equipments and sophisticated weapons against the security forces. The CRPF is lagging behind in this area.

Therefore, it needs to be modernized. The new generation will require state-of the-art light weight equipments, sophisticated weapons, hi-tech wireless equipment, bullet proof helmets and jackets and bullet proof vehicles to fight the A.N.Es. Old-fashioned and heavy equipment and clothing items should also be replaced with new light weight combat dress and equipment for easy mobility during operations.

(b) Motor Transport-Ops & Adm Mobility

In the coming years, the success of operation will depend upon Zero Response time. The troops need to reach the place of violence within no time and for this, they will require fuel efficient light BP vehicles. Therefore, there is need to replace old model vehicles with new generation vehicles. So also there is need to equip the Force with helicopters and a few aircraft, in addition to, rail boggies and engines at its disposal.

(c) Communication

Effective and efficient communication is of paramount importance for the success of any operation. Though, the communication at the level of Force HQr, Sector HQr and Range HQr has been ’improved, communication of a Bn upto platoon and section level is still not satisfactory, especially when troops are out in the depth of jungle or in the open away from the base, due to old and outdated communication equipment. This area needs attention. Each section or party away on duty or operation should be able to communicate with its HQr and with any other party operating in that area.

(d) Computerisation

With the expansion of the Force, the paper work has been increased

manifold and it has become difficult to store and retrieve the data manually. There is need to analyse and identify the areas suitable for computerization upto Coy level. Broadly the following areas can be taken up for computerization :-

- Human Resource Management Applications (Personnel)
- Material Resource Management Application (Provisioning)
- Financial Management Application (Accounts)
- Deployment of Force and Operational (Ops) details.

VII. HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (HRD)

No preparation, no sophisticated weapon and equipment, nothing will work unless the man who is fighting is a committed, motivated and willing person. “People” are the most important and valuable resource every organisation or institution has in the form of its employees. Competent, motivated and committed employees can make the organisation progress and grow. The following two areas are most important for HRD :-

(i) Training and Development

Training and Development of an employee is of paramount importance. There should be goal-oriented continuous training and development programme in CRPF. Therefore, the following steps should be taken :-

i. Devolop the individual to realize his potential as an individual to the maximum extent.

ii. Develop the individual’s capabilities to perform his present job better and to handle future roles.

iii. Devolop and maintain a high motivation level of personnel and increase their morale.

iv. Strengthen superior-subordinate relationship.

v. Strengthen espirit-de-corps among troops to work as an effective team.

vi. Promote Inter-Team collaboration.

vii. Promote organizational climate development and organizational health development.



NIIT developed an Integrated Software covering all functionalities of the Force From Dte. Genl. to an Executive Battalion

(ii) Employees Welfare

Competent, committed and motivated employees need to be looked after well by the organisation. The organisation must take all welfare measures to keep the employees happy and motivated. The main problem in CRPF is of "Housing". After so many years, the organisation has not been able to provide quarters to its employees. Only 10% of employees are living in Govt Quarters. The organisation should take effective steps to solve this problem. Other areas of employees' welfare such as Medical care, children's education also need more attention.

To sum-up, preparing CRPF for new millennium is the responsibility of commanders. This requires officers of better breed, with modern outlook, dynamism, scientific temper and a new vision. This requires persons who have the commitment and right urge to surge forward. This also requires a goal-oriented, action-oriented and result-oriented approach and proper management of resources.

बहादुरों का सम्मान

13 दिसम्बर 2001 को संसद पर हुए आतंकवादी हमले के एक वर्ष बाद उस हमले को विफल करने वाले के.रि.पु. बल कार्मिकों को सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले कार्मिकों में शामिल थे, 23 बटालियन के इंस्पेक्टर मोहन प्रकाश, 23 बटालियन के हवलदार कुलवंत सिंह, 11 बटालियन के हवलदार रामेश्वर राम और कांस्टेबल मनोज कुमार सिंह, एसडीजी के सब–इंस्पेक्टर नीरज पालीवाल, हवलदार होरो मुकुट और सिपाही श्यामबीर, इन सभी कार्मिकों को लोकसभा अध्यक्ष श्री मनोहर जोशी ने 50–50 हजार रूपये के चैक भेंट किये। 23 बटालियन के हवलदार जी. अप्पाराव, विजय बहादुर सिंह यादव और डी. संतोष कुमार इस मौके पर अनुपस्थित थे। उनके चैक महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र ने स्वीकार किये। इस मौके पर शहीद महिला सिपाही कमलेश कुमारी के पति श्री अवधेश कुमार को उप राष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत ने एक पेट्रोल पम्प के कागजात भी प्रदान किये। इसी दिन उप प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने दिल्ली के चाणक्य पुरी इलाके में एक शहीद स्मारक की आधारशिला भी रखी।



शहीद कमलेश कुमारी के पति श्री अवधेश कुमार को पेट्रोल पम्प के दस्तावेज प्रदान करते हुए उप राष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत

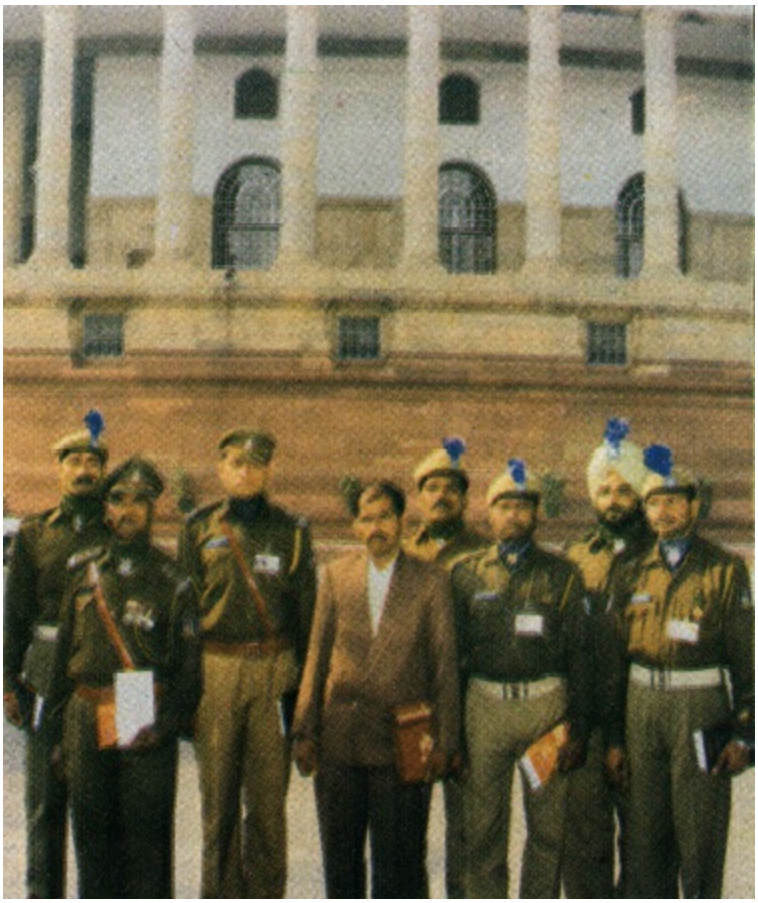


राष्ट्रीय पुलिस स्मारक की आधारशिला रखते हुए उप प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी



अनुपस्थित कार्मिकों की ओर से लोकसभा अध्यक्ष श्री मनोहर जोशी से चैक स्वीकार करते हुए बल के

महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र



सम्मान प्राप्त करने वाले बल के कार्मिक, शहीद कमलेश कुमारी के पति श्री अवधेश कुमार के साथ संसद भवन के बाहर

OPERATIONAL ACHEIVEMENTS OF THE CRPF IN NORTH-EAST

- Rajdeep Singh, IGP, NES. CRPF



CRPF Jawans laying Ambush

The CRPF has been deployed in the northeast since independence. It has been performing both law & order and counter insurgency duties in this part of the country. Though its role may have changed over the years its aim and objective has been to usher in peace and prosperity in this region. The force has contributed to the overall development of the region by providing adequate protection to the population and in helping to maintain law and order. The north east region of the country is very sensitive. The area shares a border with Bhutan, Bangladesh, Myanmar & China. The people living in this region are from a varied ethnic background. This feature is one of the major causes of friction and discord in the area.

MAJOR ACHIEVEMENT DOMAINS

- GAINING TACTICAL ADVANTAGE & AREA DOMINANCE.
- APPREHENDING INSURGENTS.
- RECOVERING ARMS & EXPLOSIVES.
- SEEK COMMUNITY INDULGENCE THROUGH CIVIC ACTION PROGRAMME.

- ACHIEVE HIGH LEVEL OF COPABILITY.
- DEVELOP INFORMATION CHANNEL.

At present the force is deployed mainly in Assam and Tripura. Some units are also located in Manipur, Meghalaya, Mizoram and Arunachal Pradesh. The force has performed a commendable role in curbing the activities of the insurgents, maintaining law and order in facilitating the conduct of free and fair elections providing relief in time of floods and other natural calamities. Two units of the force are also deployed as neutral police force along the disputed Assam Nagaland border. The presence of the force in this area has boosted the morale of other agencies and wings of the government in this region.

The force has been performing counter insurgency duties in this region since 1947. Initially insurgency was confined only to Nagaland. But with the passage of time insurgents also became active in the states of Assam, Mizoram, Tripura, Meghalaya and parts of Arunachal Pradesh. The situation in Mizoram became peaceful after signing of the peace accord between the government of India and the insurgents. However, this problem continues to disturb the internal security scenario in the remaining states.

The force has performed a commendable role in the prolonged battle with the Naga insurgent groups. Even in ancient times the Naga tribes were warlike and indulged in loot and plunder in the adjoining areas. The rulers of the states bordering them bought peace by a policy of appeasement. The British colonial rulers were the first foreigners to enter the area. They followed a very clever policy. Instead of sending in their army first, they sent missionaries into the area to convert the people to Christianity. For the period the British ruled in India they used their armed forces to the minimum extent and relied more on control through religion and by giving false assurances that the Naga people would be ultimately given independence. After 15 August 1947 the leader of the Nagas Phizo proclaimed independence. Thus began a long and bloody struggle. The CRPF along with other para military forces was deployed to maintain the territorial integrity of the country. The officer and the troops of the force fought a long and protracted battle with the Naga insurgent groups. The officers and men of this force suffered casualties and lived in highly inhospitable conditions and terrain. Through civic action programmes the force won the hearts and minds of the people. Ultimately the Naga insurgent

groups signed a cease-fire agreement with the government of India in 1997. After the ceasefire the level of deployment in the state has been reduced. At present only 4 battalions of the force are deployed in Nagaland. The DIG CRPF Kohima is a member of the joint monitoring group for the cease-fire.



Display of arms/ammn seized by CRPF during various operational encounters in North-East



Insurgents surrendering before authorities

Insurgency began in Manipur in the mid seventies. Since then the state has been plagued by violence. The CRPF has been deployed in the state to curb the activities of the insurgent groups. It has made many sacritices losing officers and men while performing counter insurgency duties. The force has also been performing the duty of protecting VIP's, guarding vital installations and facilitating the secure movement of public/ government personnel on the highways amongst other tasks. It has also played a commendable role in ensuring free and fair elections in the state. At present the force is guarding the vital Loktak Project, besides the Raj Bhavan, the Secretariat and the office/residence of the Chief Minister. In addition to insurgency the state has also been plagued by ethnic violence amongst the various groups living in the state. The force has played a neutral role and has helped in containing the ethnic violence by camping in sensitive areas and taking stern action against the trouble mongers. Drug addiction and the spread of AIDS is also a major problem in this state. The force through its civic action programmes and medical camps has helped in combating this to a great extent. At present 5 battalions of the force are deployed in Manipur. There are one IG and two DIG's posted in this state to supervise the operations and coordinate with the state and other central forces.

The force has been deployed in Tripura to contain the ethnic strife and

insurgency since the nineteen seventies. The officers and men of the force have been performing counter insurgency operations in this state effectively. The terrain here is hilly and covered by thick forest. In such an area the task of combating the insurgents becomes increasingly difficult. However, despite all the problems and constraints, the force has kept the activities of the insurgents largely under control. In doing this it has made several sacrifices losing many lives. These setbacks have not demoralised the force. Rather they made the resolve of the force even stronger. In this state also the force has ensured free and fair elections. It has been guarding vital installations and providing security cover to the national highway. At present 14 battalions of the force are deployed in Tripura. One IG and one DIG are posted in this state to supervise the operations and coordinate with the state and other central forces.

The internal security situation in Assam became fragile in the year 1979. The problem began due to a feeling of alienation amongst the original inhabitants of this state due to large scale migration from Bangladesh and other parts of the country. The local residents launched an agitation demanding that such migrants not be included in the voter list. As the movement became more intense. ULFA was formed with the objective of establishing an independent sovereign state of Assam. Other ethnic groups such as the Bodos also formed their own groups to demand and fight for a separate homeland. The CRPF performed the tasks entrusted to it with devotion and zeal. The force has been performing both law and order and counter insurgency duties in the state. It is also guarding the Raj Bhavan at Guwahati along with some important offices of the government of India. The force has also won over the heart and mind of the people of this state by civic action programmes. The force has also helped the railways and the institutions engaged in the oil and tea industries to conduct their business uninterrupted not only by its effective presence but also through tactical operations. At present 25 battalions, the largest in the North East, are deployed in Assam. Units of this force are also deployed along the border with Bhutan. One IG and three DIG’s are posted in this state to supervise the operations. To ensure better coordination amongst the state and the agencies of the central government a unified command is in existence. The IG CRPF North Eastern Sector is a member of this body.

Insurgency in Meghalaya and Arunachal Pradesh is a recent phenomenon. At present 2 battalions are deployed in each of these states to

curb the activities of the insurgent groups. The HNLC &ANVC are active in Meghalaya. The NCSN (K) and the NSCN (IM) are active in Arunachal Pradesh.

CRPF ACTIONS IN PAST FIVE YEARS

INSURGENTS KILLED 237

INSURGENTS APPREHENDED 2025

WEAPONS RECOVERED 1379

CRPF PERSONNEL SACRIFICED 176

The CRPF has been performing its duties with sincerity and dedication. It has thwarted the nefarious designs of the insurgent groups. The presence of this force is vital in preserving the peace and harmony in the most sensitive and strategic North-East Region. The work done and the achievements made by this force speak volumes regarding its service and loyalty towards the country. The force has made a large sacrifice while performing its duties. On the whole the insurgency has been contained to a large extent.



Comdt 94 Bn, CRPF alongwith troop who took part in an encounter in Kukicherra village, Dalai district of Tripura and recovered huge cache of arms/ammn

THE PRESIDENT'S COLOUR & THE INSIGNIA

- C.V. Mathew, Addl. DIG (Training)



Sardar Patel presenting colours to CRPF

The erstwhile Crown Representative's Police was created to uphold the rule of the British Sovereign in British India and was guided by the motto "Heavens Light-our guide" inscribed around a 5 point star radiating rays of light. The Force was rechristened as Crown Representatives Police became the Central Reserve Police in 1949 and regimental colours were presented to

it in recognition of the splendid service rendered by it in war and peace. The iron man of India Sardar Vallabhbhai Patel the then Dy. Prime Minister and Home Minister of the Country presented the regimental colours to the Force on 19th March, 1950 on behalf of the President of India in an impressive colour presentation ceremony held at New Delhi. Sardar Vallabhbhai Patel had foreseen a very significant role for the Force in independent India. His words while presenting the Central Reserve Police Bill in the parliament were characteristic of his vision and conviction:

"As part of the political settlement of transfer of power, the Force passed on to the central control and since then it has been used by us in various states whenever demands of law and order justified its use. This Force, with further augmentation, partly to make up the depletion on account of the Partition and partly to meet the growing demands from the States and Unions has performed most useful functions and has been a very good reserve Force, which has been sent from time to time in aid of local Forces. In Junagadh, on the borders of Jaisalmer, in Mayurbhanj, in Saurashtra and elsewhere it has been a stabilizing influence whenever any threat to security has manifested itself.



CRPF flag alongwith National flag during attestation parade

This little Force which we had, came in very handy and it did very useful work also. But it is small and had to be augmented. We have done our best in this direction and it is still being increased."

The Insignia embodies the vision of Sardar Patel which had a concern for enduring peace and unhindered progress of the nation so as to enable the tricolour to fly aloft in the sky. The Insignia has the Ashok Chakra in the centre and two national flags crossed at an angle resting on the charka. The chakra & flags are encompassed by olive leaves. The olive leaves denote peace and the chakra progress and growth and the national flags Signifies that the Force will strive to maintain peace and tranquility in the country at all times so that the process of growth and development goes on unhindered and the pride and honour of the country is held high. The Force has given its best true to the vision embodied in the Insignia. The CRPF is the only Force which has two national flags in its Insignia.

Attack on Akshardham: Timely action of CRPF saved hundreds of lives

- A.K. Mathur. IGP, CRPF, W/Sector

On 24th Sept 2002 at 4.45 p.m. a white car taxi dropped two terrorists in their early twenties outside the Akshardham gate no. 3. They took out their sleeping bags and jackets full of automatic weapons and grenades and armed themselves as the taxi sped away. They forced their entry into the Akshardham Complex by jumping the parameter wall. They advanced towards the gate no. 2 by injuring seriously or gunning down all those who dared to stop them. The first blood was drawn when they injured a 65 year old security guard, who was the first person to confront the terrorists. In reply, he was gunned down.

Before reaching gate no. 2, the evil duo made its presence felt to one and all by blasting a grenade. A shock of terror took every one in the premises in its firm grip. The terror stricken people-men, women, young and old, all started running helter skelter. Panic prevailed. Hardly any resistance could be posed by lathi wielding security staff. Soon terrorists crossed gate no. 2

and reached the smaller podium adjoining the book stall and the main foyer. Spraying the bullets from their AK-56 Rifles, the terrorists had reached the final step of “podium. From here they fired. One bullet cleanly pierced the 8” door including the ornate brass plates on both the outer and inner surface of the main shrine. Gunning down the innocent devotees on their way, the terrorists advanced towards the step leading to the multi-media centre in hall no. 2.

Then the terrorists lobbed grenades also in the exhibition hall causing fatal injuries to many innocent people. A big crater was caused in the floor of the hall. The glasses of show boxes were broken and the walls were damaged. Here they inflicted the maximum casualties by resorting to indiscriminate firing on the helpless devotees.

At about 1705 hrs, one retired officer of the CRPF Shri A.B. Dobhal, telephonically informed Shri M.M. Sharma, DIGP CRPF Gandhinagar, about the attack. Without wasting any time in confirming the news or getting any formal request from the State Police, driven by the sense of duty and responsibility, Shri Sharma alongwith Shri Pooran Singh, ADIGP and Quick Reaction Team rushed towards the Akshardham temple located at three and a half kilometer distance, On reaching the main gate at about 1715 hrs, they found that a huge crowd had gathered there and the entry point was badly blocked. On getting further information from an eye witness present in the crowd the CRPF team rushed towards the gate. No. 3. Finding the gate locked, all of them jumped inside the premises by climbing over the gate. On seeing the trail of blood in the ChiIdren’s game area, the built up struc ture in that area was cordoned. Both the officers along with Head Constable Pratap Singh and Constable Dharambir Sharma putting their lives at stake, conducted the search of the structure. Finding no one there, the team further advanced towards the main temple complex through gate no. 2.

By the time the CRPF team reached the reception centre after passing through the gate no. 2, the DGP, Gujarat, other senior Police Officers and the State Police Commandos had also arrived there. All of them highly appreciated the way in which both the senior officers of CRPF along with the QRT had reached there even without being formally asked to do so by the State authorities. The CRPF Officers along with the State Police Officers took stock of the situation. Despite having no idea about the exact number and the location of the terrorists and prevailing confusion and panic around

there, the officers maintained their cool in professional manner. They discussed with the Chief of the State Police and formulated a strategy to conduct combing operation to search out the terrorists and to neutralize them. A strategy to evacuate the trapped visitors safely was also immediately planned in consultation with the DGP, Gujarat. Realising the need of a prompt action, Shri M.M. Sharma, along with Shri Pooran Singh, volunteered to lead the counter offensive against the terrorists hiding inside the complex.

At about 1730 hrs, armed with Self Loading Rifles and Sten Machine Carbines, Shri Sharma and Shri Singh and members of QRT entered into the inner circle of the temple complex. Two bullet proof jackets were provided by the State Police Commandos for both the CRPF Officers. The members of QRT did not have any bullet proof jackets. Shri R.B.Bhram Bhatt, the then Officiating Superintendent of Police Gandhinagar along with few State Police Commandos also joined them in the operation. The CRPF Team advanced tactically from the left flank of the temple complex through the corridors of the Research Centre and reached the extreme left corner of the Sehjanand Hall. At this juncture, about 10 dead bodies and several injured persons were found lying in a pool of blood. Both the CRPF Officers and members of the QRT evacuated the injured persons and removed the dead bodies with the help of some volunteers who had gathered outside the fencing. The gory scene prevailing there did not deter the officers and men of the CRPF from advancing further to carry out the combing operation in the remaining part of the complex. More than 250 panic stricken visitors were found trapped inside the two exhibition halls in a hellshocked condition. All these highly terrified visitors comprising men, women and children were evacuated safely in a very tactical and careful manner. The search of the Exhibition Halls and the gallery, having zigzag way, was also carried out with preponderance of probability of encounter with the terrorists, at the grave personal risk by the officers and men of CRPF. As per the trapped visitors, the CRPF team was very closely chasing the terrorists. Finding no option but to hide at a safe place, the terrorists has climbed over and took the position atop the parikrama.

On completion of the search and rescue operation, the CRPF team returned to the reception centre where the DGP Gujarat along with other Senior Police Officers was present. At that time, it was highly suspected that the terrorists might be hiding inside the main shrine. A quick decision was

taken and Shri Sharma and Singh, immediately advanced towards the main building tactically. On making entry into the sanctum sanctorum, it was found that 50-60 terrified visitors including women and children were cuddled on the ground. AH of them were then evacuated safely towards the main gate and thorough search of the main shrine was carried out. At that moment of time, an exchange of fire took place between the terrorists and the State Police Commandos towards the Exhibition Hall side. The terrorists also exploded a grenade. Since none of the Police or CRPF personnel was carrying any grenade, the explosion confirmed the presence of the terrorists some where on the roof top of the sprawling exhibition gallery. At this stage it was felt essential to take position on the roof top of the main temple building which was the highest and the dominating part of the complex. Hundreds of bullets were flying all over the complex and no covered passage was available to reach the roof top of the temple to occupy that tactical vintage position. Shri Sharma and Shri Singh accepted the challenge and climbed through a 40 feet high open ladder on the second floor of the building. From there, the brave officers of the CRPF could keep watch on the terrorists and they managed to block the escape routes of terrorists by covering the fire power. This action of them forced the terrorists to remain holed up in a corner of the roof top of the exhibition gallery. In the meantime the DGP Gujarat, on the wireless set, instructed Shri Sharma to maintain the dominating position to ensure the safety of the main sanctum sanctorum. He also informed that NSG Commandos were specially air lifted to carry out further operation to flush out the terrorists. The CRPF team along with the State Police personnel kept the situation under control awaiting the arrival of the NSG Commandos.

NSG Commandos under the leadership of Brig Raj Seethapathy were specially air lifted from Delhi to Gandhinagar. After having detailed discussions, they chalked out the strategy to start the operation “Vajra Shakti.” The operation commenced at about 0230 hrs on 25.9.2002. The possible location of the terrorists was ascertained. However, the darkness was the biggest hurdle in launching the final assault. The terrorists duo was properly encircled by a tight cordon laid by the CRPF and State Police Commandos. Their possibility of escaping from there was virtually ruled out. Under such circumstances it was decided to wait for the dawn so that effective assault could be launched. At dawn, the operation took the final turn and at about 0700 hrs both the terorists were gunned down. However,

in the operation, one NSG Commando, two State Police Commandos laid down their lives and another Commando of NSG was critically injured. Two foreign made AK-56 Rifles, huge quantity of ammunition and explosives were recovered from their possession. Besides this, one hand written paper written in Urdu was found from the possession of the terrorists. The document disclosed that both of them belonged to a Pakistan based new terrorist outfit namely Tehreek-E-Qisas".

The incident got highest attention of the Central Govt. The Dy. Prime Minister Shri L.K. Advani himself reached Gandhinagar in the night itself. The DG, CRPF Dr. Trinath Mishra, also accompanied the Dy. Prime Minister and actively supervised the operation carried out by CRPF, State Police Commandos and NSG by physically remaining present at the temple complex all through the night. His presence and guidance boosted the morale of officers and men of the security forces engaged in the operation and infused vigour in them.

The incident proved to be an acid test for the CRPF. Both the Officers of CRPF shown remarkable sense of duty, courage and presence of mind. Without waiting for any formal call, they reached the location along with QRT to attend the situation. The QRT was found to be alert and ready to move for action in the expected manner. The action of the CRPF team was highly appreciated by the Police Officers, the public and the temple authorities. Even without having any bullet proof jackets, the CRPF Officers and men were ready to launch the counter offensive on their own.

Though 29 people including 1 NSG commando and 2 SRP commandos lost their lives and around 45 civilians were injured in the incident, it is worth mentioning that the arrival of the CRPF team on their own within the shortest possible time was the most important feature of the entire operation. Their smart action frustrated the plan of the terrorists and saved hundreds of lives.

The dawn of 25th Sept. 2002 adorned the nation with Triumph.

After the incident, the temple is fortified with strong and high parameter wall. The security of the temple has been handed over to the CRPF. A strong vigil is being maintained to rule out any such attack in future.

के.रि.पु.बल छायाचित्र प्रतियोगिता



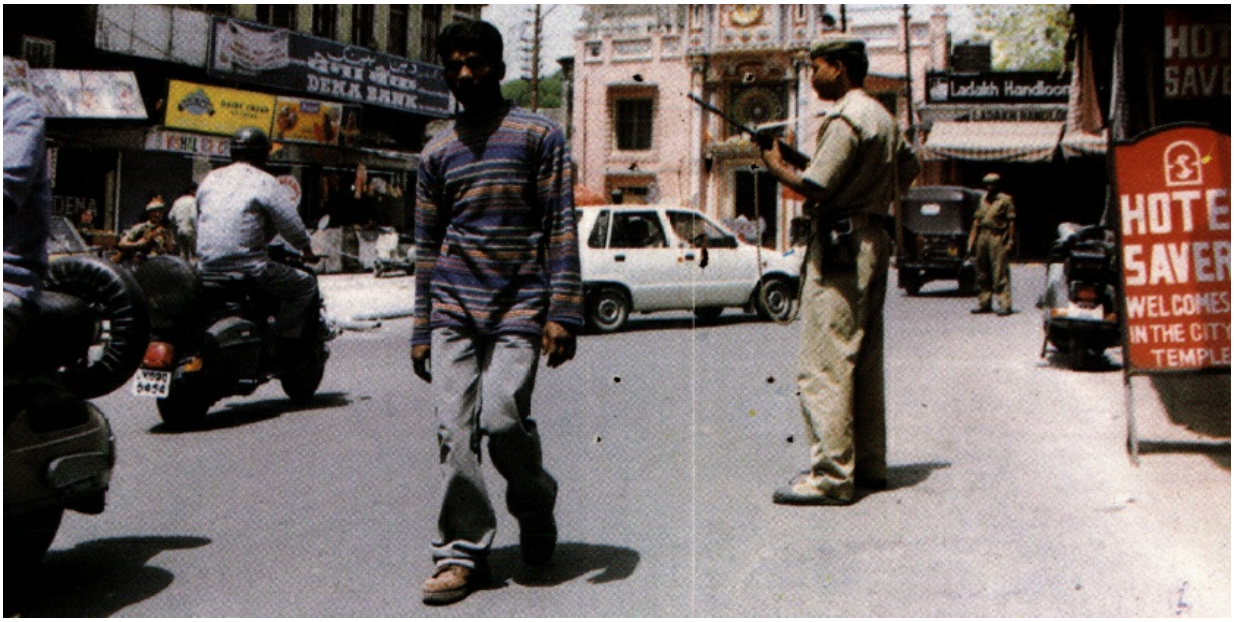
छाया–सि. आर–सिल्वा राज *73* बटालियन



छाया–स.उ.नि प्रदीप कुमार *33* बटालियन



छाया–सि. प्रेम सिंह बिष्ट *104* बटालियन



छया–सि. मुजीब रहमान *52* बटालियन



छया–सि. ए. पलानी *19* बटालियन



छाया–स.कमां अनिल गुप्ता *122* बटालियन



छाया–स.कमां विनोद नंदन प्रसाद *11* बटालियन

HUMAN RIGHTS AND CRPF

- Mohsen Shahedi, DC (Legal), Dte. Genl., CRPF



Justice Shri J.S. Verma, Chair person, NHRC presenting Championship trophy of debate competition to CRPF Team

While the security forces today face a daunting task in fighting terrorism and insurgency in the country, the recent activism on the front of human rights protection and awareness has brought many core issues into sharp focus:

- ***Is it possible for the security forces to always operate within the given laws and under all circumstances to observe human rights?***
- ***Is every disregard of law by the security forces a violation of human rights?***
- ***Should we not differentiate between normal policing and policing in terrorist infested or insurgency infested areas?***
- ***Where disregard of law by the security forces involves violation of human rights, does it produce results? Is it not counter productive?***
- ***Do we need to enquire circumstances and compelling situations where security forces will suffer for observing human rights to the advantage of the terrorists?***
- ***What action plan can be made for the observance of human rights in combating terrorism?***

It would perhaps be apt to view the issues in the background of what the great American humanist jurist, Robert Ingersoll had remarked :

"A government founded upon anything except liberty and justice cannot stand. All the wrecks on either side of the stream of time, all the wrecks of the great cities and all the nations that have passed away-all are a warning that no nation founded upon injustice can stand. From the sand-enshrouded Egypt, from the marble wilderness of the Athens and from every fallen, crumbling stone of the once mighty Rome, comes a wail as it were, the cry that no nation founded upon injustice can permanently stand."

No wonder the recognition of human rights has gained firm grounds ail over the world. While there are a number of situations and sources in human right violations, the police is increasingly being alleged to have committed various types of excesses. As many as 40,000 complaints received by the National Human Rights Commission relate to the police misconduct and excesses. The NHRC further observes that 60 percent of arrests made by the police are "unnecessary and unjustifiable and these account for 43 percent of the total expenditure incurred by prisons." The informal arrests are on the rise. The laws that provide relatively more powers to the police have often been reported to be misused in so far as unlawful arrest or detention is concerned. After TADA, POTA has now taken center stage. No entry of arrest/detention is made by the police in cases where they are not sure of the legal validity of their action.

The law enforcement officers however, feel that human rights come in the way of their functioning, implying thereby that the rights constrain their style and method of operation. It is implied that they interpret rights as fetters on their undisputed powers for 'seeking' confessions, using torture to seek truth, or making arbitrary arrests. Their tirade is against the Constitution and its three Articles-20, 21, and 22 that, they consider, are a millstone around their neck, thus preventing free play of authority. It is here that Judicial intervention has come to play a vital role in upholding the Rule of Law and protecting the rights of the Citizens.

In cases of Neelabati Vs. State of Orissa (1993), the court has observed that any unlawful detention is clearly the infringement of Article 21 of the Constitution of India. In fact the judiciary has been invoking this Article in such type of cases and in recent times this provision has become an effective

bulwark against custodial excesses.



Shri Himanshu Kumar. Addl D.G. C.R.P.F presenting memento to Justice Shri J.S. Verma, Chair person N.H.R.C.



Former Foreign Secretary Shri J.N Dixit lighting the lemp at a function organised by RAF on the occasion of Sadbhawna Divas

The informal/unlawful arrest syndrome has attracted considerable

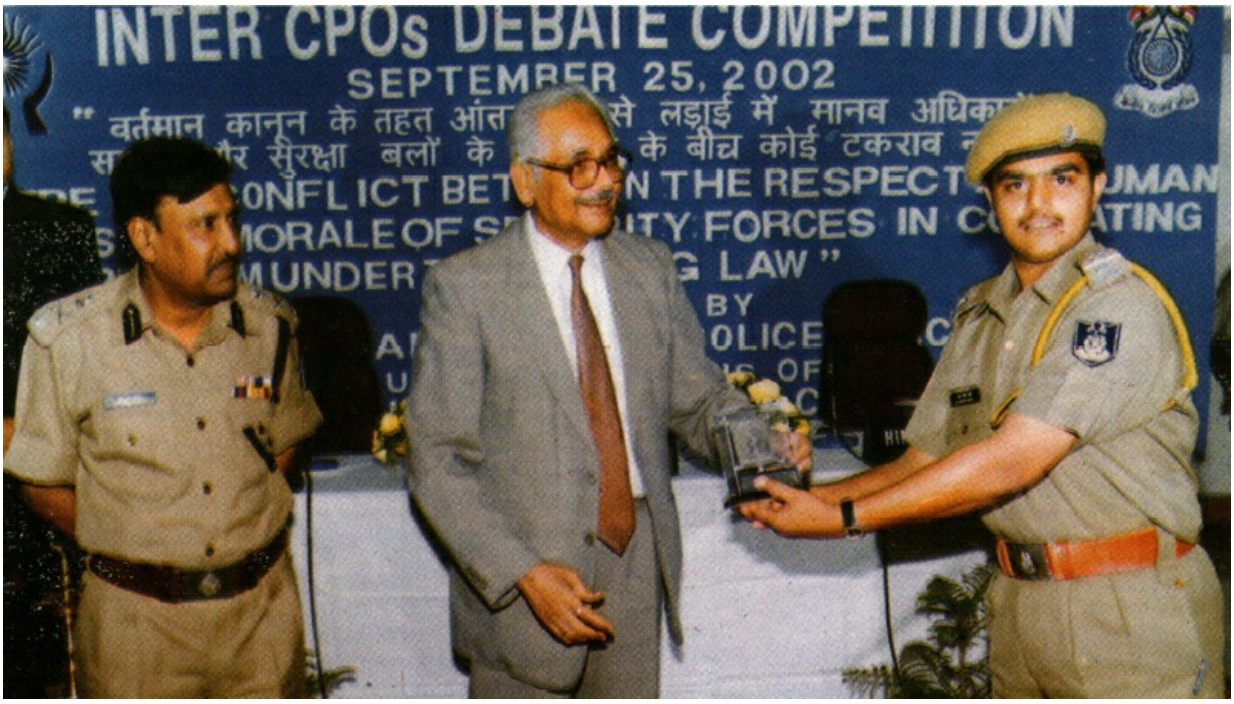
attention of the judiciary. The Supreme Court in case of Joginder Kumar Vs. State of U.P. (1994) observed : “No arrest can be made because it is lawful for police officers to do so. The existence of the power of arrest is one thing. The justification for the exercise of it is quite another...”

More concrete and specific guidelines concerning arrests have been made by the Supreme Court in the case of D.K. Basu Vs. State West Bengal and others [1997]. The securty force personnal need to be well acquainted with these guidelines since failure to comply with the requirements mentioned in the judgement shall, apart from rendering the concerned official liable for departmental action, also render him liable to be punished for contempt of court and the proceedings for contempt of court may be instituted in any High Court having territorial jurisdiction over the matter.

This however should not deter the CRPF officers and men in the performance of their duties since a bare perusal of the statistics show that the cases of human rights violation by CRPF are very few as compared to that by other police organizations. Hence the plea for inaction in operational areas is really During the last 8 years starting from 1994, 180 complaints were made against CRPF personnel out of which only 7 cases were found to be correct. Suitable actions have also been taken against the erring officials.

Notwithstanding the above facts, we should still strive to shatter the police sub-culture which creates positive perceptions amongst the police in respect of all extra legal practices in the course of police-jobs. Things go wrong beacuse he human aspects of law enforcement is totally forgotten. This has to be corrected by the right type of training. Systematic methods should be employed to evaluate professional deficiencies after every operation and steps taken to correct them by intensive training.

To ensure observance of Human Rights, the Force leadership has adopted a two pronged strategy:-



Justice Shri J.S. Verma presenting awards to a winner of debate competition on Human Rights

(A) Substantive

Prompt enquiries are held on receiving complaints of Human Rights violations. Severe and deterrent punishment is awarded.

(B) Preventive

A list of do's and dont's with regard to observance of Human Rights by Force personnel in their operations has been issued by the CRPF Directorate General, both in Hindi and English. A multi-tier sensitization of the Force personnel about HR issue is being done through the activities such as :-

a) Inclusion of Human Rights inputs in all basic, refresher and promotional courses at various levels.

b) Organizing a three day capsule course on Human Rights for each Force personnel once in a year at unit level, besides arranging a 10 days long "Human Rights Sensitivity course" which is meant for subordinate officers.

c) Organizing seminars, debates and workshops at field and Force levels.

A Human Rights Cell has also been constituted in the CRPF Directorate General to monitor, analyse and record all allegations of Human Rights violation and action taken thereon.

Despite the vicious propaganda unleashed by our adversaries. Central Reserve Police Force enjoy a fairly high reputation for their disciplined and unbiased conduct in carrying out their responsibilities.

In any civil society, observance of Human Rights is essential by each Citizen more so by the law enforcing agencies who are themselves the protector of law. The society in general and the law enforcing authorities in particular should honour and accept it as a Pranava Mantra.

We should inculcate in ourselves a feeling so beautifully echoed by John Donne :

"No *man is an Island, entire of itself; every man is a piece of the Continent, a part of the main; if a clod be washed away by the sea, Europe is the less, as well as if a promontory were, as well as if a manor of thy friends or of thine own were; any man's death diminishes me, because I am involved in mankind; And therefore never send to know for whom the bell tolls; it tolls for thee."*

SPECIAL DUTY GROUP

- K.V. Madhusudhanan,
Comdt. SDG, CRPF



Special Duty Group men during training

The whole Nation was rudely shocked when it was known on 31.10.1984, that the then Prime Minister of India Smt. Indira Gandhi was assassinated. That the assassins were none other than her own security men compounded the shock and shame. The need to review the security of the head of the Government of the largest democracy without essentially undermining the image and the necessity of accessibility of the person holding that post was felt more than ever after this dastardly incident. During the initial days after the assassination even deployment of Army for security of the P.M. was considered but the idea was abandoned as it was not perceived as a right step considering the well established democratic moors of our Country, It was in this back drop the creation of Special Protection Group (SPG) was conceived. S.P.G. takes care of the proximity security of the P.M. and it started looking after the security of the ex. P.M.'s also consequent to the amendment of the SPG Act. SPG functions in an unobtrusive manner and its personnel don't wear police uniform and as such the need to have a special armed and uniformed group dedicated to the security of the P.M. (and other SPG protectees subsequently) to guard the outer cordon of the residences of such protectees and P.M.O. was felt. Thus Special Duty Group (SDG) came into existence on 15.9.1985.

Special Duty Group draws its personnel from the entire CRPF. The Service Records and Confidential Reports of eligible and willing personnel are verified and short listed candidates are put through P.E.T., Special Medical Test, Psychology test and an interview by the Commandant. The successful candidates are put through a rigorous Pre-induction training of the duration of 8 weeks. The SSQ verification of successful candidates are carried out simultaneously.

On SSQ clearance the posting orders are got issued and the personnel posted usually have a 5-6 years tenure. They are entitled to Spl. Duty Allowance @ 25% of total emoluments. About 70% of the personnel are provided with family accommodation.

The SDG performs one of the most crucial duties entrusted to CRPF in highly sensitive areas in zero error zones and as such great emphasis is given to professionalism. Constant in-house training is organised to hone the professional skills of its personnel.

With large number of terrorist organisations sprouting up like mushrooms and their ever increasing hard core cadres indoctrinated and motivated to make the supreme sacrifice for the cause they believe in, the threat of fidayeen (suicide) attacks are very very real and common. It is needless to state that the personnel on the outer cordon will have to take the brunt of such attacks and foil their mission. It calls for not only greater professional skill but also supreme sense of dedication and commitment.



S.D.G. men at training

That the SDG personnel while on duty have to tackle various situations calling for restraint, absolute discipline and decorum as they are the interface between the high dignitary protectees and their worthy visitors. Even minor error could lead to major embarassment. Our personnel are always in the public glare with large number of print and visual media men stationed outside these locations ready to flash any newsworthy matter. But whatever be the delicacy and sensitivity of the situation or the status of the people involved, breach of security is unpardonable and as such the personnel should be very clear about the fundamentals.

That in its 17 years of glorious history hundreds of commendation letters were received by its personnel is a recognition of the fact the SDG has always risen to the occasion and performed its duties well.

That the trust reposed in SDG was fully justified has been adequately proved on 13th Dec. 2001 when our Parliament, the seat of highest representatives of the largest democracy of the world was attempted to be attacked by terrorists.



S.D.G. personnel undergoing rigorous Training

SDG CT Shyambir Singh deployed in the P.M's Zone of the Parliament, shot dead one of the terrorists who managed to reach that zone and threw a grenade injuring SDG Asstt. Comdt. on duty Shri Anand Jha and CT Rakesh Kumar, CT Mahipal and CT/Dvr Hansraj. The exemplary courage and presence of mind displayed by Ct Shyambir Singh was deservedly recognised by the award of Shaurya Chakra by the President of India. D.G, CRPF had already granted an out of turn promotion to CT Shyambir Singh. Shri Anand Jha, Asstt. Commandant, Ct Rakesh Kumar, CT Mahipal and CT/Dvr Hansraj received Rs. 1 lakh as reward and all 10 personnel on duty at that time of incident were issued with commendation certificates by the Hon'ble Speaker of Loksabha recently.

The excellent account, given by CRPF personnel including SDG deployed at Parliament on 13th Dec. 2001 will remain a bench mark while assessing our reaction drill in any future contingencies that may arise at VIP

locations/vital installations and it is for all of us to not only keep up the standard of performance but also constantly endeavour to improve our expertise in this field.

REMNA RUN

- Bhudeb Chakrabarti DIG, CRPF (Retd.)



Ever Alert

It was the middle of July. The monsoon had already set in the hills of Mizoram. Sometimes it rained non-stop all throughout the night on the tin roofs of the houses of Aizwal. When there was a respite in rain in the

morning with the sun coming out, the hills of Aizwal and the neat houses with tin roofs on the slopes and ridges all looked quite fresh.

On one such morning, I went to Tui - Vamit - Tlang. It was a windy place at one end of Aizwal. Remna Run was very close to Tui - Vamit - Tlang. Remna Run was a quiet place unlike tui - Vamit - Tlang, as it was on a lower ridge and further well protected by other higher ridges. Brisk work was in progress at Remna Run round the clock to put up a ‘Peace Camp’ for accommodation of the Mizo National Front Returnees who would reach there within the next few days.

There was a serene tranquility pervading the environs of Remna Run.

After visiting Remna Run, I went to Mizoram Police Headquarters in the heart of Aizawl town. \ had a meeting with IGP, Mizoram and other Mizoram Police Officers to discuss the arrangements to be made for the MNF Returness. A Peace Accord had been signed few days earlier on 30th June 1986 which ended the two decade- old insurgency in Mizoram ushering in the much sought after peace in the “Land of the Highlanders”.

Consequent to the Peace Accord, the Government of India selected two places through which the MNF Returnees would enter Mizoram from Bangladesh. Marpara was one of these two places. A fair weather road connected Marpara, which incidentally fell in Aizawl district, with Aizawl town. It was really very tough going on this road involving m$_f$any hazards. The other place was Parva which was situated at one of the remotest corners of Mizoram on the tri-junction of Mizoram, Bangladesh and



Keeping vigil in sensitive area

Myanmar. Parva was in Chhimtuipui district. Unlike Marpara, there was not even a fair weather road to Parva. Lawngtlai on Lunglei-Saiha Road was the nearest road head for Parva. The 55 Km. hill track between Parva and Lawngtlai could be covered with great difficulty by two days difficult trek over steep hills with very dense forests. It had been decided at the highest level that the MNF personnel would lay down their arms and ammunitions to the Civil Authorities at Parva and Marpara. The CRPF would then take over the arms and ammunitions so laid down. The CRPF would subsequently carry them to Aizawl to deposit with the Army Division in Mizoram. The MNF Personnel would also be escorted by the CRPF from Parva and Marpara to Remna Run.

19th July was fixed for the commencement of the operation after lot of deliberations. As the day approached, we became more and more busy with our work. I held a series of meetings with all the CRPF Battalion Commandants to give the final shape to our operational plan so that

everything would go on smoothly. Finally 19th July came and the operation commenced in full swing.

In the meantime four days passed after the commencement of the operation. On the fifth day when I woke up at 5 A.M. I received a very disturbing news. It was a radio message-some sort of an SOS-from Lunglei. The contents of the message were that two jawans of 16 Battalion CRPF at Vathuampui had developed very high fever and their condition was such that they needed to be evacuated immediately. Vathuampui was one of the transit camps on the mountain track between Parva and Lawngtial where the MNF Returnees would halt for the night on their arduous trek from Parva to Lawngtial. I immediately flashed a message to the concerned Army and Air Force Formations for the evacuation of the seriously ill CRPF jawans from Vathuampui by helicopter. By that time the rain which had started last night and continued uninterrupted till morning suddenly stopped. At once I left for the Military Hospital at Zemabawk to meet the Commanding Officer of the Hospital. I wanted to tie up the arrangements for the admission of the two jawans after they were evacuated from Vathuampui.

From Military Hospital, I went to Zemabawk Helipad from where I saw Aizawl town shining in the sunshine as the sun had come out and the weather had cleared up. I eagerly waited for the arrival of the helicopter from Silchar. The helicopter was required to refuel at Zemabawk before flying to Lunglei and then to Vathuampui. From the helipad I saw hills all around running from the north to the south in a parallel way. These hill ranges were separated from one another by narrow valleys and deep gorges. The helicopter arrived after sometime. When I waited for the helicopter, I had not noticed that the weather which was bright so long gradually changed with clouds gathering slowly. It was not long before that dark monsoon clouds covered the entire sky and enveloped the surrounding hills. The rains soon followed, first in gentle showers and then the clouds burst with rains falling in torrents. The heavy rains with strong winds continued unabated with no sign of any giving up. When we saw that there was no sign of let up in the rain and improvement in the weather, we decided to return to our Headquarters at Zemabawk. The heavy rains continued without any break and lashed throughout the night.

When I woke up next morning the rains had still not stopped although its fury had subsided considerably. The weather became clear by 11 A.M. I had

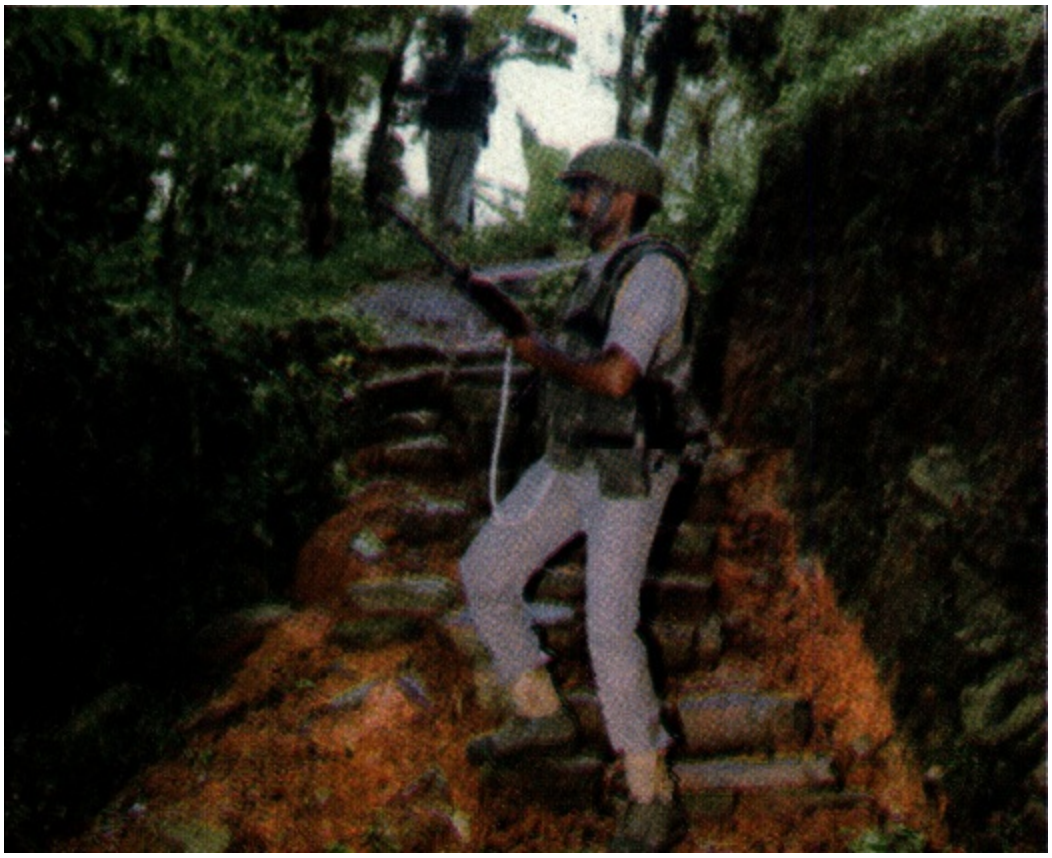
planned to move to Lunglei to be present there during the final phase of the operation in the Parva Sector. I now thought and ultimately made up my mind to fly with the helicopter upto Vathuampui from where the jawans were to be evacuated. After their evacuation on our way back, I would get dropped at Kawmzawl-the helipad for Lunglei town.

We left Zemabawk for Kawmzawl within half an hour. We flew over Tuirial River below Aizawl Hills. Ahead of Tuirial River, there were high steep hills. By the time we came close to the hills, the weather suddenly turned bad. We could hardly see anything due to dark and thick clouds. The Air Force Pilot had good experience of flying over the hills of Mizoram. He tried to steer clear of the clouds and forge ahead. But when he saw that he could not make any worthwhile progress, he informed that he had no other option but to return to Zemabawk-the nearest Helipad.

We did not go back to our base after landing at Zemabawk Helipad. We waited there patiently for the weather to improve. After an hour the weather improved a bit. We did not delay for a single moment and took off immediately. This time we made good progress although we encountered rough weather and rain clouds. The pilot flew the helicopter higher and higher and concentrated his attention fully to his task. The co-pilot assisted him well by proper nevigation. The drone of the helicopter was the only sound, which broke the silence pervading the hills.



CRPF men-always on move



Patrolling in a remote area

We took about an hour to reach Kawmzawl. Commandant 58 Battion CRPF Lunglei was already at the Helipad. He had been in constant touch with Vathuampui post. He told us that the condition of the two jawans had gone worse. To complicate the situation further, another jawan there had fallen ill with very high temperature. He said that all of them were suspected to be suffering from Malignant Malaria.

The helicopter after refuelling was scheduled to leave for Vathuampui. When we were almost ready to take off, the weather again turned bad as it usually happened in Mizoram without much notice during monsoon. We waited and waited without any luck. At last evening came and darkness swooped down on the hills. We went to the CRPF Battalion Headquarters at Lunglei to spend the night and to come back to Kawmzawl early next morning to try our luck.

We got up very early when it was still very dark. We got ready very quickly and left for Kawmzawl. It was a very difficult drive all the way from Lunglei to Kawmzawl. There was thick fog and heavy mist all throughout. The yellow fog lights were fully on as the visibility was

extremely poor. We moved with great caution as any wrong turn could lead to a sudden fall down the sheer precipice. By the time we reached Kawmzawl, it was no longer dark. But the early morning sky was overcast with clouds. The hills and gorges were also covered with heavy mist and rain clouds. We waited for some time. When we saw that there was no hope for much improvement in weather, we decided to take off without any further delay. The pilot and co-pilot, who were standing by the side of the helicopter hopped into it. I followed them. The pilot closed the doors. We all fastened our seat belts. Then the helicopter flew off. Initially it flew through the clouds. Both the pilot and the co-pilot were fully conversant with the topography of the area. The pilot steered the helicopter towards the narrow gaps between the hills and deftly came out of the peaks of Lunglei. We now saw the valley ciearly and gradually the clouds over the hills were lifted giving a full view of Lunglei Hills.

We now flew over the narrow steep mountain track between Parva to Lawngtlai. At that time we saw the MNF Returnees in their battledress walking on the narrow track.

escorted by the CRPF men. They would go upto Lawngtlai on foot. From Lawngtlai, they would move in vehicles first to Lunglei where they would have a night halt and much needed rest. Next day they would resume their road journey terminating at Aizawl for their ultimate destination at Ramna Run.

As we approached Vathuampui, we saw the smoke signal given by the CRPF Post. The pilot lowered the height of the helicopter and positioned it over a small strip of land for landing. I found it hartlly adequate for the helicopter to land. The pilot manoeuvered the helicopter in such a manner that at last it could safely land. The seriously ill jawans were already there draped in heavy woollen blankets. We lifted them in our helicopter with the help of the CRPF post personnel and left for Kawmzawl as soon as all of us were seated inside the helicopter.

I got down at Kawmzawl where I along with Commandant 58 Battalion CRPF made arrangements for the escort of the sick jawans upto Aizawl and for their proper reception there. I thanked the pilot and co-pilot for taking so much of pains, even putting their own lives to risks for evacuating the jawans. I had developed a close rapport with them during these three days. The helicopter after refuelling left for Aizawl.

Our operation came to an end exactly on the last day of the month. The task, which had been given to CRPF, had been accomplished. The CRPF had to pay a heavy price for that. The precious lives of some jawans had been lost in a tragic vehicle accident when they were escorting the MNF personnel from Marpara to Aizawl.

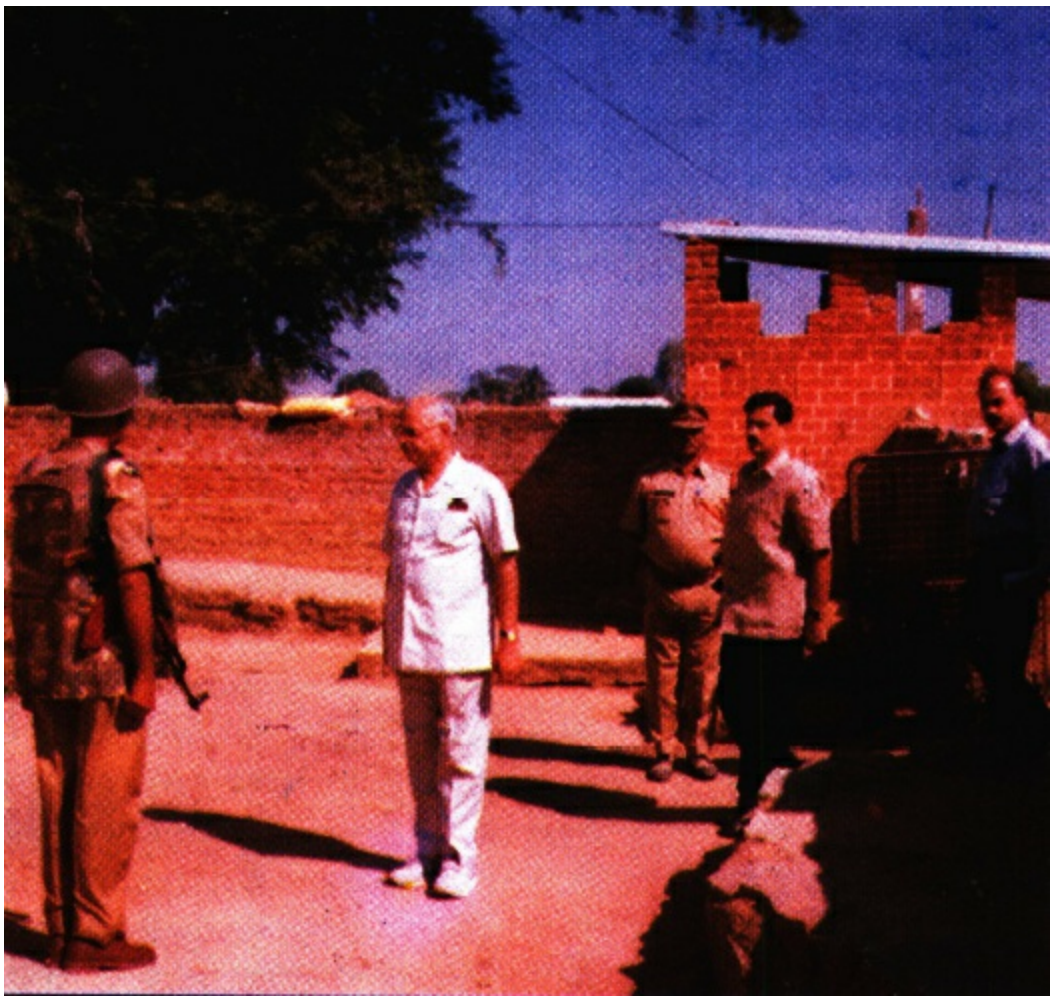
Now I was to go back to Aizawl. This time I took a lift in the helicopter sortie of the Indian Air Force, which was operating from Lunglei to Aizawl and then to Silchar. When I reached Tuirial Airfield I saw the three jawans who had been evacuated to Aizawl from Vathuampui. I was quite happy to see that now they looked to be better and cheerful. I came to know that they were being sent from Aizawl Military Hospital to Silchar Military Hospital for further treatment. We helped them to their seats inside the helicopter. We wished them early recovery and then got down. When the crew and passengers had gone inside the helicopter, the doors of the helicopter were closed and the ground staff of the Indian Air Force gave the signal to the pilot. The blades of the helicopter swirled. The helicopter took off slowly throwing a lot of dust. It went up and then flew over the hills of Aizawl towards Silchar.



CRPF men on Patrol

Naxalite Mouement in Andhra Pradesh and CRPF

- K. Nagraj, DIGP, CRPF, Hyderabad



Dr. Trinath Misha, DG CRPF visiting the Rami Reddy Post

The Left Wing Extrermism in Andhra Pradesh, popularly known as the naxalite movement was originally spread to Srikakulam district of Andhra Pradesh in the year 1969. This was under the inspiration of Charu Mazumdar and Kanu Sanyal of Naxalbari fame. The movement gradually spread to the Telangana region, as well. During the mid 70s, the strong

police rear guard action among other factors contributed to the control of the movement in Andhra Pradesh.

During 1977-78, the movement resurfaced and gained momentum with the formation of CPI (ML) People's War Group on 22/4/1980 by Kondapalli Seetharamaiah. At present, it is a powerful group in terms of manpower, weaponery, striking power, finances and clandestine net work. Now, the People's War Group is not only in Andhra Pradesh, but also active in States like Jharkand, Chattisgarh, Bihar, Madhya Pradesh, West Bengal, Tamil Nadu, Maharastra etc.

ORGANISATIONAL NET WORK

At the apex of the Unified PWG organisation, there is a central Committee comprising of 11 State committees among which the Andhra Pradesh State committee is dominating. Under each state committee, there are regional committees, district committees, area committees, Dalams (squads) as well as some frontal organisations who carry out their over ground activity.

The latest strategy being utilised by the PWG is formation of People's Guerilla Army (comprising of military platoons) through which they intend to carry out large scale attacks on security posts/police stations and destroy other public assets. Their weapon holding in Andhra Pradesh is worked out as about 783 weapons including AK-47, LMG, Rifles Carbines, Sten Guns, Pistols, Revolvers, DBBL/SBBL guns etc.

The formation of People's Guerilla Army is a significant move. Earlier the PWG was claiming that with the support of the people at large, they can enter any area for a particular purpose and go unscathed. Of late, they are unable to penetrate the rural areas due to resentment in the masses as well as continuing police action leading to loss of PWG cadres in encounters. It is also an indication that the PWG is no longer in tune with the masses whereby the people in general are considering the PWG as an impediment to progress and development. Continuious losses due to encounters with the police is also shattering the morale of PWG cadres.

In the light of depleing cadres, the PWG has attempted to garner some breathing space by offering unconditional talks during the months from May to July 2002. During this period, the aim of the PWG was to form village sangams, activate the militants/sympathisers and recruite new cadres.

However, this tactical move was clearly understood both by the Govt, as well as police and the same became infructuous due to PWG refusal to continue further talks beyond July 20, 2002.

SPECIAL ACTION TEAMS

As an aftermath of the above, the PWG has re-inforced their Special Action Teams to demoralise the police forces and to hit at political targets all over the State. Each such teams operates in 3-6 groups. Their job is to track their targets and accomplish the job of killing them. During the last 3 years, the major killings were Shri Umesh Chandra, IPS, Shri Budda Vengal Reddy, MLA, Shri Purshottam Rao, MLA and Shri Madhav Rdddy, the then Panchayat Raj Minister.

PRESENT SCENARIO

After resuming attacks against police forces and political targets, the Chief of PWG has given a call for more such attacks against police/political targets. One such effort was at Tupakula Gudem on 18/11/02 which left almost 20 innocent tribals being killed and several others being seriously injured when a land mine was set up on an RTC bus presuming that police personnel were travelling in the bus. Though this has brought a considerable criticism against the PWG, it reiterated their resolve to take the security forces wherever possible. Therefore, the current PWG strategy continues on expected lines of attacking police political targets and destroying public property to gain publicity.

STATE STRATEGY

In order to curb the extremist activities in Andhra Pradesh, the State Government has taken several measures which include :-

1. Banning of CPI-ML PW and its frontal organisations.
2. Distribution of surplus and Govt, lands to landless poor.
3. Taking up developmental and welfare programme in interior and backward areas through ITDA, DRDA, CMEY Janma Bhoomi, Joint Forest Management etc. to wean away the weaker sections from the influence of extremists.
4. Announcing a comprehensive surrender and rehabilitation policy to

draw out misguided youth from PWG.

5. Strengthening the intelligence collection parties in the state.
6. Imparting specialised training for the police personnel to improve their fighting capabilities.
7. Creation of elite force called ‘Grey Hounds’ under the special security forces to deal with the PWG extremists in interior/forest areas.

The above strategies have paid rich dividents to the State



Keeping strict vigil



Iron Boxes loaded with Gelatin explosive, detonator, Splinter and remote control device to ignite the explosive recovered from Naxalites

Government in the last few years. However, the major issues particularly in the backward region of Telangana continue to be unequal distribution of land and exploitation of the rural poor. Unless the Government comes up with some viable solutions in these areas to mitigate sufferings of the people from extremist groups like PWG, the masses would continue to suffer.

Role of CRPF

In 1968, 36 Coys of CRPF were despatched to the State to deal with the Telangana agitation and paxalite menace. In the wake of Anti Mulkhi rule agitation and demand for bifurcation of the State, a total 70 Coys of CRPF were inducted from Oct 1972 to March 73. Due to effective role of CRPF, the Telangana agitation was tackled creditably and successfully. Further, by 1975, 12 Coys of CRPF were deployed to curb the naxalite activities in the State.

Due to rise in PWG activities, the CRPF was inducted in the main affected districts of Telanagana viz Adilabad, Karimnagar, Nizamabad,

Warangal, Nalgonda, Medak, Khammam, Mehboobnagar as well as the districts of East Godavari and Vizag rural in coastal Andhra in 1991. The induction of CRPF in Andhra Pradesh boosted the striking capabilities of civil police in A.P. whereby intensive operations were carried out to nullify the extemist activities.

When the ban was imposed on the PWG on the front organisation wef. May, 1990, CRPF was again deployed in Andhra Pradesh. However, keeping in view the increased violent activities by the PWG extremists, the number of coys of CRPF were raised to 108 to ensure Assembly elections peacefully during December, 1994. After elections, 23 Coys remained deployed for anti-naxalite operations. Further, as the naxalities increased their violent activities, the centre provided additional coys in March, 1997. Gradually, as the extremist activities were effectively controlled, the level of deployment of CRPF was brought down to 23 coys. Presently 10 coys are deployed in North Telangana region, including 2 Coys on VVIP duties. The major achievements made by CRPF were in the year 1996 when 10 naxalities were killed and 18 arrested, and in the year 1997, 17 naxalities were killed and 19 were arrested.

Presently deployed 10 coys in the state are assisting the local police in anti-naxalite operations and maintenance of law & order in the police station areas. Major achievements in the past few months have been the successful repulsing of attacks on the CRPF posts at Ramireddy (Nizamabad district), Eturunagarm (Warangal district) and G.K. Veedhi (Vizag Rural) where by the PWG has cautioned its cadres that attacking CRPF posts would be full of dangers. A number of arrests and recoveries have also been made during the last 2 years.

The CRPF is playing a major role in containing the naxaliate activities in Andhra Pradesh and achieved a remarkable success in the last 9 years. During the period from 1994 to 2002 (upto 30th Nov, 2002) as many as 67 naxalites have been killed and 211 apprehended in 65 encounters with CRPF men. Besides 247 major arms and 3331 rounds of ammunitions have been seized from the PWG Dalams during this period. But the Force had to pay a heavy price for it and 17 CRPF men have sacrificed their lives for maintaining law and order in the state.

I AM THE SENTINEL OF THE NATION



Outside it is raining cats and dogs,
Cold wave cuts into the bone.
No excuse. I have to march with the cops,
Call for duty to the nation.
Deriving the only warmth from the kalashnikov,
Trying to neutralise the shivering cold.
Piercing through the envelope of darkness,
Briefing my silent but determined comrades.
Leading from front, trampling consternation,
I march as sentinel of the nation.

Once if, O my Lord ! In discharge of duty,
I commit mistake willingly or unwillingly
Do punish me. Don't show pity,
Your pity will unfurl my debility.
I am the sentinel of the nation.

The call of darling, shouldn't make me unwilling,
Mother's warmth of care; should absolutely disappear;
The charming tuberose; shouldn't run through my nose;
My beloved daughter; shouldn 't call for her father.
I am the sentinel of the nation.

With roaring sound of machine gun
They try to pollute my mother land
And with futile & hollow guffaw
Could they frighten me any how ?
I am the sentinel of .the nation.

While guarding my adorable nation,
Bullet penetrates my puffed up bosom.
O my darling ! Please.don't cry for me.
The blood shed shall not be abortive, you see.
I am the sentinel of the nation:

My dream shall come true some day.
The atrocity will go away one day.
All around, all will be happy .& gay.
I will come,. crossing over the bay.

Feel me when flower spreads fragrance.
Enjoy the drum beat and feel my appearance.
Feel me in prosperity & no agony
Feel me when it is full of harmony.

S.L. Sengupta,
D/C Officer Commanding,
AWS-7, CRPF, Imphal (Manipur)

कोमोवो और हेली में भारतीय एया.पी.यू, के अनुभव

जी.एम. श्रीवास्तव महानिरीक्षक, द्रु.का.बल



हैती में के.रि.पु.बल जवान अन्य देशों के साथ अपने देश का झंडा थामे हुए

वैश्वीकरण के कारण समाज, संस्कृति तथा अर्थ व्यवस्थाओं का विभिन्न देशों में आवागमन हुआ है। हम एक वैश्विक गांव में रह रहे हैं जहां इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगों के माध्यम से दूरियां माइक्रो सेकेन्डों में सिमट गई है। किसी व्यक्ति के कार्यों अकार्यों का दूसरों की नीतियों, जीवनस्तर तथा आर्थिक गतिविधियों पर अत्याधिक प्रभाव पड़ता है। यदि किसी एक देश की नीतियों को अपनाया जाये तो स्थिति और खराब हो जाती है।

भौतिकवादी विचार धारा में वृद्धि होने के कारण अधिकार प्राप्त कार्यालयों में बैठे लोग कभी–कभी अवैध धन कमाने के लिए गैर कानूनी तरीके अपनाते हैं। ऐसा करने से लोगों के एक समूह को क्षति पहुँचती है। गरीबी से संबंधित मार्क्सवादी विचारधारा अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसे लोगों की संख्या अधिक नहीं होती, वे उनके खिलाफ काम करने वाले सरकारी तंत्र को धमकियां देने का प्रयास करते हैं। आरम्भ में वे हड़ताल, ज्ञापन प्रस्तुत करते, विरोध स्वरूप जुलूस निकालने तथा आन्दोलन आदि के माध्यम से विरोध जताने का प्रयास करते हैं। यदि उनकी उचित मांगे पूरी नहीं की जाती हैं तो वे कभी–कभी हिंसात्मक तरीके भी अपनाते हैं। ऐसी स्थिति में विशाल सरकारी तंत्र उन्हें दबाने का प्रयास करता है और इस प्रकार नागरिकों और सरकार के बीच सशस्त्र संघर्ष आरम्भ होता है। संघर्ष का उद्देश्य विधिक रूप से चुनी गई सरकार का तख्ता पलटना होता है। उनकी सांस्कृतिक पहचान, आर्थिक विषमता, सरकारी निकायों में असंगत प्रतिनिधित्व, जातीय/धार्मिक पक्षपात, जातीय समूहीकरण, क्षेत्र की पूर्वाग्रह पूर्वक नीतियां, राजनैतिक विरोधियों को दबाना तथा कठोर कानून लागू करने के कारण उनके विचारानुसार वास्तविक रूप से होने वाले खतरे ही इस संघर्ष के कारण हो सकते हैं। इस अंतर राज्यीय संघर्ष में अन्य देश भी विभिन्न कारणों से भाग लेते हैं। जाति संघर्ष करने वाले समूह से अनुरोध, करना वहाँ की अर्थ व्यवस्था प्रभावित करने को प्रेरित करना, उस देश की नीतियों को गलत बताने का दुष्प्रचार करना, विकास में बाधा डाल कर अपना हित देखना तथा युद्ध जैसे हालात पैदा कर वहाँ की अर्थ व्यवस्था को कमजोर करना है। जब कोई देश आंतरिक युद्ध से जूझ रहा होता है तो उसके निम्नलिखित लक्षण दिखाई देते हैं :–

काफी संख्या में लोगों का विस्थापन, सामान्य नागरिक गतिविधियों में व्यवधान, आर्थिक विकास में बाधा, विदेशी निवेशकों द्वारा विनिवेश, शैक्षणिक प्रणाली में अवरोध उत्पन्न होने के कारण भावी पीढ़ी का विवेकहीन और कठोर व्यवहार। अवसंरचना का विनाश, आम चीजों की कीमतों में बेतहाशा वृद्धि से निर्वाह व्यय में वृद्धि हो जाती है। जनता में असुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है जिससे आत्म रक्षा के नाम पर अप्राधिकृत हथियार और गोला–बारूद इकट्ठा करते हैं। सभी विकासात्मक गतिविधियां रूक जाती है और सशस्त्र संघर्ष आदि के संकट बढ़ने से धन अधिक खर्च किया जाता है, युवा पीढ़ी में अपने देश की सरकार और उसकी गतिविधियों का समर्थन करने वाले देश के विरुद्ध विद्रोह की भावना होती है, देश अत्यधिक ऋण के नीचे दब जाता हैं।

कभी–कभी यह बोझ इतना अधिक बढ़ जाता है कि इस समस्या से जूझने वाला देश, उसे संभाल नहीं सकता है। वह अपने पड़ोसी देशों अथवा विश्व की इकाईयों से हस्तक्षेप करने तथा संघर्ष करने वाले देश से बात करने के लिए अनुरोध करता है, जबकि कभी मानव मूल्यों और मानवाधिकारों को बनाए रखने हेतु पड़ोसी देश विश्व इकाई स्वयं ही उस देश के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप करते हैं। बहरहाल यदि सभी

राज्य अथवा देश संयुक्त राष्ट्र के प्रातिनिधित्व में वार्ता के लिए इच्छुक हों तो संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अनुसार वह केवल मध्यस्थ बन कर वार्ता कर सकते हैं।

हाल ही में यह देखा गया है कि कोई एक देश अथवा देशों का समूह पहले उस देश पर दबाव डालते हैं और उसके बाद वे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से संकल्प पारित करा लेते हैं। यदि यह मानव मूल्यों को बचाने तथा अंतर्राष्ट्रीय कूट नीति में शामिल नहीं होने से संबंधित है तो यह एक अच्छा कार्य है, अन्यथा नहीं।



महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र सयुक्त राष्ट्र अधिकारियों के साथ बात करते हुए



कोसोवों में तैनाती के दौरान के.रि.पु.बल के कार्मिक

जब संयुक्त राष्ट्र हस्तक्षेप करता है तो उसे एक साथ कई कार्य करने होते हैं जैसे कि, जनता में आत्मविश्वास पैदा करना, परस्पर विरोधी दलों को निशस्त्र करना, नागरिक कार्य योजना पर अमल करना, विकासात्मक कार्य करना, शांति समझौते को मॉनीटर करना, लोगों की इच्छानुरूप सरकार स्थापित कराना, शुरू से जीवन आरम्भ कराना और विभिन्न एकतरफा आर्थिक सहायता तथा ऋण दाताओं को ऋण माफ करने के लिए प्रोत्साहन देकर देश को विदेशी ऋण से मुक्त करना है।

के.रि.पु.बल को संयुक्त राष्ट्र के झण्डा तले विश्व के विभिन्न स्थानों पर अपने कार्मिकों/ टुकड़ियों को तैनात करने का काम सौंपा गया। के.रि.पु. बल/द्रु.का.बल हैती और कोसोवो में तैनात की गई है।

शांति रक्षा अभियानों में के.रि.पु. बल का अनुभव बहुत अच्छा है। बार–बार बदलने वाली परिस्थितियों में अपनी गतिविधियों को रिओरिएंट करना होता है। हमें अपनी टुकड़ियों को योजना बद्ध ढंग से प्रशिक्षित करना चाहिए, जिससे की मिशन के आदेशों की कोई अवहेलना न हो। संयुक्त राष्ट्र, युद्ध से नष्ट हुए देश की अर्थ व्यवस्था के पुनर्निर्माण का दायित्व समझता है। सशस्त्र विद्रोह अथवा सिविल युद्ध का आघात सहने वाला देश भावनात्मक रूप से अत्यन्त कमजोर और जर्जर हो जाता है। ऐसे देश में राष्ट्रीय भावना के बजाए राष्ट्रीय आस्था अधिक होती है। संयुक्त राष्ट्र ऐसे विचारों को शांत करने का जिम्मा अपने हाथ में लेता है तथा सभी लोगों को उस स्तर

पर लाने की कोशिश करता है, जहाँ से वे देश व मानवता की बेहतरी के लिए एक साथ काम कर सके।

संयुक्त राष्ट्र के शांति रक्षक के रूप में तैनाती के दौरान के.रि.पु.बल/द्रु.का.बल ने बार्डर डयूटी, महत्त्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की अभिरक्षा, कैदियों की स्कार्ट, कैदियों की अभिरक्षा, सुरक्षात्मक पेट्रोलिंग, चल/वाहन द्वारा जाँच चौकी, सिविलियन पुलिस/के.एफ.ओ.आर. के लिए रिइन्फोर्समैंट, सामरिक रिजर्व तथा मोबाईल पुलिस स्टेशन आदि जैसी विभिन्न डयूटियां की हैं।

बल ने अपनी तैनाती के दौरान जो अनुभव प्राप्त किए हैं, भविष्य में तैनाती के दौरान उपयोगी सिद्ध होंगे।

संयुक्त राष्ट्र ने विभिन्न मिशनों के विनियोजन नियमों में यह दोहराया है कि नागरिकों की सामूहिक सम्पत्ति/संयुक्त राष्ट्र की संपत्ति आदि की क्षति को सहन किया जा सकता है लेकिन जीवन की क्षति स्वीकार्य नहीं है। स्थिति अनुसार मानसिक स्तर सामाजिक व्यवहार और अन्य अंतराष्ट्रीय समझौतों में भिन्नता हो सकती है। अतः हमें अपनी टुकड़ियों को ब्रीफ करना चाहिए कि वे अन्धा–धुन्ध बदले की कार्रवाई न करें। वे केवल उसी स्थिति में चरम कार्रवाई करे जब किसी शांति रक्षक के जीवन को खतरा हो। शांति रक्षकों द्वारा न्यूनतम बल प्रयोग के सिद्धान्त का पूरी तरह पालन किया जाना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र विश्व के किसी भी कोने से मिशन शुरू कर सकता है। जहाँ पर मानवाधिकारों का अत्यधिक हनन हुआ हो। यदि शांति रक्षक खुद ही मानवाधिकारों का हनन करने लगे तो इस प्रकार के मिशन का कोई औचित्य नहीं रहेगा।

हमारे बल के साथ छीना–झपटी/मिलिट्री टंकी पर लगे एन्टिना को तोड़नें संबन्धी कई मामले हुए, किन्तु के.एफ.ओ.आर. के अधीन तैनात टुकड़ियों ने शक्ति प्रदर्शन द्वारा प्रतिकार नहीं किया। उन्होनें कटीली तार लगाकर अपनी टंकी पर लगे एन्टिना की सुरक्षा की। सार तत्व यह कि अत्याधिक शक्ति हासिल होने के बावजूद, हमने कड़ी प्रतिक्रिया नहीं की और संयुक्त राष्ट्र के आदेशों के अनुसार कार्य किया।

कई बार तैनात टुकड़ियों को संयुक्त अभियान चलाने पड़े हैं। इन अभियानों को चलाते समय टुकड़ियों को अलग भाषा, उस कार्य के लिए अलग ट्रिक्स/पद्धति, हथकड़ी पहनाने के संबन्ध में विचार भिन्नता, कार्य करने की गति में भिन्नता, भिन्न उपकरणों की उपयोगिता एवं शारीरिक व मानसिक भिन्नता जैसी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा है। इन बाधाओं को दूर करने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा संयुक्त प्रशिक्षण प्रणाली प्रारम्भ की गई। प्रत्येक एस.पी.यू. के एक दल को यह प्रशिक्षण दिलाया गया और उसके पश्चात भारतीय एस.पी.यू. के सभी रैंक के अधिकारियों/जवानों को इन तकनीकों, कौशल और पद्धतियों को सीखने के लिए प्रशिक्षित दल का उपयोग किया गया। इस प्रशिक्षण के उपरान्त सभी एस.पी.यू. को एक ढाँचे में ढाला गया था। इसके अतिरिक्त सभी टुकड़ी कमाण्डरों, अधिकारियों, परिचालनिक अधिकारियों, प्रशा./लेखा अधिकारियों की समन्वय बैठकें नियमित रूप से आयोजित

की गई ताकि सभी एस.पी.यू. का सूचना स्तर समान रहे।

किसी भी भगोड़े व्यक्ति को पकड़ना अत्यन्त कठिन है क्योंकि सभी व्यक्ति एक जैसे दिखाई देते हैं। इस कठिनाई से निपटने के लिए संभवतया डॉग स्क्वाड अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है। भीड़ नियंत्रण की उनकी तकनीकी भी हमारी तकनीकी से भिन्न है। कानून लागू करने वालों और भीड़ के बीच कोई दूरी बनाकर नहीं रखी जाती। इस तकनीक की कुछ कमियां है जैसे कि छूरा भोंकने, हथियार छीनने, पुलिस कार्मिकों को घायल करने आदि जैसे मामले। यदि भीड़ की संख्या पुलिस कार्मिकों से अधिक हो तो वह उन्हें पकड़ कर बंधक बना सकती है। यदि भीड़ में महिलाएं/बच्चे/वृद्ध व्यक्ति हो तो भगदड़ में उनके घायल होने की पूरी संभावना होती है, जिसका इल्जाम पुलिस वालों पर लगाया जायेगा। भारतीय एस.पी.यू. ने अपनी दंगा ड्रिल का प्रदर्शन किया जिसे तत्काल स्वीकार कर लिया गया। दंगा ड्रिल की सभी फारमेशनों में सर्कुलर फारमेशन की सबसे अधिक प्रशंसा की गई।

शांति रक्षा अभियानों में तैनात की जा रही टुकड़ियों/कार्मिकों को राहत एवं बचाव अभियानों, प्राथमिक सहायता, घायल व्यक्तियों को भेजने तथा तनाव प्रबंधन से संबधित पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।



कोसोवो में तैनात आरएएफ की टुकडी



आरएएफ के दंगा रोधी वाहन पज का मुआयना करते हुए संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के अधिकारी

भारतीय एस.पी.यू. द्वारा कुछ अप्रत्याशित चुनौतियों से निपटने हेतु सहज रूप से तैयार की गई रणनीति :– एक घटना में ए.एफ.ओ. आर. द्वारा एक ब्रिज वाचर को पकड़ लिया गया। उत्तरी मित्रोविका के स्थानीय नागरिकों ने पुलिस स्टेशन को घेर लिया और कुछ सिविल पुलिस अधिकारियों को पकड़ लिया। सौदेबाजी में ब्रिज वाचर को मुक्त करा लिया गया था। इसी बीच भारतीय एस.पी.यू. को भी. कुमुख के रूप में बुला लिया गया। भारतीय एस.पी.यू. को इसके लिए 50 घंटों से अधिक अवाधे तक तैनात रहना पड़ा था। उपद्रवी भीड़ बढ़ने के कारण उत्तरी मित्रोविका पुलिस स्टेशन पहुँचना काफी कठिन हो गया। इसके बावजूद हम अपनी टुकड़ियों की अदला–बदली करते रहे और कुछ प्रशासनिक चेष्टा की। भारतीय एस.पी.यू ने साईबेरियां के नेताओं के साथ समझौता वार्ता में भाग लिया और अपने कार्यो को अबाद रूप से निष्पादित किया। अल्बानिया की एक मैरिज पार्टी जिसमें लगभग 70 हल्के वाहन थे, साईबेरिया के अल्पसंख्यक मार्ग से गुजरना चाहती थी, स्वीडन की के.एफ.ओ.आर ने समझौते का प्रयास किया किन्तु मैरिज पार्टी के सदस्य इसके लिए तैयार नही हुए। स्थिति को शांत करने हेतु भारतीय एस.पी.यू. को बुलाया गया। हमारी टुकड़ी ने मैरिज पार्टी से समझौता वार्ता की लेकिन वह पार्टी के सदस्यों को समझौते के लिए तैयार करने में सफल नहीं हुई। इसके उपरान्त वहाँ उपस्थित एस.पी.यू. कमाण्डर ने मैरिज पार्टी के सम्पर्क व्यक्ति से कहा कि आप मन चाहे मार्ग से जा सकते हैं लेकिन

उससे पूर्व प्रत्येक व्यक्ति और वाहन को सुरक्षा जॉच से गुजरना होगा। जिसके लिए वे सहमत हो गये। एस.पी.यू. कार्मिकों ने एक वाहन तथा उसमें बैठे व्यक्तियों की जाँच कार्य में 30 मिनट लगाए। मैरिज पार्टी के सदस्यों ने मंद गति से काम करने का विरोध किया लेकिन कमाण्डर ने उन्हें सांत्वना दी कि यदि वे अपने इच्छित रूट से जाना चाहते हैं तो उसके लिए यह जाँच एक अनिवार्य आवश्यकता है। मैरिज पार्टी के पिछले व्यक्तियों ने समय की गणना की और वे दूसरे रूट से चले गये तथा कुछ ही क्षणों में अपने ही सभी वाहनों का रूट बदल दिया। एस.पी.यू. द्वारा अपनाई गई इस पद्धति की के.एफ.ओ.आर. ने प्रशंसा की।

एक अन्य घटना का उदाहरण पेश है कोसोवो समाज पर जातीय भावना का आक्षेप लगाया जाता है। जातीय अल्बानियन और साईबेरिया निवासी के बीच आपस में काफी घृणा है। भारतीय एस.पी.यू. ने पहले अनेक इलाकों में खेलकूद का आयोजन कर उनका विश्वास अर्जित कर लिया। उसके बाद उन्हें बारी–बारी से एस.पी. यू. कैम्प में आकर आर.पी.ए. एस.पी.यू. टीम के साथ खेलने का निमंत्रण दिया। इसके बाद उन्होंने भारतीय एस.पी.यू. की टीम के साथ खेलने के लिए उन्हें एक साथ बुलाया। तत्पश्चात दोनों को एक साथ खेलने तथा आपसी दुश्मनी को भूलने के लिए प्रेरित किया गया। आखिर कार अल्बीनियां और साईबेरिया लोगों की एक संयुक्त टीम गठित की गई जो भारतीय एस.पी.यू. टीम के साथ खेली।

संयुक्त राष्ट्र मिशन के लिए टुकड़ियों को तैयार करते समय निम्नांकित बातें ध्यान में रखी जानी चाहिए :–

1. किसी भी मिशन के साथ तैनात टुकड़ियों को संबंधित देश की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के बारे में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए/ब्रीफिंग की जानी चाहिए।

2. योजना स्तर पर हमें एक श्रृंखलाबद्ध एवं योजनागत प्रणाली विकसित करनी चाहिए जिससे हमारे संसाधनों की बचत हो और संसाधनों पर खर्च न हो तथा वित्त, जनशक्ति व समय की पर्याप्त बचत हो।

3. संयुक्त राष्ट्र मिशन के अधीन टुकड़ियों की तैनाती करने से पूर्व सतर्कता पूर्वक विस्तृत सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। इससे टुकड़ियों को मिशन क्षेत्र में तैनाती हेतु तैयार एवं प्रशिक्षित होने में सहायता मिलेगी।

4. अंतर्राष्ट्रीय मानदण्डों के अनुरूप बने रहने के लिए शांति रक्षा मिशन हेतु चुने गये बल के मध्यम स्तर के कमाण्डर तक कम्प्यूटर का ज्ञान और वाहन चालन का ज्ञान अनिवार्य बनाया जाना चाहिए।

5. अंतर्राष्ट्रीय माहौल के अनुरूप अपने आपको ढालने में समय लगता है अतः जब तक अंतर्राष्ट्रीय संबंधो से वाकिफ हो, तब तक टुकड़ियों की तैयारी अपने देश में ही करनी चाहिए। सर्वप्रथम उन्हें मीडिया के साथ बात–चीत न करने के बारे में बताया जाना चाहिए। टुकड़ी के अधिकृत प्रवक्ता को मीडिया से नियमित रूप से बात–चीत करनी चाहिए यदि उन्हें इस संबंध में समुचित मार्गदर्शन नहीं दिया जाता तो उनके

एक कथन से हो विश्व के किसी भी देश के साथ हमारे संबंधों में तनाव आ सकता है।

6. कठोर परिश्रम, उद्देश्य के प्रति समर्पण और प्रतिबद्धता लाभप्रद है। टुकड़ियों को ये गुण ग्रहण करने चाहिए। हम अपने कार्यों से स्थानीय लोगों के दिल जीत सकते हैं। जन कार्यों और नागरिक कार्यक्रम में हमारी रूचि के लिए अतंराष्ट्रीय समुदाय हमारी प्रशंसा करेगा।

7. पुलिस कार्यों के अतिरिक्त हमारी टुकड़ियाँ कुछ गाँव, चौकी अथवा लोगों का अधिग्रहण कर उन्हें आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करें तो इससे बल एवं देश की छवि में सुधार होगा।

8. सिविल युद्ध का सामना कर चुके देश का नागरिक थोड़ी सी राहत प्रदान करने वाले प्रत्येक प्रयास की स्वतः ही प्रशंसा करेगा। इस दिशा में यदि खेलकूद की गतिविधियों का आयोजन किया जाए और उसमें समाज के सभी गुटों/वर्गों को शामिल किया जाए तो इससे जल्दी शांति बहाल करने में मदद मिलेगी।

9. मिशन में तैनात किसी टुकड़ी की नीतियों में संगता होनी चाहिए। कमान परिवर्तन या टुकड़ियों की अदला–बदली से उन नीतियों में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

10. तैनात व्यक्तियों को हमेशा याद रखना चाहिए कि वे सर्वप्रथम मनुष्य हैं, उसके बाद भारतीय, फिर वे अपने संगठन से संबंधित हैं और अन्त में उन्हें अपनी व्यक्तिगत छवि का ध्यान रखना चाहिए।

11. टुकड़ियों को सदैव भारत के नैतिक, सांस्कृतिक एवं चारित्रिक मूल्यों को बनाए रखना चाहिए। किसी भी कीमत पर इनसे समझौता नहीं किया जाना चाहिए।

12. तैनात टुकड़ियों को होस्टेज टेकिंग और होस्टेज सर्वाइवल की तकनीकें बताई जानी चाहिए। उन्हें शांति रक्षकों के लिए बंधक, संकट के दौरान समझौता करने, मध्यस्थता करने, तनाव प्रबंधन जैसी परिस्थितियों में सामान्य बैठकों कार्यसूची बनाने, बंधक बनने की तिथि में प्रतिक्रिया संबंधी मार्गनिर्देश, परिस्थितियों का आकलन करने एवं बंधक बनने से बचने के लिए आवागमन न करने, बंधक बनने की स्थिति में शांति द्वारा किस प्रकार का बर्ताव किया जाए, करो–मत करो तकनीकों की शिक्षा दी जाए।



हैती में संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों से स्मृति चिन्ह प्राप्त करते हुए बल के अधिकारी

रघुनाथ मंदिर बल के पराक्रम और शौर्य का एक और साक्षी

–डी.एन.एस. विष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)



रघुनाथ मंदिर में ऑपरेशन के दौरान के.रि.पु. बल जवानों द्वारा की जा रही कार्रवाई

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अयोध्या, मथुरा, काशी (बनारस), वैष्णोदेवी मंदिर, रघुनाथ मंदिर तथा अक्षरधाम मंदिर को सुरक्षा प्रदान करने की जिम्मेदारी निभा रहा है। ऐसे स्थानों को सुरक्षा प्रदान करना यदि असंभव नहीं हैं तो कठिन अवश्य है, क्योंकि यहां पर बहुत बंदिशों के अंदर काम करना पड़ता है। जूता बेल्ट पहन कर कुछ जगह नहीं जा सकते, जनता की धार्मिक भावनाओं की कद्र करनी पड़ती है। कुछ अवसरों पर भीड़ इतनी अधिक रहती है कि उसे नियंत्रित करना अत्यंत कठिन हो जाता है। ऐसी जिम्मेदारियां भी यह बल पूरी निष्ठा, लगन, तत्परता, समर्पणभाव तथा व्यावसायिकता के साथ पूरी करता है और अपने बस के मूल सूत्र सेवा व निष्ठा को प्रतिस्थापित करता है।

के.रि.पु. बल की परम्परा इतनी समृद्ध है कि सम्मान से लोग सी.आर.पी.एफ. को, चलते रहो प्यारे के नाम से भी जानते हैं जिसका अर्थ है कि करते रहो और चलते रहो किसी से कोई अपेक्षा आकांक्षा नहीं करना है। यह गीता के निष्कामकर्म का ही मूर्त रूप में निष्पादन नहीं तो और क्या है? इस बल के प्राचीन मूल्यों व गौरव को अविस्मरणीय बनाने के लिए बल के वर्तमान महानिदेशक महोदय ने प्राचीन इतिहास के पन्नो को कुरेद कर दस्तावेजी रूप देने का एक प्रयास किया है। शायद बहुत कम लोग जानते होगें कि अक्षर धाम मे उग्रवादी हमले में बल की तत्परता के कारण हजारों श्रदालुओं की जान बचाई जा सकी थी।

24 व 25 नवम्बर 2002 को रघुनाथ मंदिर (जम्मू) में फिदायीन हमले के दौरान

बल के सदस्यों ने जो बहादुरी दिखाई है वह शायद बहुत ही कम लोगों को मालूम है।

रघुनाथ मंदिर जम्मू का एक अत्यंत प्राचीन महत्व का मंदिर है जो हरि मार्केट में स्थित है। स्थानीय लोगों के अतिरिक्त धार्मिक उद्देश्य से जम्मू आने वाला कोई भी व्यक्ति बिना इस मंदिर में दर्शन किए वापस नहीं जाता। इसमें 70 से 100 व्यक्ति हमेशा दर्शनार्थी के रूप में रहते हैं और आरती आदि के समय तो यह संख्या 200 से 500 तक हो जाती है। इसमे तीन आने–जाने की दरवाजे हैं। मुख्य द्वार से गर्भ गृह की दूरी लगभग 50 मीटर है। मुख्य द्वार जो लकड़ी का गेट है, के बाद एक लोहे का चैनल गेट भी है, जिसे हाथ से ही खोला जाता है। मंदिर के स्थान और वातावरण तथा धार्मिक भावनाओं को देखते हुए यहां कट्टर आक्रामक या आतंकवादी को रोक पाना और सुरक्षा प्रदान करना एक कठिन कार्य है, विशेष रूप से तब जबकि व्यक्ति मरने का ही संकल्प लेकर आया हो।

सी.आर.पी.एफ बी/79 की एक प्लाटून मंदिर परिसर में सुरक्षा के लिए तैनात है तथा एक सेक्शन 120 वाहिनी की बाहर से सुरक्षा के लिए लगी है। 24 नवम्बर 2002 को लगभग 1900 बजे एक फिदायीन आतंकवादी भीड़ग्रस्त मंदिर परिसर में मुख्य द्वार पर अन्य दशनार्थियों के साथ ही पहुँच गया, जहाँ पर जम्मू कश्मीर पुलिस का एक सिपाही चेकिंग कर रहा था। यहाँ पहुंचते ही इस फिदायीन आतंकवादी ने दो ग्रेनेड लगातार भीड़ पर फेंके जिससे आतंक और अफरातफरी मच गई। दुर्भाग्यवश इसी समय वहाँ बिजली भी बन्द हो गयी तथा अंधेरा छाया रहा और फिदायीन मंदिर के अंदर तक पहुँच गया। सिपाही के.के. पाडेय सी.आर.पी.एफ. जो कि मंदिर के गर्भगृह गेट पर तैनात था ने तुरन्त कार्रवाई की और गोली चलायी किन्तु जवाबी फायर में उसका हथियार गोली से खराब हो गया और वह वहीं शहीद हो गया। फिदायीन अंधाधुन्ध फायर करता रहा, जबकि सिपाही टी.ए. सिंह ने छत पर अपनी तैनाती की जगह से फायर किया, किन्तु आतंकवादी वहाँ से मंदिर के अंदर पहुँच गया तथा अच्छी आड पाकर सिपाही टी.ए. सिंह पर फायर करने लगा। इसी बीच हवलदार ई.जी. राव दो सिपाहियों के साथ छत पर जाकर आतंकवादी पर फायर करते रहे। लगभग 1945 बजे अन्य टुकड़ी भी मदद के लिए बाहर से आ गई, जिसमें सी.आर.पी.एफ. व जम्मू–कशमीर पुलिस वाले थे। अब तक रोशनी भी वापस आ गई थी। हवलदार ई.जी. राव को गोली लग चुकी थी किन्तु बिना घाव की परवाह किए हुए उन्होंने बहादुरी के साथ आतंकवादी को मंदिर में ही छिपे रहने को मजबूर कर दिया। मंदिर का दरवाजा दशनार्थियों ने बंद कर दिया था। हव० राव को तुरन्त अस्पताल चिकित्सा हेतु ले जाया गया और परिसर का घेरा डाल दिया गया। जब योजना बनाकर संयुक्त कार्रवाई की जानी थी उसी समय सहायक उप निरीक्षक बलविंदर सिंह, जम्मू पुलिस आतंकवादी की तरफ बढ़ ही रहे थे कि वह आतंकवादी की गोली लगने से शहीद हो गये। वाई.एन. राय, सहायक कमाण्डेन्ट 52वीं बटालियन, के.रि.पु.बल इस बीच अपनी त्वरित कार्रवाई टुकड़ी के साथ पहुँचे, जिसमें मात्र तीन जवान थे। उन्होंने स्थान का पूरा लाभ लेते हुए एक मोबाईल बंकर के पीछे से भारी गोलीबारी करके अपरम्परागत तरीके से दुर्दम्य साहस व हिम्मत के साथ मुकाबला

करते हुए उस आतंकवादी को मौत के घाट उतार दिया।



ऑपरेशन के दौरान एक मकान की छत से आतंकवादी को घेरते बल के जवान

कुछ समय के बाद ही एक अन्य फिदायीन ने, रघुनाथ मंदिर से 150 गज पर 21वीं बटालियन की दो सेक्शन जो कि टी.आर.सी. कैम्प में थी पर फायर किया जिसमें तत्काल कार्रवाई के बावजूद भी सिपाही राज पाल घायल हो गया और उसे अस्पताल भेज दिया गया। इक्का दुक्का फायर आता रहा। रात के कारण तथा संख्या का अंदाज न होने के कारण कोई भी कार्रवाई न करने का निर्णय लिया गया तथा तीन कम्पनियों द्वारा पूरे क्षेत्र को घेर लिया गया। 25/11/02 की सुबह 06:30 बजे बल के वरिष्ठ अधिकारी भी वहाँ पहुँच गए और आतंकवादी का पता लगा लिया गया कि वह एक मकान की प्रथम मंजिल पर था। गोली का प्रभाव न होने के कारण आँसू गैस से कमरे में फायर किया गया। वाई. एन. राय, सहायक कमाण्डेन्ट 52वीं बटालियन के.रि.पु.बल ने यहाँ पर भी अदम्य उत्साह व साहस के साथ कमान संभाली और पास में जाकर आठ एच.ई ग्रेनेड कमरे के अंदर डाले किन्तु दुर्दान्त आंतकवादी सुरक्षित रहा। जब कुछ समय आतंकवादी की तरफ से फायर नहीं हुआ तो वाई.एन. राय, सहायक कमाण्डेन्ट ने दो अन्य जवानों के साथ मकान के अंदर धावा बोला, इतने में ही राय के ऊपर गोलियों की वर्षा करते हुए आतंकवादी ने उनको घायल कर दिया। इसके बावजूद उन्होंने दीवार तोडकर कुछ और ग्रेनेड फेंके जिसमें यह दुर्दान्त कट्टर फिदायीन आतंकवादी भी मारा गया। इस पूरे आपरेशन में 9 व्यक्ति शहीद हुए जिनमे हव० के.के. पाण्डेय सी.आर.पी.एफ व सहायक उप निरीक्षक बलविंदर सिंह

जम्मू पुलिस शामिल है तथा 45 व्यक्ति घायल हुए जिसमें के.रि.पु. बल के चार कार्मिक वाई.एन. राय, हव० ई.जी. राव, सि० राजपाल तथा सि० ताराचन्द शामिल है। आपरेशन के बाद स्थानीय जनता ने भारत माता की जय और सी.आर.पी.एफ. जिन्दाबाद के नारों से क्षेत्र को गुंजा दिया। और इस तरह जम्मू के रघुनाथ मंदिर में के.रि.पु. बल के जवानों के पराक्रम और शौर्य की एक और गाथा रची गई।

द्रुत कार्य बल – एक सच्चा जनमित्र

डी०जी० महापात्र जन सम्पर्क अधिकारी



आरएएफ की वार्षिक परेड में भाग लेते आरएएफ के जवान

रूढ़िवादी संगठनों के बढ़ते हुए प्रभाव तथा उनके द्वारा फैलाई जा रही साम्प्रदायिक हिंसा को देखते हुए साम्प्रदायिक दंगों को पूर्ण रूप से रोकने के लिए सरकार को एक फोर्स बनाना आवश्यक हो गया था जो इन दंगों से प्रभावी रूप से निपट सके। अतः इसी उद्देश्य के लिए भारत सरकार ने एक फोर्स गठित करने का निर्णय लिया। इस तरह अक्तूबर 1992 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 5 बटालियनों को द्रुत कार्य बल बटालियनों में परिवर्तित कर इस बल की स्थापना की। बाद में इस बल में पाँच

और अन्य बटालियनें शामिल कर दी गइ।

द्रुत कार्य बल की भूमिका

द्रुत कार्य बल का मुख्य कार्य साम्प्रदायिक दंगों या दंगों जैसी स्थिति से निपटना है। बहरहाल सरकार द्वारा इस बल का उपयोग भारी आपातकालीन, घोर प्राकृतिक एवं मानवकृत आपदाओं के दौरान जनता की सहायता प्रदान करने के लिए किया जाता है तथा जनता के कल्याण के लिये सामाजिक, चिकित्सा शिविर लगाना, सांस्कृतिक क्रिया कलाप, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, खेलकूद प्रतियोगिता जैसे अन्य कार्यक्रमों का आयोजन भी यह बल करता है । बल के इन सामाजिक कार्यों से समाज को तो फायदा होता ही है साथ ही बल को अपनी अच्छी छवि बनाने में मदद मिलती है। द्रुत कार्य बल ने विभिन्न अभियानों के तहत रक्त दान, पल्स पोलियो जैसे कार्यक्रम आयोजित करने में भी अहम भूमिका निभाई है। आर०ए०एफ० का लक्ष्य मानवता की भावनाओं के अनुरुप सेवा करना है। यह कम से कम बल का प्रयोग कर स्थिति पर काबू पा लेती है। इसका लक्ष्य दंगाइयों को बिना किसी प्रकार के हताहत किये भगाना है। जैसे ही यह बल एक बार स्थिति पर काबू पा लेता है वैसे ही तुरंत मानवीय सहायता शुरू कर देता है तथा घायलों को चिकित्सा सहायता प्रदान कर अस्पताल भेजने की व्यवस्था करता है।

आर०ए०एफ० अपने शैशव काल से जनता की सेवा में कार्यरत है। 1993 में दिल्ली में आयी बाढ, 1994 के दौरान सूरत में फैली प्लेग, 1995 में पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश में आई भयंकर बाढ़, 1999 में उडीसा में आये विध्वंसकारी चक्रवात, 2001 में गुजरात में आए विनाशकारी भूकम्प तथा गुजरात राज्य में ही इस वर्ष फैली साम्प्रदायिक हिंसा के दौरान आर.ए.एफ. ने मानवीय सहायता, सुरक्षा, बचाव एवं राहत प्रदान कर एक अनुकरणीय कार्य कर आम लोगों के दिलों में प्यार मोहब्बत का पैगाम दिया है।

संगठन

बल को प्रभावी व कुशल नेतृत्व प्रदान करने के लिये एक पुलिस महानिरीक्षक तैनात है, जो महानिदेशक के.रि.पु. बल के सीधे मार्गदर्शन तथा दिशा निर्देशानुसार कार्य करते हैं। बल में एक रेन्ज पुलिस उप महानिरीक्षक तथा 10 कमाण्डेन्ट तैनात हैं जो दसों बटालियनों का नेतृत्व करते हैं। बल के सेक्टर पुलिस महानिरीक्षक कार्मिकों को उचित प्रशिक्षण दिलाने तथा बल को अल्प सूचना पर तैनाती के लिए तैयार रखने के लिये जिम्मेदार हैं। पुलिस महानिरीक्षक की सहायता के लिए सेक्टर मुख्यालय में एक अपर पुलिस उप महानिरीक्षक तथा एक कमाण्डेन्ट भी तैनात है।

आर०ए०एफ० बटालियन

के.रि.पु. बल बटालियन की अपेक्षा आर.ए.एफ. बटालियन की संगठनात्मक

संरचना बिल्कुल अलग है। बल में कार्यरत सबसे छोटी यूनेट दंगा नियंत्रक टीम है जो दंगा नियत्रंक, फायर तथा अश्रु गैस जैसे यंत्रों से सज्जित होती है। टीम का नेतृत्व एक निरीक्षक द्वारा किया जाता है। चार टीमों का एक प्लाटून होता है जिसका नेतृत्व एक सहायक कमाण्डेन्ट द्वारा किया जाता है। एक कम्पनी में दो प्लाटून होते है जिसका नेतृत्व कमाण्डेन्ट द्वारा किया जाता है। सभी रैंकों को मिलाकर आर.ए.एफ. की एक बटालियन की नफरी 1306 की होती है।

आर.ए.एफ. कम्पनी

संवेदनशील डयूटियों के लिए प्रभावी एवं नजदीक परिवेक्षण बहुत जरूरी है इसलिए इसमें पर्याप्त सुपरवाईजरी स्टाफ पदस्थ किया है। आर.ए.एफ. कम्पनी का नेतृत्व एक उप कमांण्डेट करता है। कम्पनी में तीन सहायक कमाण्डेन्ट, आठ निरीक्षक, 16 उप निरीक्षक, 40 हवलदार तथा 128 सिपाही एवं धोबी, रसोईया, जलवाहक तथा नाई सहित 14 अनुचरों को मिलाकर कम्पनी में कुल 222 कार्मिक होते हैं। एक कम्पनी में दो प्लाटून होती हैं तथा एक प्लाटून में सभी रैंक के 97 कार्मिक होते हैं। एक प्लाटून में सभी रैंक के 24 कार्मिकों की 4 टीमे होती हैं।



गुजरात के भूकंप ग्रस्त इलाकों में राहत कार्यों में लगे आरएएफ के जवान



आरएएफ की *10*वीं वार्षिक परेड के अवसर पर मुख्य अतिथि डा सी रंगराजन को स्मृति चिह्न भेंट करते बल के महानिदेशक

कम से कम बल का प्रयोग करना

आर.ए.एफ. ने दंगों तथा दंगों जैसी स्थिति पर विभिन्न तरह के आठ चरणों में कम से कम बल का प्रयोग कर स्थिति पर काबू पाने के सिद्धान्त को अपनाया है। 1. वार्तालाप एवं अपील का अनुसरण करके। 2. बैनरों तथा लाउडस्पीकरों द्वारा बल प्रयोग की घोषणा करके। 3. रंगीन पानी फेंक कर। 4. अश्रु गैस का उपयोग करके। 5. रबड बेटन व गोलियों का उपयोग करके। 6. लाठी चार्ज करके। 7. रबड़ की गोलियों तथा प्लास्टिक पैलेटों का उपयोग करके और 8. वास्तविक गोलियों का उपयोग करके।

विशेष उपकरण

इस बल को दंगों तथा दंगों जैसी स्थिति से निपटने के लिए आधुनिकतम स्वचालित उपकरण मुहैया कराये गये हैं। इनमें शॉक वेटन, रबड ट्रान्चौन, रबड़ की गोलियां, प्लास्टिक पैलेट आदि शामिल हैं जो प्रभावी तो है लेकिन प्राण घातक नहीं है।

अलग यूनिफार्म (वर्दी)

अपनी अलग पहचान बनाने के लिए आर.ए.एफ. में जवानों को अलग तरह की वर्दी मुहैया करायी गई है। आपरेशन ड्यूटियों के दौरान आर.ए. एफ के जवान नीली

हल्की सफेद (चेतकबरी) डांगरी पहनते हैं।

विशेष अश्रु गैस

बल को सामान्य दंगा नियंत्रक उपकरणों के साथ–साथ विशेष प्रकार के अश्रु गैस एवं स्टेन ग्रेनेड जैसे गोली बारूद से भी सुसज्जित किया गया है।

स्टेन ग्रेनेड जोर से धमाके के साथ तेज रोशनी फेंककर भीड को भौंचक्का कर बिना नुकसान पहुंचाए तितर–बितर करने में सहायता प्रदान करता है।

डाई ग्रेनेड से निकलने वाले रंग से वास्तविक, मुख्य रूप से दंगा अभियानों में भाग लेने वाले लोगों की पहचान करने में सहायता मिलती है।

वाहन

आर.ए.एफ. का लक्ष्य कम से कम समय में स्थिति पर काबू कर यथा स्थिति बहाल करना है। अतः इस उद्देश्य के लिए आर.ए.एफ. बटालियनों को सरकार द्वारा पर्याप्त वाहन मुहैया कराये गये हैं ताकि ये बिना समय गवांए दंगा ग्रस्त क्षेत्रों में शीघ्र पहुंच कर कार्रवाई कर सकें। टीम, प्लाटून तथा कम्पनी स्तर पर वाहनों को स्वयं अपने स्तर पर संचलन हेतु उपलब्ध रखने की बात को ध्यान में रखकर वाहनों की व्यवस्था की गई है। उपद्रवी भीड को अधिक प्रभावी रूप से नियंत्रित करने के लिए अत्याधुनिक दंगा नियंत्रक वाहन वज्र उपलब्ध कराया गया है। वाहन के ऊपर अश्रु गैस, रबड़ की गोलियां एक एक–कर तथा अन्धाधुन्ध चारों ओर से चलाने के लिए बहु नलियों वाला लांचर लगाया गया है। बचाव एवं राहत कार्यों के लिए वज्र में प्रथम उपचार बाक्स तथा स्ट्रेचर आदि की भी व्यवस्था है। रात्रि अभियानों में रोशनी प्रदान करने के लिए जनरेटर तथा आपात कालीन लाईट लगाई जाती है। इसकी अभेद संरचना उपद्रवी भीड तथा विरोधी हमलों को प्रभावी रूप से रोकने में सक्षम है।

अल्प संख्यकों का प्रतिनिधित्व

पिछडे वर्ग तथा अल्प संख्यक समुदायों सहित समाज के सभी जाति, वर्ग एवं धर्म के लोगों को पर्याप्त रूप से शामिल कर बल को बहुआयामी स्वरूप दिया गया है। संतुलित धर्म निरपेक्ष संरचना आर.ए.एफ. को दंगों के दौरान शान्ति बहाल करने में स्वयं पीडितों की नजर में शान्ति दूत के रूप में उभर कर आया है।

जिम्मेदारी का स्थान तथा क्षेत्र

आर.ए.एफ. बटालियनों की स्थिति साम्प्रदायिक संवेदनशील क्षेत्रों को ध्यान में रखकर निर्धारित की गई है। 400 किलोमीटर की परिधि में आने वाले संवेदन शील/ अति संवेदनशील क्षेत्रों को उनकी मुख्य जिम्मेदारी क्षेत्र माना गया है। इस प्रकार से जम्मू–कश्मीर तथा पूर्वोत्तर राज्यों को छोड़कर आर.ए.एफ. की सभी बटालियनें

राज्यों के सभी संवेदनशील जिलों को कवर करती हैं । बटालियनों के मुख्यालय सिकंदराबाद, अहमदाबाद, इलाहाबाद, नवीं मुम्बई, दिल्ली, अलीगढ़, कोयम्बटूर, जमशेदपुर, भोपाल तथा मेरठ में स्थापित किये गये हैं।

प्रशिक्षण

प्रशिक्षण आर.ए.एफ. की नियमित प्रक्रिया है। आर.ए.एफ. में आने के बाद प्रत्येक अधीनस्थ अधिकारी एवं जवानों को आर.ए.एफ. के कार्यों से खुद को परिचित करने के लिए प्रशिक्षण लेना होता है। इसके अतिरिक्त मानवाधिकार, फस्ट एड, फायर फाईटिंग, बचाव एवं राहत कार्य, आपदाकालीन प्रबंधन, अश्रु गैस प्रयोग आदि जैसे विशेष कोर्सों को भी करवाया जाता है। एक वर्ष के दौरान लगभग देश के विभिन्न भागों में आर.ए.एफ. के 4,000 कार्मिकों को विभिन्न तरह के प्रशिक्षण दिये जाते हैं। अधिकारियों के लिए आयोजित विशेष कोर्स के रूप में समकालीन सामाजिक वास्तविकताओं पर पूर्वाभिमुखीकरण कोर्स का प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसमें ख्याति प्राप्त पुलिस अधिकारी तथा शिक्षाशास्त्री अपने मत तथा विचार इस कोर्स में भाग लेने वालों के सामने रखते हैं।

आर.ए.एफ. के सभी रैंक के कार्मिकों को विभिन्न धर्मों के सिद्धान्तों के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाती है ताकि वे अपेक्षित विवाद से बच सके। इन्हें अन्तर समुदाय से गलत फहमियों तथा पूर्वधारणाओं के



रथयात्रा के दौरान तैनात आरएएफ के जवान



मुफ्त मेडिकल कैम्प के दौरान एक महिला की बात सुनते हुए आरएएफ के चिकित्सा अधिकारी

बारे में भी बताया जाता है। आर.ए.एफ. की सफलता से उत्साहित होकर अनेक राज्य सरकारों ने भी के.रि.पु.बल, महानिदेशालय से अपने सुरक्षा बलों के जवानों को आर.ए.एफ. की तरह प्रशिक्षित करने का अनुरोध किया है। अभी तक आर.ए.एफ. ने पश्चिमी बंगाल, कर्नाटक, गोवा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा दिल्ली राज्य के अर्द्ध सैनिक बलों के कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया है।

आर.ए.एफ. कार्मिकों द्वारा चलाए जाने वाले विशेष कोर्स तथा विषय इस प्रकार से हैं – कनवर्शन ट्रेनिंग, मानवाधिकार, प्रथम उपचार, फायर फाईटिंग, बचाव एवं राहत कार्य, आपदा प्रबन्धन, अश्रु गैस आदि विषय पढाये जाते हैं।

परिचितीकरण अभ्यास

बल कार्मिकों को भू–भाग, स्थानीय नेतृत्व, जिम्मेदारी के क्षेत्र के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए परिचितीकरण अभ्यास कराया जाता है तथा इन स्थानों पर होने वाले दंगों व दंगों जैसी स्थिति से निपटने के लिए इन्हें सही आपात सूचनाएं उपलब्ध करायी जाती हैं। इसके अतिरिक्त इस अभ्यास का उद्देश्य जिम्मेदारी के क्षेत्र में स्थित साम्प्रदायिक तथा क्षेत्रीय शरारती तत्वों के संबन्ध में आवश्यक सूचनाएं एकत्रित करना है। इस प्रकार के अभ्यासों का उद्देश्य विभिन्न समुदायों/जातियों के लोगों के

बीच अन्तर साम्प्रदायिक तथा अन्तर जातीय तनाव को कम करना है। इसके अलावा ऐसे अभ्यासों का उद्देश्य बल को जनता के नजदीक सम्पर्क में लाना है, ताकि बल कार्मिक व जनता एक दूसरे को अच्छी प्रकार से जान समझ सकें और दंगो के दौरान स्थानीय प्रशासन के ठप्प होने पर आर.ए.एफ. बिना किसी सहायता के प्रभावी रूप से निपट सके। विभिन्न जाति तथा धर्म, समुदायों के लोगों के बीच बढ़ती मनमुटाव की भावनाओं तथा सहन शीलता में आई कमी को देखते हुए आर.ए.एफ. की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है तथा इसकी मांग बढ़ गई है। इसलिए आर.ए.एफ. के जवानों के लिए भीड़ नियत्रंण, बचाव एवं राहत कार्य, तथा आपदा प्रबन्धन जैसे अधिक व्यवसायिक प्रशिक्षण की जरूरत है।

जीरो रेस्पोन्स टाईम

आर.ए.एफ. को दंगाईयों तथा शरारती तत्वों पर नियंत्रण कर, स्थिति को प्रभावी रूप से अत्यंत कम समय में काबू करने की जरूरत होती है। जीरो रेस्पोन्स टाईम में परिणाम हासिल करने के लिए एक समय सीमा निर्धारित की गई है।

यद्यपि आर.ए.एफ. अभी एक नयी फोर्स है फिर भी इसने देश तथा जनता की प्रशंसनीय सेवा की हैं। बल ने यह सिद्ध कर दिया है कि समाज सेवा ही इनका असली मकसद है। जैसे-जैसे समय बीतता जायेगा, इस बल का महत्व/प्रभाव बढ़ेगा। आर.ए.एफ. की 123 कार्मिकों वाली टुकड़ी को 30 मार्च से 2 दिसम्बर 1995 तक सेना पुलिस के एक अंग के रूप में संयुक्त राष्ट्र शान्ति मिशन के तहत देश की सदहदों से पार हैती में पहली बार तैनात किया गया था। बल ने वहाँ बहुत अच्छा काम किया, इसी लिए आर.ए.एफ. को पुनः संयुक्त राष्ट्र मिशन के तहत 240 कार्मिकों वाले दो विशेष पुलिस दस्तों को मई 2000 में कोसोवो जाने का अवसर मिला। आर.ए.एफ. वहाँ अच्छा कार्य कर रही है। बल एक छोटे से समय में बहुत लम्बा सफर तय कर जनता तथा सरकार की अपेक्षाओं में खरा उतरा है।

बल के कल्याण कार्यक्रम

दुलाल चंद दे,
अ.पु.उ. महानिरीक्षक, (प्रशा.) महानिदेशालय



केरिपुबल कल्याण मेले का उद्घाटन करती हुई श्रीमती चित्रा मिश्र

भारत सरकार ने अगले 5 वर्षों में के०रि०पु० बल के चरणबद्ध विस्तार का अनुमोदन किया है, जिसमें के०रि०पु० बल को आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने के साथ-साथ विद्रोह विरोधी भूमिका सौपी जाएगी, इसका मतलब है यह कि अन्य सुरक्षा बलों, जैसे, सी०सु० बल तथा भा०ति०सी०पु० को आन्तरिक सुरक्षा, अनुरक्षण तथा विद्रोह विरोधी कार्रवाईयों से मुक्त कर आने वाले दिनों में यह कार्य केरिपु बल को सौंपा जाएगा जिससे इसकी परिचालनिक प्रतिबद्धताएं और बढ़ जाएगी।

इन उत्तरदायित्वों का भली प्रकार निर्वाह करने के लिए यह आवश्यक है कि बल की कल्याण नीति पर भी हम सम्यक ध्यान रखे, जिनमें केवल सेवारत कार्मिकों का कल्याण ही शामिल न हो बल्कि मृतक कार्मिकों के निकटतम संबधियों/बच्चों तथा सेवा निवृत्त कार्मिकों के कल्याण पर भी ध्यान दिया जाए इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही के०रि०पु० बल की कल्याण नीति बनाई गई है और इसे परिणामोन्मुखी बनाने के लिए पर्याप्त ध्यान दिया गया है।

बच्चों की शिक्षा

बल कार्मिकों के बच्चों को बेहतर शिक्षा दिलाने के लिए के०रि०पु० बल ने दो पब्लिक स्कूल, क्रमशः एक रोहिणी (दिल्ली) व दूसरा जवाहर नगर (रंगारेड्डी, आन्ध्र प्रदेश) मे स्थापित किये हैं और तीन आई०टी०आई० क्रमशः वजीराबाद (दिल्ली), भुवनेश्वर (उड़ीसा) व आवड़ी (तमिलनाडु) में स्थापित किए हैं तथा दिल्ली में सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान है, जिसमें डी०ओ०ई०ए०सी०सी० मान्यता प्राप्त “ओ” एवं “ए”

लेवल के कम्प्यूटर कोर्स जुलाई 1999 से प्रारम्भ किए गए हैं। वजीराबाद (दिल्ली) में छात्रावास का निर्माण किया गया है एवं सभी ग्रुप केन्द्रों में मान्टेसरी स्कूल बनाये गये हैं।

परिवार कल्याण केन्द्र

इनके अतिरिक्त लगभग सभी समूह केन्द्रों व 4 द्रुत कार्य बल बटालियनों में परिवार कल्याण केन्द्रों की स्थापना की गई है। इन केन्द्रों में कार्मिकों के परिवारों द्वारा वर्दी की सिलाई और अन्य कार्य किए जाते हैं, ताकि उनकी आमदनी बढ़े। इसके अतिरिक्त उन्हें घरेलू उपयोगी सामान बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है।

परिवार व बच्चों का कल्याण

वर्दी की सिलाई व अन्य कार्यों द्वारा के०रि०पु० बल के कार्मिकों की पत्नियों और युवा लड़कियों की आय को बढ़ाने के लिए सभी ग्रुप केन्द्रों में परिवार कल्याण केन्द्रों की स्थापना की गई है।

परिवार कल्याण केन्द्रों में प्रौढ़ शिक्षा, आम का अचार, दरी की बुनाई आदि जैसे भिन्न-भिन्न कार्य किये जाते हैं। परिवार कल्याण केन्द्रों में स्पर्धा बनी रहे इसके लिए सर्वश्रेष्ठ परिवार कल्याण केन्द्रों और सर्वश्रेष्ठ महिला कामगारों को इनाम भी दिये जाते हैं। बल कार्मिकों के शिशुओं के लिए सभी ग्रुप केन्द्रों में "मॉन्टेसरी स्कूल" चलाए जाते हैं। इन बच्चों को पौष्टिक आहार देने की योजना लागू की गई है। इस पर होने वाले खर्च को शिक्षा सोसाइटी से पूरा किया जाता है। और इस उद्देश्य के लिए प्रति बच्चा 25/- रूपये की व्यवस्था की जा रही है।

अन्य सुविधाएं

बच्चों के लिए मुफ्त स्कूल बस सुविधाएं सुलभ करायी जा रही हैं। केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बल कार्मिकों के बच्चों हेतु गृह मंत्रालय द्वारा विभिन्न मेडिकल कालेजों में एम०बी०बी०एस० की 6 एवं बी०डी०एस० की 1 सीट आरक्षित की गई है। शौर्य पदक प्राप्त कर्ताओं को इंडियन एयरलाइंस के किराये में 75 % की छूट दी जा रही है। शौर्य पदक प्राप्तकर्ताओं और शौर्य पदक प्राप्त शहीदों की विधवाओं को रेल यात्रा के दौरान किराये में पूरी छूट भी दी जाती है।

छात्रवृत्ति

के०रि०पु० बल के बच्चों को बल स्तर पर शिक्षा निधि से स्कूल स्तर पर 350 रूपये से 600 रूपये प्रति वर्ष तक की छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। कालेज स्तर पर छात्रवृत्ति की दर रू० 1,200/- से रू० 1,500/- प्रतिवर्ष तक है। तकनीकी कोर्स अर्थात एम०बी०बी०एस०, डेंटल कोर्स, इंजीनियरिंग, एम०बी०ए० एवं एम०एस०सी०

आदि की छात्रवृत्ति की दर रू० 500/- से रू० 1,000/- मासिक तथा गैर तकनीकी कोर्सों के लिए छात्रवृत्ति की दर रू० 1,500/- प्रतिवर्ष है।

आर्थिक सहायता

बल की विभिन्न रेजिमेंटल निधियों से के०रि०पु० बल के जरूरतमंद कार्मिकों को प्राकृतिक आपदाओं आदि से हुए नुकसान पर स्वयं एवं परिवार के सदस्य उपचार हेतु ब्याज मुक्त अग्रिम तथा कार्रवाई में घायल होने और उपचार अवधि का नियमन असाधारण छुट्टी में होने पर मूल वेतन के बराबर की राशि मंहगाई भत्ते सहित और अन्य मामलों में मूल वेतन केवल 6 महीने तक की अवधि के लिए स्वीकृति किया जाता है।



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी की बायोटेक्नोलोजी प्रयोगशाला का उद्घाटन करती हुई श्रीमती चित्रा मिश्र

कार्रवाई में घायल कार्मिकों के लिए एक मुश्त वित्तीय सहायता के रूप में रू० 1,000/- 15 दिन तक अस्पताल में भर्ती रहने पर तथा रू० 2,000/- 15 दिन से अधिक अस्पताल में भर्ती रहने पर दिए जाते हैं।

शिक्षा सुविधाएं

कक्षा 12 में 75 % व इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले के०रि०पु० बल कार्मिकों के बच्चों को कोचिंग कक्षाओं में प्रवेश लेने पर रू० 5,000/- की दर से आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है।

राजपात्रेत व अधीनस्थ आधिकारियों के 5 बच्चों को जिन्होंने 75 % से आधिक अंक प्राप्त किए हैं अन्य रैंक के 12 बच्चों को जिन्होंने 65 % से अधिक अंक प्राप्त किए हैं, उनकी के०रि०पु० बल के पब्लिक स्कूल में ट्यूशन फीस माफ की जाती है।

के०रि०पु०बल के सेवानिवृत्त व स्वेच्छा से सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों के बच्चों के लिए बल में सिपाही (जी.डी.) पद पर भर्ती पूर्व प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है।

फील्ड फार्मेशनों, समूह केन्द्रों एवं परिचालनिक कार्यालयों में तैनात कार्मिकों को एक वर्ष में 60 दिन अर्जित अवकाश 20 दिन अर्द्ध वेतन अवकाश तथा 15 दिन का आकस्मिक अवकाश प्रदान किया जाता है।

दिवंगत कार्मिकों के कल्याण हेतु सरकार की तरफ से सहायता :–

सी०सी०एस० (पेंशन) नियम के अर्न्तगत पात्रतानुसार पेंशन, एल०पी०ए०/ ई०ओ०पी०/परिवार पेंशन। आतंकवादियों/शत्रुओं के खिलाफ कार्रवाई में यदि मारे जाते हैं, तो केन्द्र सरकार की ओर से रू० 7.5 लाख की अनुग्रह राशि। सरकारी ड्यूटी पर आतंकवादी/समाजविरोधी तत्वों द्वारा दुर्घटना में मारे जाने पर रू० 5 लाख की अनुग्रह राशि। उपर्युक्त के अतिरिक्त राज्य सरकासर भिन्न-भिन्न दरों पर भी अनुग्रह राशि अदा करती है। पात्रतानुसार उपदान/सी०जी०आई०जी०आई०एस०/अवकाश नगदीकरण आदि का भी भुगतान नियमानुसार किया जाता हैं। आतंकवादियों/ उग्रवादियों के खिलाफ कार्रवाई करने में मारे गए कार्मिकों तथा शौर्य पदक से अलंकृत विधवाओं को द्वितीय श्रेणी की रेल यात्रा में 75 % की छूट है। कार्रवाई में केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों के मारे गए और अपंग हुए कार्मिकों के निकटतम संबधियों तथा अपंग कार्मिकों (सिविलियन) के लिए संबंधित मंत्रालय द्वारा 8 % पेट्रोलियम उत्पादों की एजेन्सिया आरक्षित की गई हैं। केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों के कार्मिकों के लिए एम०बी०बी०एस० में 6 तथा बी०डी०एस० में 1 सीट आरक्षित की गई हैं और कार्रवाई में मारे गए कार्मिकों के बच्चों/विधवाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

रेजिमेंटल निधि से लाभ

जोखिम निधि से एक लाख रूपये, केन्द्रीय कल्याण निधि से रू० 20,000/ यूनिट कल्याण निधि से सिलाई मशीन की कीमत सहित 8,000/- रू० दिए जाते हैं। जोखिम निधि “ए” से विधवाओं को 20 वर्ष तक रू० 1,000/- प्रतिमाह की दर से आर्थिक सहायता दी जाती है विभाग द्वारा चलाई जा रही ग्रुप कार्मिक दुर्घटना बीमा योजना से राजपत्रित अधिकारियों को रू० 2.20 लाख और अराजपत्रित अधिकारियों को रू० 1.10 लाख मात्र क्रमशः रू० 160/- व 80/- के एक मुश्त वार्षिक अंशदान पर प्रदान की जाती है। बल के कार्मिकों के बच्चे को बल की शिक्षा निधि से स्कूल स्तर की कक्षाओं और विभिन्न व्यावसायिक कोर्सों के लिए छात्रवृत्ति भी दी जाती है।

सरकार द्वारा अंपग कार्मिकों का कल्याण

सी०सी०एस० (पेंशन) नियमावली के अन्तर्गत पेंशन/उपदान/अवकाश नगदीकरण आदि का लाभ दिया जाता है।



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी को सी.एन.जी. बस की चाभी प्रदान करती हुई श्रीमती चित्रा मिश्र

रेजिमेंटल निधि से आर्थिक सहायता

जोखिम निधि से 30 % तक अपंगता के मामलों में 40,000 रूपये तथा 100 % अपंगता के मामले में आजीवन 3,000/- रूपये प्रतिमाह अदा किये जाते हैं 100 % से कम अपंगता पर सेवा से अशक्त घोषित किए गये कार्मिकों को निम्न विवरणानुसार एक मुश्त लाभ प्राप्त होगें :–

(क) 30 % तक अपंगता पर रू० 40,000/- (ख) 30 % से अधिक तथा 50 % से तक रू० 50,000/- (ग) 50 % से अधिक तथा 60 % तक रू० 60,000/- (घ) 60 % से अधिक तथा 70 % तक रू० 70,000/- (ड) 70 % से अधिक तथा 80 % तक रू० 80,000/- (च) 80 % से अधिक तथा 90 % तक रू० 90,000/- (छ) 90 % से अधिक को 100 % माना जाएगा और सभी लाभ देय होंगे।

यदि अपंगता 50 % है तो केन्द्रीय कल्याण निधि से भी 5,000/- रूपये अदा किए जाते हैं तथा 10 % अपंगता पर रू० 1,000/- बढ़ा दिये जाते हैं।

सेवा निवृत्त कार्मिकों का कल्याण

सेवा निवृत्त कार्मिकों को सी०सी०एस० (पेंशन) नियमावली के अंतगत पेंशन संबधी लाभ तथा जोखिम निधि अंशदान की कुल राशि की दुगनी राशि अदा की जाती है। सेवा निवृत्त व्यक्तियों के पुनर्वास के लिए सभी समूह केन्द्र सहायता करते हैं और के०रि०पु० बल के सेवानिवृत्त कार्मिकों के बच्चों को भर्ती पूर्व प्रशिक्षण भी दिया जाता है। के०रि०पु० बल के भूतपूर्व कार्मिकों बच्चों को स्कूल बस सुविधा भी दी जाती है। आई०टी०आई० की रिक्त सीटों पर बच्चों को प्रवेश दिया जाता है। सेवानिवृत्त/ स्वेच्छा से सेवानिवृत्त पर जाने वाले के०रि०पु० बल कार्मिकों को केन्द्रीय कल्याण निधि से 500/ रूपये मूल्य का स्मृति चिन्ह दिया जाता है।

के०रि०पु० बल महिला कल्याण संस्था द्वारा किए जा रहे विभिन्न कल्याणकारी कार्य :–

सिपाही और ग्रुप “डी” कार्मिकों की उन लड़कियों को रू० 500/- प्रति बच्चा प्रतिवर्ष की दर से छात्रवृत्ति दी जा रही है जिन्होनें दसवीं कक्षा पास कर ली है और पढ़ाई जारी रखी हुई हैं। इसी प्रकार ग्रुप “डी” की उन 60 लड़कियों को जिन्होंने बारहवीं कक्षा पास कर ली है और पढ़ाई जारी रखी हैं को पूर्ति निधि से 500/- रू० प्रति बच्चा प्रति वर्ष छात्रवृत्ति अदा की जा रही है। के०रि०पु० बल के अपंग/मंदबुद्धि बच्चों को ट्राईसाईकिल/बैशाखी/कुर्सी/ टेबिल आदि दी जा रही है। उपरोक्त सामान की लागत की एक मुश्त राशि पूर्ति निधि से अदा/सुलभ कराई जाती है। सी०डब्ल्यू०डब्ल्यू०ए० द्वारा मंद बुद्धि बच्चों को मंद बुद्धि स्कूल में दाखिला कराने के सभी प्रयास किए जाते हैं। अविवाहित हमारे जवानों/नागरिकों के साथ के०रि०पु० बल कार्मिकों की विधवाओं का उनकी इच्छानुसार पुनर्विवाह कराने की व्यवस्था भी की जा रही है। पूर्ति निधि से प्रत्येक दम्पत्ति को 5,000/- रूपये का गिफ्ट चैक दिया जाता है। और दम्पत्ति को 5,000/ रूपये की राशि का अन्य घरेलू सामान जैसे बर्तन, कपड़े इत्यादि भी केन्द्रीय कल्याण निधि से दिया जा रहा है।

के०रि०पु० बल के कई ग्रुप केन्द्रों में एल०पी०जी० गैस एजेंसी भी चलाई जा रही हैं जहाँ से सेवारत कार्मिक गैस कनेक्शन प्राप्त करते हैं।



बल के एक कल्याण केन्द्र में सिलाई का कार्य करती महिलाएं

सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल





सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के मेधावी विद्यार्थी महानिदेशक डा. त्रिनाथ मिश्र के साथ



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी के विद्यार्थी रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए



युवा मामलों के आई ए एफ कमिशनर श्री एल वी सुब्रामणियम् से पुरस्कार प्राप्त करते हुए सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल जवाहर नगर के विद्यार्थी

के.रि.पु. बल में खेल



राष्ट्रमंडल खेलों में विजय मंच पर अपने स्वर्ण पदक के साथ कुंजारानी

खेल-कूद के०रि०पु० बल के जीवन का अभिन्न अंग है और इस बल की पहचान हैं। के.रि.पु. बल हमेशा से ही खेलों व खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करता रहा है और बल के प्रशिक्षण संस्थान व यूनिटें खेल कूद की नर्सरी हैं, जहाँ प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान कर उन्हें कोचिंग दी जाती है तथा उन्हें उच्च कोटि का खिलाड़ी बनाया जाता है। अखिल भारतीय खेलों में हिस्सा लेने के साथ हमारे खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों में भारतीय पुलिस खेलों का प्रतिनिधित्व भी किया है। के.रि.पु. बल के पास कुंजा रानी देवी, जिन्सि फिलिप, गीता मनराल, राजा राम टोकस, परमजीत सिंह तथा रिग्जेन अंगलो जैसे अंतराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी हैं, जिन्होंने क्रीडा के विभिन्न क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित कर बल का ही नहीं बल्कि देश का भी नाम ऊँचा किया हैं।

भारी परिचालनिक प्रतिबद्धताओं तथा देश के विभिन्न भागों में बढ़ता साम्प्रदायिक तनाव तथा अलगाववादी ताकतों द्वारा फैलाई जा रही हिंसा को देखते हुए बल के जवानों की ड्यूटियों में इजाफा ही नहीं हुआ बल्कि ड्यूटी समय में भी बढ़ोत्तरी हुई है और बदलते हुए इस सुरक्षा परिदृश्य में बल का कार्य काफी हद तक बढ़ गया है। इन सबके बावजूद कुछ समय निकाल कर हमारे कार्मिक विभिन्न तरह की क्रीडा प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेते हैं। इस वर्ष (2002) के दौरान आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं में बल के खिलाड़ियों ने देश का प्रतिनिधित्व किया और ढेर सारे स्वर्ण, रजत तथा कास्य पदक जीते हैं।

इस वर्ष के खेल क्षेत्र में के०रे०पु० बल की उपलब्धियों की शुरूआत हम साहसिक अन्तर्राष्ट्रीय खेलों से करते हैं।

1986 में बल में महिला बटालियन का उद्भव होने के साथ-साथ इस बल में कुछ ऐसी महिला प्रतिभाओं ने कदम रखा जिन्होंने अपने नियमित ड्यूटियों के क्षेत्र में तो नाम कमाया ही बल्कि खेल जगत में भी भारत का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा। 1996 में स्टेट वोमेन फेस्टीवल में कुंजा रानी देवी, एन० लक्ष्मी ने साहसिक खेल भारोत्तोलन में भाग लिया और महिला क्रीडा क्षेत्र में ख्याति अर्जित की। तब से अभी तक बल की महिला खिलाड़ियों ने हर वर्ष भारोत्तोलन में अनेक स्वर्ण, रजत तथा कांस्य पदक जीतकर अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा अखिल भारतीय पुलिस खेलों में बल की प्रसिद्धि की पताका

फहराई और सफलता का दौर यह रहा कि बल के भारत्तोलक खिलाड़ियों ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए कुन्जा रानी देवी तथा सोनामाचा चानू को देश के सबसे बड़े खेल पुरस्कार "अर्जुन पुरस्कार" से नवाजा गया। इसी वर्ष मानचेस्टर (यू०के०) में आयोजित कॉमनवैल्थ खेलों में के०रि०पु० बल की भारत्तोलक खिलाड़ी, सुश्री एन० कुन्जा रानी देवी तथा सोनामाचू चानू ने बल की उच्च कोटि की साहसिक, अमिट एवं चुनौती पूर्ण कार्य करने की भावनाओं की गरिमा को बनाए रखते हुए 48 किलोग्राम तथा 53 किलोग्राम वर्ग में तीन स्वर्ण पदक जीते जबकि 63 किलोग्राम वजन श्रेणी में हमारी नई उभरी प्रतिभा, प्रतिमा कुमारी ने दो स्वर्ण तथा एक रजत पदक जीते। 69 किलोग्राम की श्रेणी में नीलम लक्ष्मी ने तीन रजत तथा प्रसुमिता मंगराज ने 63 किलोग्राम में दो रजत और एक कास्य पदक जीते। 58 किलोग्राम वर्ग में सुनैना आनंद ने तीन कास्य पदक जीते इस प्रकार से देश के लिए कुल बल के भारत्तोलकों ने 19 पदक जीतकर बल और देश का गौरव बढ़ाया। बल के भारत्तोलकों ने देश के बाहर ही नहीं, देश के अन्दर भी अपनी प्रतिभा और साहस का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर बल के लिए ढेर सारे पदक इस वर्ष जीते हैं। भिवानी में आयोजित 51 अखिल भारतीय पुलिस स्पर्धाओं में बल की महिला खिलाड़ियों ने 6 स्वर्ण, 4 रजत तथा 3 कांस्य पदक जीते जबकि पुरूष भारत्तोलकों ने 2 स्वर्ण, 4 रजत तथा 1 कांस्य पदक जीत कर प्रथम तथा द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

के०रि०पु० बल पहला ऐसा संगठन है जिसने सबसे पहले जूडो टीम का गठन किया। 1951 में जर्मनी में आयोजित विश्व जूडो चैम्पियनशिप में पहलवानी से जूडो में आए के०रि०पु० बल के रामनिवास ने भाग लिया था। 1989 में टोरन्टो (इटली) में आयोजित विश्व पुलिस प्रतिस्पर्धा में बल के मोहिन्दर सिंह ने देश का प्रतिनिधित्व किया। 1999 में बल के जूडो खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय कराटे चैम्पियनशिप में हिस्सा लिया और चैम्पियनशिप जीती। बल में महिला जूडो टीम का गठन 1987 में हुआ और 2000-2001 में चण्डीगढ़ तथा लखनऊ में आयोजित सीनियर राष्ट्रीय जूडो चैम्पियनशिप में बल की महिला टीम ने प्रथम स्थान हासिल किया और फेडेरेशन कप चैम्पियनशिप 2000 में टीम ने दूसरा स्थान हासिल किया। इस वर्ष मानचेस्टर

(यू०के०) में आयोजित कामनवेल्थ खेलों में बल के जुडाका अकरमशाह ने देश का प्रतिनिधित्व किया और कांस्य पदक जीत कर देश को गौरवान्वित किया। मुम्बई में आयोजित सीनियर नेशनल जूडो चैम्पियनशिप में हमारे 18 जूडो खिलाड़ियों (9 पुरूष तथा 9 महिला) ने भाग लिया तथा 6 स्वर्ण, 2 रजत एवं 2 कांस्य पदक, कुल 10 पदक जीते। इसके अलावा बल के जूडो खिलाड़ियों ने विभिन्न राज्यों की ओर से भाग लिया और अनेक पदक प्राप्त किए। बल की तीन महिला जूडो खिलाड़ियों ने मौरिस में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय जूडो टूर्नामेन्ट में भाग लिया। बल की उप निरी० एल० ब्रजेश्वरी देवी ने देश के लिए कांस्य पदक जीता।

बल के पहलवान पहली बार अखिल भारतीय पुलिस खेलों में 1953 में अखाड़े में आये थे तथा 1975 व 1977 में चैम्पियन बन गए। 1970 के दौरान श्री सुखवंत सिंह को "हिंद केसरी व रूस्तमे हिंद" का खिताब दिया गया। बल के पहलवानों ने राष्ट्रमंडल खेलों में देश का प्रतिनिधत्व किया तथा देश के लिए अनेक पदक एवं खिताबं जीते। इस वर्ष बल के चार पहलवानों ने ईरान में आयोजित 9वें जी एफ तथा जी०एस० जूनियर टूर्नामेन्ट में भाग लिया और तीन रजत तथा एक कांस्य पदक जीते। जबकि 23वीं जूनियर नेशनल रेसलिंग चैम्पियनशिप में हमारे पहलवान खिलाड़ियों ने दो स्वर्ण, चार रजत तथा दो कांस्य पदक, कुल 8 पदक जीतकर अखिल भारतीय खेलों में नाम कमाया है।

के०रि०पु० बल में पहली बार अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में 1960 में हिस्सा लिया था तथा 1977 में तैराकी चैम्पियनशिप जीत कर इसने अपनी पहचान बनाई थी। तब से इसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और अनेक पदक तथा खिताब जीत कर बल का ही नहीं बल्कि देश का नाम ऊँचा किया है। जहाँ के०रि०पु० बल ने अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित खजान सिंह जैसे तैराक पैदा किए वहीं महावीर शेखावत, वी०एस० रविशंकर पवित्र शर्मा तथा धारा सिंह जैसे बहुत वर्षों तक गोताखोरी के चैम्पियन रहे विश्व स्तर के गोताखोर दिए हैं।



मलेशियन ओपन कबड्डी वैम्पियनशिप के विजेता बल के खिलाड़ी

बल की महिला/पुरूष जूडो खिलाड़ियों ने दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित सीनियर नेशनल जूडो फेडरेशन कप में हिस्सा लिया तथा हमारी महिला जूडो टीम ने कांस्य पदक जीतकर तीसरा स्थान प्राप्त किया तथा पुरूष टीम चौथे स्थान पर रही। ५१ वीं अखिल भारतीय पुलिस खेल स्पर्धाओं में इस वर्ष बल के जूडो खिलाड़ियों ने एक स्वर्ण तथा एक कांस्य पदक जीता और प्रतिस्पर्धा में चौथे स्थान पर रहे।

इस वर्ष चैन्नई में आयोजित बल के पुरूष/महिला तैराकों, वाटरपोलो खिलाड़ियों ने जूनियर तैराकी प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और 4 स्वर्ण, 9 रजत तथा 3 कास्य, कुल 16 पदक जीतकर बल का नाम रोशन किया है। यही नहीं बल के महिला/पुरूष तैराकों ने चीन में अक्टूबर 2002 में आयोजित सेकिन्ड एशियन ऐज ग्रुप तैराकी चैम्पियनशिप में भी अपने जौहर दिखाए तथा देश के लिए तीन रजत एवं 6 कांस्य पदक जीते। त्रिचूर, केरला में आयोजित राष्ट्रीय तैराकी चैम्पियनशिप 2002 में बल के महिला /पुरूष तैराकों ने भारतीय पुलिस टीम की ओर से दिल्ली तथा केरला राज्य का प्रतिनिधित्व किया तथा 12 स्वर्ण, 10 रजत और 6 कांस्य पदक जीते। हमारे तैराकों ने अखिल भारतीय 51वीं पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में अपना दबदबा कायम रखते हुए बल के निरीक्षक कैलाश नाथ तथा दीपक कुमार ने 200 मीटर की मिडले

तथा 50 मीटर की ब्रेस्ट स्ट्रोक प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक जीते जबकि हवलदार बी० सीजू ने 10 मीटर की हाई बोर्ड डाईविंग में रजत पदक जीता। निरीक्षक अमर मुरलीधरन ने 100 तथा 200 मीटर की फ्रीस्टाईल प्रतिस्पर्धा में स्वर्ण तथा निरीक्षक कैलाश नाथ ने रजत पदक जीता और 50 मीटर की बैक स्ट्रोक प्रतियोगिता में सेन्थिल कुमार ने बल को स्वर्ण पदक तथा निरीक्षक युद्धबीर टोकस ने कांस्य पदक दिलाया। 100 तथा 200 मीटर की बटर फ्लाई प्रतिस्पर्धा में निरीक्षक दीपक कुमार ने स्वर्ण जीता और 1 मीटर स्प्रिंग बोर्ड डाईविंग में सिपाही दिनेश बडोनिया ने कांस्य जीता। 4 किलोमीटर व 12 किलोमीटर क्रास कन्ट्री चैम्पियनशिप में बल की टीम ने रजत पदक जीता इस प्रकार से बल की तैराकी टीम ने तैराकी में प्रथम, वाटर पोलो में द्वितीय तथा क्रास कन्ट्री में तीसरी पोजीशन हासिल की। बल के निरीक्षक दीपक कुमार को चैम्पियनशिप का सर्वश्रेष्ट तैराक माना गया। हमारी टीम ने 16 स्वर्ण, 10 रजत तथा 7 कांस्य पदक जीतकर चैम्पियनशिप में सर्वाधिक पदक जीतने का खिताब पाया।



अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट के विजेता खिलाड़ी

1964 के ओलम्पिक खेलों में एथिलेट गुरचरन सिंह रंधावा ने 110 मीटर बाधाओं को 14 सेकेण्ड में पार कर खेल-कूद में के०रि०पु० बल को पहली पंक्ति में स्थान दिलाया था तथा रिकार्ड अभी तक कोई भारतीय नहीं तोड़ पाया है। और खेलों में प्रथम अर्जुन पुरस्कार विजेता होने का गौरव भी श्री रंधावा को प्राप्त है। खेल कूद में

बल ने कई और आर०एस० बल, हरीचन्द, रसदेव सिंह, ए०एस० योनन, परमजीत, जिन्सी फिलिप, दीपा ए०के०, सुधा के०पी० तथा मरियम्मा कुरियाकोजे जैसे चोटी के खिलाड़ी दिये। इस वर्ष बुसान दक्षिणी कोरिया में आयोजित 14वें एशियाई खेलों में बल के खिलाड़ियों ने एक अनूठा प्रदर्शन किया और हमारी एथेलिट जिन्सी फिलिप तथा मरियम्मा कुरियाकोजे ने 4×400 मीटर (महिला) रिले दौड़ में स्वर्ण पदक जीता तथा उड़न सिख मिल्खा सिंह का रिकार्ड तोड़ने वाले बल के एथेलिट परमजीत सिंह ने 4×400 मीटर (पुरूष) रिले दौड़ में रजत पदक जीतकर बल की प्रतिष्ठा बढ़ाई है। बल की महिला एथेलिटों ने इस वर्ष फरवरी 2002 में जगदलपुर में आयोजित 27वें महिला राष्ट्रीय खेल फेस्टिवल में दिल्ली राज्य की ओर से भाग लिया और सात स्वर्ण, 2 रजत तथा 4 कांस्य पदक अर्जित किया। नेशनल क्रास कन्ट्री चैम्पियनशिप में भी बल की एथेलिटों ने दिल्ली राज्य की ओर से भाग लिया और 4 किलोमीटर की दौड़ में दूसरा स्थान अर्जित किया। सांगली महाराष्ट्र में आयोजित 7वीं फेडरेशन कप क्रास कन्ट्री चैम्पियनशिप में 4 किलोमीटर की दौड़ में दूसरे स्थान पर रहे। जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित प्रथम नेशनल एथेलिट सर्किट प्रतिस्पर्धा - 2002 में हमारी महिला खिलाड़ियों ने एक रजत तथा दो कांस्य पदक जीते। महिला एथेलिटों के साथ-साथ बल के पुरूष एथेलिटों ने भी पदक जीतने का सिलसिला जारी रखा और 8वीं सीनियर फेडरेशन कप मीट-2002 में चैन्नई में एक रजत तथा तीन कांस्य पदक जीते तथा महिला एथेलिटो ने एक रजत तथा दो कांस्य पदक जीतकर बल के लिए खाते में पदको की संख्या बढ़ाई। बल की जानी-मानी एथेलिट सीमा अनतिल ने क्रिस्टन (जमैका) में सम्पन्न हुई विश्व जूनियर एथेलिट चैम्पियन शिप-2002 में दूसरी बार स्वर्ण पदक जीत कर अपना प्रभाव बनाए रखा। 19वी नार्थ जोन जूनियर एथेलिट चैम्पियनशिप 2002 में बल की सिपाही (महिला) मीना छांगरा ने स्वर्ण पदक जीता। इस वर्ष बल की महिला एथेलिटों ने अपना प्रभाव कायम रखते हुए बल के लिए अधिक पदक बटोरे। चौथी राष्ट्रीय सर्किट मीट में एक रजत तथा दो कांस्य पदक अर्जित किए जबकि 42वीं ओपेन नेशनल एथेलिट चैम्पियनशिप में बल के एथिलिटो ने 3 रजत तथ 3 कांस्य पदक जीते।

बल की महिला एथेलिट उप निरी० सीमा अनतिल ने बैंकाक (थाईलैण्ड) में आयोजित एशियन जूनियर एथेलिट चैम्पियनशिप 2002 में देश का प्रतिनिधित्व किया और दो कांस्य पदक जीत कर देश की गरिमा को बनाए रखा। बल की तीन महिला एथेलिटो ने नेशनल एथेलिट चैम्पियनशिप मैं बल की ओर से भाग लिया और इस प्रतिस्पर्धा में एक रजत तथा एक कांस्य पदक जीता।

हाकी में के.रि.पु. बल ने कई बड़े बड़े टूर्नामेन्ट जीते जैसे नेहरू हॉकी, श्रीराम डी०सी०एम० कप हाकी, महाराज गोल्ड कप, मुम्बई गोल्ड कप तथा के०डी०सिंह बाबू टूर्नामेन्ट में जीत हासिल की। के०रि०पु० बल ने एस०एन०मान, प्रमोद कुमार तथा सतिन्दर सिंह जैसे कई उत्कृष्ट हाकी खिलाड़ी पैदा किए हैं। इस वर्ष अखिल भारतीय के०डी० सिंह बाबू मेमोरियल गोल्ड कप टूर्नामेन्ट में भाग लिया तथा टूर्नामेन्ट जीता। 50वीं अखिल भारतीय सर शादी लाल राजेन्द्र लाल मेमोरियल हॉकी

टूनामेन्ट में बल की हॉकी टीम ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। कोलकाता में आयोजित 107वीं अखिल भारतीय वेइघटन गोल्ड कप हॉकी टूर्नामेन्ट में बल के खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर दूसरा स्थान दिलाया। बल की टीम ने अखिल भारतीय अकबर रफीक हॉकी टूर्नामेन्ट में इस वर्ष बल की टीम ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। जम्मू में सम्पन्न हुई इस वर्ष की 24वीं अखिल भारतीय इन्दिरा गाँधी गोल्ड कप टूर्नामेन्ट में बल की टीम ने दूसरी पोजीशन हासिल की।

बल की बास्केटबाल टीम ने पहली बार 1966 में अखिल भारतीय पुलिस खेलों में भाग लिया तथा बल की टीम ने विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा पुलिस खेलों में लगातार जीत पर जीत हासिल की। एम०पी० सिंह, पी०पी० सिंह, वी०एन० कुट्टी, जगजीत सिंह तथा सुखविन्दर सिंह जैसे बास्केटबाल के खिलाड़ी बल की देन हैं। इस वर्ष बल की टीम ने दिल्ली स्टेट बास्केटबाल चैम्पियनशिप में भाग लिया तथा दूसरा स्थान प्राप्त किया।

वॉलीबाल भी के०रि०पु० बल में बहुत लोकप्रिय खेल रहा है। तथा के०रि०पु० बल की टीम 1981 तथा 1982 में भी अखिल भारतीय पुलिस खेलों में चैम्पियन रह चुकी है। इस वर्ष अखिल भारतीय टूर्नामेन्ट में के०रि०पु० बल में खिलाड़ियों ने अपनी पुरानी जीत का सिलसिला जारी रखते हुए इस टूर्नामेन्ट में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सतिन्दर सिंह तथा अर्जुन सिंह जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी के०रि०पु० बल की ही देन है।

शूटिंग एक बहुत ही शौकिया खेल है परंतु के०रि०पु० बल के लिए यह व्यवसाय है। बल के निशानेबाजों ने अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट में शानदार प्रदर्शन किया। बल में श्री टी०एस० ढिल्लन ने एशियाई खेलों में तथा वर्ल्ड पुलिस एन्ड फायर गेम्स, टोरन्टों में देश का प्रतिनिधित्व किया। वह आज भी अन्तर्राष्ट्रीय शूटिंग कोचिंग एसोशियेशन के सदस्य है। मानिक राम, तारू राम, हिम्मत सिंह, देवी सिंह, दिलबाग सिंह, के० माधवन तथा सर्वजीत सिंह आदि कई निशानेबाज के०रि०पु० बल की ही देन हैं। इस वर्ष 46वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट निशानेबाजी प्रतियोगिता में के०रि०पु० बल की महिला खिलाड़ी कनकलता ने पहली बार स्वर्ण पदक जीता जबकि बल के उप कमाण्डेन्ट एस०एस० घुमन ने रजत पदक जीतकर निशानेबाजी की साख को बनाये रखा। बल में शूटरों ने 12वीं अखिल भारतीय जी०बी० मवलकर शूटिंग चैम्पियनशिप में इस वर्ष अपना दबदबा बनाये रखते हुए एक स्वर्ण तथा तीन कांस्य पदक अर्जित किए।

खेल-कूदों तथा खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने में के०रि०पु० बल का बहुत ही बड़ा योगदान रहा है और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में नाम कमाया है। इस वर्ष बल के महिला/पुरूष खिलाड़ियों ने एथेलिटिक प्रतियोगिताओं में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दो स्वर्ण, एक रजत तथा चार कांस्य पदक एवं राष्ट्रीय स्तर पर दो स्वर्ण, आठ रजत तथा 13 कांस्य पदक जीते। बल में महिला/पुरूष तैराकों ने अन्तर्राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिताओं में तीन रजत तथा छः कांस्य और राष्ट्रीय स्तर पे 16 स्वर्ण, 19 रजत

तथा 9 कांस्य पदक जीते हैं। आखेल भारतीय पुलिस मीट में 16 स्वर्ण, 7 रजत तथा 7 कांस्य पदक जीते। जूडो (पुरूष/महिला) अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में 1 रजत तथा राष्ट्रीय स्तर पर एक कांस्य पदक एवं अखिल भारतीय पुलिस मीट में एक स्वर्ण व एक कांस्य पदक जीता।

भारत्तोलन में (महिला/पुरूष) अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में 8 स्वर्ण, 6 रजत तथा 4 कांस्य पदक तथा अखिल भारतीय पुलिस मीट में 8 स्वर्ण, 8 रजत तथा 4 कांस्य पदक जीते हैं। हमारी कबड्डी टीम ने इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में 4 स्वर्ण पदक जीते हैं। 5वीं रेसलिंग अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में तीन रजत तथा एक कांस्य पदक तथा राष्ट्रीय खेलों में 2 स्वर्ण, चार रजत तथा दो कांस्य पदक हासिल किए हैं। क्याकिंग एवं कैनोइंग अखिल भारतीय पुलिस मीट में एक स्वर्ण, चार रजत तथा 4 कांस्य पदक अर्जित किए। पुलिस क्रास कन्ट्री में एक रजत पदक हासिल किया। वाटर पोलो में एक रजत, शूटिंग में एक रजत जीता। शूटिंग में अखिल भारतीय पुलिस मीट में एक स्वर्ण तथा दो रजत पदक जीते, फ्रान्स में अखिल भारतीय पुलिस प्रतियोगिता में रजत पदक जीतकर बल को गौरवान्वित किया। इस तरह हमारे खिलाड़ियों ने इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में 14 स्वर्ण, 14 रजत तथा 15 कांस्य, राष्ट्रीय स्तर पर 24 स्वर्ण, 33 रजत तथा 26 कांस्य पदक अर्जित किए जबकि अखिल भारतीय पुलिस मीट प्रतियोगिताओं में 27 स्वर्ण, 26 रजत तथा 16 कांस्य पदक जीते।

हमें पूरा भरोसा है कि बल के होनहार युवा खिलाड़ी इस बल तथा देश का नाम सदैव इसी प्रकार से ऊँचा करते रहेगें।



राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीत कर लौटी बल की भारोत्तोलक कुंजारानी देवी, खेल मंत्री उमा भारती एवं श्री सुरेश

कलमाडी के साथ!



राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेता खिलाड़ी महानिदेशक डा० त्रिनाथ मिश्र


रजि. न. 4767/87

सी.आर.पी.एफ. समाचार

विशेष परिशिष्ट

31 दिसम्बर, 2002

CENTRAL RESERVE POLICE

शुभकामना संदेश

बल का ध्येय

के०रि०पु०बल का लक्ष्य है राष्ट्र की **एकता, अखण्डता एवं संविधान** की मर्यादा को अक्षुण्ण रखना। देश की आन्तरिक सुरक्षा सुनिश्चित रखने तथा कानून व्यवस्था को बनाये रखने के लिए शासन को कौशलपूर्ण एवं प्रभावी सहायता प्रदान करना इसका उद्देश्य है ताकि **सामाजिक सद्भाव** तथा **राष्ट्र के विकास** को गति मिले।

राष्ट्रीय आपदाओं से निपटने के लिए और आंतरिक सुरक्षा के कुशल प्रबंधन की श्रेष्ठता के लिए बल के सदस्य सदा प्रयत्नशील रहेंगे।

हमारा संकल्प है कि हम यह लक्ष्य नागरिकों की स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा का सम्मान करते हुए पूर्ण करेंगे। राष्ट्र की **सेवा एवं भक्ति** हमारे जीवन के सर्वोच्च मूल्य होंगे।

CENTRAL RESERVE POLICE



सत्यमेव जयते
राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

MESSAGE

I am happy to learn that the Central Reserve Police Force is celebrating its 63 anniversary on December 28, 2002.

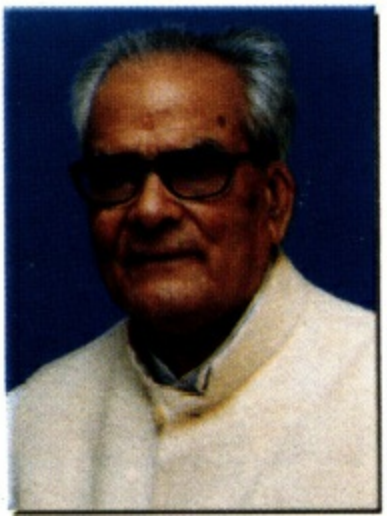
The force has rendered yeoman service towards maintaining conditions of security for people and the country. All the personnel of this paramilitary force have displayed high standards of professional competence and devotion to duty. I am confident that the Force would continue to work with dedication and commitment in the service of our nation in the years ahead.

On the occasion of the 63rd Anniversary of the Force, I extend my greetings and best wishes to all ranks of the Central Reserve Police Force and their families. I wish them all success.

(A.P.J. Abdul Kalam)

New Delhi

December 12. 2002



सत्यमेव जयते

भारत के उप-राष्ट्रपति

VICE-PRESIDENT OF INDIA

MESSAGE

I am glad to know that the Central Reserve Police Force shall be celebrating its 63rd Anniversary on December 28. My heartiest congratulations to all ranks of CRPF and their families.

The Central Reserve Police Force has demonstrated its prowess and professionalism in performing its ordained duties to the country by preventing extremist and terrorist activities and safe guarding the unity and integrity of the motherland. I am glad that the CRPF has successfully raised up to its many challenges in providing dependable security.

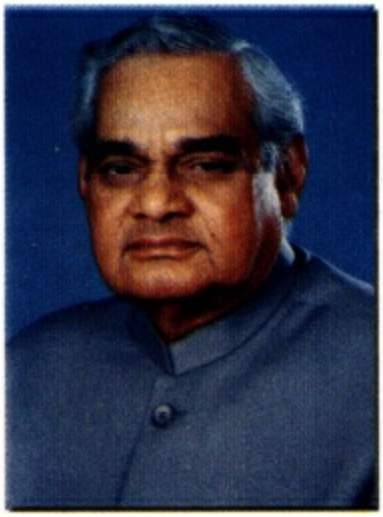
My best wishes.

(BHAIRON SINGH SHEKHAWAT)

(BHAIRON SINGH SHEKHAWAT)

New Delhi

2nd December, 2002



सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री

Prime Minister

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि **केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.)** 28 दिसम्बर, 2002 को अपनी 63वीं वर्षगांठ मना रहा है।

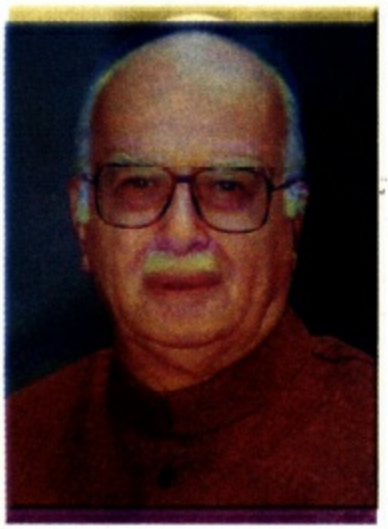
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने बड़ी कठिन परिस्थितियों में भी अदम्य साहस तथा कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया है। महिला बटालियन तथा द्रुत कार्य बल के शामिल होने से सी.आर.पी.एफ. की दक्षता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि हुई है। देश के विभिन्न भागों में शांतिपूर्ण चुनाव, विशेषकर हाल ही में जम्मू व कश्मीर के चुनाव, सम्पन्न कराने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

मैं इस अवसर पर बल के सभी अधिकारियों, जवानों एवं उनके परिवारों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

अटल बिहारी वाजपेयी

(अटल बिहारी वाजपेयी)

नई दिल्ली
13 दिसम्बर, 2002



सत्यमेव जयते

लाल कृष्ण आडवाणी

उप प्रधान-मंत्री

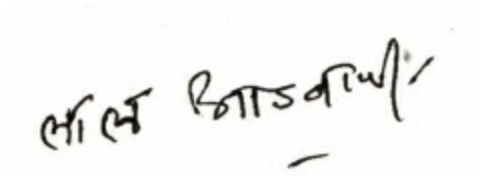
संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल *28* दिसम्बर, *2002* को अपनी *63*वीं वर्षगांठ मना रहा है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने शुरूआत से ही देश की विभिन्न भागों में आंतरिक सुरक्षा तथा कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका इतिहास, उच्च परम्पराओं और बलिदानों की गाथा है। एक ओर साम्प्रदायिक दंगों को शांत करने के लिए बल की यूनिटें पूर्व से पश्चिम या उत्तर से दक्षिण की ओर निरन्तर घूमती हैं तो दूसरी ओर उग्रवाद तथा आतंकवाद से निपटने के लिए। बल ने देश के विभिन्न भागों में शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष चुनाव कराने में अपनी बहुमूल्य सेवाएं प्रदान की हैं। हाल ही में जम्मू एवं कश्मीर में सम्पन्न हुए चुनावों में बल का निष्पक्ष तथा सहयोग पूर्ण रवैया इसकी परिचालियन क्षमता में बढ़ोत्तरी के रूप में चर्चा में आया है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की विशेष शाखा, द्रुत कार्य बल ने न केवल साम्प्रदायिक दंगों को प्रभावीरूप से नियंत्रित किया है बल्कि प्राकृतिक तथा मानवकृत आपदाओं के दौरान किए गये बचाव एवं राहत कार्य अभियानों में मानवीय कार्य कर लोगों का विश्वास भी जीता है।

खुशी के इस मौके पर मैं बल के सभी सदस्यों तथा उनके परिवारों को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।



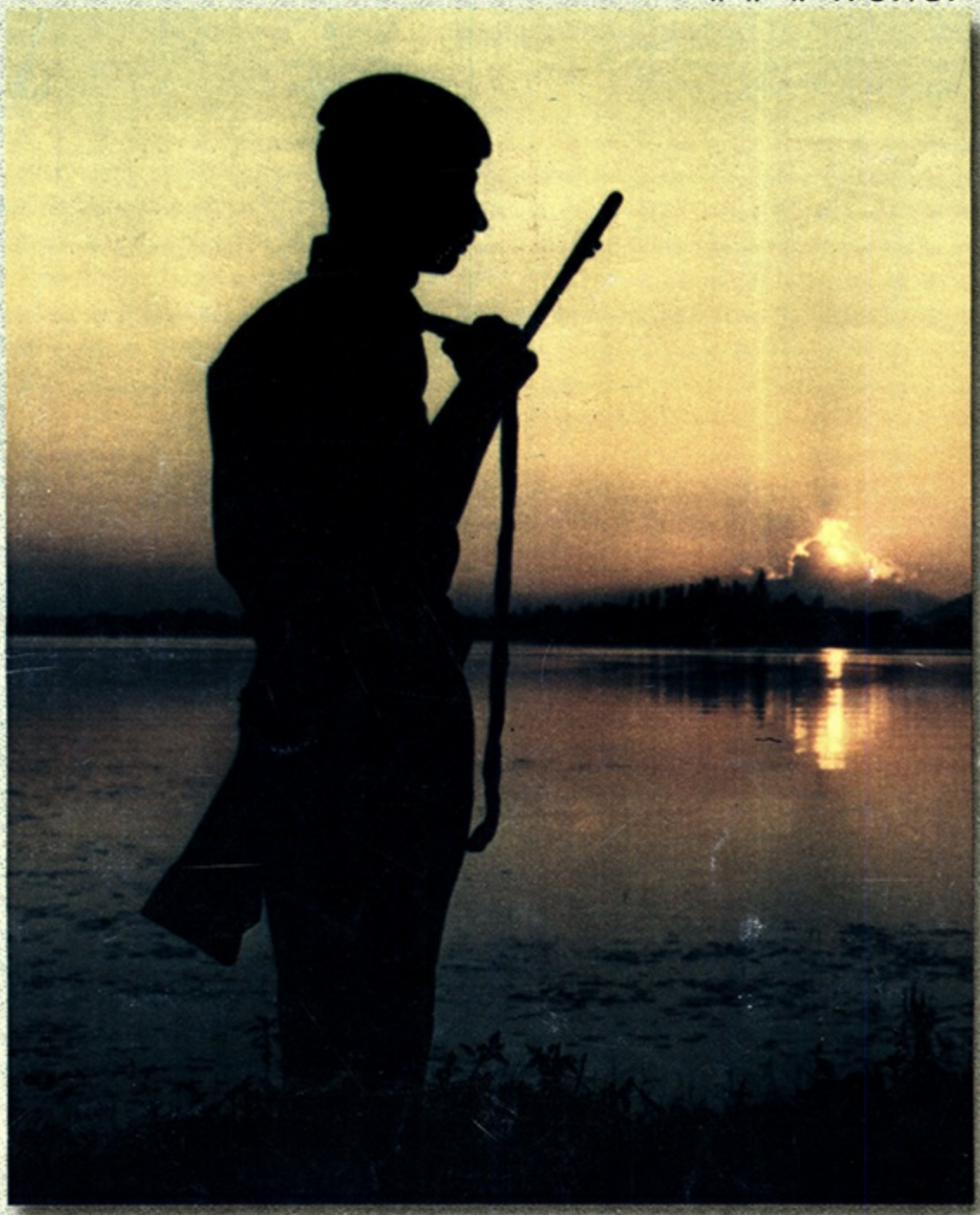
(लाल कृष्ण आडवाणी)

MISSION

The mission of the **Central Reserve Police Force** shall be to enable the government to maintain Rule of Law, Public Order and Internal Security effectively and efficiently, to preserve **National Integrity** and promote **Social Harmony** and **Development** by upholding supremacy of the **Constitution.**

In performing these tasks with utmost regard for human dignity and freedom of the citizens of India, the force shall endeavour to achieve excellence in management of internal security and national calamities by placing **Service and Loyalty** above self.

रजि. न. 4767/87



महानिदेशक के०रि०पु०बल, सी०जी०ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
की ओर से डी०जी० महापात्र द्वारा प्रकाशित एवं सम्पादित।
मुद्रक सी.आर.पी.एफ. प्रेस, नई दिल्ली–72